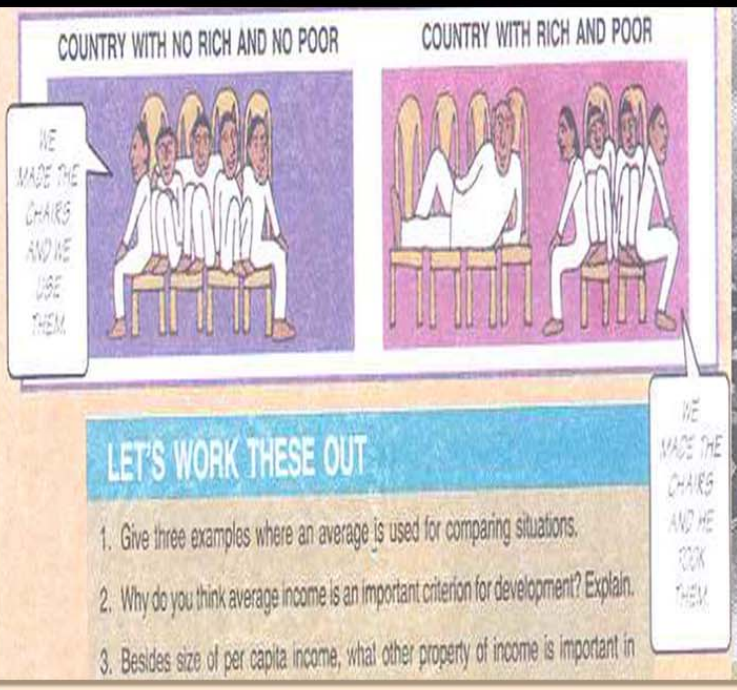

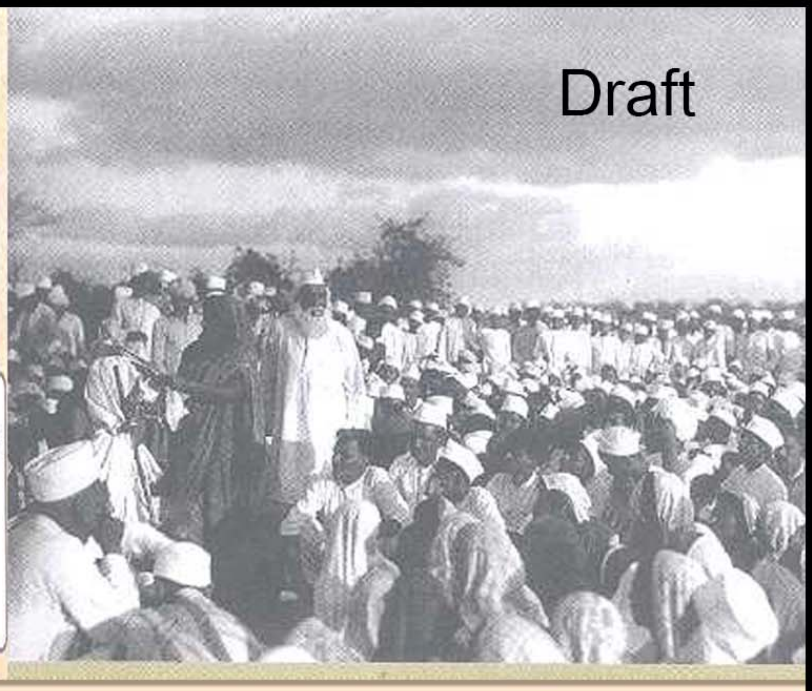

Draft

सेवाकालीन शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए सामाजिक विज्ञान में पैकेज

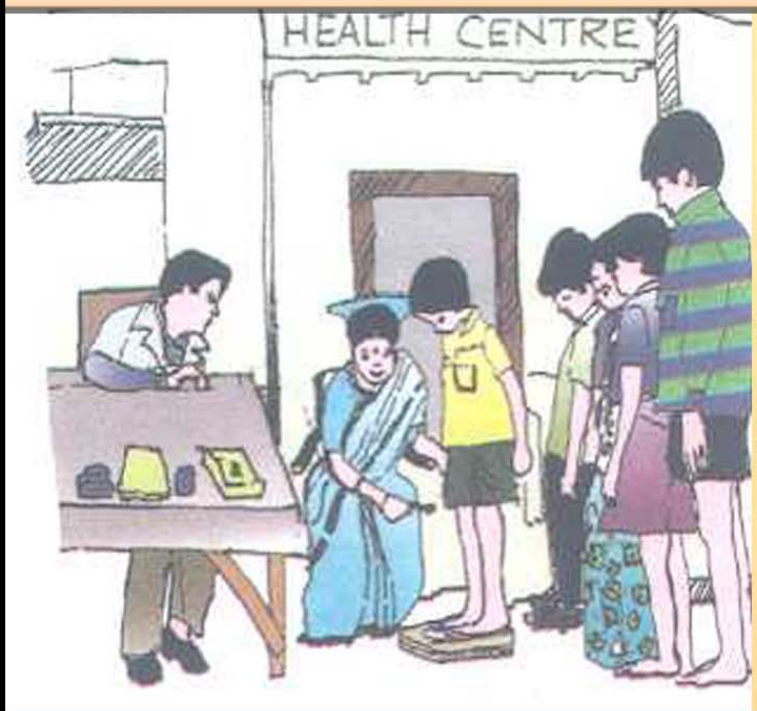

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

श्री अरविंदो मार्ग, नई दिल्ली-110016

विषय-वस्तु

परिचय iii-iv

हिन्दी अनुवाद समिति v-vi

भाग I

किशोर शिक्षार्थी को समझना 02-20
सरोज यादव

भाग II

सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम 22-35
मिली रॉय आनंद

भाग III

प्रशिक्षण कार्यक्रम 37-43
सा०वि०शि०वि०, एन०सी०ई०आर०टी०

भाग IV

विषयों का संप्रेषण

इतिहास

इतिहास शिक्षण 46-49
मिली रॉय आनंद

"फ्रांसीसी क्रांति" का सम्प्रेषण 50-62
प्रत्यूष कुमार मण्डल

'औद्योगीकरण का युग' का संप्रेषण 63-76
सीमा ओझा

भूगोल

भूगोल शिक्षण 78-89
अपर्णा पाण्डेय

'जलवायु' का संप्रेषण 80-97
अपर्णा पाण्डेय

'संसाधनों का संप्रेषण' 98-108
तन्नु मलिक

राजनीति विज्ञान

राजनीति विज्ञान शिक्षण 110-111
एम०वी०एस०वी० प्रसाद

''लोकतांत्रिक और गैर-लोकतांत्रिक सरकारें: एक अन्वेषण'' का संप्रेषण 112-122
एम०वी०एस०वी० प्रसाद

"लोकतंत्र की चुनौतियाँ" का संप्रेषण 123-131
शंकर शरण

अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र शिक्षण 133-134
प्रतिमा कुमारी

विकास का संप्रेषण 135-148
जया सिंह

'मुद्रा और साख का संप्रेषण' 149-164
अशिता रविन्द्रन

भाग V

उदाहरणार्थ अंतरविषयक परियोजना 166-169
अशिता रविन्द्रन

परिचय

माध्यमिक शिक्षा एक निर्णायक स्तर है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के साथ-साथ कार्यजगत के लिए भी तैयार करता है। माध्यमिक और उच्चतम माध्यमिक स्तर की कठिनता विद्यार्थियों को सार्वभौमिक रूप से उच्च शिक्षा और नौकरियों के लिए सफलतापूर्वक प्रतिस्पर्धा करने हेतु सक्षम बनाती है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि इस स्तर को अधिक सुगम बनाकर और साथ ही इसकी गुणवत्ता में पर्याप्त सुधार करके इसे सुदृढ़ किया जाए। अत: यह दूरदर्शितापूर्ण होगा कि माध्यमिक शिक्षा को सबके लिए उपलब्ध और सुगम्य बनाया जाए। यद्यपि 1960 के दशक से शिक्षकों की व्यावसायिक तैयारी को अत्यंत महत्वपूर्ण समझा गया है, फिर भी अधिकांश शिक्षक उच्च शिक्षा के केन्द्रों से दूर रहे और उनके व्यावसायिक विकास की आवश्यकताओं पर बात नहीं की गई। शिक्षकों की व्यावसायिक संवृद्धि में सेवाकालीन शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है और विद्यालय संबंधी क्रियाकलापों में बदलाव-कर्त्ता के रूप में कार्य कर सकती है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को संदर्भ और शिक्षा शास्त्र में उभरते नए मुद्दों को समायोजित करने और विद्यालय तथा समाज के बीच संबंधों के मामले के समाधान खोजने की आवश्यकता है।

इस संबंध में एक महत्वपूर्ण सरोकार जिस पर विचार करने की आवश्यकता है, वह शिक्षक के लिए सहायता सामग्री की उपलब्धता है। माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में गुणवत्तापूर्ण शिक्षक सहायक सामग्री की अपर्याप्तता ने सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों को प्रभावित किया है। अत: एन०सी०ई०आर०टी० ने राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अंतर्गत राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के लिए विविध विषयों में सेवाकालीन शिक्षक व्यावसायिक विकास पैकेज (आई०टी०पी०डी०) तैयार करने का दायित्व लिया है। सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग ने एन०सी०ई०आर०टी० और विभिन्न राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों के पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों से चिह्नित की गई सामान्य विषयवस्तु के आधार पर आई०टी०पी०डी० पैकेज विकसित किया है। यह पैकेज सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास की आवश्यकता की पूर्ति करता है। इस पैकेज को तैयार करने से पहले कार्यरत शिक्षकों से विशिष्ट विषयों संबंधित फीडबैक प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली तैयार करने के उद्देशय से संकाय ने कुद प्रारंभिक अनुसंधान कार्य भी किया। यह फीडबैक 200 से अधिक शिक्षकों से लिया गया। यह पैकेज कार्यरत शिक्षकों के साथ मिलकर विभाग के संकाय सदस्यों द्वारा तैयार किया गया है, जिन्होंने सामाजिक विज्ञान विषयों से संबंधित माड्यूलों के लिए बहुत से क्रियाकलाप विकसित किए। इस पैकेज का क्षेत्र-परीक्षण (ट्राई-आउट) करने से पहले नवम्बर-दिसम्बर, 2013 में शिक्षकों और एन०आई०ई० विभाग के विशेषज्ञों से समीक्षा कराकर पैकेज पर उनके सुझाव लिए गए। यह पैकेज विषयों के संप्रेषण की कठिनाइयों को पहचानने के साथ-साथ जेंडर न्याय, शांति शिक्षा, समावेशी शिक्षा, आई०सी०टी० की उपयोगिता, सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में कला और शिल्प का उपयोग, इत्यादि अंतर-विषयक सामाजिक सरोकारों के उभरते परिप्रेक्ष्यों को समाहित करने का प्रयास करता है। इस पैकेज के पाँच भाग हैं। भाग I किशोर शिक्षार्थी को समझने के बारे में है। इस भाग का मुख्य उद्देश्य है कि किशोर शिक्षार्थियों को कैसे समझें। यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक किशोरावस्था और उसके लक्षणों, मुद्दों, सरोकारों और प्रभावों के बारे में अपनी समझ विकसित करें, यह भी समझने की आवश्यकता है कि किशोरों को वयस्कों जिनमें विद्यालय तथा अध्यापक भी शामिल हैं से किस प्रकार सहायता की अपेक्षा है। साथ ही यह पैकेज अध्यापकों को इस योग्य बनाएं कि वे विभिन्न पद्धतियों का उपयोग कर शिक्षार्थियों को सशक्त बना सकें। भाग II सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पद्धति से संबंधित है। इस भाग में, जिन कुछ मुद्दों और सरोकारों पर ध्यान केंद्रित किया गया है, वे हैं- विद्यार्थियों में एक विश्लेषणात्मक समझ विकसित करना; एक एकीकृत और समावेशी अधिगम वातावरण की रचना करना; विषय-वस्तु का संदर्भ-निर्धारण; सहभागी पद्धति अपनाना; सामाजिक विज्ञान के समकलनात्मक पहलु, पाठ्यचर्या संबंधी सरोकार और सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का व्यवस्थापन; भागीदारी, आकलन और मूल्यांकन के साधन के रूप में एन०सी०ई०आर०टी० की पाठ्य पुस्तकें। भाग III प्रशिक्षण कार्यक्रम को समायोजित और डिज़ाइन करने से संबंधित है, इसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम को

संचालित करने की आवश्यकता, प्रशिक्षण कार्यक्रम का ढ़ाँचा तैयार करने, और प्रशिक्षण को डिज़ाइन करने तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम के मूल्याकंन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। भाग IV विषयों के संप्रेषण से संबंधित है। इस भाग में विभिन्न विषय-क्षेत्रों के शिक्षण का संक्षिप्त परिचय शामिल किया गया है, जिसके अनुसरण में प्रत्येक विषय-क्षेत्र से संबंधित विषयों के संप्रेषण को लिया गया है। इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान विषय-क्षेत्रों के लिए प्रत्येक में से दो विषयों को लेकर उनके माड्यूल तैयार किए गए हैं। जिन विषयों पर माड्यूल तैयार किए गए हैं, वे इस प्रकार हैं: इतिहास- 'फ्रांसीसी क्रांति' और 'औद्योगिकीकरण', भूगोल- 'जलवायु' और 'संसाधन', राजनीति विज्ञान- 'सरकार के लोकतांत्रिक और गैर-लोकतांत्रिक रूपों के बारे में शिक्षण- एक अन्वेषण' और 'लोकतंत्र की चुनौतियाँ', अर्थशास्त्र- 'संसाधन' और 'मुद्रा तथा साख'। भाग V में सामाजिक विज्ञान में एक उदाहरणार्थ अंतर विषयक परियोजना शामिल है, जिसमें खाद्य सुरक्षा पर एक योजना विकसित करने पर ध्यान केंद्रित है। सामाजिक विज्ञान की अंतर विषयक प्रकृति को ध्यान में रखते हुए एक योजना कैसे विकसित की जाए, इस पर मार्गदर्शन देने का प्रयास किया गया है।

माड्यूलों के विकास का मुख्य उद्देश्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बहुआयामी परिप्रेक्ष्यों का उपयोग करने हेतु एक आधार उपलब्ध कराना है। इनमें विविध प्रकार की गतिविधियाँ सुझाई गई हैं, ताकि शिक्षकों को कक्षा में शिक्षण के दौरान उन्हें उपयोग करने के लिए प्रेरित किया जा सके। अधिगम प्रक्रिया को पारस्परिक- क्रियात्मक और भागीदारी युक्त बनाने के लिए वाद-विवाद, भूमिका निर्वाह (रोल प्ले), दृश्यों का विश्लेषण करना, परिचर्चाएँ, कोलॉज और पोस्टर निर्माण, मानचित्र पढ़ना, केस अध्ययन, निर्गम कार्ड बनाना, रेडियो, फिल्म, लघु फिल्म, इन्टरनेट आदि जैसी दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग जैसी गतिविधियाँ सुझाई गई हैं। गतिविधियों को रुचिकर और 'करने योग्य' बनाने के प्रयास किए गए हैं, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेने के लिए प्रेरित किया जा सके और साथ ही शिक्षक को सभी वर्गों के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समायोजित करने में सक्षम बनाया जा सके, चाहे विद्यार्थी किसी भी जाति, वर्ग, जेंडर तथा शारीरिक नि:शक्तता इत्यादि संबंधित क्यों न हों। माड्यूलों में आकलन हेतु कार्यनीतियाँ भी दी हैं, जिन्हें शिक्षक विद्यार्थियों की भागीदारी और निष्पादन का आकलन करने के लिए उपयोग में ले सकते हैं।

एक दिन का क्षेत्र भ्रमण (कुतुब मीनार/संसद संग्रहालय/लाल किला) भी आयोजित किया गया है, जो केवल शिक्षकों को ऐतिहासिक महत्व के स्थान ही नहीं दिखाता, बल्कि हमारी धरोहर के महत्व की समझ को विकसित करने में भी मदद करेगा। क्षेत्र भ्रमण आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों के लिए क्षेत्र भ्रमण आयोजित करने के लिए प्रेरित करना है जिससे विद्यार्थी कक्षा से बाहर की दुनिया को भी जान सकें। क्षेत्र भ्रमण में बैंक जाना, किसी खेत को देखना अथवा पंचायत की कार्यवाही देखना भी शमिल हो सकता है। इस प्रकार के भ्रमण का मूल उद्देश्य विषय-वस्तु को संदर्भित करना और ज्ञान को विद्यार्थियों के जीवंत अनुभवों से जोड़ना है।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पैकेज का सामाजि क विज्ञान (माध्यमिक स्तर पर) शिक्षकों के बीच परीक्षण करना है, ताकि पैकेज को अंतिम रूप देने से पहले उनका फीडबैक मिल सके। सम्भागियों से अपेक्षा है कि वे सभी सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लें और संदर्भ व्यक्तियों से पारस्परिक क्रिया करें और फिर अपने सुझाव दें ताकि पैकेज़ में और अधिक सुधार किए जा सकें।

हिन्दी अनुवाद समिति

हिन्दी अनुवाद
के०के० शर्मा, पूर्व प्राचार्य, अजमेर

परीक्षण विशेषज्ञ सदस्य
डॉ० चंद्रा सदायत,
प्राचार्य हिन्दी (सेवानिवृत्त)

डॉ० देवशंकर नवीन
प्राचार्य, सेंटर ऑफ इण्डियन लैंग्वेजेस्
जे०एन०यू०, नई दिल्ली

डॉ० ओ०पी० अग्रवाल
प्राचार्य अर्थशास्त्र (सेवानिवृत्त)
नोएडा

डॉ० रमेश चंद्र
रीडर अर्थशास्त्र (सेवानिवृत्त)
सा०वि०शि०वि०, रा०शै०अनु०प्र०प०
नई दिल्ली

डॉ० ज्योति चावला
असोसिएट प्रोफेसर, एस०ओ०टी०एस०टी०
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ० जगदीश शर्मा
असोसिएट प्रोफेसर, एस०ओ०टी०एस०टी०
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ० जया सिंह
असोसिएट प्रोफेसर, सा०वि०शि०वि०
रा०शै०अनु०प्र०प०

डॉ० शरद पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, आर०एम०एस०ए०
रा०शै०अनु०प्र०प०

श्रीमती प्रनमिता बिश्वास
सेवानिवृत्त अध्यापिका, नई दिल्ली
डॉ० कुमकुम चतुर्वेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर
नीलकण्ड ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस्, नई दिल्ली

डॉ० संतोष कुमार
सहायक निदेशक
सी०एस०टी०टी०, नई दिल्ली

भाग-I

किशोर शिक्षार्थियों को समझना

भाग-I

किशोर शिक्षार्थियों को समझना

संक्षिप्त परिचय

जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम अपने जीवन में अनेक परिवर्तनों को अनुभव करते हैं। ये परिवर्तन हमें उत्तेजक और अच्छे लग सकते हैं अथवा कभी-कभी ये डरावने और कष्टप्रद भी हो सकते हैं। हम अपने जीवन में परिवर्तनों को प्रभावित कर सकते हैं, किन्तु कई बार हमारा उन पर बहुत कम नियंत्रण होता है। हमें अपने जीवन के कुछ परिवर्तनों का पूर्वाभास हो जाता है और यदि हम उनके लिए तैयार हैं, तो हम उनका बेहतर तरीके से सामना कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वृद्धि और कुपोषण एक सतत् प्रक्रिया है और अपनी परिपक्वता और विकास की निरंतरता में किशोरवस्था एक चरण है। अत: किशोर शिक्षार्थियों को जीवनकाल में होने वाले शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और मनो-सामाजिक परिवर्तनों के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है, जिससे कि वे उनके बारे में चिंतित न हों और इन परिवर्तनों के प्रति सकारात्मक और उत्तरदायी प्रतिक्रिया करें। विद्यालयी शिक्षा शिक्षार्थियों के चहुँमुखी विकास पर लक्षित होती है। यह उन्हें ज्ञान प्राप्त करने, संकल्पनाएं विकसित करने और उनके बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनके शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास की सहायक अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा कौशलों को मन में स्थाापित करने के योग्य बनाती है। इसलिए किशोर शिक्षार्थियों को समझना महत्वपूर्ण है। इसी उद्देश्य से संभागी शिक्षक को समझ, देख-भाल, सँभाल और संवाद के योग्य बनाने और उनका सशक्तीकरण करने का प्रयास किया गया है।

अधिगम उद्देश्य

मॉड्यूल संभागियों को निम्नलिखित में सक्षम बनाएगा:

- किशोरावस्था और उसके लक्षणों, मुद्दों, सरोकारों और प्रभावों पर समझ विकसित करना
- किशोरों द्वारा विद्यालयों और शिक्षकों सहित संबंधित वयस्कों से प्राप्त सहायता के प्रकारों को समझना, तथा
- उनके सशक्तीकरण हेतु विभिन्न उपागमों के उपयोग करने हेतु उन्हें सक्षम बनाना।

सत्र का प्रारंभ शिक्षार्थियों को उनके स्वयं की किशोरावस्था का स्मरण करने हेतु प्रोत्साहन से करें। उन्हें समूहों में इस प्रकार बाँटें कि प्रत्येक समूह में 5 या 6 सदस्य हों। प्रत्येक समूह में, निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर, सभी सदस्यों को किशोर शिक्षार्थियों के रूप में अपने कुछ सबसे महत्वपूर्ण अनुभवों और मनोभावों पर विमर्श करने और साझा करने को कहें:

- किशोरों की विशेष आवश्यकताएँ और सरोकार क्या हैं?
- क्या युवा लोगों को अपनी समस्याओं को सुलझाने में पर्याप्त जानकारी और सहायता मिलती है? यदि हाँ, तो यह जानकारी उन्हें कौन देता/ती है? क्या उन्हें अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए आवश्यक जानकारी और सहायता मिलती है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।
- यदि जानकारी के विश्वसनीय स्त्रोत उपलब्ध नहीं हैं, तो युवा लोग कहाँ से जानकारी (या गलत जानकारी) प्राप्त करते हैं?
- क्या युवा लोगों को सही जानकारी और सहायता उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है?

- युवा लोगों को अपने सरोकारों को व्यापक रूप से उद्‌बोधित करने हेतु जानकारी देने के लिए कौन उत्तरदायी होने चाहिए?

यह सब शिक्षकों को, उनकी अपनी स्मृतियों और अनुभवों के आधार पर, किशोरों के वर्तमान सरोकारों को परखने और समझने का अवसर उपलब्ध कराएगा।

किशोर शिक्षार्थी कौन हैं?

आइए जानें कि किशोर कौन हैं? इन्हें सामान्यत: उनकी आयु के वर्षों की अवधि के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। 10 से 19 वर्ष की आयु के उच्च प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक स्तरों तक पढ़ने वाले बच्चे किशोर माने जाते हैं और यह अवधि किशोरावस्था कहलाती है। इसे गौण यौन लक्षण के रूप में दिखाई देने और मानसिक प्रक्रमों के विकास और वयस्क पहचान के रूप में भी परिभाषित किया जाता है। यह अवधि पूर्ण सामाजिक-आर्थिक निर्भरता से अपेक्षाकृत स्वतंत्रता में परिवर्तन के रूप में भी देखी जा सकती है (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 1997)। इस अवस्था में बच्चे अधिक अमूर्त और तार्किक रुझान की ओर उन्मुख होते हैं और अपने तथा दूसरों के विचारों और अभिवृत्तियों को परखने की क्षमता विकसित करते हैं।

किशोर शिक्षार्थी का प्रोफाइल (पार्श्व चित्र)

भारत में 24.3 करोड़ लोग 10 से 19 वर्ष की आयु वर्ग के हैं (जनगणना 2011), और 32.7 करोड़ युवा लोग 10 से 24 वर्ष की आयु वर्ग के हैं (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2007)। 83 प्रतिशत युवा पुरुषों और 78 प्रतिशत युवा महिलाओं (आयुवर्ग 15-24 वर्ष) ने बताया कि वे समझते हैं कि पारिवारिक जीवन शिक्षा महत्वपूर्ण है (आई०आई०पी०एस०: पॉप काउंसिल यूथ सर्वे, 2006-07)। युवा लोगों (45% लड़कों और 27% लड़कियों) ने यह मत व्यक्त किया कि पारिवारिक जीवन मामलों पर शिक्षा देने के लिए शिक्षक उपयुक्त व्यक्ति हैं (आई०आई०पी०एस०: पॉप काउंसिल यूथ सर्वे, 2006-07)।

- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 3 (एन०एफ०एच०एस०-3, 2005-06) दर्शाता है कि युवा लोगों को एच०आई०वी० की रोकथाम से संबंधित मुद्दों पर बहुत कम जानकारी है। मात्र 28% युवा महिलाओं और 54% युवा पुरुषों (आयु वर्ग 15-24 वर्ष) को एच०आई०वी०/एड्स के बारे में व्यापक ज्ञान है। इस तथ्य के संदर्भ में यह चिंताजनक है कि भारत में रिपोर्ट किए गए एड्स के सभी मामलों में से एक तिहाई (30%) मामलों में 15 से 29 वर्ष के युवा शामिल हैं (NACO, 2007, UNFPA और NCERT, 2011)।
- युवाओं में मादक पदार्थों का दुरुपयोग चिंता का विषय है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण -3 (NFHS-3) के जाँच परिणामों के अनुसार 15 से 24 वर्ष की आयु वर्ग में 40% युवा पुरुषों और 5% युवा महिलाओं को तंबाकू के सेवन का अनुभव प्राप्त है, जबकि 20% युवा पुरुषों और 1% युवा महिलाओं को शराब पीने का अनुभव है।
- बड़ी संख्या में युवा रक्तक्षीणता (अनीमिया) से पीड़ित हैं (15 से 24 वर्ष के आयु वर्ग की 56% महिलाएँ और 25% पुरुष)। यह उनकी शारीरिक वृद्धि, संज्ञानात्मक विकास, विद्यालय और कार्य स्थल पर निष्पादन के साथ-साथ प्रजनन क्षमता को बुरी तरह प्रभावित करता है (NFHS-3, 2005-06)।
- यद्यपि अधिकांश युवा 18 वर्ष की आयु के बाद शादी करना पसंद करेंगे परन्तु NFHS-3 से प्राप्त आंकड़ों (2005-06) के अनुसार अधिकांश युवा महिलाओं की शादी 18 वर्ष से पूर्व हो गई थी।
- NFHS-3 के आंकड़े प्रगतिशील जेंडर भूमिका अभिवृत्ति की ओर संकेत नहीं करते हैं। विवाहित लोगों में घरेलु हिंसा व्यापक रूप से व्याप्त पाई गई।
- यह एक स्थापित सत्य है कि सार्वजनिक स्थलों, शैक्षिक संस्थानों, घरों के आस-पास और कार्य स्थलों पर यौन

उत्पीड़न की घटनाएं प्राय: होती रहती हैं। बाल उत्पीड़न, धमकाना और सताना भी सामान्य घटनाएं हैं। मारपीट दण्ड देने का एक सामान्य रूप है, यहां तक कि अधिकांश विद्यार्थी (85%) नहीं जानते कि माता-पिता का अपने बच्चों को पीटना भी घरेलू हिंसा का एक रूप है (UNFPA और NCERT, 2011)।

- किशोरों की अपंगता पर भी ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। 10 से 19 वर्ष के आयु वर्ग के किशोरों में 1.99 प्रतिशत अपंगता के मामले रिपोर्ट किए गए। रिपोर्ट के अनुसार अपंग किशोरों में 40 प्रतिशत में दृष्टि अपंगता पाई गई और 33 प्रतिशत में चलने-फिरने संबंधी अपंगता।
- इस प्रकार, यद्यपि भारत में व्यापक मानव संसाधन हैं, परन्तु राष्ट्र को अपने युवाओं के ज्ञान, मनोवृत्तियों, स्वास्थ्य और कल्याण पर सतत और पर्याप्त निवेश करना होगा, ताकि उनकी क्षमता का सही उपयोग किया जा सके।

किशोरावस्था के दौरान होने वाले शारीरिक परिवर्तनों को समझना

शिक्षार्थियों को समूहों में इस प्रकार बाँटें कि किसी भी समूह में 5-6 से अधिक सदस्य न हों। बेहतर होगा कि प्रारम्भ में लड़कियों और लड़कों के लिए पृथक सत्र आयोजित किए जाएँ, ताकि सभी शिक्षार्थियों को सहजता हो और वे इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने विचार साझा करने के अवसर प्राप्त कर सकें। बाद में, मिश्रित-सेक्स समूह में खुलकर इन मुद्दों पर चर्चा करना संभव हो पाएगा। शिक्षार्थियों के लिए सहज होगा कि प्रारम्भ में महिला शिक्षक लड़कियों के सत्र लें और पुरुष शिक्षक लड़कों के सत्र लें।

समूह कार्य

समूह 1

किशोरावस्था में लड़कियों में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों पर चर्चा करें और उनकी सूची बनाएँ।

समूह 2

किशोरावस्था में लड़कों में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों पर चर्चा करें और उनकी सूची बनाएँ।

समूह 3

किशोरावस्था में लड़कियों और लड़कों में होने वाले मनोवैज्ञानिक और भावात्मक परिवर्तनों पर चर्चा करें और उनकी सूची बनाएँ।

समूह 4

किशोरावस्था में लड़कियों और लड़कों को प्रभावित करने वाले सामाजिक मानदंडों पर चर्चा करें।

समूह 5

कक्षा XI के विद्यार्थी राकेश और मिहिर स्कूल से घर साथ-साथ पैदल लौट रहे हैं। राकेश मिहिर को छेड़ते हुए कहता है कि वह लड़कियों जैसी आवाज़ में बात करता है। वह इस बात पर भी हँसता है कि मिहिर के अभी मूंछ भी नहीं उगी है। ''मेरी तरफ देखो'' राकेश कहता है, ''मैं वास्तविक पुरुष हूँ। मेरी आवाज़ भारी है और मेरा चेहरा पुरुषों जैसा है, मेरे चेहरे पर दाढ़ी-

मूंछ हैं। मेरे पिता जी मुझे शेर कह कर बुलाते हैं।'' यह मिहिर को वास्तव में लज्जित करता है। उसे याद आता है कि उसकी माँ अभी भी उसे 'मेरा प्यारा बच्चा' कहकर बुलाती है। वह तय करता है कि वह घर पहुँच कर अपनी माँ से पूछेगा कि वह राकेश से इतना भिन्न क्यों है और क्या उसके साथ कुछ गड़बड़ है।

परिचर्चा के लिए प्रश्न

1. यद्यपि राकेश और मिहिर की आयु समान है, फिर भी वे इतने अलग क्यों दिखते हैं?
2. क्या आप सोचते हैं कि मिहिर के साथ कुछ गड़बड़ है?
3. आपके विचार से मिहिर अपने बारे में क्यो सोचता है?
4. मिहिर की माँ को उसे क्या कहना चाहिए?

समूह 6

रॉबिन कक्षा XI में पढ़ता है। वह छोटे कद का और दुबला-पतला है। शारीरिक रूप से कक्षा का सबसे छोटा लड़का है। यद्यपि वह फुटबाल खेलना पसंद करता है, परन्तु स्कूल की टीम में उसका चयन कभी नहीं हुआ। वह काफी तेज और कुशल है, परन्तु कोच उसे हमेशा यह कह कर अस्वीकार कर देता/ती है कि उसे दूसरे खिलाड़ी आसानी से धक्का मारकर गिरा देंगे, जो उससे बहुत बड़े हैं। एक दिन सड़क किनारे रॉबिन दवाइयों वाले एक आदमी के टेंट के बाहर एक विज्ञापन देखता है। उस चित्र में दुबला, कमजोर दिखने वाला लड़का दिखाया गया है और दूसरे में एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति दिखाया गया है। विज्ञापन यह दावा करता है कि जादुई दवा से यह परिवर्तन हो सकता है। रॉबिन यह दवा लेकर देखना चाहता है, परन्तु वह डरता भी है।

परिचर्चा के लिए प्रश्न

1. आपके विचार से रॉबिन अपनी कक्षा के दूसरे लड़कों से अलग क्यों दिखता है?
2. क्या आपके विचार से रॉबिन फुटबाल का एक अच्छा खिलाड़ी बन सकता है और कोच को उसे एक अवसर देना चाहिए?
3. क्या आपके विचार से रॉबिन को जादुई दवा लेनी चाहिए जो किसी को भी हृष्ट -पुष्ट बना देने का दावा करती है?
4. यदि आप रॉबिन के स्थान पर होते तो क्या करते?
5. क्या आप सोचते है कि माता या पिता या शिक्षक को किसी न किसी प्रकार रॉबिन की मदद करनी चाहिए? यदि हाँ, तो किस तरह?

सत्र समाप्त करने से पहले शिक्षक को बड़े समूह में शिक्षार्थियों से पूछना चाहिए कि क्या वे कुछ परिवर्तनों को बताने में हिचक रहे थे या शरमा रहे थे। कुछ परिवर्तनों को बताने में हिचकिचाने/शरमाने के कारणों का पता लगाएँ। शिक्षार्थियों से विभिन्न तरीकों की पहचान करने को कहें जिनके द्वारा इस हिचक को दूर किया जाए और वे जो बताएँ उन्हें बोर्ड पर लिख दें। इन सब का समेकन इस प्रकार करें:

- हार्मोन संबंधी (अंत:स्रावी) परिवर्तन शरीर में शारीरिक परिवर्तन प्रारम्भ करते हैं। महिलाओं में परिवर्तनों के लिए मुख्य रूप से मादा हार्मोन- ऑएस्ट्रोजन उत्तरदायी होते हैं और पुरुषों में परिवर्तनों के लिए मुख्य रूप से नर हार्मोन- टेस्टोस्टेरॉन उत्तरदायी होते हैं। ये हार्मोन शरीर में पीयूष ग्रंथि द्वारा बनाए जाते हैं।

- इस अवधि में लड़कों और लड़कियों में होने वाले शारीरिक परिवर्तन हैं- तीव्र वृद्धि, तैलीय और पसीने की ग्रंथियों का सक्रिय होना, जघन बालों का उगना। लड़कों में एक और परिवर्तन आवाज का परिवर्तन होता है और लड़कियों में स्तनों का विकास होना होता है। किशोरावस्था में जनन और यौन अंगों में परिपक्वता आती है।
- ये परिवर्तन किशोरों को वयस्कों की भूमिकाओं के लिए तैयार करते हैं और यह बड़ा होने का एक सामान्य हिस्सा है और इन परिवर्तनों को परिपक्व वयस्क बनने के लिए आवश्यक सोपानों के रूप में स्वीकार करना चाहिए और मान्यता प्रदान करनी चाहिए।
- प्रत्येक व्यक्ति समझ के साथ परिपक्व होता है और उसे किशोरावस्था के परिवर्तनों से गुजरना पड़ता है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक ही समय में और एक ही तरीके से नहीं होता।
- कुछ लोग जल्दी परिपक्व हो जाते हैं और कुछ देर से परिपक्व होते हैं। साथ ही किशोरावस्था संबंधी सभी परिवर्तन (शारीरिक, भावात्मक, मनो-सामाजिक और संज्ञानात्मक) एक साथ नहीं होते। परिणाम स्वरूप, हो सकता है कि शारीरिक परिवर्तन पहले हों और उसी व्यक्ति में मनो-सामाजिक परिवर्तन बाद में हों। ऐसा इसके विपरीत भी हो सकता है।
- एक ही आयु के दो किशोरों के परिपक्वता स्तर भिन्न हो सकते हैं और उनमें होने वाले परिवर्तनों की गति भी भिन्न हो सकती है।
- किशोरावस्था परिवर्तनों से पहचानी जाती है जो केवल शारीरिक ही नहीं, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और भावात्मक भी होते हैं।

मनो-सामाजिक विकास

किशोरावस्था का अन्य महत्वपूर्ण पहलू मनोवैज्ञानिक विकास से संबंधित है। यह स्व-पहचान के विकास के लिए एक विशिष्ट अवधि है। स्व-बोध प्राप्ति की प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों से जुड़ी है। स्वतंत्रता, आत्मीयता और हमउम्र समूह पर निर्भरता जैसे मुद्दों को उत्तरदायी तरीके से संभालना, ऐसे सरोकार हैं जिन्हें पहचानने और उनका सामना करने के लिए उपयुक्त मदद की आवश्यकता है। बाहरी दुनिया में पहुँच और निर्बाध विचरण स्व-निर्माण को प्रभावित करता है (एन०सी०एफ०,2005)। किशोरावस्था मानसिक, बौद्धिक और भावात्मक परिपक्वता के बढ़ने की अवधि भी है।

- शिक्षार्थियों को 5-6 सदस्यों वाले समूहों में बाँटे और समूहों को आगे दिए गए केस अध्ययन पढ़ने के लिए दस मिनट दें।
- प्रत्येक शिक्षार्थी को परिचर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।
- प्रत्येक समूह रिपोर्टर से कहें कि दिए गए केस अध्ययन पर वह बड़े समूह में अपने समूह के विचारों को साझा करें।

केस अध्ययन 1: मित्रता और धमकाना

रितेश और हितेश स्कूल के गेट के बाहर दुकान से संगीत की सीडी खरीद रहे थे। उन्होंने देखा कि शरद घर जा रहा था। उन्होंने उसे पकड़ा और सीडी खरीदने के लिए पैसे देने के लिए धमकाया। शरद ने मना कर दिया, क्योंकि पहले भी पैसे उधार देने के लिए उस पर दबाव डाला गया था। जब शरद ने मना कर दिया तो दोनों बदमाशों ने उसे धक्का देकर गिरा दिया और उससे पैसे छीन कर भाग गए। शरद की कक्षा के शिक्षक, उस समय घर लौट रहे थे, उन्होंने उसे ज़मीन पर गिरे देखा और सहारा देकर खड़ा किया। पूछने पर भी शरद ने नहीं बताया कि वह कैसे नीचे गिरा। अगले दिन शरद की कक्षा के साथी आबिद ने से शिक्षक से शिकायत करने के लिए कहा। आबिद उस दिन उसके साथ था। शरद पहले हिचकिचाया, परन्तु जब आबिद

शिक्षक के कमरे तक साथ जाने के लिए तैयार हो गया, तो वह शिकायत करने के लिए राज़ी हो गया।

परिचर्चा के लिए प्रश्न

1. आप क्या सोचते हैं कि शरद ने लम्बे समय तक बदमाशों की शिकायत क्यों नहीं की?
2. आपके विचार से वह इस बार शिकायत करने के लिए तैयार क्यों हो गया?
3. आबिद इस मामले में शामिल क्यों हुआ?

केस अध्ययन 2: सकारात्मक और नकारात्मक हमउम्र साथी प्रभाव

राजू हर समय पढ़ता रहता था, चाहे स्कूल में हो या घर में। उसे हमेशा अच्छे अंक प्राप्त होते थे। उसकी कोई अन्य रुचि या शौक नहीं थे। जब उसने कक्षा XI में नए स्कूल में प्रवेश लिया, तो वह ज़हीर और मोती का मित्र बन गया। दोनों की क्रिकेट में बहुत रुचि थी। राजू ने उनके साथ क्रिकेट खेलना शुरू किया और पाया कि वह एक अच्छा स्पिन गेंदबाज है। उसके माता-पिता को अब लग रहा है कि वह खेल के मैदान में बहुत समय बिता रहा है जो उसकी पढ़ाई को प्रभावित कर रहा है।

परिचर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या आप सोचते हैं कि ज़हीर और मोती का राजू पर अच्छा प्रभाव है?
2. क्या आपके विचार से राजू के माता-पिता का उसके नए शौक के बारे में चिंता करना उचित है?
3. राजू के माता-पिता की चिंता कम करने में उसके शिक्षक(कों) की क्या भूमिका हो सकती है?
4. क्या राजू को क्रिकेट खेलते रहना चाहिए? यदि हाँ तो क्यों?

केस अध्ययन 3: आकर्षण और रूमानी अनुभव

शारदा और विशाल पास-पास रहते हैं और कई वर्षों से एक दूसरे के मित्र हैं। वे एक ही स्कूल में कक्षा XI में पढ़ रहे हैं। हाल ही में, विशाल ने अपने प्यार को व्यक्त करते हुए शारदा को एक ग्रीटिंग कार्ड भेजा। वह उसके प्रति अपने प्रेम को लेकर असमंजस में है। उसने महसूस किया कि उसे निर्णय लेने में कुछ अधिक समय चाहिए। परन्तु शारदा को यह भी चिंता है कि यदि उसने अभी उत्तर न दिया, तो हो सकता है कि वह मित्र के रूप में विशाल को खो दे।

परिचर्चा के लिए प्रश्न

1. यदि आप शारदा के स्थान पर होते/होतीं तो आप क्या करते/करतीं?
2. विशाल क्या प्रतिक्रिया कर सकता है यदि शारदा उसे बताती है कि उसे निर्णय लेने में थोड़ा समय चाहिए?
3. क्या आपके विचार से इस परिस्थिति में शारदा और विशाल के माता-पिता या शिक्षक कोई सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं? यदि नहीं, तो क्यों नहीं?

इस पर बल दें कि,

- सकारात्मक संबंध बनाए रखने के लिए आत्मविश्वास और दृढ़ता आवश्यक है।
- सभी प्रकार के संबंधों में विश्वास एक बहुत महत्वपूर्ण तत्व है।
- सभी प्रकार के संबंधों में पारस्परिक आदर और ईमानदारी की आवश्यकता होती है।
- हमउम्र साथियों के साथ संबंधों में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों आयाम हो सकते हैं।
- किशोरों और उनके माता-पिता और शिक्षकों को परस्पर अधिक संवाद करना चाहिए, ताकि वे एक दूसरे के सरोकारों को जान सकें और एक दूसरे को अच्छी तरह समझ सकें।
- अधिकांश परिस्थितियों में भावनाओं को पहचानना चाहिए, बजाए बहाना बनाने के कि वे होती ही नहीं हैं। इससे चिरकालिक कुण्ठा, क्रोध और/या अवसाद उत्पन्न होता है। साथ ही भावनाओं में अधिक लीन होना भी अस्वास्थ्यकर होता है और इससे जीवन में बहुत गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- हमें यह सीखने की आवश्यकता है कि कैसे एक संतुलित तरीके से अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखें।
- किशोर वयस्कों से बहुत कुछ सीखते हैं। वयस्कों के लिए अपनी भावनाओं को स्वस्थ, ईमानदार और विवेकपूर्ण (परिपक्व) तरीकों से व्यक्त करके एक आदर्श सामने रखना बहुत महत्वपूर्ण है।
- अपनी तुलना दूसरों के साथ न करें। यह कहीं ज्यादा स्वस्थ और लाभकारी होगा कि हम स्वयं के साथ स्पर्धा करें और सुधार लाएँ।
- यदि कोई व्यक्ति किसी स्थिति से हारा हुआ अनुभव करता/ती है और उसका सामना करना कठिन समझता/ती है, तो किसी विश्वासपात्र (मित्र, बहन-भाई, माता-पिता या शिक्षक) से सहायता लेने में हिचकिचाएँ नहीं। याद रखें कि विशेषज्ञ की मदद (परामर्शदाता से) भी उपलब्ध है। मदद लेना दुर्बलता की निशानी नहीं है। वास्तव में, यह आपके आंतरिक संसाधनों की शक्ति और अच्छी समझ को दर्शाता है।
- इसी प्रकार यदि आप देखें कि आपका कोई मित्र या परिचित तनाव में है तो उदारतापूर्वक उसकी मदद करें।

तनाव कम करने की रणनीतियाँ

- यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि तनाव ऐसी चीज़ है जिसका सामना किया जा सकता है, उसे नियंत्रित किया जा सकता है और निश्चित रूप से कम किया जा सकता है। निम्नलिखित सुझाव किशोर शिक्षार्थियों को तनाव से निपटने में मदद कर सकते हैं।
- जानिए: जब भी आप दबाव में हों, अपने पंजों पर खड़े हो जाएँ और अपने शरीर को तानें। इस मुद्रा में कुछ क्षण रहें और फिर शरीर को ढीला छोड़ दें।
- जितना हो सके, ज़ोर-ज़ोर से हँसें, कोई कॉमिक पढ़ें, कोई कार्टून फिल्म देखें और दोस्तों के साथ चुटकुले या मज़ेदार कहानियाँ साझा करें।

क्रोध कम करने वाली तकनीक क्रोध से छुटकारा पाना (get-'RID')

R: अपने क्रोध के संकेतों को पहचाने (Recognize) और स्वीकार करें कि आप गुस्से में हैं।

I: स्थिति का विश्लेषण करने के सकारात्मक तरीकों की पहचान करें (Identify)।

D: शांत होने के लिए कुछ रचनात्मक क्रियाएं करें (Do)

- 10 तक गिनें

- गहरी साँस लें
- शाँत होने के लिए समय लें
- उस स्थान को छोड़ दें
- अपनी भावनाएँ उस व्यक्ति को बताएँ जिस पर आप विश्वास करते हैं और जो यथासंभव सीधे उस घटना से जुड़ा हुआ न हो।
- अपनी पसंद का संगीत सुनें।
- व्यायाम या कोई अन्य शारीरिक गतिविधि करें।
- जिस व्यक्ति पर आप क्रोधित हैं उसे पत्र लिखें और फिर उस पत्र को नष्ट कर दें।
- कोई मज़ेदार फिल्म देखें।
- अपने पसंदीदा शौक के साथ समय बिताएँ।
- कुछ रचनात्मक करें।
- किसी की मदद करें।

किशोरों में शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दोनों प्रकार के विकास और परिणामी व्यवहारगत परिवर्तन सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण से प्रभावित होते हैं। एक आम धारणा है कि किशोर एक संगामी समूह होते हैं। परन्तु वास्तव में उनके प्रोफाइल (पार्श्व चित्र) केवल उनकी आयु की भिन्नता के कारण ही नहीं अपितु उन पर विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश के प्रभाव और उनकी आवश्यकताओं के अनुसार स्पष्ट रूप से भिन्न होते हैं। चूँकि वे इस अवधि की उलझनों और संबंधित सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों को ठीक से नहीं समझते, वे स्वयं को वयस्क संसार से भिन्न समझना शुरू कर देते हैं। उन समाजों में जहाँ किशोरावस्था अवधि लम्बी होती है, वहाँ किशोर उप-संस्कृतियों का निर्माण करने का प्रयास करते हैं जो उनके स्वतंत्र होने की इच्छा को मदद करती हैं। ये उपसंस्कृतियाँ धीरे-धीरे समाज की मुख्य संस्कृति में परिवर्तन को प्रभावित करती हैं।

शारीरिक छवि/रंग-रूप के बारे में सरोकार

किशोरावस्था के समय व्यक्ति विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुज़रता/ती है। हर अवस्था में वह अपने शरीर और रंग-रूप में परिवर्तन पाता/ती है। यह 'शारीरिक छवि' पर प्रभाव डालता है, जो कि किसी के शरीर का बहुआयामी बोध होता है कि वह कैसा दिखता/ती है, कैसा अनुभव करता/ती है और कैसे गति करता/ती है। शारीरिक छवि बोध, भावनाओं और भौतिक अनुभूतियों से आकार लेती है जबकि मनोदशा, भौतिक अनुभव तथा पर्यावरण के अनुसार परिवर्तित होती है। ''अन्य'' बहुत महत्वपूर्ण हैं। शिक्षार्थियों को समूहों में इस प्रकार बाँटें कि प्रत्येक समूह में 5-6 विद्यार्थी हों। उन्हें निम्नलिखित केस अध्ययन दें और परिचर्चा के बाद बड़े समूह में प्रस्तुत करने के लिए कहें।

केस अध्ययन 1

कक्षा 9 में शालिनी और उसके मित्र विद्यालय के वार्षिक समारोह की तैयारी कर रहे थे। वे सभी बहुत उत्साहित थे। शालिनी शास्त्रीय नृत्य में भाग ले रही थी, जबकि उसकी कक्षा की मित्र साथी अनिता और फरहा नाटक में थीं। एक दिन अनिता ने उसका मज़ाक बनाते हुए कहा, "तुम इतनी काली हो कि तुम्हें मंच पर देखने के लिए अतिरिक्त प्रकाश की आवश्यकता होगी।" शालिनी ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। फरहा को शालिनी के लिए की गई यह टिप्पणी बुरी लगी। वह बोली, "तुम इतना अच्छा नृत्य करती हो। तुम रंग गोरा करने के लिए कोई क्रीम क्यों नहीं उपयोग में लेती? क्या तुम कल्पना कर सकती

हो कि यदि तुम्हारा रंग गोरा होता तो तुम मंच पर कितनी अच्छी लगती?" शालिनी मुस्कराई और बोली, "धन्यवाद फरहा, मैं तुम्हारी चिंता की सराहना करती हूँ। परन्तु मेरा रंग जैसा है, मैं उससे खुश हूँ। मेरी शिक्षक और मैं अपने नृत्य अभ्यास पर बहुत मेहनत कर रहे हैं और मुझे विश्वास है कि हमारे प्रयास और तुम्हारी शुभकामनाओं से हमारी प्रस्तुति अच्छी होगी।"

परिचर्चा के लिए प्रश्न

1. आप शालिनी के सम्बन्ध में अनिता की टिप्पणी के बारे में क्या सोचते हैं?
2. क्या आपके विचार से फरहा की टिप्पणी झूठी रूढ़िवादी धारणा (सुंदर होने के लिए गोरा रंग आवश्यक है) पर आधारित है, या यह तथ्यों पर आधारित है? अपना उत्तर स्पष्ट करें।
3. शालिनी का उत्तर क्या इंगित करता है कि उसकी छवि सकारात्मक है या नकारात्मक? अपने उत्तर के पक्ष में कारण दें।
4. आपके विचार से क्या शालिनी संप्रेषण की अपनी सकारात्मक शैली के साथ एक परिपक्व व्यक्ति है?

केस अध्ययन 2

रॉबिन कक्षा XI का विद्यार्थी है। वह छोटे कद का और दुबला-पतला है। शारीरिक रूप से कक्षा का सबसे छोटा लड़का है। यद्यपि वह फुटबाल खेलना पसंद करता है, परन्तु स्कूल की टीम में उसका चयन कभी नहीं हुआ। वह काफी तेज है और कुशल है, परन्तु कोच उसे हमेशा यह कहकर अस्वीकार कर देता/ती है कि उसे दूसरे खिलाड़ी आसानी से धक्का मार कर गिरा देंगे, जो उससे बहुत बड़े हैं। एक दिन सड़क के किनारे रॉबिन दवाइयों वाले एक आदमी के टेंट के बाहर एक विज्ञापन देखता है। उसके एक चित्र में दुबला, कमज़ोर दिखने वाला लड़का दिखाया गया है और दूसरे में एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति दिखाया गया है। विज्ञापन यह दावा करता है कि जादुई दवा से यह परिवर्तन हो सकता है। रॉबिन यह दवा लेकर देखना चाहता है, परन्तु वह डरता भी है।

1. आपके विचार से रॉबिन अपनी कक्षा के दूसरे लड़कों से अलग क्यों दिखता है ?
2. क्या आपके विचार से रॉबिन फुटबाल का एक अच्छा खिलाड़ी बन सकता है और कोच को उसे एक अवसर देना चाहिए ?
3. क्या आपके विचार से रॉबिन को जादुई दवा लेनी चाहिए जो किसी को भी हृष्ट-पुष्ट बना देने का दावा करती है ?
4. यदि आप रॉबिन के स्थान पर होते, तो क्या करते ?
5. क्या आप सोचते हैं कि माता या पिता या शिक्षक को किसी न किसी प्रकार रॉबिन की मदद करनी चाहिए ? यदि हॉ, तो किस तरह ?

प्रस्तुतिकरण के बाद इस पर बल दें कि –

- कुछ गुण परिवर्तित नहीं हो सकते (जैसे रंग)। यह महत्वपूर्ण है कि युवाओं में समाज या मीडिया द्वारा स्थापित छवियों की नकल करने पर बल देने के बजाए अपनी विशिष्ट छवि को महत्व देने का स्वाभिमान होना चाहिए।
- बड़े होने की प्रक्रिया में बहुत से पूर्वाग्रह और हानिकारक रूढ़ियाँ जुड़ी हुई हैं जिन पर चर्चा करने और उनका विरोध करने की आवश्यकता है।
- पूर्वाग्रहों और बड़े होने की प्रक्रिया संबंधी अज्ञान के कारण लोग कभी-कभी हानिकारक और अप्रभावी वाणिज्यिक उत्पादों की तरफ आकर्षित हो जाते हैं जो उनके बढ़ने की प्रक्रिया को तेज करने का दावा करते हैं। उदाहरण के लिए कुछ उत्पाद बिना किसी आहार और व्यायाम के ही ऊँचाई और माँस पेशियों में वृद्धि का दावा करते हैं।

- इसी प्रकार सौंदर्य प्रसाधनों और ब्यूटी पार्लरों के विज्ञापन पूर्वाग्रहों को और मजदूती देते हैं और शारीरिक रंग-रूप को अत्यधिक महत्व देते हैं जिससे चिंता, अपूर्णता और स्वाभिमान की कमी की अनुभूति होती है। जैसा कि शालिनी के मामले में हैं, इस प्रकार के सभी पूर्वाग्रहों और दबावों का विरोध करना चाहिए और जो आप हैं व जैसे दिखते हैं उस पर आत्मविश्वास होना चाहिए।
- कभी-कभी किशोरों को अपने अन्य साथियों से भिन्न दिखाई देने पर शर्म महसूस होती है। हो सकता है कि वे दूसरों की अपेक्षा तेजी से या धीमे परिपक्व हो रहे हों, और यह भिन्नता साथियों द्वारा तंग करने और खिल्ली उड़ाने का कारण बन सकती है। दूसरी ओर, साथियों के समूह में से कोई (या कोई वयस्क) एक संतुलित दृष्टिकोण सामने रख सकता/ती है और समूह में प्रत्येक को सकारात्मक और सामान्य रहने में मदद कर सकता/ती है।

यौन संबंधी मामलों में जिज्ञासा और उत्तरदायी यौन व्यवहार

युवा प्रबल शारीरिक आकर्षण का अनुभव कर सकते हैं। यह बड़े होने की सामान्य प्रक्रिया का भाग है। परन्तु सभी आकर्षण यौन आकर्षण के वर्ग में नहीं रखे जा सकते। किशोर लड़के और लड़कियाँ परस्पर बातचीत करना, एक दूसरे की प्रतिभा और सुंदरता की प्रशंसा करना और मित्रता तथा सद्भाव के संकेत के रूप में अपनी किताबें तथा नोट्स साझा करना चाहेंगे।

यह महत्वपूर्ण है कि युवाओं को यौन संबंधी मामलों मे सही, संस्कृति के अनुकूल और आयु के उपयुक्त जानकारी दी जाए। यह युवाओं को अपने जीवन में उत्तरदायी संबंधों के लिए जानकारी देगी और तैयार करेगी, जो कि समानता, आदर, स्वीकृति और विश्वास पर आधारित है। जानकारी के विश्वसनीय स्त्रोतों के अभाव में युवा गुमराह हो सकते हैं। परिणामस्वरूप वे अनुत्तरदायी और शोषणकारी संबंधों के शिकार या कर्ता बन सकते हैं।

यौन व्यवहार अक्सर सामाजिक मानदंडों से प्रभावित होते हैं जिनमें से अधिकांश स्थानीय संदर्भ द्वारा निर्धारित किए जाते हैं। कुछ समाजों में विवाह-पूर्व यौन संबंधों को ठीक नहीं समझा जाता। यह परिप्रेक्ष्य युवाओं की सुरक्षा और कल्याण के लिए सरोकारों में निहित हो सकता है और इस धारणा से निर्देशित है कि प्रत्येक व्यक्ति को यौन संबंध स्थापित करने से पहले परिपक्वता के एक स्तर (जैविक आयु और वयस्क चिंतन प्रक्रिया के संदर्भ में) पर पहुँच जाना चाहिए, ताकि उनका उत्पीड़न या शोषण न हो। परन्तु सही जानकारी और कौशलों से युक्त होने पर, यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि अपने संदर्भों में इन निर्णयों पर पहुँचे और उनका उत्तरदायित्व संभाले।

प्रयोग करने की आयु

किशोरावस्था प्रयोग करने और नई चीज़ें सीखने की आयु है। जबकि यह एक सकारात्मक गुण है, परन्तु इसमें कुछ संभावित खतरे भी हैं। मीडिया या साथियों का दबाव किसी विशिष्ट व्यवहार को महिमा मण्डित कर सकता है जो वास्तव में हानिकारक होता है। कभी-कभी उन्हें जोखिमपूर्ण व्यवहार के साथ प्रयोग करने के लिए उकसाया जाता है, जैसे धूम्रपान, मादक पदार्थ का सेवन और शराब पीना और/अथवा असुरक्षित यौन कार्य। यद्यपि ऐसे व्यवहार प्रयोग के रूप में शुरू होते हैं, किन्तु कुछ युवा बच्चे इसमें इसके परिणाम जाने बिना जीवन भर के लिए फँस भी सकते हैं। वयस्कों की नकल करना इस प्रकार के जोखिमपूर्ण व्यवहार में परिणत हो सकता है। अत: किशोरों को सही, संस्कृति अनुकूल और उपयुक्त जानकारी द्वारा सबल बनाना महत्वपूर्ण है ताकि वे वास्तविक जीवन परिस्थितियों के प्रति प्रभावी रूप से प्रतिक्रिया करने योग्य बन सकें।

परिवार से दूरी और नए संबंधों का निर्माण

किशोरावस्था में लोग अपने परिवार के बाहर संबंध बनाने लगते हैं और इसमें हमउम्र साथियों का विशेष स्थान रहता है। उनमें अपनेपन का प्रबल बोध विकसित हो जाता है और विभिन्न मुद्दों पर उनके अपने दृष्टिकोण और भावनाएँ होती हैं, जो अक्सर उनके माता-पिता के विचारों से मेल नहीं खातीं। ये गुण युवाओं को स्वतंत्र और उत्तरदायी निर्णय लेने हेतु तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

माता-पिता को अपने बच्चों के वयस्कों जैसे इन गुणों को स्वीकार करने में कठिनाई आती है, जब वे प्रश्न पूछते हैं, कारण बताते हैं और कभी-कभी कहना मानने के बजाए तर्क करते हैं। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने किशोर बच्चों में इन परिवर्तनों को स्वीकार करें। माता-पिता को लग सकता है कि उनके किशोर बच्चे उनके विचारों को महत्व नहीं देते। संभव है कि यह सत्य न हो। जबकि, संभव है कि किशोरों को उनके माता-पिता के समय और सलाह की पहले से भी ज्यादा आवश्यकता हो। परन्तु माता-पिता और किशोरों की पारस्परिक क्रियाओं के लिए कुछ निदेशक सिद्धांत पुन: स्थापित करना महत्वपूर्ण हो सकता है।

माता-पिता के लिए यह महत्वपूर्ण होगा कि अपने किशोर बच्चों से प्रश्न करने और उनसे आज्ञा मानने की अपेक्षा रखने के बजाय, वे उन बच्चों के साथ समानता का व्यवहार करें, उन्हें सुनें, उनके विचारों का आदर करें, उन पर विश्वास करें और अपने सुझावों के लिए तर्क दें। इसी प्रकार, किशोरों का भी यह उत्तरदायित्व है कि वे अपने माता-पिता के विचारों को सुनें, उनके सुझावों पर ध्यानपूर्वक विचार करें और फिर अपना दृष्टिकोण और भावनाएँ स्पष्ट रूप से और आदरपूर्वक उनके सामने रखें। यह माता-पिता तथा किशोरों के संबंधों में सामंजस्य स्थापित करने में सहायक होगा। किशोर अक्सर वयस्कों जैसा व्यवहार करना और स्वतंत्र निर्णय लेना चाहते हैं। आत्मनिर्भर बनने और अपनी पहचान विकसित करने के प्रयास में किशोर धीरे-धीरे अपने माता-पिता से दूरी बनाने लगते हैं और अपनी राय विकसित करना, निर्णय लेना और अपनी योजनाएँ बनाना प्रारम्भ कर देते हैं।

हमउम्र साथी-समूह से संबंध

किशोर अपने परिवारों से दूर होना आरम्भ कर देते हैं तथा वे अपने हमउम्र साथियों (मित्रों/परिचितों) को अधिक महत्व देना आरम्भ कर देते हैं। वे अक्सर सहमति प्राप्त करने के लिए अपने हमउम्र समूह की ओर देखते हैं और उस सहमति की प्राप्ति के लिए अपना व्यवहार तक बदल सकते हैं। साथियों का प्रभाव उन्हें अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने में मदद करता है और कई रूपों में यह सकारात्मक भी हो सकता है। इससे व्यक्ति को सोचने के नए तरीके, जीने के भिन्न तरीके और नए विचारों के साथ-साथ विविध दृष्टिकोण भी प्राप्त होते हैं। साथी समूह किशोरों को उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू खोजने, भावनाओं और मित्रता ढूंढने, साथ यात्रा करने, कार्य और जीविका पर चर्चा करने, रचनात्मक गतिविधियाँ करने और मौज-मस्ती के लिए अवसर उपलब्ध कराता है।

लेकिन, साथियों का प्रभाव नकारात्मक भी हो सकता है। पहले हुई चर्चा में यह देखा गया है कि जो युवा धूम्रपान करने या मादक द्रव्य लेने का प्रयोग करते हैं, ऐसा वे साथियों के दबाव में आकर ही करते हैं।

रूढ़ियों को समझना और उनका सामना करना

विद्यालय युवाओं को यौन उत्पीड़न और दुर्व्यवहार से बचाने के लिए और इससे निपटने के लिए सबल बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। आइए इन पर केस अध्ययनों के माध्यम से चर्चा करते हैं। सभी शिक्षार्थियों को 5-6 सदस्यों वाले समूहों मे बाँट दें। प्रत्येक समूह एक केस अध्ययन पर कार्य करेगा। एक से अधिक समूहों को एक ही केस अध्ययन मिल

सकता है।

केस अध्ययन 1

दो मित्र डी और ई रात के समय एक सुनसान सड़क पर पैदल जा रहे हैं। अचानक एक चोर उनके सामने आता है, उन्हें चाकू दिखाता है और कड़क आवाज़ मे कहता है कि जो भी पैसे उनके पास हैं वे उसके हवाले कर दें। डी उल्टी दिशा में भागना शुरू कर देता है, जबकि ई चोर का हाथ पकड़ता है और उसे जोर से घूँसा मारता है और चोर को चाकू गिराने पर मजबूर कर देता है। चोर चाकू को वहीं छोड़ कर भाग जाता है।

1. प्रत्येक समूह से कहें कि वे दिए गए केस अध्ययन में पात्रों को नाम दें।
2. पात्रों के नाम महिलाओं या पुरुषों वाले रखने पर चर्चा करें।

केस अध्ययन 2

रेहाना अपने गाँव की एकमात्र लड़की है जो पढ़ने के लिए उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जाती है। विद्यालय उसके घर से काफी दूर है। उसे सार्वजनिक बस की प्रतीक्षा करनी पड़ती है जो विद्यालय पहुंचने में लगभग एक घंटे का समय ले लेती है। रेहाना पढ़ने में अच्छी है। उसके शिक्षक कहते हैं कि उसका भविष्य उज्ज्वल है। उसके माता-पिता उसे स्कूल भेजने को राज़ी हो गए, परन्तु इस शर्त पर कि वह प्रतिदिन समय पर (अंधेरा होने से पहले) घर पहुँच जाएगी। उसकी कक्षाएँ प्रात: 10 बजे से दोपहर 4 बजे तक होती हैं और कभी-कभी यदि बस समय पर नहीं आती तो उसे घर पहुँचने में देरी हो जाती है। प्रतिदिन उसे घर समय पर पहुँचने का तनाव बना रहता है।

1. आपके विचार से रेहाना के माता-पिता क्यों इतने सख्त हैं कि उसे प्रतिदिन समय पर घर पहुँच जाना चाहिए? तीन या चार संभव कारण बताएँ।
2. रेहाना के तनाव के लिए उत्तरदायी कौन है? क्या रेहाना स्वयं, उसके माता-पिता, स्कूल तंत्र या सड़कों पर और बसों में सुरक्षा की कमी अथवा कोई अन्य कारक?
3. यदि आप रेहाना के स्थान पर होते, तो क्या आप विद्यालय जाना जारी रखते? क्यों अथवा क्यों नहीं?
4. कोई तीन तरीके सुझाइए जिनमें रेहाना की स्थिति में सुधार लााया जा सकता हो, ताकि वह बिना अधिक तनाव के विद्यालय जाना जारी रख सके।

केस अध्ययन 3

रीना 16 वर्ष की लड़की है और वह कक्षा X में पढ़ती है। उसकी कक्षा का एक लड़का हेमंत कुछ समय से उसका पीछा कर रहा है। वह रीना से शादी का प्रस्ताव भी रख चुका है और रीना ने उसके प्रस्ताव को नकार दिया। फिर भी, यह लड़का उसे यह कह कर तंग करता रहा कि ''जब लड़की न कहती है तो उसका मतलब हाँ होता है।'' रीना बहुत गुस्से में है। वह अपने शिक्षक को बताना चाहती है, परन्तु डरती है कि शिक्षक शायद यह सब न समझ सके।

परिचर्चा के लिए प्रश्न

1. आपके विचार से हेमंत यह टिप्पणी क्यों करता है, ''जब लड़की न कहती है, तो उसका मतलब हाँ होता है''? आप इस टिप्पणी के बारे में क्या सोचते हैं?
2. आप हेमंत को क्या सलाह देते, अगर वह आपका मित्र होता?

3. आप रीना को क्या सलाह देते, अगर वह आपकी मित्र होती?

केस अध्ययन 4

चौदह वर्षीय रवि के अपने माता-पिता के साथ संबंध ठीक नहीं थे। जिस कारण, वह लम्बे समय तक घर से बाहर रहता था। वह अपने से कुछ बड़े लड़कों के समूह के साथ घूमता रहता था जो जोखिमपूर्ण आदतों में व्यस्त रहते थे। रवि उनकी ओर आकर्षित हो जाता है और साथ ही वह तय नहीं कर पा रहा था कि वह उनके साथ जोखिमपूर्ण आदतों में शामिल हो या नहीं। वह उलझन में था और नहीं जानता था कि मदद और सलाह के लिए किसके पास जाए।

1. वे कौन से सम्भावित खतरे थे जिनमें रवि फँस सकता था, विशेष रूप से एच० आई० वी० के सदंर्भ में?
2. इस स्थिति में, क्या रवि के माता-पिता कुछ अधिक सहायता वाली भूमिका निभा सकते थे? यदि हाँ, तो स्पष्ट करें कि उन्होनें क्या किया होता?

निम्नलिखित पर बल दें:

- उत्पीड़न विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं – भावात्मक, शारीरिक, आर्थिक और यौन संबंधी।
- ऐसा सभी प्रकार के लोगों के साथ हो सकता है, चाहे वह किसी भी वर्ग, जाति, शैक्षिक स्तर, शहरी- ग्रामीण क्षेत्रों के हों। लड़के और लड़कियाँ दोनों ही यौन उत्पीड़न के शिकार हो सकते हैं।
- बाल यौन उत्पीड़न पूरे विश्व में, विभिन्न संस्कृतियों और समाजों में व्याप्त है। बाल यौन उत्पीड़न किसी व्यक्ति द्वारा की जाने वाली कोई भी उत्पीड़क यौन गतिविधि हो सकती है जो वह बालक पर अपनी शक्ति का प्रयोग कर, अपनी आयु, बल, पद या संबंध के उपयोग से अपने यौन संबंधी या भावात्मक आवश्यकताओं को पूरा कररने के लिए बच्चे का उपयोग करता है।
- अभी हाल ही में भारत में किए गए राष्ट्रव्यापी सर्वे में, जिसमें 13 राज्यों के 12,447 बच्चों ने भाग लिया; 50% बच्चों ने यौन उत्पीड़न के किसी न किसी रूप को उजागर किया। 53 प्रतिशत शिकार लड़के थे (बाल उत्पीड़न पर अध्ययन, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, 2007) इसे आप http://wed.nic.in/publications, पृष्ठ 71-102 पर प्राप्त कर सकते हैं।
- अक्सर, उत्पीड़क कोई संबंधी या पारिवारिक मित्र या शक्तिशाली पद वाला व्यक्ति होता है। यह बहुत कठिन कार्य है कि शिकार व्यक्ति अपना अनुभव किसी के साथ साझा करे और उत्पीड़क की पहचान बताए।
- यौन उत्पीड़न और दुर्व्यवहार की घटनाओं को डर, शर्म, अपराध बोध या दोषारोपण और विश्वास नहीं किए जाने की आशंका से रिपोर्ट नहीं किया जाता। पीड़ित को दोष देने के बजाए उसे हर संभव मदद दी जानी चाहिए।
- यौन उत्पीड़न और दुर्व्यवहार को रोकने में विद्यालयों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। माता-पिता और शिक्षक इस प्रकार की व्यवस्था स्थापित कर सकते हैं जिससे यौन उत्पीड़न को रिपोर्ट करना सहज हो सके और शिकायत करने वालों को मदद मिल सके।

किशोरों के शिकार होने की संभावनाएं: मेद्यता

केस अध्ययन 1

मोहित 10 वर्ष का है। उसके अंकल अक्सर उसके घर आते हैं और वहाँ ठहरते हैं। वे मोहित के लिए बहुत-सी टॉफियाँ और बिस्कुट लाते हैं। वे हमेशा मोहित के कमरे में सोने के लिए जोर देते हैं। कभी-कभी वे मोहित को स्पर्श करने का प्रयास करते हैं जिसे मोहित पसंद नहीं करता। मोहित के माता-पिता ने महसूस किया कि मोहित बहुत चुप और खिंचा-खिंचा सा रहने लगा है, परन्तु उन्हें कुछ बताता नहीं है।

परिचर्चा के लिए प्रश्न

- आपके विचार से मोहित अपने अंकल के व्यवहार से असहज क्यों है?
- मोहित के माता-पिता को क्या करना चाहिए जब उन्हें पता चले कि वह बहुत चुप और खिंचा-खिंचा सा रहने लगा है?
- आपके विचार से मोहित अपने माता-पिता को सारी बात क्यों नहीं बताता?
- क्या मोहित के अंकल उससे दुर्व्यवहार कर रहे थे? अपना उत्तर स्पष्ट करें।

केस अध्ययन 2

17 वर्षीय महेश की पिछले पाँच वर्षों से उसके पड़ोस में लड़कों के एक समूह से मित्रता है। उसके मित्र उस पर दबाव डालते हैं कि वह इंजेक्शन द्वारा मादक पदार्थ ले। वह मना करता है, परन्तु जब वे उसका मज़ाक बनाने लगते हैं तो वह प्रयोग के रूप में इंजेक्शन द्वारा नशीला पदार्थ लेने के लिए तैयार हो जाता है, क्योंकि वह समूह से अलग दिखना नहीं चाहता। वह उसी सुई का प्रयोग करता है जो दूसरे लड़के करते हैं और उस अनुभूति का आनंद लेता है। जल्द ही वह इंजेक्शन द्वारा लिए जाने वाले नशीले पदार्थ का आदी हो जाता है।

1. महेश के निर्णय को प्रभावित करने में उसके तथा-कथित मित्रों की क्या भूमिका थी?
2. क्या महेश अलग तरह से व्यवहार कर सकता था? यदि हाँ, तो वह क्या कर सकता था?

केस अध्ययन 3

गुड़िया अपनी माँ और दादी दोनों को तंबाकू चबाने का आनंद लेते हुए देखती थी। जब वह बारह साल की हो गई तो उसने महसूस किया कि वह अब इतनी बड़ी हो गई है कि वह गुटखा/तंबाकू और पान खाना शुरू कर दे। गुड़िया को मालूम है कि नुक्कड़ की दुकान वाला गुटखा रखता है और वह उससे गुटखा खरीद लेती है।

परिचर्चा के लिए प्रश्न

1. गुड़िया और उसकी माँ के बीच 2-3 मिनट की बातचीत को नाट्यरूप में प्रस्तुत करें, जिसमें माँ गुड़िया को नशे की

आदत डालने से रोकती है।

2. ऊपर दिए गए केस अध्ययन का उपयोग करते हुए किशोरों के नशीले पदार्थों का सेवन प्रारम्भ करने में परिवार की भूमिका बताइए।
3. आपके विचार से गुड़िया को क्यों अपनी माँ की बात माननी चाहिए और पान तथा गुटखा/तंबाकू चबाने का मोह छोड़ देना चाहिए?

केस अध्ययन 4

मुकेश के पिता शराबी थे। वे परिवार में किसी से बातचीत नहीं करते थे और उसके माता-पिता के बीच हमेशा लड़ाई चलती रहती थी। मुकेश तंग आ गया और उसने शराब पीना शुरू कर दिया, क्योंकि उसने सोचा कि यह उसे घर के तनावों से मुक्ति दिलाएगा। यद्यपि वह कुछ देर के लिए अपनी समस्याएँ और तनाव भूल जाता था, परन्तु समस्याएँ तो बनी रहीं और वास्तव में समय के साथ बद से बदतर होती चली गईं।

परिचर्चा के लिए प्रश्न

1. कौन-कौन मुकेश की शराब पीने की आदत के लिए उत्तरदायी हैं?
2. मुकेश के पास क्या विकल्प थे?
3. आप मुकेश के स्थान पर होते तो क्या करते?

इस बात पर बल दें कि,

- किशोरों की आयु ऐसी होती है कि वे प्रयोग करने के प्रति अति-संवेदनशील हो जाते हैं और नई चीजों को खोजने हेतु बहुत जिज्ञासु बन जाते हैं।
- किशोर इतने परिपक्व नहीं होते कि वे प्रजनन अथवा माता या पिता बनने का उत्तरदायित्व सम्भाल सकें। अत: यदि कोई लड़की किशोरावस्था में गर्भधारण कर लेती है और माँ बन जाती है, तो यह उसके स्वास्थ्य के लिए भारी खतरा हो सकता है। इससे अन्य समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं जो शिक्षा, आर्थिक उत्पादकता और सामाजिक-आर्थिक स्वतंत्रता के संदर्भ में युवा महिला के लिए अवसरों को सीमित कर सकती हैं।
- अत: यह महत्वपूर्ण है कि हम किशोरों को सही जानकारी दें कि एच०आई०वी० कैसे संचारित होता है। माता-पिता सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं जिनकी ओर किशोर सहायता के लिए देखते हैं। एच०आई०वी० से बचाव में विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। किशोर मार्गदर्शन के लिए अपने शिक्षकों से अपेक्षा रखते हैं उन्हें समझाएँ कि:

एच०आई०वी० संक्रमित साथी के साथ असुरक्षित यौन संबंध बनाने से, संक्रमित सुई से, संक्रमित रक्त या रक्त उत्पादों से और संक्रमित माँ से अजन्मे बच्चें में संचारित होता है।	एच०आई०वी० किस प्रकार संचारित नहीं होता? • एच०आई०वी० पॉजिटिव व्यक्ति के साथ हाथ मिलाने से • एच०आई०वी० पॉजिटिव व्यक्ति को चूमने या गले लगाने से • एच०आई०वी० पॉजिटिव व्यक्ति के साथ कप, प्लेट या अन्य खाने के बर्तन साझा करने से • एच०आई०वी० पॉजिटिव व्यक्ति के साथ शौचालय और स्नानघर सुविधाएँ साझा करने से • खाँसने या छींकने या वायु जिसमें हम साँस लेते हैं • उस कक्षा या कैंटीन में बैठने से जिसमें कोई एच०आई०वी० पॉजिटिव व्यक्ति बैठा/ठी हो • एच०आई०वी० पॉजिटिव व्यक्ति के साथ उपकरण या मशीनरी साझा करने पर • एच०आई०वी० पॉजिटिव व्यक्ति के साथ तरणताल में नहाने अथवा खेलने से • रक्त दान करने से (रोगाणुहीन या नई सुइयों से) • किसी कीट जैसे– मच्छर, खटमल आदि के काटने से।

किशोरों की पोषण संबंधी आवश्यकताएँ

किशोरावस्था को तीव्र वृद्धि और विकास की अवस्था के रूप में भली-भांति पहचान लिया गया है। पोषण इस अवस्था में होने वाली वृद्धि और विकास के लिए एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। उदाहरण के लिए, उपयुक्त पोषण शारीरिक वृद्धि, हड्डियों की अपेक्षित ताकत प्राप्त करने और समय पर प्रजनन और यौन परिपक्वता प्राप्त करने में मदद करता है। ध्यान रखें कि –

- एक अच्छा संतुलित आहार, जिसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन और खनिजों की उपयुक्त मात्रा हो, प्रत्येक किशोर के लिए आवश्यक है। ये सभी पोषक तत्व विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों जैसे चावल या रोटी, दाल, हरी सब्जी, दूध, फल, मूँगफली, फली, अनाज, मछली, अंडा, माँस आदि में होते हैं। यह आवश्यक है कि हम इन्हें सही मात्रा में अपने आहार में लें। बहुत से स्थानीय रूप से उपलब्ध सस्ते और मौसमी खाद्य पदार्थ होते हैं, उन्हें अवश्य भोजन में शामिल किया जाना चाहिए।
- हर क्षेत्र में कुछ पोषक खाद्य पदार्थ उपलब्ध होते हैं, इनके बारे में जानकारी लेनी चाहिए और प्रतिदिन भोजन में एक भाग के रूप में इन्हें शामिल करना चाहिए। उदाहरण के लिए बाजरा, रागी, कैल्सियम से भरपूर स्त्रोत हैं और भारत के अधिकतर भागों में मिलते हैं।
- डिब्बा बंद और तले हुए खाद्य पदार्थ स्वादिष्ट हो सकते हैं, परन्तु इन्हें नियमित भोजन के स्थान पर न लें क्योंकि इनमें पोषक तत्वों की उपयुक्त मात्रा नहीं होती।
- बॉडी मास इंडेक्स (BMI) का उपयोग यह निर्धारित करने हेतु किया जाता है कि किसी व्यक्ति का भार कम है, सामान्य है या अधिक है और इसका निम्नलिखित सारणी से आसानी पता चल जाता है। बी०एम०आई० शरीर के भार और लम्बाई संबंधी माप है। इसे निम्नलिखित सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है –
- बी०एम०आई० = किलोग्राम में भार/(मीटर में ऊँचाई)^2

बी०एम०आई०	वर्ग
<18.5	कम भार
18.5-24.9	सामान्य भार
25-29.9	अधिक भार
>30.0	मोटापा

कुछ सामान्य पोषण संबंधी रोग/विकार : पोषण संबंध रक्त क्षीणता (अनीमिया)

लाल रक्त कोशिकाओं में हीमोग्लोबिन की कमी के कारण रक्त की ऑक्सीजन–वाहक क्षमता में कमी अनीमिया कहलाती है। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि किशोरावस्था में रक्त के आयतन और पेशियों के भार में तीव्र विस्तार के कारण शरीर में लौह तत्व की आवश्यकता में वृद्धि हो जाती है। अत: किशोरों को लौह तत्व युक्त भोजन, हरी पत्तेदार सब्जियाँ, गुड़, माँस के साथ विटामिन C के स्त्रोत जैसे खट्टे फल, संतरे, नींबू और आँवला खाने चाहिए। आयरन (लौह तत्व) की कमी से अनीमिया हो जाता है, जिससे शरीर में थकावट और सुस्ती रहती है। यदि इलाज न करवाया तो इसके दीर्घकालीन हानिकारक परिणाम हो सकते हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS, 2005-06) के परिणाम बताते हैं कि सर्वेक्षण के समय 1.5 से 24 वर्ष आयु समूह की 56% महिलाएँ और 25 % पुरुष अनीमिया से पीड़ित थे।

क्षुधातिशयता तंत्रिकांश (Bulimia Nervosa)

पोषण संबंधी रोग से पीड़ित किशोर जरूरत से अधिक खा लेते हैं और फिर उल्टी करके या रेचक (लैक्जेटिव) ले कर उन्हें निकालते हैं ताकि भार न बढ़े। यह क्षुधातिशयता तंत्रिकांश कहलाता है, यह खाने से संबंधित एक विकार है जो चिंता, तनाव या भार बढ़ने के कारण हो जाता है।

क्षुधा-अभाव तंत्रिकांश (Anorexia Nervosa)

क्षुधा-अभाव से ग्रसित किशोरों को भार वृद्धि का गम्भीर डर बना रहता है और वे अपने भोजन की मात्रा कम या व्रत रख कर भार सीमित करते हैं और कभी-कभी आवश्यकता से अधिक व्यायाम भी करते हैं। क्षुधा-अभाव तंत्रिकांश बहुत अधिक विकृत शारीरिक छवि के डर से स्वयं को भूखा रखना है।

व्यक्तियों में भावात्मक और शारीरिक परिवर्तनों की अपर्याप्त स्वीकृति, मीडिया निर्मित छवि, साथियों के दबाव, पढ़ाई के कारण तनाव और बड़ों के अपर्याप्त मार्गदर्शन के कारण होते हैं। लड़कियों और महिलाओं की मीडिया निर्मित छवियाँ- पतला आदर्श शरीर, एक प्रमुख कारण है जिससे बहुत सी लड़कियाँ और युवा महिलाएँ रोग ग्रस्त हो जाती हैं इससे उनके रजोधर्म का प्रारंभ भी देरी से होता है, जिसके गम्भीर परिणाम होते हैं, जैसे ऐंठन, वृक्क ह्रास (renal failure), अनियमित धड़कन और अस्थि सुषिरता (Osteporosis)।

किशोरों की पोषण संबंधी आवश्यकता में लापरवाही करने से उन्हें कुपोषण संबंधी स्वास्थ्य की बहुत सी समस्याएँ हो जाती हैं। समाज में विद्यमान जेंडर भेद-भाव और रूढ़िबद्धता के कारण किशोर लड़कियों में न्यून पोषण एक गम्भीर समस्या है। इसके अलावा न्यून पोषित किशोर लड़कियों को गर्भावस्था और बच्चे के जन्म के समय गम्भीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इन दोनों स्थितियों में सुधार न करने पर स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं। इसके कुछ लक्षण हैं– कमजोरी, बालों का झड़ना, निम्न रक्तचाप, नाखूनों का भंगुर होना, अनीमिया, अवसाद, सुस्ती और रेचक (लैक्जेटिव) का अधिक उपयोग।

संतुलित आहार का अर्थ होता है– प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन उपयुक्त मात्रा में लेना।

किसी योग्य व्यक्ति (पोषण-विशेषज्ञ, डॉक्टर) के परामर्श के अभाव में कठोर आहार योजनाएं और पतले होने की दवाइयां हानिकारक हो सकती हैं। लड़कियो के लिए पतला होने और लड़कों के लिए लम्बा और हृष्ट-पुष्ट होने के विज्ञापन युवाओं को अस्वास्थ्यकर भोजन विकल्पों की ओर ले जा सकते हैं।

खान-पान की स्वस्थ आदतों में शामिल हैं –

- धीरे-धीरे और अच्छी तरह चबाकर खाना
- खाना खाते समय टी०वी० देखने या पढ़ने से बचना
- एक संतुलित आहार लेना जिसमें विभिन्न खाद्य समूह उचित मात्रा में हों
- सही अनुपात में और सही अंतराल से खाना
- न भोजन को छोड़ना और न ही आवश्यकता से अधिक खाना
- पर्याप्त मात्रा में पानी पीना (8 से 10 गिलास प्रतिदिन)

निष्कर्ष

किशोरावस्था शिक्षा एक नया और विशिष्ट पाठ्यचर्यीय क्षेत्र है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशलों के विकास के लिए संप्रेषण कार्यनीतियाँ प्रारम्भ करने हेतु विशेष प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। पाठ्यचर्या संप्रेषण की कार्यनीतियों और विधियों को सावधानी से तय किए जाने की आवश्यकता है। इसका मूल कारण इस क्षेत्र के निम्नलिखित लक्षण हैं–

- जीवन कौशल विकास पर मुख्य रूप से केंद्रित किशोरावस्था शिक्षा, वास्तविक जीवन की परिस्थितियों का सामना करने के लिए शिक्षार्थियों की प्रमुख आवश्यकता के रूप में उभरने के बावजूद पाठ्यचर्या में इसे बहुत कम स्थान दिया गया है।
- इसकी कुछ विषय वस्तु बहुत संवेदनशील प्रकृति की है और इससे जुड़े लोगों (शिक्षक, प्राचार्य, माता-पिता तथा समाज के अन्य लोग) को इन तत्वों से संकोच है या उनमें इसके विभिन्न पक्षों के प्रति स्वीकार्यता नहीं है।
- शैक्षिक क्षेत्र किशोरों के सामने आने वाली समस्याओं पर केंद्रित है, जिन्हें कभी-कभी गलती से एक संभागी समूह मान लिया जाता है। उनकी आयु, अनुभवों और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में परिवर्तनशीलता उनकी विषमांगी प्रकृति की ओर संकेत करता है।
- किशोरावस्था शिक्षा मूल रूप से गैर-संज्ञानात्मक क्षेत्र को प्रभावित करने और शिक्षार्थियों के जीवन कौशलों के विकास पर लक्षित है। इसे ऐसी संप्रेषण कार्यनीतियों की आवश्यकता है जो अनुभवजन्य अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न करती हों और मूल रूप से अंत:क्रियात्मक हों।
- यद्यपि लोग किशोरों को विवेकपूर्ण और उत्तरदायी निर्णय लेने में सबल बनाने की आवश्यकता को महसूस कर रहे हैं, परन्तु सालों पुरानी वर्जनाओं और आशंकाओं को चुनौती देने और किशोरावस्था शिक्षा के लिए एक समर्थ वातावरण बनाने के लिए सतत प्रयासों की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन०सी०एफ०) 2005 की सामग्री सहभागी शिक्षण-अधिगम को प्रोत्साहन देती है, जिससे शिक्षण-अधिगम विधियों की स्थापना के लिए एक सहायक वातावरण तैयार हो और जिससे पाठ्यचर्या की मुख्यधारा में जीवन कौशलों का विकास हो सके। किशोरावस्था शिक्षा की विषय-वस्तु के संप्रेषण हेतु निम्नलिखित शिक्षण विधियों को अपनाए जाने की आवश्यकता है– पूछताछ एवं खोज विधि, मूल्य स्पष्टीकरण, केस अध्ययन, भूमिका निर्वाह (रोल प्ले), वाद-विवाद, समूह परिचर्चा, प्रश्न कोष्ठक, परामर्श और साथी शिक्षा तथा दृश्य-श्रव्य/मुद्रण सामग्री।

जीवन कौशलों के विकास के लिए शैक्षिक हस्तक्षेप शिक्षार्थियों को किसी विशिष्ट संदर्भ; जैसे प्रश्न पूछना, विभेद करना, धमकाना या नकारात्मक साथी-दबाव, विरोध करना आदि सक्षम बनाने पर केंद्रित होना चाहिए। अत: एक ऐसी विद्या या शिक्षाशास्त्र को उपयोग में लाना आवश्यक है जो अनुभवजन्य अधिगम पर विशेष जोर देते हुए एक शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में जीवन कौशलों के विकास को शामिल करे। शिक्षार्थियों को गत्यात्मक शिक्षण-अधिगम की दोनों प्रक्रियाओं– सक्रिय और अनुभवजन्य में संलग्न करने की आवश्यकता है।

भाग II
सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम

भाग II

सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम

सामाजिक विज्ञान प्रारंभिक स्तर से लेकर विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यालयी पाठ्यचर्या का एक अभिन्न अंग है। तेजी से बढ़ते सेवा क्षेत्रों में सामाजिक विज्ञान के महत्व को केवल रोज़गार की दृष्टि से उसकी प्रासंगिकता को रेखांकित करना ही नहीं अपितु विश्लेषणात्मक और सर्जनात्मक चिंतन दृष्टि के लिए आधार भूमि निर्मित करने के उद्देश्य से उसकी अपरिहार्यता को इंगित करना भी है। विद्यार्थियों की विवेचनात्मक समझ विकसित करने हेतु एक सार्थक सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के लिए सामग्री का चयन और उसे व्यवस्थित करना वास्तव में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। विशेष रूप से विद्यार्थियों के अपने जीवन के अनुभवों की दृष्टि से नए आयामों और सरोकारों को शामिल करने की असीम संभावनाएं हैं। शिक्षक की अपने विषय में कितनी भी विशेषज्ञता क्यों न हो, उसे विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं और रुचि को ध्यान में रखते हुए और प्रत्येक विद्यार्थी के लिए सीखने के बेहतर अवसर सुनिश्चित करते हुए कक्षा में विभिन्न प्रकार की शिक्षण और मूल्यांकन पद्धतियों को शामिल करना चाहिए। (ऑंटारियो स्कूल करिकुलम, 2013), शिक्षक विभिन्न प्रकार के अनुदेशात्मक आकलन और मूल्यांकन पद्धतियों का उपयोग करते हुए, सामाजिक विज्ञान की गतिविधियों, परियोजनाओं, अन्वेषण में व्यस्त रहते हुए, विद्यार्थियों को उनके आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान और संप्रेषण कौशलों के विकास के लिए अनेक अवसर उपलब्ध कराते हैं।

विश्लेषणात्मक समझ का निर्माण

सामाजिक विज्ञान में पाँच विषय शामिल हैं – इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र। ये सभी विषय एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी मनुष्य के व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार को जानने का प्रयास करते हैं, तथा इनसे यह भी स्पष्ट है कि ये मानव व्यवहार परिवारों, समुदायों, संस्कृतियों, संस्थाओं, पर्यावरण और समाजों तथा विचारों, मानदण्डों तथा मूल्यों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं तथा कैसे उनसे प्रभावित होते हैं। सामाजिक विज्ञान का आधारभूत लक्ष्य केवल बुनियादी संकल्पनाओं की समझ को पुष्ट करना ही नहीं अपितु विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना भी है कि वे मानव और समुदाय के स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक के व्यवहार को जानने-समझने की आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर सकें। एक विशिष्ट दृष्टि उपलब्ध कराकर सामाजिक विज्ञान विद्यार्थियों को विविध सरोकारों; जैसे युद्ध और शांति, प्रजातंत्र और एकतंत्र, सत्ता और शासन, गरीबी, जाति और वर्ग, जेंडर और पितृसत्ता, रूढ़िबद्धता और पूर्वाग्रह आदि के प्रति उनकी जागरूकता निर्माण हेतु सक्षम बनाता है। यह विद्यार्थियों को निरंतर जटिल होते और विविधतापूर्ण समाज में निर्णय लेने हेतु समर्थ बनाता है।

इस प्रकार विषयवस्तु का संप्रेषण घटनाओं और प्रक्रियाओं की संकल्पनात्मक समझ पर केंद्रित होना चाहिए, जो शिक्षार्थी को केवल जानकारी रखने के बजाए सामाजिक-राजनीतिक वास्तविकताओं पर विमर्श करने योग्य बनाएगा। सामाजिक विज्ञान के अध्ययन से विकसित ज्ञान और समझ युवा मानस को स्वयं को विवेकपूर्ण और प्रभावी नागरिकों की भूमिका के लिए तैयार करने के लिए सुदृढ़ आधार उपलब्ध करा सकता है। अत: शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों की विषयवस्तु को इस तरह प्रस्तुत और सम्प्रेषित करे कि शिक्षार्थियों में अनुमान लगाने, आलोचनात्मक रूप से सोचने और बहुआयामी दुविधाओं का सामना करने की समझ विकसित हो सके। यहाँ यह भी महत्वपूर्ण है कि शिक्षक अपने शिक्षण में विद्यार्थियों के निजी अनुभवों को भी महत्व दें जिससे कि उनमें एक विश्लेषणात्मक और रचनात्मक सोच का आधार तैयार हो सके।

माध्यमिक स्तर पर यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक विषयों को इस प्रकार संप्रेषित करे कि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा मिल सके, साथ ही उनके जीवन की वास्तविकताओं से जुड़े मुद्दों पर चर्चा के लिए उन्हें प्रोत्साहित करे। उदाहरण के लिए, 'विकास' विषय को संप्रेषित करते समय शिक्षक निम्नलिखित प्रश्नों पर परिचर्चा को प्रोत्साहित कर सकता/ती है:

- विभिन्न वर्गों के लोगों के लिए विकास का अर्थ क्या हो सकता है?
- क्या विकास समानता और समता की ओर ले जाता है?
- विकास किस प्रकार महिलाओं, शारीरिक अक्षमताओं और हाशिए के अन्य समूहों के लोगों के जीवन को प्रभावित करता है?
- जो एक के लिए विकास है, क्या वह दूसरे के लिए भी विकास हो सकता है?
- विनिर्माण और सेवा उद्योगों में कृषि श्रमिक और अंशकालीन गैरसरकारी कर्मियों के लिए विकास का अर्थ क्या है?
- क्या विकास गृह-सहायिकाओं, ड्राइवरों और सब्ज़ी बेचने वालों जैसे असंगठित क्षेत्र के कर्मियों को प्रभावित करता है?
- क्या विकास नीतियाँ और कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों तक पर्याप्त रूप से पहुँचते हैं?
- बाँधों के निर्माण का अर्थ उद्योगों के लिए अधिक बिजली होना हो सकता है, परंतु इसका अर्थ उस स्थान के निवासियों जैसे आदिवासियों का विस्थापन भी हो सकता है।

संभव है इस प्रकार की परिचर्चा के अनेक बिन्दु पाठ्यपुस्तकों में शामिल न किए गए हों, परन्तु शिक्षक का दायित्व है कि विद्यार्थियों को पर्याप्त ज्ञान, कौशल और अभिवृत्तियाँ उपलब्ध कराने के प्रयास करें ताकि वे अनुमान लगाने, आलोचनात्मक रूप से सोचने और बाहरी दुनिया तथा कक्षा से प्राप्त ज्ञान और कौशलों को प्रयुक्त करने के योग्य बन सकें। सीखने-सिखाने की यह पद्धति विद्यार्थी और शिक्षक दोनों को सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति सजग रखेगी। यदि विद्यार्थियों को व्यक्तियों और समुदायों के वास्तविक अनुभवों से जोड़ा जाता है तो उनमें मुद्दों और घटनाओं की संकल्पनात्मक समझ विकसित की जा सकती है। शिक्षार्थियों को अपने परिवेश में विद्यमान तत्वों पर टिप्पणी करने, तुलना करने और सोच विचार करने के लिए प्रोत्साहित करके सामाजिक रूप से निर्मित मानदण्डों, पूर्वाग्रहों, पाठ्यपुस्तकों तथा अन्य स्त्रोतों से प्राप्त ज्ञान पर प्रश्न करना सिखाया जा सकता है। अत: शिक्षण-अधिगम पद्धति को मुक्त रखने की आवश्यकता है।

समेकित एवं समावेशी अधिगम वातावरण का निर्माण

शिक्षक के लिए यह जानना भी जरूरी है कि हम एक बहुलतावादी समाज में रहते हैं और विद्यार्थी विविध सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखते हैं; जिसमें अशक्तता युक्त विद्यार्थी भी शामिल हैं। अत: कक्षागत प्रक्रियाओं में हमें विविध पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों को मुख्य धारा से जोड़ने की आवश्यकता है। पाठ्यचर्या के संप्रेषण के समय शिक्षक को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि सभी विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी हो, चाहे वे किसी भी जाति, वर्ग, जेंडर या अशक्तता वाले क्यों न हों। परंतु कक्षा में समेकित अधिगम वातावरण बनाने के अपने प्रयास में हम अक्सर शिक्षण-अधिगम को समावेशी बनाने की उपेक्षा कर जाते हैं। सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों को अधिगम प्रक्रिया को समावेशी बनाने का आवश्यक रूप से प्रयास करना चाहिए।

स्कूली शिक्षा से बाहर रहने वाले बच्चों में एक-तिहाई अशक्तता वाले बच्चे हैं। विकासशील देशों में ये आँकड़े और भी चौंकाने वाले हैं, जहां कुल अशक्त बच्चों में 90% शिक्षा से वंचित हैं (Angela Kohama, 2008)। अशक्तता युक्त विद्यार्थियों मे असमता का दूसरा पहलू जेंडर है। विशेषकर अशक्तता ग्रसित लड़कियों को दोहरा नुकसान झेलना पड़ता है क्योंकि न केवल लड़कियों की शिक्षा को ही सामाजिक-आर्थिक प्रतिबंध के रूप में देखा जाता है अपितु किसी भी प्रकार की अशक्तता से ग्रसित होने के कारण वे विद्यालय और घर दोनों ही स्थानों पर भेदभाव और अलगाव के कारण और

अधिक असुरक्षित हो जाती हैं। अशक्तताओं वाली लड़कियों का विद्यालय में नामांकन दर अशक्तता वाले लड़कों की तुलना में कम है। इसे कई दृष्टियों से देखा जा सकता है, जैसे- शहरी बनाम ग्रामीण, विद्यालय का प्रकार, विद्यालयी स्तर और प्राथमिक बनाम माध्यमिक शिक्षा (माया कल्याणपुर, 2008)। अत: अशक्त विद्यार्थियों में विशेष रूप से लड़कियाँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में पहुँच की दृष्टि से सबसे अधिक हाशिए पर हैं।

निम्न जाति के निर्धन, मूल आदिवासी तथा मुस्लिम बहुल जनसंख्या वाले चार राज्यों (बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली तथा आंध्र प्रदेश) में हयूमन राइट वाच (Human Right Watch) द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया है कि हाशिए के समुदायों से संबंधित विद्यार्थी अक्सर अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यों द्वारा लगातार किए जाने वाले अपमान से बचने के लिए स्कूल छोड़ देते हैं (Human Right Watch, 2014)। रिपोर्ट के अनुसार भेदभाव कई प्रकार से होता है, जैसे- शिक्षक द्वारा दलित छात्रों को अलग बैठाना, मुस्लिम और आदिवासी छात्रों के संबंध में अपमानजनक टिप्पणियाँ करना और लड़कियों को शिक्षा से दूर रखने के प्रति ग्राम पदाधिकारियों की उदासीनता। अध्यापक तथा अन्य विद्यार्थी इन छात्रों को उनकी जाति, समुदाय, कबीले अथवा धर्म से संबंधित अपमानजनक शब्दों से सम्बोधित भी करते हैं।

इस प्रकार के परिदृश्य के लिए मूल कारण हैं- विविक्तता, पाठ्यचर्या संप्रेषण की प्रकृति, विद्यालयों की नीतियाँ और पद्धतियाँ और सबसे महत्वपूर्ण विद्यार्थियों और शिक्षकों की रूढ़िवादी अभिवृत्तियाँ। अक्सर जब हम अशक्त विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए विशेष विद्यालय अथवा अलग से कक्षा की व्यवस्था के रूप में निर्दिष्ट अध्ययन की व्यवस्था करते हैं तब वे अपने को अलग-थलग अनुभव करते हैं। इस प्रकार की स्थिति में अलग पाठ्यचर्या तथा अलग मूल्यांकन तथा आकलन की पद्धतियाँ अपनाई जाने लगती हैं। इस प्रकार की पद्धति से वे साथियों के साथ कम संवाद कर पाएँगे तथा बाकी क्षेत्रों से भी अलग रहेंगे। साथ ही शारीरिक अशक्तताओं से युक्त बच्चों के लिए सेवाएँ और अवसर पाने के संदर्भ में ग्रामीण-शहरी भेद इन बच्चों के स्कूल मे शैक्षिक उपलब्धियों और नामांकन में प्रत्यक्ष परिलक्षित होता है, जो कि शहरी क्षेत्रों मे अधिक होता है।

साामजिक विज्ञान के शिक्षकों को सभी वर्गों के विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। उदाहरण के लिए, संभव है कि दृष्टिबाधित अथवा कमज़ोर दृष्टि वाले विद्यार्थियों के लिए दृश्य तथा मानचित्र बहुत उपयोगी न हों, परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि उनको दृश्यों और उनके महत्व को समझने के अवसर से वंचित कर दें। बल्कि वह शिक्षकों को स्पर्शी शिक्षण अधिगम सहायता सामग्री और गतिविधियों की तलाश करने और उन्हें उपयोग में लाने के अवसर उपलब्ध कराता है। शिक्षक इस प्रकार के विद्यार्थियों को दृश्य समझाने और वर्णन करने का प्रयास कर सकते हैं और फिर उन दृश्यों की प्रासंगिकता के बारे में कक्षा में परिचर्चा शुरू कर सकते हैं। विद्यार्थियों की अधिगम क्षमताओं को बढ़ाने के लिए श्रव्य पुस्तकों और अन्य आवश्यकता-आधारित सामग्री, जैसे स्पर्शनीय, ब्रेल इत्यादि के रूप में संसाधन सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। यदि दृष्टिबाधित बच्चों को सही सामग्री सही रूप और सही समय पर उपलब्ध करा दी जाए तो कक्षा में होने वाले शिक्षण का 80% भाग वे आसानी से ग्रहण कर लेते हैं (एम.एन.जी मणी,1998)। हम जानते ही है कि बहुत से विद्यार्थियों को दृश्य माध्यम जैसे टेलीविज़न या कंप्यूटर उपलब्ध नहीं हो पाते। रेडियो पर विकास, लोकतंत्र, पर्यावरण, जल, सतत विकास, जन आंदोलन आदि से सबंधित घटनाएँ और मुद्दे अक्सर चर्चा का विषय होते हैं। परन्तु शिक्षण में ऐसे उद्देश्यों के लिए हम बहुत कम ही उनकी मदद लेते हैं। रेडियो जैसे प्रभावशाली माध्यम का उपयोग सभी वर्गों के विद्यार्थी समकालीन मुद्दों पर अपनी समझ बढ़ाने के लिए कर सकते हैं।

सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या उपागम, उसके संप्रेषण की प्रकृति, शिक्षण-अधिगम सामग्री, चित्र और उद्धरणों सहित पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु और कक्षागत प्रबंध ऐसे किसी भी पक्षपात और रूढ़ियों से मुक्त हों, जिनसे कि शिक्षा प्रक्रम में अतिसंवेदनशील समूहों की भागीदारी पर प्रभाव पड़ता हो। सबसे पहले तो यह आवश्यक है कि शिक्षक कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों/पक्षपातों से मुक्त हों। लड़कियाँ, अनुसूचित जाति/ जनजाति आदि हाशिए के समाज के विद्यार्थी अपने शिक्षण परिवेश में स्वयं को अलग-थलग महसूस करते हैं। इसके कई कारण हैं, जैसे: विषयवस्तु को समझने की अक्षमता, पाठ्यपुस्तकों में पक्षपात/रूढ़िबद्धता, पुरुषों को किसान, वैज्ञानिक, डॉक्टर तथा राजनीतिक जैसी प्रगतिशील

भूमिकाओं में चित्रण की तुलना में महिलाओं की निष्क्रिय भूमिका में प्रस्तुति और शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को भूमिका और दायित्वों का मनमाने वितरण से संबंधित भेदभावपूर्ण रवैया। इस प्रकार की प्रवृत्ति विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों मे, केवल निम्न आत्मविश्वास और पराएपन की अनुभूति उत्पन्न करेगी, जो परिणामस्वरूप उनकी कक्षागत गतिविधियों में सहभागिता के स्तर को प्रभावित करेगी। इस स्थिति से उभरने में सामाजिक विज्ञान शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। समेकन के साथ-साथ, शिक्षक को शिक्षण-अधिगम वातावरण को समावेशी बनाने की भी आवश्यकता है। सामाजिक-आर्थिक रूप से कमज़ोर और शारिरिक रूप से अक्षम जैसे हाशिए के समाज के विद्यार्थियों को मुख्य धारा में शामिल कर लेना ही पर्याप्त नही बल्कि शिक्षकों को पाठ्यचर्या और शिक्षण-अधिगम पद्धतियों को इस प्रकार समायोजित करने की आवश्यकता है, जिससे सभी वर्गों के विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँ। इस तरह के प्रयास से कक्षा में एक ऐसा वातावरण निर्मित होगा जहाँ विद्यार्थी अपने अनुभव साझा कर सकेंगे तथा समाज में उपस्थित पूर्वाग्रहों तथा रूढ़ियों पर प्रश्न कर सकेंगे। इस प्रकार की चर्चा और वाद-विवाद की सहायता से उपयुक्त समाधान खोजे जा सकते हैं। 'औद्योगीकरण' विषय पर चर्चा तब तक अधूरी रहेगी जब तक उद्योगों के विकास में महिला कर्मियों के योगदान तथा महिलाओं और बच्चों के दैनिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा न की जाए। आज भी महिलाएँ औद्योगिक विकास की दिशा में, विशेषकर लघु-उद्योगों में महत्वपूर्ण योगदान करती हैं और इसलिए संबंधित मुद्दे, जिन पर चर्चा की जा सकती है, वे हैं – बड़े उद्योगों में महिला कर्मियों का प्रतिशत; कम वेतन और अधिक कार्य-अवधि के संदर्भ में महिलाओं का शोषण; कौशल विकास में कमी के लिए कारण और संसाधनों तथा प्रशिक्षण की उपलब्धता इत्यादि। ''संसाधन के रूप में लोग'' विषय पर चर्चा करते हुए, सक्षम संसाधन के रूप में महिला; अकुशल कर्मियों जैसे रिक्शा चालक, अशक्तताओं वाले लोग, कुली और घरेलू कार्य में महिलाओं के योगदान को अनदेखा करना; आर्थिक अवसरों में बाधक के रूप में शिक्षा और आवश्यक कौशलों की कमी इत्यादि विषयों पर चर्चा करने का भरपूर अवसर है। यदि पाठ्यपुस्तकों के अंतर्गत कार्यक्रमों और प्रक्रमों में महिलाओं और हाशिए के विभिन्न समूहों की भागीदारी और योगदान की चर्चा नहीं है तो शिक्षक कक्षा संप्रेषण के समय उन्हें संदर्भानुसार शामिल करने का प्रयास कर सकते हैं। प्रजातंत्र, प्रजातंत्र की चुनौतियाँ, विकास, पर्यावरण, जलवायु, औद्योगीकरण, धन और ऋण जैसे विषयों में अशक्तता युक्त लोगों के योगदान तथा जेंडर परिप्रेक्ष्य को संप्रेषण में शामिल करने का पर्याप्त अवसर है। (एन०सी०ई०आर०टी० की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में इन परिप्रेक्ष्यों को केवल पाठ्यवस्तु में ही नहीं बल्कि चित्रों, उद्धरणों, कार्टूनों और फोटोग्राफ के रूप में भी शामिल किया गया है)। पाठ्यपुस्तकों में पर्याप्त जानकारी के अभाव में, शिक्षक विषयों के संप्रेषण के समय ऐसे परिप्रेक्ष्यों को शामिल करने के लिए इंटरनेट और अन्य स्त्रोत सामग्री के रूप में समाचार-पत्रों, रेडियो, पत्रिकाओं और दृश्य-श्रव्य सामग्री की मदद ले सकते हैं। उदाहरण के लिए हम सब जानते हैं कि निर्धनतम व्यक्ति के हित के लिए समय-समय पर विभिन्न विकास योजनाएँ प्रारंभ की जाती हैं और इन योजनाओं का समाचार-पत्रों और इंटरनेट पर व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाता है। संपूर्ण भारत में असुरक्षित समूहों को उनके जीवन-यापन में मदद के लिए एक रोज़गार गारंटी योजना – मनरेगा (MNREGA) योजना का प्रारंभ किया गया। परन्तु देरी से भुगतान और ज़िला स्तर पर अधिकारियों में भ्रष्टाचार के कारण झारखंड और महाराष्ट्र के अनेक परिवारों में नैराश्य और आत्महत्याओं का वातावरण बना। परिणामस्वरूप पुरुषों ने आत्महत्याएँ की जिसके कारण अब परिवारों का बोझ महिलाओं पर है। ''मुझे बहुतों का पेट भरना है और अधिकांश दिनों में मुझे काम नहीं मिलता..... मेरा भी मन करता है कि आत्महत्या कर लूँ;'' यह कहना है महाराष्ट्र के अंध जनजाति के माधव राउत की पत्नी विमल माधव सोनाजी राउत, का जो मनरेगा योजना के कुप्रबंधन की शिकार हुई (द हिन्दुस्तान टाइम्स, 29 दिसम्बर, 2013)।

शिक्षक पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु से संबंधित विविध प्रकार की जानकारी का कक्षा में औचित्यपूर्ण उपयोग न केवल अधिगम को पारस्परिक रूप से अंत:क्रियात्मक बनाने में करेंगे, अपितु इससे विभिन्न पृष्ठभूमियों वाले विद्यार्थियों को भी पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु समझने में मदद मिलेगी। शिक्षक को यह समझना आवश्यक है कि विविध परिप्रेक्ष्यों, विशेषकर जेंडर संबंधी परिप्रेक्ष्यों के समेकन का उद्देश्य महिलाओं को उनका अधिकार दिलाना अथवा लड़कियों में आत्म-सम्मान को बढ़ावा देना मात्र नहीं है, अपितु लड़कों को भी पितृसत्ता के बोध और सत्ता संबंधों का सामना करने के योग्य बनाना है, ताकि वे घर पर और समुदाय में सामाजीकरण पद्धतियों से उत्पन्न होने वाले स्वयं के पूर्वाग्रहों और पक्षपातों से छुटकारा पा सकें।

विषय-वस्तु का संदर्भीकरण

दूसरा पहलू जिस पर विचार करने की आवश्यकता है वह यह कि प्रासंगिक और उपयुक्त स्थानीय विषय-वस्तु अधिगम प्रक्रमों का अभिन्न भाग हो, जिसे आदर्शत: स्थानीय संसाधनों पर आधारित गतिविधियों द्वारा समझाया जाए। अपरिचित शैक्षिक पद्धतियों और पाठ्यक्रम की विषयवस्तु से विद्यार्थियों में अभाव और अलगाव की भावना घर कर सकती है, जिससे उनमें कक्षागत गतिविधियों और परिचर्चाओं में भाग लेने के प्रति उदासीनता आ सकती है। ऐसी संभावना है कि सामाजिक और सांस्कृतिक भिन्नताओं के साथ कक्षा में शारीरिक अक्षमताओं के कारण भी भेदभाव और पूर्वाग्रह उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए विषयवस्तु के संदर्भीकरण और नवाचारी शिक्षण-अधिगम सामग्री के साथ समुचित अनुदेशिक कार्यविधि न केवल व्यापक विद्यार्थी वर्ग तक पहँचेगी, अपतु उन्हें अपनी पाठ्यपुस्तकों से जोड़ने के साथ-साथ उनके जीवन के अनुभवों और ज्ञान को एक-दूसरे से साझा करने में मदद करेगी। यह केवल कक्षा में विद्यार्थियों की भागीदारी को ही नहीं बढ़ाएगी,अपितु उन्हें नीरस पाठ्यपुस्तकों की दुनिया से आगे भी ले जाएगी। जब तक विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोणों को पाठ्यपुस्तकों में दी गई संकल्पनाओं से नहीं जोड़ते, ज्ञान, मात्र जानकारी तक सीमित रह जाएगा। कक्षा में ज्ञान और वास्तविक अनुभवों को साझा करने का लाभ यह है कि इससे विद्यार्थियों के मध्य और शिक्षकों और विद्यार्थियों के मध्य भी संप्रेषण के माध्यम खुलेंगे और इस प्रकार उनके संप्रेषण कौशल में सुधार आएगा।

उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय आंदोलन पर चर्चा करते समय औपनिवेशिक शासन के विषय में बताने के लिए ज्ञान के स्थानीय स्त्रोतों जिनके बारे में विद्यार्थी कम जानते हैं जैसे – मौखिक परम्पराओं, स्थानीय विद्रोहों, अन्य रचनात्मक विधाओं, जैसे चित्रकला, तस्वीरों आदि का भरपूर इस्तेमाल किया जा सकता है। हमें याद रखना चाहिए कि राष्ट्रीय आंदोलन एक जन आंदोलन था जिसमें सभी वर्गो की भागीदारी थी। इसमें पढ़े-लिखे लोगों से लेकर कारीगर, बुनकर, जनजातियाँ, महिलाएँ, किसान इत्यादि हाशिए का समाज भी शामिल था। अंग्रेज़ों के विरुद्ध इस आंदोलन में विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक समूहों से संबंधित लोगों ने भाग लिया और उन्होंने अपना विरोध कई तरीकों से प्रदर्शित किया। अत: लोकगीतों और लोकप्रिय कहावतों, दृश्य कला जैसे- चित्रकारी, तस्वीरें, इत्यादि के रूप में मौखिक परम्पराएँ तथा अन्य स्त्रोत कक्षा में जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिए प्रयोग किए जा सकते हैं और इन संसाधनों से उन विद्यार्थियों को उस घटना से जोड़ने में भी मदद मिलेगी जो अन्यथा उनसे बहुत अलग और अस्वाभाविक लगती हैं। यहाँ यह याद रखना चाहिए कि महिलाओं और दलित कार्यकर्ताओं ने गीतों को परिचर्चा, टिप्पणी और विश्लेषण के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में उपयोग में लिया है। उन्नीसवीं शताब्दी के आखिरी समय की बनी बंगाल की काली घाट चित्रकारी ब्रिटिश शासन के सामाजिक जीवन को दर्शाती है। अपनी चित्रकारी में, कलाकारों ने पश्चिमी रंग में ढ़ले बाबू की खिल्ली उड़ाई है जो अंग्रेज़ी बोलता है और जिसने धूम्रपान करने और कुर्सी पर बैठने जैसी पाश्चात्य आदतें अपना ली हैं। ये चित्र अमीरों के विरुद्ध आम आदमी का आक्रोश व्यक्त करते हैं (हमारा अतीत III, भाग-2)।

कुमाऊँ और गढ़वाल क्षेत्रों में भूत-प्रेतों और आत्माओं में विश्वास लोगों की धार्मिक आस्था और प्रथाओं का अभिन्न भाग है। लोगों का विश्वास है कि कई भूत-प्रेत अंग्रेज़ों जैसे दिखते हैं और इन भूत-प्रेतों को पागल की तरह दर्शाया गया है। ये आसानी से डर जाते हैं और अपने आस-पास के लोगों को कब्जे में ले लेते हैं तथा फिर चुरुट माँगते फिरते हैं। ऐसे उदाहरण दर्शाते हैं कि कैसे 1815 में अंग्रेज़ों के कब्जे वाले क्षेत्रों से लोकप्रिय धारणाएँ पनपीं। अंग्रेज़ों को अल्पबुद्धि, भयभीत लोगों के रूप में दिखाया जाता था जो पाइप पीते थे और ये लक्षण अप्राकृत व्यक्तियों के होते थे।

इसी प्रकार 'जलवायु' विषय को जानने के लिए किसी निकटवर्ती कृषि फार्म का भ्रमण शामिल किया जा सकता है जिससे यह स्पष्ट होगा कि खेती करने की विधि और जलवायु के मध्य क्या सम्बन्ध है और जलवायु परिवर्तन किसानों के जीवन-यापन और अस्तित्व को कैसे प्रभावित करते हैं। इस प्रकार की क्रियाविधि सामाजिक विज्ञान को पाठ्यकेंद्रित और शिक्षक को माध्यम बनाकर मात्र जानकारी संप्रेषित करने की रूढ़िबद्ध धारणाओं से भी मुक्त करती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन०सी०एफ०) -2005 के संपूरक के रूप में, सामाजिक विज्ञान पर राष्ट्रीय फोकस समूह आधार पत्र निम्नलिखित ज्ञान-मीमांसक बदलाव प्रस्तावित करता है :–

क्र०स०	से	तक
1	पाठ्यपुस्तक - जानकारी का एक मात्र स्त्रोत	मुद्दों को समझने के एक विशेष तरीके के प्रस्तावित रूप में पाठ्यपुस्तक
2	सीमित ज्ञान के रूप में पाठ्य पुस्तक	एक सक्रिय दस्तावेज़ के रूप में पाठ्यपुस्तक
3	अतीत की मुख्यधारा का प्रतिरूपण	अधिक समूह और क्षेत्र कवर किए जाते हैं।

संभागी पद्धति का अंगीकरण

अभी तक किसी विषय को पढ़ाना निम्नलिखित विधियों तक सीमित रहा है-

1. व्याख्यान देना- शिक्षक बोलते हैं और बच्चे सुनते हैं।
2. पढ़कर सुनाना- बच्चे पाठ को ज़ोर से पढ़कर सुनाते हैं।
3. भावानुवाद करना- शिक्षक उन वाक्यों का भावानुवाद करते हैं, जिन्हें वे महत्वपूर्ण समझते हैं।
4. रेखांकित करना या कोष्ठक लगाना- कक्षा में बच्चों से महत्वपूर्ण वाक्यों को चिह्नित करवाया जाता है।
5. लिखवाना- शिक्षक स्वयं द्वारा तैयार किए गए नोट्स ज़ोर से पढ़ते हैं और बच्चों को उसे कॉपी में लिखने के लिए कहा जाता है।
6. पुनरीक्षण- बच्चों से कहा जाता है कि उनके शिक्षक द्वारा लिखवाए गए उत्तर सुनाएँ।
7. सभी प्रकार की गतिविधियों में लड़के और लड़कियों तथा अशक्तताओं वाले शिक्षार्थियों को भाग लेने के समान अवसर न देना।

इस प्रकार की शिक्षण प्रविधियाँ एंकागी अधिगम प्रक्रम को इंगित करती हैं, जिसमें न तो कक्षा में शिक्षक-शिक्षार्थी पारस्परिक क्रिया को शामिल किया जाता है और न ही शिक्षार्थी की भागीदारी को इस प्रकार शिक्षण-अधिगम कार्यक्रम को उबाऊ और नीरस बना दिया जाता है। परन्तु यदि ऐसी प्रविधि को अधिक अर्थपूर्ण तरीके से काम में लाया जाए, तो इससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रम और अधिक सहभागी बन सकता है। यह एक सुस्थापित तथ्य है कि जब विद्यार्थी पारस्परिक क्रिया करते हैं तो वे बेहतर सीखते हैं और सहभागी बनते हैं। शिक्षण की पद्धतियों में परिवर्तनों का समर्थन करते हुए यह सुझाया गया है कि मात्र जानकारी देने की तुलना में वाद-विवाद और परिचर्चा में शामिल करने का बदलाव विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों को सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति संवेदनशील बनाएगा। शिक्षण-अधिगम प्रक्रम में मुख्य उपागम भागीदारी पद्धति अपनाना है जिसमें शिक्षार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में स्वतंत्र रूप से सोच पाते हैं और मुद्दों के बारे में उनकी व्यक्तिगत समझ बनती है जिससे शिक्षार्थियों और शिक्षकों के बीच संप्रेषण संभव हो पाता है।

शिक्षार्थी बेहतर सीखते हैं जब-

- वे शिक्षण प्रक्रम में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं।
- अधिगम उनके दिन-प्रतिदिन के जीवन के अनुभवों से संबंधित होता है।
- अधिगम परिस्थितियाँ उनके परिवेश से ली जाती हैं।
- शिष्य-शिक्षक और शिष्य-शिष्य पारस्परिक क्रियाओं को बढ़ावा मिलता है।

'प्रजातंत्र की चुनौतियां' विषय विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रोत्साहित करे कि वे भारत में प्रजातंत्र के कार्य का विश्लेषण कर सकें और यह जान सकें कि विभिन्न कारक इसके कार्य को कैसे चुनौतियाँ देते हैं। माध्यमिक स्तर पर शिक्षार्थी इतने परिपक्व हो जाते हैं कि वे समझ सकें कि उनके आस-पास क्या हो रहा है। भ्रष्टाचार पर परिचर्चा प्रारम्भ की जा सकती है और

शिक्षार्थियों से उनके शहर या गाँव में भ्रष्टाचार की घटनाओं के बारे में पूछा जा सकता है। यह संभव है कि कुछ विद्यार्थी किसी भ्रष्ट अधिकारी या कर्मचारी के बारे में बताएँ, जिसने किसी काम को करने के लिए रिश्वत की मांग की हो। क्या लोकपाल बिल को भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए एक प्रभावी साधन के रूप में देखा जा सकता है? लोकपाल किस प्रकार आम लोगों के मामलों जैसे चाय की दुकान चलाने के लिए लाइसेंस बनवाने आदि सम्बन्धी मुद्दों को सुलझाने में मदद कर सकता है? हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की उपलब्धता में सुधार लाने के लिए आर०टी०आई० का प्रभावी उपयोग कैसे कर सकते हैं; इस प्रकार की परिचर्चाएँ शिक्षार्थियों को अपने अनुभव और सामाजिक-राजनीतिक वास्तविकताओं और प्रजातंत्र में लोगों के जीवन को ऐसे कारक किस प्रकार प्रभावित करते हैं, जैसे विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं।

"मानवाधिकार विषय" को कक्षा में रिपोर्टों/लेखों, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का उपयोग करते हुए और शिक्षार्थियों के अपने घर/स्कूल/समुदाय के अनुभवों को लेकर पढ़ाया जा सकता है। उदाहरण के लिए समाचार पत्रों या अन्य माध्यमों में निशक्त जनों के अधिकारों से संबंधित बहुत से समाचार/लेख होते हैं। विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे इस प्रकार के समाचार पढ़ें/सुनें और नि:शक्त जनों के अधिकारों के कार्यान्वयन और उल्लंघन पर अपने विचार दें।

हम जानते हैं कि सामाजिक विज्ञान में तात्विक रूप से अनेक विवादित अवधारणाएँ होती हैं और इनमें से बहुत सी अवधारणाएँ जटिल, समसामयिक और इसी कारण विवादास्पद हैं। इन अवधारणाओं को इसलिए शामिल किया गया है कि शिक्षक विवेकपूर्ण और स्वस्थ परिचर्चा में शिक्षार्थियों को शामिल करें। विभिन्न समसामयिक मुद्दों पर परिप्रेक्ष्य विकसित करने में सहायक साधनों के रूप में पाठ्यपुस्तकों को लिया जाना चाहिए। शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों को स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए सुरक्षित अवसर देने और साथ ही उनमें कुछ विशिष्ट प्रकार की अंत:क्रिया को निर्मित करने की होती है। शिक्षकों का प्राथमिक सरोकार यह होना चाहिए कि वे स्वयं को ज्ञान के भण्डार की भूमिका से बाहर निकालें और शिक्षार्थियों को अपनेपन तथा निष्पक्षता से सुनें। साथ ही शिक्षार्थियों को एक-दूसरे को सुनने के लिए भी प्रेरित करें। यदि कक्षा में लड़कियाँ निष्क्रिय श्रोता हैं, तो उन्हें कक्षा में ऊंचे स्वर से पढ़ने को कह, उनसे प्रश्न पूछ कर तथा उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित कर उनकी भागीदारी में सुधार के विशेष प्रयत्न किए जा सकते हैं। समूह कार्य, रोल प्ले (भूमिका निर्वाह), परियोजना कार्य, वाद-विवाद और परिचर्चाओं आदि के समय सभी विद्यार्थियों को समान भूमिकाएँ आवंटित करें।

अत: शिक्षण-अधिगम प्रक्रम को भागीदारीपूर्ण बनाना सामाजिक विज्ञान शिक्षक का मुख्य सरोकार होना चाहिए और इसके लिए जानकारी के संप्रेषण को वाद-विवाद और परिचर्चा में बदलने भर की आवश्यकता है। कक्षा में भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक जो अनुदेशी कार्यनीतियाँ उपयोग में ले सकते हैं, उनमें परिचर्चा, विचार-मंथन, शिक्षण, समूह कार्य, वैयक्तिक कार्य, वाद-विवाद, क्षेत्र भ्रमण, रोल प्ले, (भूमिका निर्वाह), दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री का उपयोग, मौखिक परम्पराओं आदि का उपयोग शामिल है।

सामाजिक विज्ञान समन्वयी है

यह समझना आवश्यक है कि सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या समन्वयी है। यद्यपि सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषय-क्षेत्रों के भिन्न परिप्रेक्ष्य और प्रविधियाँ हो सकती हैं, लेकिन उनकी सीमाएँ परस्पर रुद्ध नहीं हैं क्योंकि सामाजिक विज्ञान लम्बे समय से सम्पूर्णता में मानव अनुभव की बात करता रहा है जिसमें अतीत से नाता, वर्तमान का सदंर्भ और भविष्योन्मुखी होकर समाधान तलाशना है। वर्तमान परिदृश्य को समझने के लिए इस अनुशासन की सीमाओं को मुक्त करना तथा विविधतापूर्ण दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है। सामाजिक विज्ञान का प्रत्येक अनुशासन आपस में एक-दूसरे से सम्बद्ध है। इसलिए हमें पाठ योजना इस प्रकार निर्मित करनी चाहिए ताकि हम किसी एक संकल्पना अथवा घटना को समझने के लिए इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र और अर्थशास्त्र से मदद ले सकें।

सामाजिक विज्ञान का मुख्य लक्ष्य सामान्यीकृत और विवेचनात्मक समझ विकसित करना है। अत: यह आवश्यक है कि कक्षा में कुछ विषयों पर परिचर्चा और वाद-विवाद किया जाए, जो अंतर विषयक सोच विकसित करने में मदद करें। उदाहरण

के लिए, विकास संबंधी किसी विषय को निम्नलिखित पर केन्द्रित करके सामाजिक विज्ञान की अंतरविषयी प्रकृति को व्यक्त किया जा सकता है- किसी क्षेत्र की स्थलाकृति और योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रसार के आपसी संबंध; असंगठित क्षेत्र पर नीतियों और कार्यक्रमों का प्रभाव; किसी क्षेत्र के विकास में जन आंदोलनों का योगदान इत्यादि। इसी प्रकार राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक प्रक्रमों में महिलाओं की भागीदारी जेंडर सरोकारों की ओर ध्यान केन्द्रित करेगी क्योंकि जेंडर सभी विषयों में समाहित है और महिलाओं के परिप्रेक्ष्यों को किसी भी ऐतिहासिक घटना और समसामयिक सरोकारों पर परिचर्चा का अभिन्न भाग बनाएगा। ऐसे विषयों का चयन सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक होना चाहिए जिनमें भिन्न विषयक अधिगम एक गहन और विविधतापूर्ण चिंतन को सरल बना सकें।

विभिन्न विषयों में संबंध बनाना विद्यार्थी को बहु-विषयक अधिगम को पहचानने तथा विश्लेषण करने और विभिन्न विषयों में परस्पर सम्बन्ध को संकल्पित करने में सक्षम बनाएगा। यह विद्यार्थी की विवेचनात्मक रूप से सोचने की क्षमता, ठोस क्रमबद्ध कौशलों को काम में लेने और प्रभावी संप्रेषण को प्रखर बनाएगा। एकल विषयक अधिगम का उपयोग समस्या की प्रकृति को पूर्णत: समझने में निश्चित रूप से असफल रहेगा। ऐसी स्थिति में एक व्यापक ढाँचे की आवश्यकता होगी, जो भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और पर्यावरण तथा अन्य के बीच पारस्परिक संबंध स्थापित करता हो। यह अधिगम जेंडर, मानवाधिकार, नि:शक्तताओं वाले व्यक्तियों, हाशिए के समूहों और अल्पसंख्यकों के प्रति संवेदनशीलता जैसे सरोकारों को भी प्रोत्साहित करता है। इन सरोकारों के प्रति विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाने के लिए दृश्यों का उपयोग किया जा सकता है।

बहुविषयक परिप्रेक्ष्य से दृश्य की व्याख्या

(भारत और समकालीन संसार-1 (कक्षा IX की इतिहास की पाठ्यपुस्तक)

चित्र 7 पश्चिमी राजस्थान में बालोतरा में ऊँटों का मेला।

- दृश्य क्या दिखाता है?
- क्या आप उस क्षेत्र की प्रकृति की पहचान कर सकते हैं जिसमें यह दृश्य स्थित है?
- क्या यह दृश्य किसी आर्थिक गतिविधि को बताता है या किसी सामाजिक-सांस्कृतिक घटना को?
- आदमी किस प्रकार के काम में लगे हुए हैं?
- क्या आप इस दृश्य में किसी महिला को ढूँढ सकते हैं?
- महिलाओं की अनुपस्थिति क्या व्यक्त करती है?
- आपके विचार से दृश्य में दिखाए गए लोगों की जीविका का स्त्रोत क्या है?

- क्या लोग अपने लिए काम कर रहे हैं या किसी नियोक्ता के लिए?
- क्या यह गतिविधि देश के दूसरे भागों का सामान्य लक्षण है? यदि हाँ तो क्यों?
- पशुचारी समाज में पशुओं की क्या भूमिका होती है?

पाठ्यचर्या सरोकार और सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का संघठन

प्राथमिक स्तर पर प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण को भाषा और गणित के अभिन्न भाग के रूप में (जेंडर संवेदनशीलता के साथ) पढ़ाया जाता है, जिसमें ध्यान रखा जाता है कि बच्चे ऐसी गतिविधियों में भाग लें, जो उन्हें प्राकृतिक और सामजिक पर्यावरण को समझने में मदद करती हों। कक्षा 3 से 5 के लिए, बच्चे प्रेक्षण और अनुभव के आधार पर प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण के बीच संबंध ढूंढ़ना और समझना प्रारम्भ करते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के विषय-क्षेत्र अपनी विषयवस्तु इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र से प्राप्त करते हैं। विषयकेन्द्रित अधिगम का उपयोग करते हुए विद्यार्थी को विविध परिप्रेक्ष्यों से समाज और अर्थव्यवस्था संबंधी समसामयिक मुद्दों और समस्याओं से परिचित कराया जाता है। इसमें गरीबी, साक्षरता, बाल और बंधुआ मजदूरी, वर्ग, जाति, जेंडर और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर बल दिया गया है।

माध्यमिक स्तर पर, सामाजिक विज्ञान विद्यार्थियों को पर्यावरण को परिपूर्णता से समझने और एक व्यापक परिप्रेक्ष्य तथा एक आनुभविक, उचित और मानवीय दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है। इसी के अनुरूप पाठ्यक्रम को जानकारी की अपेक्षा विषयगत अधिगम और भागीदारी पर केंद्रित किया गया है। पाठ्यपुस्तकें यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती हैं कि विषयवस्तु को समझने के लिए शिक्षार्थी पर जानकारी और विस्तृत वर्णन का बहुत अधिक बोझ न डाला जाए। साथ ही, शिक्षार्थियों के समक्ष ध्यानकेन्द्रण और परिचर्चा के लिए जो विषय वस्तु और जानकारियां लाई जाती हैं उनका उद्देश्य समकालीन समाज में उभरती शंकाओं और विवादों का समाधान करना भी होता है। ऐसा पाठ्यचर्या के माध्यम से कक्षा को चर्चा और वाद-विवाद में शामिल करके किया जा सकता है।

मुख्य ध्यान समकालीन भारत पर है और इससे शिक्षार्थी की राष्ट्र के सामने खड़ी सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों पर गहन समझ बनती है। विषयवस्तु को यथासंभव बच्चों के दैनिक जीवन से जोड़ने के प्रयास में विभिन्न संदर्भित विषयों में आदिवासियों, दलितों और अन्य अधिकारों से वंचित अन्य वर्गों के परिप्रेक्ष्यों को समावेशित किया गया है। इतिहास के विषय में, भारत के राष्ट्रीय आंदोलन और उसके स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में विकास पर आधुनिक विश्व के संदर्भ में वर्णित किया गया है। भूगोल से संबंधित मुद्दों को शिक्षार्थी में संरक्षण और पर्यावरणीय सरोकारों के विशिष्ट महत्व को आत्मसात करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए पढ़ाया जाता है। राजनीति विज्ञान में परिचर्चाएँ उन दार्शनिक आधारों पर केन्द्रित हैं, जो भारतीय संविधान की मूल रूपरेखा पर बल देते हैं, अर्थात समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व, गरिमा, बहुलता और शोषण से मुक्ति। इस स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षार्थियों के सामने एक विषय के रूप आता है, जिसमें जन समुदाय के परिप्रेक्ष्य से विषय वस्तुओं पर परिचर्चा की जाती है। उदाहरण के लिए, गरीबी और बेरोज़गारी को वित्तीय संस्थाओं की कार्यप्रणाली और आर्थिक संबंधों द्वारा संयोजित असमानताओं से समझा जा सकता है।

माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य

- पाठ्यपुस्तक का उद्देश्य मात्र अनुदेशी की अपेक्षा अधिक विचारोत्तेजक होना चाहिए जिसमें शिक्षार्थी के लिए पर्याप्त अवसर हों। पाठ्यपुस्तक के पढ़े जाने के बाद भी, किसी घटित सामाजिक परिघटना पर समझ को समृद्ध करने के लिए इसका होना आवश्यक है।
- आधुनिक और समकालीन भारत और विश्व के अन्य भागों से उदाहरण लेते हुए आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं को समझना।

- गरीबी, बाल-श्रम, निराश्रय, असाक्षरता और असमानता के विविध आयामों जैसे- सामाजिक और आर्थिक मुद्दों और चुनौतियों की विवेचनात्मक परख करना।
- स्थानीय समुदायों के उनके पर्यावरण संबंधित अधिकारों, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोगों के साथ-साथ प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण की आवश्यकता का महत्व समझना।
- किसी ऐतिहासिक घटना और समसामयिक सरोकार की परिचर्चा में महिलाओं के परिप्रेक्ष्यों को समाकलित करने के रूप में जेंडर सरोकारों को लेना।
- प्रजातांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष समाज तथा राज्य में संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन के लिए नागरिकों की भूमिकाओं और उत्तरदायित्वों को समझना।
- विद्यार्थियों को भावी नागरिकों के रूप में उनकी भूमिका के लिए तैयार करना।

एन०सी०ई०आर०टी० पाठ्यपुस्तकें - सहभागिता और सम्बद्धता के अवसर

एन०सी०ई०आर०टी० की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें पारस्परिक क्रिया और संवाद के पर्याप्त अवसर देती हैं। उनमें कुछ तत्व हैं जो सहभागिता और सम्बद्धता को प्रोत्साहित करते हैं और शिक्षक को अनेकविध रूप से सक्षम बनाते हैं जिससे कि वे सक्रिय अधिगम को प्रोत्साहित कर सकें और कक्षा में निष्क्रिय रूप से सुनने को निरुत्साहित कर सकें। विषय अनुच्छेदों के मध्य या अंत में कुछ पाठ्यांतर प्रश्न दिए गए हैं जो शिक्षकों को विषय के उस भाग में वर्णित विचारों की समीक्षा के अवसर उपलब्ध कराएँगे। इन प्रश्नों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि इस भाग में चर्चित संकल्पनाओं को शिक्षार्थियों ने समझ लिया है। 'जलवायु' का विषय (भूगोल, कक्षा 9) कई प्रश्न खड़े करता है कि किस प्रकार जलवायु की दशाएँ विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में रह रहे लोगों के जीवन को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए- राजस्थान में घरों की दीवारें मोटी और छतें समतल क्यों होती हैं? असम में घर बाँसों या लकड़ी के खंबों पर क्यों बनाए जाते हैं? पाठ्यपुस्तकों में चित्रों, कार्टूनों और फोटोग्राफों के रूप में दृश्यों का विवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग किया गया है। दृश्यों को पाठ्यपुस्तकों में मात्र रिक्त स्थान भरने के लिए उपयोग में नहीं लाया गया है, अपितु ये संकल्पनाओं को समझाने, विवेचनात्मक टिप्पणियां देने, विचारों का संक्षिप्तीकरण करने, तुलना करने आदि के लिए महत्वपूर्ण विधियों के रूप में रखे गए हैं। उदाहरण के लिए, 'नाज़ीवाद और हिटलर का आरोहण' (भारत और समसामयिक विश्व, कक्षा 9, पृष्ठ 64-65) विषय में बहुत से दृश्य दिए गए हैं जो यहूदियों और अन्य 'गैर-आर्य' जातियों पर नाज़ियों के घृणित अपराधों के परिणामस्वरूप यहूदियों के दुख: दर्दों की कहानी कहते हैं। राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में कार्टूनों का उपयोग एक महत्वपूर्ण शिक्षा शास्त्रीय साधन के रूप में मात्र हँसाना नहीं है, बल्कि व्यंग्य-विनोद के माध्यम से सामाजिक-राजनीतिक वास्तविकताओं को समझना और उन पर प्रश्न खड़े करना है। जेंडर, धर्म और जाति (प्रजातांत्रिक राजनीति, कक्षा 10, पृष्ठ 53) विषय में एक कार्टून है, जो की वोट-बैंक राजनीति और राजनेताओं द्वारा वोट बटोरने के लिए जाति को एक साधन के रूप में किस प्रकार उपयोग में लाया जाता है इस पर शिक्षार्थियों से उनकी प्रतिक्रियाओं की माँग करता है।

लगभग सभी अध्यायों में गतिविधि कोष्ठक (बॉक्स) डालना विद्यार्थियों को विषय वस्तु पढ़ने, आलोचनात्मक विश्लेषण करने और घटनाओं, प्रक्रमों तथा परिस्थितियों पर अपना बोध प्रस्तुत करने और उन्हें अपने दिन प्रतिदिन के जीवन से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। जल संसाधन विषय (समकालीन भारत-2, कक्षा 10, पृष्ठ 23) में दिए गए गतिविधि कोष्ठक (बॉक्स) विद्यार्थियों को बाँध बनाने और सिंचाई कार्यों की परम्परागत विधियों और अपने आस-पड़ोस में वर्षाजल संग्रहण तंत्रों के बारे में पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

पाठ्यपुस्तकों में कुछ सामग्री कोष्ठकों (बॉक्सों) में भी दी गई है जो अध्याय के प्रमुख बिन्दुओं पर प्रकाश डालती है। एन०सी०ई०आर०टी० की पाठ्य-पुस्तकों में विभिन्न प्रकार के कोष्ठक (बॉक्स) दिए गए है। इनमें से कुछ किसी सारांश पर प्रकाश डालते हैं, तथा अन्य वैसी ही घटना को बताते हैं जो कहीं और घटी हो, जबकि ये अन्यत्र तारीखें और वर्ष हो सकते

हैं। 'मुद्रा और ऋण' (आर्थिक विकास, कक्षा 10, पृष्ठ 52) विषय में बांग्लादेश के ग्रामीण बैंक की सफलता की कहानी पर एक कोष्ठक (बॉक्स) है। जिसमें बैंक के गरीबों तक पहुंचने और उनकी ऋण संबंधी आवश्यकताओं को उचित दर पर पूरी करने की बात की गई है। कई बार शिक्षक इस डर से कि कहीं विषय के महत्वपूर्ण पहलु समय के अभाव में छूट न जाएं। इन कोष्ठकों (बॉक्सों) में दी गई जानकारी पर ध्यान नहीं देते।

आकलन और मूल्यांकन

किसी भी शैक्षिक सुधार प्रक्रिया के अंतर्गत परीक्षा संबंधी सुधार सुनिश्चित करने पढ़ते हैं। परन्तु जब तक परीक्षाएं और जाँच शिक्षार्थी की पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान को याद रखने की क्षमता का आकलन करते हैं, तो पाठ्यचर्चा को प्रभावी अधिगम की ओर निर्देशित करने वाले सभी प्रयास निष्फल हो जाते हैं। आकलन और मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के अधिगम में सुधार लाना है। आकलन विद्यार्थी की पाठ्यचर्या अपेक्षाओं की प्राप्ति के स्तर को परिलक्षित करने के लिए जानकारी एकत्र करने का प्रक्रम है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आकलन और मूल्यांकन सफल और विश्वसनीय हैं शिक्षक को ऐसी पद्धतियां अपनानी होंगी जो सभी विद्यार्थियों के लिए निष्पक्ष, पारदर्शी और उचित हों, अर्थात उन्हें नि:शक्त शिक्षार्थियों और प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थियों सहित सभी विद्यार्थियों को संभालना है। मनोवैज्ञानिक आंकड़े दर्शाते हैं कि विभिन्न शिक्षार्थी अलग-अलग प्रकार से सीखते हैं। अत: पेपर-पेंसिल परीक्षण के अलावा आकलन के और भी तरीके होने चाहिए। मौखिक परीक्षण, समूहकार्य मूल्यांकन, खुली-पुस्तक परीक्षणों आदि को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों का आकलन एक बार किया जाने वाला प्रक्रम नहीं है, यह सतत रूप से चलना चाहिए और इसमें विविधता होनी चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को अपने कौशलों के प्रदर्शन के पर्याप्त अवसर मिल सकें। मूल्यांकन अधिगम के आकलन पर आधारित होता है, जो अधिगम के अंत में विद्यार्थी की उपलब्धि का प्रमाण उपलब्ध कराता है।

कुछ मुख्य घटक जो विद्यार्थियों की उपलब्धि के आकलन का भाग बन सकते हैं, इस प्रकार हैं-

- विषय-वस्तु का ज्ञान और समझ
- रचनात्मक और विवेचनात्मक कौशलों/प्रक्रमों का उपयोग
- विभिन्न रूपों के माध्यम से विचारों और जानकारी को व्यवस्थित और अभिव्यक्त करना।
- विभिन्न संदर्भों के अंतर्गत और उनके बीच संबंध बनाने हेतु ज्ञान और कौशलों का अनुप्रयोग
- विविध परिस्थितियों में व्यवहार
- टीम भावना
- संप्रेषण की क्षमता
- व्यक्तित्व विकास
- संप्रेषण कौशल
- कक्षागत गतिविधियों में भागीदारी

आकलन का उद्देश्य

- विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति में निर्णायक बिंदुओं पर उसके स्तर को वस्तुगत दृष्टि से मॉनिटर करना
- उन्हें समय पर और सविवरण फीडबैक देना तथा इस प्रकार उन्हें प्रेरित करना

- विद्यार्थियों की शक्ति और सीमाओं का पता लगाना
- शिक्षकों को विद्यार्थियों के अधिगम पर फीडबैक देना और शिक्षण में सुधार लाना

आकलन के उपागम और रूपरेखा

- अधिगम उद्देश्यों की पहचान करें और उनका मूल्यांकन करें
  - विशेष माड्यलों के कौन-कौन से प्रमुख कौशल और ज्ञान है जिन्हें प्राप्त करने की विद्यार्थियों को अपेक्षा है?
  - कौन से अधिगम उद्देश्य अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण हैं?
- इन लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु आकलन प्रक्रियाएं तैयार करें
  - किस सीमा तक आकलन के विद्यमान तरीके वांछित अधिगम उद्देश्यों को बढ़ावा देते हैं?
- विद्यार्थियों को अपने विशिष्ट कौशल प्रदर्शित करने के अधिक अवसर देने के लिए विविध प्रकार की आकलन विधियों को उपयोग में लें।
  - प्रत्येक आकलन में किस प्रकार के कौशलों का परीक्षण किया जा रहा है?

प्रभावी कार्यक्रम का लक्षण: सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी०सी०ई०)

सी०सी०ई० इन क्षेत्रों में मदद करता है-

- बच्चों के तनाव को कम करने में
- रचनात्मक शिक्षण के लिए शिक्षकों को अवसर उपलब्ध कराने में
- निदान और उच्च कौशलों वाले विद्यार्थी तैयार करने हेतु साधन उपलब्ध कराने में।

कक्षा में प्रश्न पूछना- इसका उपयोग केवल यह जांच करने के लिए ही नहीं होना चाहिए कि क्या विद्यार्थियों ने सीख लिया है अपितु उन्हें विभिन्न पहलुओं पर विचार करने के लिए प्रेरित करने हेतु भी होना चाहिए। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे अपने उत्तर के पक्ष मे तर्क भी सामने रखें। 'वन मिनट पेपर' (Chizwar, John and Anthony Ostrosky, 1998, ''दी वन मिनट पेपर: सम एम्पीरिकल फाइंडिंग'' Journal of Economic Education, winter 29:1) न केवल विद्यार्थी के अधिगम का स्पष्ट बोध कराता है, बल्कि शिक्षण के सुधार के लिए शिक्षा शास्त्रीय नवाचार के रूप में भी कार्य करता है। यह विधि कक्षा के समय के अंतिम एक या दो मिनटों में काम में ली जा सकती है। विद्यार्थियों सें कहा जा सकता है कि वे उन महत्वूपर्ण बातों को लिखें जो उन्होंने विषय चर्चा के समय सीखी हैं और उन मुद्दों या संकल्पनाओं को भी बताएं जिन्हें अभी उन्हें सीखना है। इससे शिक्षक को यह मापने में मदद मिलेगी कि शिक्षार्थी ने क्या सीखा है, और उसकी अधिगम क्षमता क्या है। साथ ही इससे यह भी पता चलेगा कि शिक्षार्थी को अभी और क्या सीखने की अभी आवश्यकता है। कक्षा में आयोजित की जाने वाली लघु प्रश्नोत्तर, वाद-विवाद, परिचर्चा और इसी प्रकार की विद्याथियों की समझ सम्बन्धी जाँच आकलन के लिए एक प्रमाणित ढांचा उपलब्ध कराती हैं जो यह स्पष्ट करेगी कि पाठ्यक्रम के संप्रेषण के समय विद्यार्थी क्या सीख रहे हैं और क्या नहीं।

परीक्षाएं

विद्यार्थियों के अधिगम का आकलन करते समय प्रश्नों के प्रकार एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन्हें इस प्रकार बनाया जाना चाहिए कि वे विद्यार्थियों की निम्नलिखित जाँच कर सकें:

- मूल संकल्पनाओं की समझ
- जानकारी के विश्लेषण और प्रस्तुति की योग्यता
- कौशलों का प्रस्तुतीकरण
- विमर्शी सोच
- वास्तविक-जीवन परिस्थितियों में संकल्पनाओं का अनुप्रयोग
- विभिन्न संकल्पनाओं और प्रकरणों में पारस्परिक संबंध निर्माण।

संदर्भ

1. एन०सी०ई०आर०टी०, 2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
2. एन०सी०ई०आर०टी०, 2006 सामाजिक विज्ञान के शिक्षण पर आधार-पत्र
3. एन०सी०ई०आर०टी०,सामाजिक विज्ञान की कक्षा 9 और 10 की पाठ्यपुस्तकें- इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र
4. डी०ई०एस०एस०, एन०सी०ई०आर०टी०, सामाजिक विज्ञान शिक्षकों में टी०जी०टी० की सेवारत शिक्षा के लिए प्रशिक्षण पुस्तिका
5. The Ontario curriculum for social sciences and humanities, 2013.
6. Cross, K.P and T.A Angelo, 1993, Classroom Assessment techniques: a handbook for college teachers, san Francisco: josey-Bass.
7. Chizaman john and Anthony, 1998 "The one minute paper: Some empirical finding "Journal of Economics Education, Winter 29:1.
8. George M. Alex and Madan Amman, 2009. Teaching Social Science in Schools, NCERT, New Textbook Initiative, Sage Publications, New Delhi.
9. IGNOU-GOI, 2008, बालिका शिक्षा में सेवारत शिक्षक शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम- सर्व शिक्षा अभियान
10. Usha Nayar, 1995 From Girl Child to Person; Resource Materials for Teachers of Primary Schools in India, UNESCO, New Delhi, 1995.
11. एन०सी०ई०आर०टी०, 2006 शिक्षा में जेंडर मुद्दे पर आधार-पत्र
12. Rupa Subramanaya Dahejia, "How the Jan Lokpal Bill Would Hurt India's Poor", India Real-time, The Wall Street Journal, October, 17, 2011.
13. M.N.G Mani, 1998 "The Role of Integrated Education for Blind Children, "community Health".

भाग III
सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के सेवारत व्यावसायिक विकास के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम डिज़ाइन करना और आयोजित करना

भाग III

सामाजिक विज्ञान शिक्षकों के सेवारत व्यावसायिक विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम डिजाइन करना और आयोजित करना

प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकता

सेवारत शिक्षा शिक्षकों की व्यावसायिक वृद्धि में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है और विद्यालय संबंधी प्रक्रियाओं में परिवर्तन के अभिकर्ता के रूप में कार्य कर सकती है। सेवारत शिक्षा एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक प्रक्रम है जिसमें ज्ञान का विकास और अभिवृत्तियों, कौशलों, स्वभाव में परिवर्तन और पारस्परिक क्रियाओं द्वारा अभ्यास शामिल है। सेवारत शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक प्रशिक्षण है। प्रशिक्षण शिक्षकों की अधिगम आवश्यकताओं को पहचानने का निदान है। यह उन आवश्यकताओं पर बात करने और कक्षा में पाठ्यचर्या के प्रभावी संप्रेषण में शिक्षकों की क्षमताओं को बढ़ाता है। एक प्रशिक्षण कार्यक्रम को आयोजित करने के विभिन्न चरण होते हैं, जैसे- अधिगम उद्देश्यों की पहचान करना, प्रशिक्षण हेतु विषय-वस्तु को निर्धारित करना, प्रविधि निर्धारित करना, अधिगम गतिविधियों का चयन करना, मूल्यांकन मानदंडों को परिभाषित करना और इनके अनुसरण में की जाने वाली गतिविधियों का विशेष रूप से उल्लेख करना। यह देखा गया है कि बहुत से शिक्षकों को लम्बा शिक्षण अनुभव होने पर भी कक्षा में सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ये कठिनाइयाँ निम्नलिखित कारणों से हो सकती हैं–

- शिक्षक एक/दो विषयों में विशेषज्ञता रखते हैं परन्तु उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे कक्षा में सामाजिक विज्ञान के चारों विषय पढ़ाएँ।
- नई पाठ्यपुस्तकों में अपनाई गई पद्धति के प्रति अनभिज्ञता
- विषयों में नई प्रवृत्तियों के प्रति जानकारी का अभाव
- गतिविधियाँ करवाने के लिए पर्याप्त आधारभूत ढाँचे और धन का अभाव
- सामाजिक विज्ञान के प्रति अनुपयोगी विषय के रूप में अभिवृत्ति, जिससे उनकी जानकारी/कौशलों को उन्नत करने की प्रेरणा में कमी आती है।
- शिक्षण-अधिगम संसाधनों की कमी, पत्र, पत्रिकाओं इत्यादि की अनुपलब्धता, विशेष रूप से दूरगामी क्षेत्रों में।
- नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कमी, जो उनके व्यावसायिक विकास में रुकावट डालते हैं।
- परीक्षा तंत्र, जो अधिकतर रटंत प्रणाली पर आधारित है, शिक्षकों को अपनी शिक्षण-अधिगम कार्य-नीतियों को सुधारने मे प्रेरित नहीं करता।

सामाजिक विज्ञान में पैकेज के निर्माण का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों में आवश्यक अभिमुखीकरण और क्षमताओं का विकास करना है, जिससे कि वे पाठ्यचर्या को सराहें, समझें और चुनौतियाँ का सामना कर सकें। यह पैकेज शिक्षकों को एन०सी०एफ०-2005 के उद्देश्यों के अनुसार और सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के प्रभावी संप्रेषण के लिए आवश्यक कौशलों से परिचित कराता है। यह शिक्षकों/शिक्षक प्रशिक्षकों को भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र आदि विषयों में नई प्रवृत्तियों के प्रति अभिमुख करने की ओर भी लक्षित है। साथ ही यह वंचित समूहों, विशेष रूप से शारीरिक रूप से निशक्त, जेंडर सरोकारों, कक्षागत संप्रेषण में आई०सी०टी० का प्रभाव इत्यादि परिप्रेक्ष्यों को भी शामिल करता है।

पैकेज में इन विषयों से ली गई महत्वपूर्ण विषयवस्तु अभिगम इन विषयों के प्रभावी संप्रेषण के लिए सहभागी अभिगम का

प्रयोग करते हुए विविध गतिविधियों का उपयोग, संदर्भ सूची/संदर्भों और प्रशिक्षण अनुसूची शामिल है ताकि अध्यापक प्रशिक्षण संगठनों को अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में सहायता मिल सके। विभिन्न विषयों से संबंधित माड्यूलों में, शिक्षकों को अपने शिक्षण-अधिगम प्रक्रम में प्रभावी रूप से शामिल करने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में ऊपर दिए गए सामान्य सरोकारों को शामिल करने का सचेतन प्रयास किया गया है।

सेवारत शिक्षकों के व्यावसायिक विकास पैकेज के उद्देश्य

- शिक्षकों को सामाजिक विज्ञान के घटकों के सूक्ष्म अंतर समझने के लिए तैयार करना और सामाजिक विज्ञान परिप्रेक्ष्य को विकसित करना।
- शिक्षकों को ज्ञान के क्षेत्र और जाँच-पड़ताल की विधि में नई प्रवृतियों से परिचित कराना जैसा कि एन०सी०एफ०–2005 के पाठ्यचर्या और पाठ्य-पुस्तकों में परिलक्षित है।
- शिक्षकों को किसी विषयवस्तु को एक अंतर विषयक अभिगम द्वारा संप्रेषित करने योग्य बनाना।
- शिक्षक को यह जानने हेतु सक्षम बनाना कि शिक्षार्थी किस प्रकार ज्ञान का सर्जन करते हैं और कक्षा में इस प्रक्रम को कैसे निष्पन्न किया जाता है।
- नए उभरते विषय क्षेत्रों के संप्रेषण के लिए विभिन्न कार्यनीतियाँ, क्षमताएँ और कौशल प्राप्त करने हेतु शिक्षकों को मदद करना।
- शिक्षकों को अपने स्थानीय परिवेश/अनुभवों के संदर्भ में विषयों को जोड़ने के लिए उनमें क्षमताएँ विकसित करना।
- पाठ्यचर्या के प्रभावी संप्रेषण के लिए शिक्षकों को कक्षा और कक्षा से बाहर स्वयं सीखने/टीम कार्य को प्रोत्साहित करने हेतु सक्षम बनाना।
- कक्षा में प्रत्येक बच्चे की प्रगति को मॉनीटर करने के साथ-साथ उपचारी सहजात के संचालन की क्षमताएँ विकसित करना।
- शिक्षकों को यह जानने योग्य बनाना कि हम एक बहुलतावादी समाज में रहते हैं और शिक्षार्थी विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों से संबंध रखते हैं और उनके सीखने की क्षमताएँ भी भिन्न होती हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की सरंचना

यह ध्यान में रखते हुए कि सामाजिक विज्ञान शिक्षकों की कमी है और उनकी अनुपस्थिति शिक्षण-अधिगम प्रक्रम को प्रभावित करती है। यह पैकेज प्रशिक्षित स्नातक शिक्षकों के पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए विकसित किया गया है, चूँकि सामाजिक विज्ञान में चार विषय होते हैं, अत: प्रत्येक विषय में शिक्षकों के अभिमुखीकरण के लिए एक-एक दिन तय किया गया है ताकि वे नए अभिगमों और संबंधित विषय के सूक्ष्म भेदों से परिचित हो सकें। पैकेज का उद्देश्य किसी विशिष्ट थीम से संबंधित विषय-वस्तु का विस्तृत प्रस्तुतीकरण देना नहीं है, बल्कि शिक्षकों को एक विशेष थीम के अंतर्गत मुख्य संकल्पनाओं और विभिन्न 'करने योग्य' गतिविधियों के माध्यम से उनके संप्रेषण से अवगत कराना है। कार्यक्रम की अवधि लचीली हो सकती है। यदि संबंधित संयोजक इसे छुट्टियों में आयोजित करना चाहें तो यह कार्यक्रम इक्कीस दिनों के लिए आयोजित किया जा सकता है।

प्रशिक्षण के पहले दिन पंजीकरण के बाद, प्रारम्भिक सत्र में कार्यक्रम के उद्देश्य शामिल होंगे, जिसके बाद शिक्षक अपना परिचय देंगे और प्रशिक्षण कार्यक्रम से अपनी अपेक्षाएँ बातएंगे। दूसरे सत्र में RMSA (राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान) के लक्ष्य और उद्देश्यों की चर्चा की जाएगी। तीसरे सत्र में एन०सी०एफ०-2005 के आलोक में कक्षा IX और X की

सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों पर परिचर्चा की जाएगी। जेंडर, समावेशी शिक्षा, आई०सी०टी० का उपयोग और किशोर शिक्षार्थियों को समझना आदि सामान्य सरोकारों पर प्रत्येक के लिए पाँच दिनों के कार्यक्रम में एक-एक सत्र रखा जा सकता है। शेष सत्रों को चार विषयों– भूगोल, इतिहास, राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र के शिक्षकों के अभिमुखीकरण के लिए निश्चित किया गया है। प्रत्येक दिन विषय विशेषज्ञ की प्रस्तुति के बाद संभागियों द्वारा समूहकार्य, गतिविधियाँ और शिक्षण-अधिगम कार्य नीतियाँ और मूल्यांकन होगा। एक दिन क्षेत्र भ्रमण के लिए रखा गया है।

माध्यमिक स्तर के लिए सामाजिक विज्ञान में पाँच दिवसीय सेवारत शिक्षकों के व्यावसायिक विकास कार्यक्रम की प्रस्तावित समय-सारणी

प्रशिक्षण समय-सारणी

दिवस 1: सोमवार

09.45 – 10.00	प्रारम्भिक टिप्पणी
10.00 – 10.15	संभागियों का स्व परिचय और कार्यक्रम से उनकी अपेक्षाएँ
10.15 – 10.30	राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान का परिचय
10.30 – 11.15	माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के अभिगम
11.15 – 11.30	चाय
11.30 – 13.00	इतिहास माड्यूल – 1 का प्रस्तुतीकरण और परिचर्चा
13.00 – 14.00	दोपहर का भोजन
14.00 – 15.30	इतिहास माड्यूल – 2 का प्रस्तुतीकरण और परिचर्चा
15.30 – 15.45	चाय
15.45 – 17.15	सामाजिक विज्ञान में आकलन कार्यविधियाँ और सतत् एवं समग्र मुल्यांकन (CCE)

दिवस 2: मंगलवार

09.45–11.15	किशोर शिक्षार्थियों को समझना
11.15–11.30	चाय
11.30–13.00	भूगोल मॉड्यूल-1 का प्रस्तुतीकरण और परिचर्चा
13.00–14.00	दोपहर का भोजन
14.00–15.30	भूगोल मॉड्यूल-2 का प्रस्तुतीकरण और परिचर्चा
15.30–15.45	चाय
15.45–17.15	सामाजिक विज्ञान शिक्षा को समावेशी बनाना

दिवस 3: बुधवार

क्षेत्र भ्रमण

दिवस 4 : बृहस्पतिवार

09.45–11.15	सामाजिक विज्ञान के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई०सी०टी०)
11.15–11.30	चाय
11.30–13.00	राजनीति विज्ञान मॉड्यूल-1 का प्रस्तुतीकरण और परिचर्चा
13.00–14.00	दोपहर का भोजन
14.00–15.30	राजनीति विज्ञान मॉड्यूल-2 का प्रस्तुतीकरण और परिचर्चा
15.30–15.45	चाय
15.45–17.15	फिल्मों से सीखना

दिवस 5: शुक्रवार

09.45–11.15	सामाजिक विज्ञान में जेंडर परिप्रेक्ष्य
11.15–11.30	चाय
11.30–13.00	अर्थशास्त्र मॉड्यूल-1 का प्रस्तुतीकरण और परिचर्चा
13.00–14.00	दोपहर का भोजन
14.00–15.30	अर्थशास्त्र मॉड्यूल-2 का प्रस्तुतीकरण और परिचर्चा
15.30–15.45	चाय
15.45–16.15	संभागियों से प्रतिपुष्टि (फीडबैक)
16.15–16.30	समापन

परीक्षण के घटक

विधियाँ	विवरण
प्रस्तुतीकरण	• प्रशिक्षक समूह को जानकारी देते हैं, कुछ दृश्य सहायक सामग्री का उपयोग करते हुए, जैसे- - ब्लैक बोर्ड - पावर प्वाइंट • ओवरहेड प्रोजेक्टर/स्लाइड प्रदर्शन। नाटक को भी शामिल किया जा सकता है, जहाँ दो या अधिक प्रशिक्षक संभागियों के प्रेक्षण करने और नोट्स बनाने के लिए किसी दृश्यलेख को अभिनीत करें। सत्र पारस्परिक क्रियात्मक होने चाहिए।

भागीदारी	'प्रश्न और उत्तर' को सत्र के आधार के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है। छोटे समूहों में निम्न अभ्यास को आयोजित किया जा सकता है – • प्रश्न उठाने और उत्तर ढूँढने के लिए • विवेचनात्मक रूप से मुद्दों पर परिचर्चा और विश्लेषण करने के लिए
गतिविधि आधारित/क्षेत्र कार्य (त्वरित अधिगम)	प्रशिक्षक समूह गतिविधियों (कक्षा में और कक्षा से बाहर) के माध्यम से अधिगम को सहज बनाते हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम डिज़ाइन करना

प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस प्रकार की विधियाँ अपनानी चाहिए, जो रचनात्मकता, सौंदर्यबोध और विवेचनात्मक परिप्रेक्ष्यों को बढ़ावा दें और शिक्षकों को समाज में उभरती प्रवृत्तियों को समझने में सक्षम बनाए। प्रशिक्षण डिज़ाइन को स्थानीय प्रासंगिकता और शिक्षण–अधिगम परिस्थिति की विशिष्टता पर बल देना चाहिए। पूर्व ज्ञान, कौशल और संभागियों की अपेक्षाएँ प्रशिक्षकों को यह समझनें में मदद करेंगी कि प्रशिक्षण में क्या शामिल किया जाना चाहिए। सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान बहुत सरल और सामान्य संकल्पनाओं पर जोर देने की आवश्यकता नहीं है, जो शिक्षकों को पहले से पता है। साथ ही प्रशिक्षण की विधि को परम्परागत विधियों/व्याख्यान/चाक और टॉक (बोलना) से बदल कर ऐसी विधि अपनानी चाहिए जिसमें सम्भागियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो। समस्या समाधान, नाटकीकरण और भूमिका निर्वाह आदि कम प्रयोग में लाई कई विधियों का उपयोग किया जा सकता है। कुछ अन्य विधियाँ जैसे केस अध्ययन, भूमिका निर्वाह, फिश बाउल अभ्यास, इत्यादि, जो कौशलों का संवर्धन करती है, नीचे दी गई हैं –

नाम	विवरण	संबधित कौशल
केस अध्ययन	एक विधि जिसमें सम्भागियों को एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाला दृश्य, परिस्थितियों (वास्तविक, काल्पनिक या दोनों का मिश्रण) का एक सेट, अन्य संबंधित आँकड़ों के साथ लिखित रूप में विश्लेषण और फिर निदान तथा एक विशेष समस्या का समाधान करने के लिए दिए जाते हैं।	कार्यविधिक / व्यक्तिगत
तकनीक अभ्यास/ अनुकरण/ भूमिका निर्वाह	ऐसी विधि जिसमें विशेष कौशलों या तकनीकों का अभ्यास करने के लिए छोटे प्रश्न बनाए जाते हैं। भूमिका निर्वाह के मामले में कलाकार मात्र अपनी भूमिकाओं पर ही नहीं, अपितु उनके बीच में होने वाली पारस्परिकता पर भी समझ बनाते है।	अंतर्वैयक्तिक / वैयक्तिक
समस्या समाधान	एक विधि जिसमें विद्यार्थी सक्रिय रूप से खोज के प्रक्रम, समस्याओं को परिभाषित करने, परिकल्पना को समायोजित करने, आँकड़ों का वर्गीकरण करने, विवेचनात्मक सोच को विकसित करने जैसी भूमिका के लिए तैयार रहते है, जिसमें शिक्षक सहायक की भूमिका निभाते हैं।	
वाद-विवाद	यह प्रक्रम किसी मुद्दे को लेकर शुरू होता है, दो विपरीत दृष्टिकोणों की पहचान की जाती है, काम को बाँटने के लिए कार्य नीतियाँ सुझाई जाती हैं।	समूह कार्य/ तार्किक सोच
परिचर्चा	किसी महत्वपूर्ण विषय की पहचान तथा उस पर तर्कपूर्ण विचार करना।	समूह कार्य/ तार्किक सोच

अखबार की कतरनें/कोलाज	इनका उपयोग एक संसाधन सामग्री के रूप में विद्यार्थियों को यह समझाने के लिए किया जाता है कि जो विभिन्न अर्थशास्त्रीय संकल्पनाएँ वे विषय के अंतर्गत सीखते हैं, वे उनके दैनिक जीवन से संबंधित होती हैं। उदाहरण के लिए खाद्य समस्या पर अखबार की कतरन को एक केस अध्ययन या एक अभ्यास के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है। अखबार के लेख को पढ़ें और उससे उपजे प्रश्नों पर परिचर्चा करें।	
दृश्य-श्रव्य सामग्री	संकल्पना को बेहतर तरीके से समझने के लिए फिल्मों और वृत्त-चित्रों (डॉक्यूमेंटरी) का उपयोग किया जा सकता है। बड़े बाँधों के निर्माण से समाज के विकास पर पड़ने वाले प्रभाव पर परिचर्चा शुरू करने के लिए बाँधों के निर्माण पर वृत्त-चित्र/ लघु फिल्में दिखाई जा सकती हैं। हाशिए के समूहों के परिप्रेक्ष्यों को बताने के लिए प्रतिरोध गीत प्रभावी संसाधन सामग्री हो सकते हैं।	
क्षेत्र अध्ययन	विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के आर्थिक विश्लेषण में संलग्न करें और ऐसा करने में सिद्धांत के अनुप्रयोग में उनके कौशलों का विकास करें।	

प्रशिक्षण का कार्यान्वयन

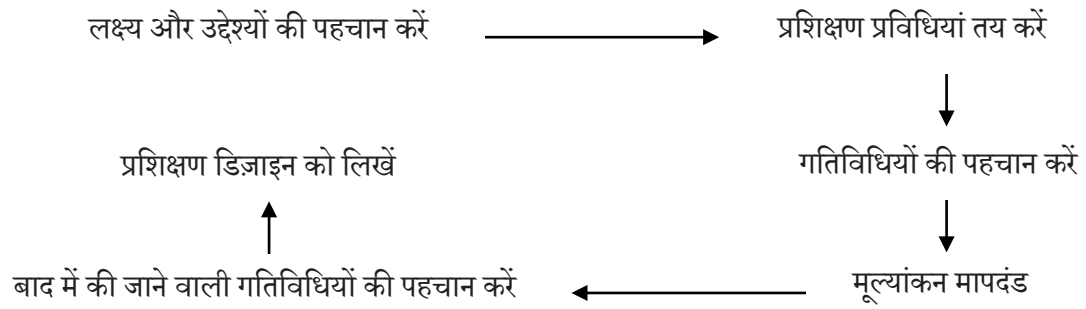

चित्र 1.2 शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में चरण श्रृंखला

प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन

प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन संभागियों से प्राप्त मौखिक/लिखित प्रतिपुष्टि (फीडबैक) से किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण के मूल्यांकन में उस उद्देश्य का ध्यान रखना चाहिए जिसके लिए फीडबैक उपयोग में लिया जाने वाला है। यदि उद्देश्य यह देखना है कि प्रशिक्षण ने विद्यालयी तंत्र में किस सीमा तक गुणात्मक वृद्धि की है, तब हमें देखना होगा कि प्रशिक्षण के कारण किस सीमा तक पाठ्यचर्या के संप्रेषण में सुधार आया है। यदि उद्देश्य यह देखना है कि प्रशिक्षण के बाद शिक्षकों के कक्षा-व्यवहार में कितना सुधार आया है, तो आवश्यक होगा कि शिक्षकों को कार्यक्रम पूरा होने के बाद शिक्षण करते हुए देखें अथवा प्राचार्य से इस संबंध में रिपोर्ट लें।

संभागियों द्वारा दिए गए सुझावों को प्रशिक्षण में शामिल किया जाएगा ताकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए शिक्षकों में क्षमता वृद्धि हो। प्रशिक्षण पर फीडबैक प्राप्त करने के लिए संभागियों को एक प्रश्नावली भी दी जा सकती है और इसके आधार पर उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण कार्यक्रम में संसोधन किया जा सकता है। प्रश्नों द्वारा शिक्षकों से उनके कक्षा में प्राप्त अनुभवों के संबंध में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। प्रश्नावली में प्रश्नों की संख्या सीमित होनी चाहिए और शिक्षकों को सभी प्रश्नों के उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मूल्यांकन हेतु प्रश्नों में वस्तुपरक और विवेचनात्मक, दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल किए जा सकते हैं।

प्रस्तावित फीडबैक (प्रतिपुष्टि) प्रश्नावली

नाम:

पद:

पता:

1. क्या पैकेज समझने में आसान था?

2. क्या आपको लगा कि माड्यूलों की गतिविधियाँ व्यावहारिक थी? क्या आप कक्षा में इनका उपयोग कर पाएँगे?

3. यह पैकेज शिक्षण-अधिगम प्रक्रम मे किस सीमा तक उपयोगी होगा?

4. क्या 'करके देखने वाला' कार्यक्रम पर्याप्त अवधि का था? यदि नहीं तो करण बताएं।

5. क्षेत्र-भ्रमण आपको किस रूप में उपयोगी लगा? क्या आप अपने विद्यार्थियों को क्षेत्र-भ्रमण के लिए ले जाएँगे?

6. यह पैकेज आपके व्यावसायिक विकास में किस सीमा तक योगदान करता है?

भाग IV
विषयवस्तु का संचालन

इतिहास

इतिहास शिक्षण

घटना से प्रक्रिया तक

प्रारम्भ में इतिहास की प्रस्तुति मुख्यतया घटनाओं एवं तथ्यपूर्ण तिथियों के विवरण की शृंखला की तरह होती थी। इसमें शासकों एवं उनकी विजय-गाथाओं के बारे में, सत्ता और संसाधनों पर उनके वर्चस्व एवं नियन्त्रण के बारे में विवरण होता था। किन्तु इतिहासज्ञ जिस तरह अतीत की पुनर्प्रस्तुति करते हैं, इतिहास की अधिकांश पाठ्य-पुस्तकों में उनकी जगह नहीं होती। अतीत को राजनीतिक प्रक्रियाओं से जोड़ने हेतु अपनाई गई पद्धति अधिकांश पाठ्य-पुस्तकों में सामाजिक-आर्थिक पद्धतियों के बजाए राजनीतिक घटनाओं पर केन्द्रित रहती है। फलस्वरूप राजवंशों की स्थापना, राज्यों-साम्राज्यों के विस्तार और शासकों की नीतियाँ जैसी घटनाएँ अतीत को आकार देनेवाले अन्य महत्त्वपूर्ण विकासों पर भारी पड़ते रहे। इस कारण अक्सर 'क्या हुआ' और 'कैसे हुआ' की वास्तविक संगति समझे बिना रट्टा मारने की स्थिति आ जाती है। यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि सामान्य लोगों के विवरण के साथ-साथ उनके व्यतीत जीवन का भी इतिहास होता है। उसमें परिवर्तनकारी शक्तियों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया समाहित रहती है। उन पर पड़ने वाले उन शक्तियों के प्रभाव शामिल रहते हैं। क्रमश: परिवर्तित हो रहे मानव समाज और विशिष्ट घटनाओं के स्वरूप की पूरी पद्धति समाहित रहती है। हम कभी-कभी भूल जाते हैं कि अपने दैनन्दिन जीवन में अत्यन्त साधारण वस्तुओं एवं घटनाओं से हम जो अनुभव करते है, उसका भी कोई न कोई अतीत होता है। उदाहरण के लिए, हम कभी सोचने का प्रयास नहीं करते कि समाचार-पत्र के कार्टून का भी एक अतीत होता है। जिस क्षण हम ऐसा करते हैं, उसी क्षण हम ऐतिहासिक दृष्टि से सोचना प्रारम्भ कर देते हैं।

अतीत के अध्ययन की प्रासंगिकता

इतिहास मात्र अतीत का अध्ययन ही नहीं है, वह वर्तमान और भविष्य पर भी प्रकाश डालता है। यह हमें समसामयिक सामाजिक वास्तविकता को समझने में मदद करता है, क्योंकि अतीत की घटनाओं और विकास से ही वर्तमान उत्पन्न हुआ है। इसी प्रकार वर्तमान के संदर्भ में अतीत के अनुभव, हमें विकास की सम्भावित दिशा-निर्धारण में सहायक होते हैं। हमारे आस-पास की घटनाएँ और अनुभव महज एक रात में घटित नहीं होते। ये सारे परिवर्तन, संक्रमण एवं सतत् विकास की लंबी प्रक्रिया के तहत होते हैं, जो स्पष्ट करता है कि जो कुछ होता है, क्यों होता है? हम परिर्वतन अनुभव तो करते हैं, किन्तु सोचते नहीं कि परिस्थितियाँ क्यों बदलती हैं, और अब स्थितियाँ वैसी नहीं हैं, जैसी अतीत में थीं।

वर्तमान संसार में हो रहे परिवर्तन और विकास को समझना एवं उसकी पड़ताल करना ही इतिहास है। यह वह जगह है, जहाँ इतिहासकार के कौशल की जटिलताएँ महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं—यहीं एक इतिहासकार लोगों द्वारा छोड़े गए सूत्रों को पहचानते हैं, इन सूत्रों या सुरागों की तुलना और विश्लेषण करते हैं और अंततः अतीत के बारे में अपनी व्याख्या देते हैं। इतिहासकार, न केवल अतीत की पुनर्प्राप्ति हेतु, बल्कि उसे सुलभ बनाने के लिए भी विविध स्रोतों पर निर्भर रहते हैं। हम इनसे नए-नए सवाल करें और विविध दृष्टिकोणों से इनका निरीक्षण करें तो यही स्रोत हमें नई बातें बताता है। परन्तु स्रोत मात्र से अतीत उजागर नहीं होता। इतिहासकारों को स्रोतों के साथ जूझना पड़ता है, उनकी व्याख्या करनी पड़ती है। ऐसे में यह बात महत्त्वपूर्ण होती है कि कोई इतिहासकार किस प्रकार स्रोतों को पढ़ते हैं और किस तरह उनकी व्याख्या करते हैं। इतिहास की पाठ्य-पुस्तकें विद्यार्थियों को प्राथमिक स्रोतों की व्यापक विविधता के बारे में जानकारी देती हैं और उन्हें उन प्रक्रियाओं से परिचित कराती हैं जिनके द्वारा वे अपने अध्ययन से अतीत के 'क्यों', 'क्या' और 'कैसे' जैसे पहलुओं की समझ बना पाते हैं।

प्रश्न यह है कि युवा शिक्षार्थियों के लिए अतीत का अध्ययन रुचिकर और प्रासंगिक कैसे बनाया जाए? शिक्षक के सामने

यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, अर्थात शिक्षक विद्यार्थियों में जिज्ञासा का बोध पैदा करने में सक्षम हों और उन्हें विश्वास दिलाएँ कि इतिहास विकास की प्रक्रियाओं के बारे में है, जिसके अंर्तगत अतीत की घटनाओं के बारे में सम्यक जानकारी हो, अर्थात् अतीत में क्या हुआ, समाज ने कैसे प्रगति की, लोगों ने कैसे अपनी जीविका के लिए कमाया, जैसा उन्होंने किया वैसा क्यों किया, किस प्रकार राज्य और साम्राज्य स्थापित हुए, क्यों लोग विद्रोह के लिए संगठित हुए, इत्यादि। शिक्षक के लिए अक्सर निर्धारित पाठ्य-पुस्तक ही उपलब्ध स्रोत होता है और पठन सामग्री का उपयोग ही निर्धारित करता है कि शिक्षार्थी अतीत के बारे में कितनी रुचि रखता है। इतिहास के शिक्षक को इतिहास पढ़ाने के अलावा 'इतिहास चित्रित' करने का प्रयास करना चाहिए। 'इतिहास चित्रण' से विद्यार्थी निष्क्रिय शिक्षार्थी नहीं रहेंगे और वे कक्षा में सक्रियता से भाग लेंगे। एन०सी०ई०आर०टी० की इतिहास की पाठ्य-पुस्तकें विद्यार्थियों को गतिविधि बक्सों, पाठ्यगत प्रश्नों, दृश्यों की व्याख्या, स्रोत-बक्सों, फोटोग्राफ और चित्रकारी, इत्यादि द्वारा अतीत से जुड़ने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराती हैं। अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक विद्यार्थियों में अतीत की समझ बनाने के लिए इन वस्तुओं का प्रयोग न्यायोचित रूप से करें।

विभिन्न दृष्टिकोणों से अतीत की समझ

भिन्न-भिन्न समूह के लोगों के लिए अतीत भी भिन्न-भिन्न था। किसान एवं मजदूर, महिलाएँ एवं अल्पसंख्यक समूह, व्यापारी एवं दुकानदार और भीड़ के अज्ञात एवं अनसुने चेहरे भी ऐतिहासिक विकास से प्रभावित हुए। किसान, कारीगर, महिला, व्यापारी, दुकानदार, शासक, अभिजात वर्ग...सब एक दूसरे से भिन्न थे और इसलिए राजनीतिक तथा सामाजिक-आर्थिक घटनाएँ उनके जीवन को कई तरह से प्रभावित करती थीं। हर ऐतिहासिक घटना या काल की परिचर्चा में सामान्य जन का अनुभव अभिन्न अंग के रूप में अवश्य शामिल होना चाहिए। अतः, यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी उससे संबंध बना सकें जो वे सीखते हैं। परियोजनाओं, वाद-विवादों, परिचर्चाओं, विचार-मंथन, इत्यादि के रूप में विभिन्न गतिविधियों का उपयोग अतीत के पुनर्निर्माण के विचार को बढ़ावा देने में सहायक होंगे। ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में इस प्रकार का दृष्टिकोण शिक्षार्थियों को किसी शिथिल ग्राही के बजाए एक सक्रिय प्रतिभागी के रूप में उन मूल आवश्यकताओं से परिचय कराती है।

इतिहास की पाठ्यचर्या के केन्द्र-बिंदु

पूर्ववर्ती कक्षाओं (छठी-आठवीं) के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम के इतिहास-खंड में विद्यार्थियों को प्राचीन से आधुनिक काल तक के भारत का इतिहास बताया जाता था। नवीं से दसवीं कक्षा में कुछ विविध शक्तियों और विकासों के अध्ययन का प्रयास किया गया, जिससे समकालीन विश्व के इतिहास का स्वरूप बना। भारत का विकास इसी वृहत् इतिहास में निहित है। भारत के अतीत का अध्ययन असम्बद्ध रूप से नहीं हो सकता, क्योंकि समाज और अर्थ-व्यवस्थाएँ हमेशा एक दूसरे से संबद्ध रहती हैं और इतिहास को हमेशा पूर्वनिर्धारित क्षेत्रीय सीमाओं के भीतर नहीं रखा जा सकता। अतएव, दूसरे स्तर पर इतिहास का केन्द्रीय लक्ष्य विश्व के वृहद् इतिहास के संदर्भ में भारत के अतीत की कहानी बताना है। साथ ही, इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों का दृष्टिकोण अध्ययन की एक मात्र मान्य इकाई के रूप में इसे राष्ट्रीय क्षेत्रीय सीमाओं के पार तक ले जाने का होता है। यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि लोग से ही राष्ट्र बनते हैं, और लोगों के बिना, या स्थानीयता के बिना हम राष्ट्र की बात नहीं कर सकते। मुख्य धारणा विभिन्न केन्द्र-बिन्दुओं को संयोजित करने की होती है—जैसे कि खास समुदाय एवं क्षेत्र के इतिहास का राष्ट्र के इतिहास से संयोजन; या कि अफ्रिका एवं इंडोनेशिया के विकास के परिप्रेक्ष्य में भारत एवं यूरोप के इतिहास का संयोजन।

दूसरे स्तर की गतिविधियों में पर पूर्वनिर्धारित रूढ़ियों से मुक्त होकर विषयों का चयन और संयोजन ही तर्कसंगत है। ऐतिहासिक लेखन में पश्चिम के इतिहास के साथ विकास और परिवर्तन को जोड़ने की धारणा का प्रभुत्व लम्बे समय से रहा है। पश्चिम के लोगों को उद्यमी, नवाचारी, परिश्रमी, वैज्ञानिक और परिवर्तनकामी दिखाया गया; जबकि पूर्व या अफ्रिका

के लोगों को सुस्त, परम्परावादी, अंधविश्वासी और परिवर्तन का विरोधी। ऐसा दृष्टिकोण हमें आधुनिक विश्व के निर्माण पर एकतरफा समझ देगा; क्योंकि समकालीन विश्व को केवल पश्चिम ने ही आकार नहीं दिया। इसके लिए हमें अन्य समकालीन समाजों को भी देखने की आवश्यकता है--विभिन्न समाजों का अनुभव कैसा रहा? कैसे वे उन परिवर्तनों तक पहुँचे? इसके लिए विभिन्न देशों के इतिहासों के बीच संबंध स्थापित करने की भी आवश्यकता है-- एक समाज में आए परिवर्तन से दूसरा कैसे प्रभावित होता है? भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था पर उपनिवेशवाद का प्रभाव; भारत एवं अन्य उपनिवेशों के विकास ने यूरोप को कैसे प्रभावित किया?

अतः, समकालीन विश्व का इतिहास केवल उद्योग एवं व्यापार, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान, रेलमार्ग एवं सड़क के विकास का इतिहास ही नहीं है; वह विभिन्न सामाजिक समूहों की आर्थिक गतिविधियों और जीवन-यापन की शैलियों का भी इतिहास है। इसका संबंध सामाजिक समूहों, वन में रहने वाले, पशु चराने वाले, खेतिहर और छोटे किसानों से है; जो विविध सामाजिक-आर्थिक पद्धतियों के अभिन्न अंग थे; जिन्होंने समकालीन विश्व को आकार दिया और परिवर्तनों की प्रकृति का सामना किया। अक्सर हम ऐतिहासिक विकास और पद्धतियों के अन्वेषण में लोगों के दैनिक जीवन की उपेक्षा करते हैं। जैसे—वे कैसे सांसरिकता का सामना करने में; दैनिक गतिविधियों के समायोजन में तल्लीन रहते थे? इसीलिए दैनिक जीवन के इतिहास में खेल-कूद, कपड़े, मुद्रण, अध्ययन, उपन्यास, समाचार-पत्र जैसे कुछ महत्त्वपूर्ण विषय भी उनके अभिन्न अंग के रूप में पाठ्य-पुस्तकों में शामिल किए गए हैं।

कक्षा नौ और दस, दोनों के पाठ्यक्रमों में तीन पृथक इकाइयाँ हैं। प्रत्येक इकाई भिन्न-भिन्न विषयों पर केंद्रित है। समकालीन विश्व पर समझ बनाने के लिए ये विषय महत्त्वपूर्ण हैं। हर वर्ष के लक्षित विषय में एक समूह की राजनीतिक घटनाओं, पद्धतियों और विचारधाराओं की बात हुई है, दूसरे समूह में जीवन-यापन की शैलियों की और तीसरे में संस्कृति, अधिकार एवं अस्मिता संबंधी प्रश्न पर विचार हुआ है। इतिहास का पाठ्यक्रम निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखकर बनाया गया है--

- राजनीतिक घटनाओं और पद्धतियों की चर्चा में इस बात पर बल दिया गया है कि आधुनिक विश्व के निर्माण में पश्चिम के साथ उपनिवेशों में विकास कितना महत्त्वपूर्ण है। स्वतंत्रता, लोकतंत्र और स्वेच्छाचारिता के विचार केवल पश्चिम में ही नहीं, उपनिवेशों में भी उभरे। साथ ही लोकतंत्र विरोधी विचार- फासीवाद, जातिवाद या साम्प्रदायिक विचार विभिन्न देशों में विभिन्न रूपों में विकसित हुए।
- 'जीविका और अर्थशास्त्र' इकाई में यह समझने का लक्ष्य है कि कैसे विभिन्न सामाजिक समूहों ने आधुनिक विश्व में आर्थिक परिवर्तनों का सामना किया और उन्हें प्रभावित किया। इस इकाई में प्रत्येक विषय का अध्ययन किसी क्षेत्र विशेष पर केन्द्रित है। बहुधा दो केस-स्टडी द्वारा अध्ययन किया गया है, जिसमें एक भारत है और दूसरा कोई अन्य देश। इससे शिक्षार्थियों को समान दिखने वाली पद्धतियों और घटनाओं के भीतर विचार-वैविध्य के सूत्र मिलेंगे। अन्य उदाहरणों के भीतर से ही विषय का विस्तार होगा। केस-स्टडी द्वारा प्राप्त विचार से सामान्य चर्चा लक्षित विषय के इर्द-गिर्द घूमती रहेगी और अध्ययन की परिणति सामने आएगी।
- संस्कृति और अस्मिता पर केंद्रित होते हुए, यह बताने का प्रयास किया गया है कि कपड़े या भोजन, खेल-कूद या विश्राम, मुद्रण या पुस्तकें, हर कुछ का एक इतिहास है। ये इतिहास सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों को परिलक्षित करते हैं और अक्सर इसका संबंध अस्मिता और सत्ता से होता है।
- प्रत्येक विषय की चर्चा करते समय लिखित सामग्री के साथ चित्र, फोटोग्राफ, कार्टून, विविध मूल स्रोतों से ली गई सामग्री--आँखों देखा हाल, यात्रा-साहित्य, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, नेताओं के कथन, सरकारी रिपोर्ट, दलों की संधियों, घोषणाओं की शर्तें और कुछ मामलों में समसामयिक कहानियाँ, आत्मकथाएँ, डायरियाँ, लोकप्रिय साहित्य, मौखिक परम्पराओं के व्यापक रूप आदि का उपयोग पूरक सामग्री के रूप में किया गया है। फिर भी प्रयास किया गया है कि शिक्षार्थी स्रोतों को पढ़ें, सोचें कि वे क्या कहते हैं और क्यों कोई चीज एक विशेष तरीके से प्रस्तुत की जाती हैं। कई मामलों में प्रश्नों को चित्रों और सार-सामग्री से जोड़कर आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर सकें।

- मानचित्रों के उपयोग द्वारा हर विषय को समय और परिस्थिति से जोड़ा गया है। मानचित्रों के प्रयोग द्वारा न केवल सूचनाएँ दी गई हैं, बल्कि आलोचनात्मक रूप से पढ़ने और उनके अंतस्संबंधों को भी समझाने का प्रयास किया गया है।

‘फ्रांसीसी क्रांति’ का सम्प्रेषण

संक्षिप्त परिचय

विश्व में अमेरिकी क्रांति के बाद, 18वीं शताब्दी में सबसे महत्त्वपूर्ण आंदोलनों में से एक सन् 1789 की फ्रांसीसी क्रांति थी, जिसने विश्व इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। यह क्रांति लम्बे समय से पनप रही थी और इस समय का शासन-तंत्र आम जनता का विश्वास खो चुका था। संक्षेप में, लोकतांत्रिक शासन में परिवर्तन को मात्र एक ‘अधिकार’ ही नहीं, ‘अत्यावश्यक’ भी माना गया। और, जब उसका अंत होने को हुआ, उसने फ्रांस में न केवल लोकतांत्रिक सिद्धांतों को मजबूत किया, बल्कि पूरे विश्व में भी इन विचारों को फैलाया।

शिक्षण-सीखने का उद्देश्य

‘फ्रांसीसी क्रांति’ पर बात करते समय शिक्षक को निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना होगा--

- पहला, विद्यार्थियों को स्पष्ट रूप से समझना होगा कि ‘क्रांति’ क्या है और यह ‘आंदोलन’ से कैसे भिन्न है।
- दूसरा, विद्यार्थी यह जान पाने में सक्षम हों कि वे कौन-सी ऐतिहासिक परिस्थितियाँ हैं, जहाँ क्रांति और आंदोलन के बीज फूटने और विकास पाने की उपजाऊ भूमि होती है।
- तीसरा, विद्यार्थी यह पहचानने में सक्षम हों कि वे कौन-सी विशेष परिस्थितियाँ थीं, जिनमें फ्रांस में एक क्रांति ने जड़ें पकड़ीं, और वहाँ से यूरोप के अन्य भागों में तथा दुनिया के शेष भागों में फैल गई।
- चौथा, विद्यार्थी अपनी भूमिकाओं पर स्पष्ट दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम हों, जिनका निर्वाह कुछ विचारों, संस्थाओं और व्यक्तियों द्वारा दिए गए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संगठनों में अधिक सुधारवादी परिवर्तन लाने के लिए किया जाता है।
- पाँचवाँ, विद्यार्थी उन गत्यात्मक पद्धतियों को पहचानने में सक्षम हों, जिनसे क्रांति गुजरी; फिर वे उन विभिन्न घटनाओं के बीच संबंध स्थापित करें, जो उस दौरान घटीं।
- छठा, विद्यार्थी उस दौरान घटी हर घटना को मान लेने के बजाए, उन पर प्रश्न करने, प्रमाणों को विवेचनात्मक पद्धति से परखने, तर्कसंगत निष्कर्ष निकालने, एक घटना के रूप में सम्पूर्ण क्रांति का या इसके विभिन्न पक्षों का पृथक रूप से आकलन करने में सक्षम हों।
- अंततः, विषय को पढ़ने के बाद विद्यार्थी इस योग्य हों कि वे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक कार्य-क्षेत्रों में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मूल्यों द्वारा फलीभूत आधुनिक युग की प्रक्रिया की सराहना कर सकें, आत्मसात कर सकें, ताकि मानवजाति के सार्वभौमिक विकास में योगदान दें।

प्रमुख संकल्पनाएँ

ऐसी गहन क्षमता विकसित करने में विद्यार्थियों की मदद करने और विषय-संप्रेषण को अर्थपूर्ण बनाने के लिए ‘क्रांति’ की एक रूपरेखा नीचे दी गई है, जिसके द्वारा विद्यार्थियों को यह सब स्पष्टत: बताया जा सकता है और फिर उन्हें निर्दिष्ट उप-शीर्षकों की ‘गतिविधियों’ द्वारा क्रांति के विभिन्न पक्षों का विवेचनात्मक रूप बताया जा सकता है-

A. क्रांति

क्रांति को सामान्यतः एक बलात परिवर्तन की तरह देखा जाता है, जिसका उद्देश्य किसी देश में विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तंत्र में पूर्ण परिवर्तन या नए तंत्र की स्थापना होता है। जबकि 'आंदोलन' को एक कार्यवाही समझा जाता है, जो साथ कार्य कर रहे लोगों के एक समूह द्वारा किया जाता है, जिसका उद्देश्य अपने समान किए गए सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक विचारों को आगे बढ़ाने के लिए विद्यमान व्यवस्था को विस्थापित किए बिना सकारात्मक परिवर्तन लाना होता है। अतः यहाँ विद्यार्थियों के लिए यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि तंत्र के पूर्ण परिवर्तन और तंत्र में सकारात्मक परिवर्तन में क्या अंतर है।

गतिविधि 1: परिचर्चा

आरम्भ में विद्यार्थियों के लिए 'क्रांति' और आंदोलन की धारणाओं को समझना, और फिर उनमें अंतर समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है। इससे पहले कि वे फ्रांसीसी क्रांति के आवेग, प्रगति और प्रभावों को भली-भाँति समझ पाएँ; उन्हें तदनुरूप सक्षम बनाने हेतु सबसे सरल तरीका है कि उन्हें इस मुद्दे पर एक परिचर्चा में लगा दिया जाए। अतः, शिक्षक फ्रांसीसी क्रांति को पढ़ाना शुरू करने से पहले निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं—

- विद्यार्थियों से शिक्षक क्रांति के नाम से चर्चित घटनाओं--हरित क्रांति, औद्योगिक क्रांति, रूसी क्रांति, सांस्कृतिक क्रांति, जन-संचार सूचना क्रांति, इत्यादि पर चर्चा करने हेतु कह सकते हैं।
- इसी प्रकार शिक्षक कक्षा में परिचर्चा प्रारम्भ कर सकते हैं, ताकि वाद-विवाद कर विद्यार्थी तय करें कि क्यों स्वतंत्रता के लिए भारत का संघर्ष एक आंदोलन माना जाना चाहिए, न कि कोई क्रांति।
- इस अवधारणा को ठीक से समझने के लिए विद्यार्थी अपनी परिचर्चा में 'मजदूर आंदोलन', 'सहकारी आंदोलन', 'जन अधिकार आंदोलन', 'नारीवादी आंदोलन', 'समाज सुधार आंदोलन', 'मिताचार आंदोलन', 'भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन', इत्यादि जैसे कुछ और घटनाओं को भी शामिल कर सकते हैं।

गतिविधि 2 : अलग-अलग समूह परियोजनाएँ - तुलन तालिका बनाना

परियोजनाएँ वैविध्यपूर्ण और विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को समृद्ध करने वाली होनी चाहिए। इस मामले में शिक्षक निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं-

1. विभिन्न 'क्रांतियों' और 'आंदोलनों' की अलग-अलग तुलन-तालिका बनाने का कार्य विद्यार्थियों के समूहों (वैयक्तिक या सामूहिक) को दिए जा सकते हैं (जैसा उल्लेख पहले हुआ या जैसा वे लोगों से उपलब्ध जानकारी से पता लगा सकते हैं)। प्रत्येक में 'क्रांति' और 'आंदोलन' के अभिलक्षण बताए जाएँ ताकि साथ-साथ तुलना हो जाए और वे इस प्रश्न का उत्तर दें कि इन घटनाओं को क्यों 'क्रांति' या 'आंदोलन' कहा गया।
2. इसी प्रकार विद्यार्थी दोनों वर्गों से कुछ उदाहरण लेकर 'विभेद तालिका' भी बना सकते हैं जो 'क्रांति' और 'आंदोलन' के विशिष्ट गुणों को उजागर करते हुए उनमें अंतर कर सके।

B. क्रांति की पूर्वसंध्या में फ्रांस

क्रांति की पूर्वसंध्या में फ्रांस 'प्राधिकार, वर्ग विशेषाधिकार और निरपेक्ष शासन पर आधारित' था। कई खामियों के बावजूद, सम्राट लुईस XIV में कभी 'अपने देश की भलाई की चिंता करने में कमी नहीं आई।' परन्तु उसके उत्तराधिकारी कमजोर

और केंद्रित राजतंत्रीय सरकार के गुरुतर दायित्व को निभाने में अयोग्य थे। असमानताओं के दबाव से बोझिल फ्रांसीसी समाज में एकता का भारी अभाव था। कुलीनता और उच्च पुरोहित-वर्ग विशेषाधिकार का सुख भोगने के साथ-साथ हर राजकीय जिम्मेदारी से निर्लिप्त और सभी अधिकारों का उपयोग करते थे। दूसरी ओर वंचितों में बुर्जुआ (मध्य-वर्ग), निम्न पुरोहित वर्ग, किसान और मजदूर थे, जो सभी प्रकार की बाध्यताओं में घिरे रहते थे और उन्हें कोई अधिकार नहीं थे। फ्रांसीसी अर्थव्यवस्था की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। अक्सर होने वाले युद्धों और राजा तथा उसके उच्च अधिकारियों द्वारा किए जाने वाले अपव्यय ने राज्य को दिवालियापन के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया था। विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग, जिनके पास धन देने की क्षमता थी, उन्हें राज्य का कोई भी कर देने से लगभग मुक्त कर दिया गया। करों का भार ऐसे वंचित वर्गों पर पड़ा, जिनकी क्षमता कुछ भी भुगतान करने की नहीं थी। राज्य की लड़खड़ाती वित्तीय स्थिति को उस समय और बड़ा झटका लगा, जब फ्रांस अमेरिका की स्वतंत्रता के युद्ध में शामिल हो गया। इस युद्ध के खर्चे ने सन् 1789 में लुईस XVI को जागीरों के प्रमुखों को बुलाने के लिए बाध्य किया, इस आशा से कि कोई हल मिल सके। इस उपाय ने 'पुराने शासन की मृत्यु की घंटियाँ बजा दीं और क्रांति का पहला चरण सामने आया।'

गतिविधि 1 : परिचयात्मक परिचर्चा

ऐतिहासिक घटनाओं को सही परिप्रेक्ष्य में देखने और जटिल विचारों, मसलों को सरल बनाने के लिए अक्सर परिचयात्मक चर्चा विद्यार्थियों को सही मार्ग दिखाती है। इस उदाहरण में जब तक विद्यार्थी क्रांति प्रारंभ होने से पहले फ्रांसीसी समाज को कष्ट देनेवाले मुद्दों को ढंग से नहीं समझ लें, वे बाद में होने वाले परिवर्तनों को नहीं समझ सकेंगे और फिर सदा परीक्षा के उद्देश्य से तथ्यों को समझे बिना रट्टा मारने की भी सोचेंगे। अतः इस स्तर पर शिक्षक को चाहिए कि वे निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर एक कुछ समय के लिए विद्यार्थियों को पारस्परिक क्रियात्मक परिचर्चा में लगाएँ।

1. फ्रांस के क्रांतिकारी इतिहास का यह भाग विद्यार्थियों से प्रश्न पूछ कर बेहतर तरीके से शुरू किया जा सकता है। ये प्रश्न इस तरह हो सकते हैं-- (क) असमानता क्या है, (ख) जीवन के विभिन्न क्षेत्रों (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक) में असमानता लोगों को किस प्रकार प्रभावित करती है, (ग) शासकों को गहन असमानता वाली परिस्थितियों से किस प्रकार निपटना चाहिए, (घ) नागरिकों के पास कार्रवाई करने के क्या तरीके हैं, जब उन्हें लगे कि शासक उनके सरोकारों के संबंध में बात करने में कोई रुचि नहीं ले रहे हैं, इत्यादि।
2. ये प्रश्न विद्यार्थियों को अपनी वर्तमान परिस्थितियों, जिनमें वे रहते हैं, तथा क्रांति-पूर्व फ्रांस की परिस्थितियों को सही परिप्रेक्षय में देखने में मदद करेंगे।
3. ऊपर दिए गए प्रत्येक प्रश्न पर परिचर्चा करते समय, शिक्षक को उपर्युक्त प्रश्न पूछ कर विद्यार्थियों का ध्यान असमानता के विभिन्न पहलुओं की ओर ले जाना होगा। प्रश्न इस प्रकार हो सकते हैं-- लोगों में असमानता केवल वर्ग आधारित थी या ऐसी असमानता हर वर्ग या श्रेणी के लोगों में (।) 'जेंडर आधारित' जैसे कि पुरुष और महिला (।।) 'व्यवसाय आधारित' जैसे कि छोटे पुरोहित-वर्ग, जो लोगों की बहुत-सी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करते थे और बड़े पुरोहित-वर्ग, जो अधिकतर चर्च की धार्मिक विधियों को संपन्न कराते थे और संपन्नता से रहते थे, में भी व्याप्त थी?

गतिविधि 2 : वाद-विवाद

क्रांति-पूर्व फ्रांसीसी समाज, राजनीतिक पद्धति और आर्थिक परिस्थिति के बारे में विद्यार्थियों द्वारा अर्जित वास्तविक समझ के आकलन हेतु पाठ्य-पुस्तक के प्रांसगिक पाठों का अध्यापन कर लेने के बाद, शिक्षक एक निम्नलिखित गतिविधि करा सकते हैं-

1. शिक्षक विद्यार्थियों से इस विषय पर वाद-विवाद करवा सकते हैं कि फ्रांस के तत्कालीन राजा लुईस XVI को क्रांति के प्रारम्भ हेतु किस सीमा तक उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। अतः वाद-विवाद का विषय होगा— *'फ्रांसीसी क्रांति के प्रारम्भ के लिए लुईस XVI पूर्ण रूप से उत्तरदायी थे।'*
2. इसके लिए शिक्षक, विद्यार्थी मिलकर आपसी समझ से इसका फॉर्मेट तय करेंगे, जिसे वे वाद-विवाद में अपनाएँगे। एक सामान्य फॉर्मेट है कि विद्यार्थियों को विषय के 'पक्ष' या 'विपक्ष' में पंक्तिबद्ध कर दें और फिर वे बार-बारी से आकर पहले पक्ष में, फिर विपक्ष में एक-एक कर आएँ, अपने तर्क रखें; और फिर यह क्रम चलता रहे।
3. किन्तु वाद-विवाद को अर्थपूर्ण बनाने हेतु सबसे पहले शिक्षक को उन मसलों को रेखांकित करना चाहिए जिन पर वाद-विवाद होना है। (क) राजा की अनिर्णायकता (ढुलमुल नीति), (ख) मजदूर वर्ग की मुसीबतें दूर करने की अथवा गैर-जिम्मेदार अभिजात्य और उच्च पुरोहित वर्ग का संज्ञान लेने की अक्षमता, और (ग) रचनात्मक सुधार के पक्ष में कार्य करने की अक्षमता जैसे विषय को वाद-विवाद के क्षेत्र में लाने चाहिए।
4. अंततः शिक्षक को वाद-विवाद का सार बताना चाहिए और पूरी कक्षा के हित में इसे बोर्ड पर लिख देना चाहिए।

C. फ्रांसीसी दार्शनिकों के उन्मुक्त विचार

फ्रांसीसी दार्शानिकों के उदारवादी विचारों ने पुराने शासन के अधीन दयनीय परिस्थितियों वाले जीवन से फ्रांस के आम लोगों की मुक्त होने की इच्छा को उत्तेजित किया। यह घोषणा करते हुए रूसो ने आम नागरिकों में लोकतंत्र के मूलभूत सिद्धांत को प्रचारित किया कि *'आदमी स्वतंत्र पैदा होते है, परन्तु सर्वत्र वे जंजीरों में जकड़े हुए है।'* रूसो के अनुसार, मुक्तिकामी लोकप्रिय इच्छा व्यक्त कर बंधनों की बेड़ियों को तोड़ा जा सकता है और एक सरकार स्थापित की जा सकती है। इसी तरह मॉण्टेस्क्यु ने 'सत्ता के पृथक्करण' और 'संवैधानिक सरकार' की अच्छाइयों के बारे में लोगों को बताया। वॉल्टेयर ने भी तानाशाही और चर्च के भ्रष्टाचार की बुराइयों का पर्दाफाश किया। कुल मिलाकर इन संदेशों ने तीन शब्दों 'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व' के साथ क्रांति के स्वर स्थापित किए।

गतिविधि 1: उत्साहवर्द्धक परिचर्चा

विभिन्न दार्शनिकों के क्रांतिकारी विचार, और इन विचारों ने क्रांति के प्रस्फुटन के लिए वातावरण बनाने में किस तरह योगदान किया, इस संदर्भ में पाठ्य-पुस्तक में दी गई विषय-वस्तु के संप्रेषण से पूर्व शिक्षक निम्नलिखित उत्साहवर्द्धक गतिविधि कर सकते हैं-

1. शिक्षक विद्यार्थियों से इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कह सकते हैं— (क) जब वे संकट में होते हैं, तो मदद के लिए किनकी ओर देखते हैं? (ख) वह क्या है, जिसे वे इस प्रकार की परिस्थिति में उपयोगी समझते हैं -- एक विचार जो उन्हें संकट से उबारने में मदद कर सकता है या वह सामग्री-सहयोग, जिसके उपयोग की पद्धति उसे नहीं मालूम है।
2. इसके बाद, शिक्षक एक विद्यार्थी को स्वेच्छा से आगे आकर उन उत्तरों को बोर्ड पर लिखने के लिए कह सकते हैं।
3. अंततः शिक्षक विद्यार्थियों से पूछ सकते हैं कि क्या वे कुछ व्यापक उत्तरों को समझने के लिए सहमत हैं कि फ्रांसीसी क्रांति में फ्रांसीसी दार्शनिकों के योगदान को समझने हेतु उन उत्तरों का क्या आशय है।

गतिविधि 2 : 'एक्जिट कार्ड' बनाना

विद्यार्थियों द्वारा 'एक्जिट कार्ड' (निकास पत्र) अक्सर उन विषयों पर बनाए जाते हैं, जिनका उन्होंने पूरी तरह अध्ययन कर लिया होता है। क्योंकि फ्रांसीसी क्रांति का यह पहलू एक केन्द्र-बिन्दु की तरह था, जिसके चारों ओर अन्य घटनाएँ पुनर्पुन: आकार ले रही थीं। अत: इसे विद्यार्थियों को भली-भांति पढ़ना चाहिए। उन्होंने ऐसा कर लिया है, यह जानने के लिए शिक्षक उन्हें अपने-अपने 'एक्जिट कार्ड' बनाने के लिए कह सकते हैं।

1. 'एक्जिट कार्ड' में निम्नलिखित मसले शामिल होने चाहिए--(क) महत्त्वपूर्ण शब्दावली और अवधारणाओं की सूची, (ख) इन शब्दावली और अवधारणाओं का अर्थ, (ग) ऐतिहासिक परिस्थितियाँ, जिनमें ये शब्दावली और अवधारणाएँ बनाई गईं, (घ) क्रांतिकारी विचारों की रचना और प्रसार से संबंधित तथ्यों की क्रमागत व्यवस्था (घटनाओं को क्रम से रखना), (च) विभिन्न दार्शानिकों, टेनिस कोर्ट शपथ, इत्यादि के विचारों से संबंधित दृश्य और विविध सामग्री का एक संग्रह, (छ) सभी महत्त्वपूर्ण विचारों के संक्षिप्त विवरण, (ज) उस विषय पर पूछे जाने लायक अपने बनाए प्रश्न, और अंतत: (झ) क्रांति के लिए दार्शानिकों के योगदान का कुल आकलन।
2. विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों के उपयोग से 'एक्जिट कार्ड' बनाने के लिए शिक्षक की ओर से विद्यार्थियों को 2-3 दिन का समय दिया जाना चाहिए।

D. क्रांति की ओर- जनता (तीसरे एस्टेट) की भूमिका

लुई XVI के आह्वान पर 176 वर्षों बाद एस्टेट जेनरल का सम्मेलन हुआ। यह तीन एस्टेटों (वर्गों)- पादरी, कुलीन और जन साधारण वर्ग के चयनित सदस्यों की तीन उपसमूहों की संस्था थी। पहले ये तीन एस्टेट अलग-अलग वोट डालते थे। इस पद्धति में 'तीसरा एस्टेट' हमेशा हर मामले में विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के लोगों के अन्य दो एस्टेट द्वारा पराजित हुआ। इसलिए ज्यों ही एस्टेट जेनरल की बैठक हुई 'तीसरे एस्टेट' के प्रतिनिधियों ने माँग रखी कि अबकी बार पूरी सभा द्वारा मतदान कराया जाना चाहिए, जिसमें प्रत्येक सदस्य को मत देने का अधिकार हो। प्रथम दो एस्टेटों ने इस माँग का पुरजोर विरोध किया, फलस्वरूप तीसरे एस्टेट को मजबूरन 17 जून, 1789 को स्वयं को नेशनल असेंबली घोषित करना पड़ा। दबाव में आकर राजा ने असेबंली हाल बंद करवा दिया ताकि 'तीसरा एस्टेट' अपनी क्रांतिकारी कार्यवाही आगे न बढ़ा सके। इससे उसके सदस्य भड़क गए और उन्होंने निकटवर्ती टेनिस कोर्ट में शपथ लिया और संविधान बनने तक वहीं डटे रहे। अंतत: जनसाधारण की इच्छा पूरी हुई और तीनों एस्टेटों की एक नेशनल असेंबली बन सकी।

गतिविधि 1: प्रश्न-उत्तर सत्र

यह पाठ के तथ्यात्मक खण्ड का मुख्य भाग है। फलस्वरूप प्रश्न-उत्तर सत्र संचालित कर विद्यार्थियों को अच्छी तरह तथ्य बताने की शिक्षकों के लिए यह सर्वाधिक आसान विधि है। कुछ विद्यार्थियों को तथ्य आसानी से याद हो जाते हैं, परन्तु कुछ को नहीं होते। अत: जब सभी विद्यार्थी कक्षा में सक्रिय प्रश्न-उत्तर सत्र में शामिल होते हैं, तो उनमें से प्रत्येक को तथ्यों की समझ आती है और इससे उन्हें तथ्यों को याद करने में आसानी होती है। इसके अलावा, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से वास्तविक प्रश्न महत्त्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि इन प्रश्नों के सही उत्तर विद्यार्थियों को किसी भी घटना के अनुवर्ती विकास को शामिल करने के लिए तैयार करते हैं। अत: कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी को शामिल करने के लिए शिक्षक निम्नलिखित सीधे प्रश्न पूछ सकते हैं और सही उत्तर बोर्ड पर लिख सकते हैं।

1. फ्रांसीसी शब्द 'एस्टेट' (Estate) का क्या अर्थ है?
2. एस्टेट जेनरल की संरचना किस प्रकार की होती थी?

3. 'नेशनल असेंबली' किसने गठित की थी?
4. 'नेशनल असेंबली' का गठन क्यों किया गया था?

गतिविधि 2 : मंचन : एस्टेट्स जेनरल की बैठकों का अभिनय

'भूमिका निर्वहन' या 'अभिनय' एक रुचिकर गतिविधि है। इसमें विद्यार्थी न केवल पूरी तरह भागीदार हो जाते हैं, बल्कि घटना, घटना से संबद्ध चरित्र, और उस घटना में अपनी भूमिकाओं के 'क्यों', 'कैसे' के बोध से भी सम्पन्न होते हैं। अत: फ्रांसीसी क्रांति के इस रुचिकर और विशिष्ट दौर के संबंध में शिक्षक विद्यार्थियों को निम्नलिखित तरीके से एस्टेट्स जेनरल के काम-काज पर 'नाटक खेलने' के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

चरण I: कक्षा के विद्यार्थियों को 1:1:2 के अनुपात में तीन एस्टेटों- पहला एस्टेट, दूसरा एस्टेट और तीसरा एस्टेट में बाँटा जा सकता है।

*(**नोट:** 40 विद्यार्थियों वाली कक्षा में पहले एस्टेट में विद्यार्थी की संख्या 10, दूसरे एस्टेट में भी 10 और तीसरे एस्टेट में 20 रखी जा सकती है। दो एस्टेट के समर्थन वाले प्रस्ताव को सम्राट मान लेगा।)*

चरण II: फिर तीनों एस्टेटों से कहा जा सकता है कि वे अलग-अलग निम्नलिखित प्रस्तावों पर बारी-बारी से बहस करें और उन्हें अपनाएँ :

1. गरीब लोगों पर कोई कर लागू नहीं;
2. अमीरों पर करों में वृद्धि;
3. सभी लोगों--पुरुष-स्त्री, गरीब-अमीर, अभिजात्य-किसान, छोटे पादरी-बड़े पादरी, आदि को समान अधिकार प्रदान करना;
4. तीनों एस्टेटों का एक में विलय;
5. संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना, और
6. पड़ोसी देशों के साथ युद्ध-बन्दी और मित्रता की संधियों पर हस्ताक्षर।

*(**नोट:** शिक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक एस्टेट के सदस्य अपने वर्ग के हितों के प्रति सजग हैं। ऐसा करने के बाद यह देखना रुचिकर होगा कि (क) हर प्रस्ताव पर प्रत्येक एस्टेट के तर्कों की दिशा क्या है; और (ख) क्या वे प्रस्तावों के 'समर्थन' या 'विरोध' में विचार कर रहे हैं।)*

चरण III: अंतत: सम्राट की भूमिका निभाने वाले शिक्षार्थी को किसी एक प्रस्ताव या कई प्रस्तावों के किसी एक सेट को कार्यान्वयन हेतु स्वीकार करना होगा और फिर कक्षा को समझाना होगा कि उन्होंने वही सेट क्यों स्वीकार किया, दूसरा क्यों नहीं किया।

E. जनसाधारण का उत्थान

नेशनल असेंबली के प्रति राजा की धारणा सन्तोषजनक नहीं थी। नव स्थापित निकाय के प्रति उसके द्वेषभाव को देखते हुए पेरिस की उग्र भीड़ ने राजकीय जेल, बेस्टिल पर धावा बोल दिया, और उसे धराशायी कर दिया। शाही निरंकुशता के इस प्रतीक का गिरना फ्रांस में स्वाधीनता की विजय का द्योतक था। पेरिस में म्युनिसिपल सरकार का नव स्वरूप स्थापित हुआ और व्यवस्था बनाए रखने के लिए नेशनल गार्ड का गठन हुआ। यह क्रांतिकारी जोश बड़ी शीघ्रता से सभी प्रांतों में फैल गया। अभिजात्य वर्ग ने अपने अधिकार एवं सुविधाएँ त्याग दीं। जन कार्यालय के द्वार सभी के लिए खुल गए। इस प्रकार

समता का सिद्धांत विजयी हुआ, जो पुरानी शासन-व्यवस्था के अंत का प्रतीक था।

गतिविधि: पोस्टर गैलरी

'पोस्टर गैलरी' बनाना एक मनोहारी गतिविधि है। इस गतिविधि द्वारा विद्यार्थी किसी नाटकीय ऐतिहासिक घटना पर अपनी समझ प्रदर्शित कर सकते हैं। इसके अलावा वे अपना रचनात्मक कौशल भी दिखा सकते हैं। अत: फ्रांसीसी क्रांति के इस विशिष्ट पहलू के सन्दर्भ में पोस्टर गैलरी बनाना विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी गतिविधि हो सकती है। पहली बात यह कि इससे न केवल 'बेस्टिल के पतन' जैसी ऐतिहासिक घटना के प्रति उनकी समझ और संवेदनशीलता की गहराई प्रदर्शित होगी, बल्कि श्रेष्ठता, 'समता के सिद्धांत' के कार्यान्वयन द्वारा 'स्वाधीनता की विजय' जैसी अमूर्त्त उपलब्धियों को प्रदर्शित करने में उनकी सहजात रचनात्मक वृत्ति और अर्जित कौशल भी अभिव्यक्त होगा। 'पोस्टर गैलरी' की रचना करते समय विद्यार्थियों को शिक्षक निम्नलिखित चरणों के अनुपालन का मार्गदर्शन दे सकते हैं।

चरण I: उपलब्ध प्राथमिक स्रोतों से विद्यार्थी कितनी भी संख्या में दृश्य सामग्री एकत्र कर सकते हैं। यह सामग्री घटनाओं से सम्बद्ध –(क) महत्त्वपूर्ण भवनों/स्मारकों (ख) नागरिकों, और (ग) वृत्तान्तों के चित्र हो सकते हैं। ये सामग्री (क) पोस्टर, (ख) पम्फ्लेट, और (ग) उस काल के समाचार पत्रों की कतरनें भी हो सकती हैं।

चरण II: इसके बाद, विद्यार्थी अपने व्यावहारिक पाठ के अंशों के अध्ययन, अनुशीलन के आधार पर अपना खुद का पोस्टर बना सकते हैं।

चरण III: इस प्रकार एकत्र और निर्मित पोस्टरों को व्यवस्थित कर विद्यार्थीगण घटना को क्रमबद्ध रूप दे सकते हैं।

चरण IV: अंतिम रूप से तैयार नमूने पर कक्षा में चर्चा होनी चाहिए, ताकि रही-सही कमी दूर हो जाए। इस कार्य में शिक्षक की बड़ी भूमिका होती है।

चरण V: अंतिम रूप से तैयार पोस्टर गैलरी उस वर्ष विद्यालय द्वारा आयोजित 'सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी' में प्रदर्शित की जानी चाहिए।

F. संविधान का निर्माण

अब नेशनल असेंबली ने खुद फ्रांस का भावी संविधान रचने का कार्य हाथ में लिया और कन्स्टिचुएंट असेंबली (1789-1791) के नाम से जाना जाने लगा। जिन सिद्धांतों को संविधान का आधार बनाया जाना था, वे 'अधिकारों की घोषणा (1789)' में अंतर्निहित थे। यह ऐसा दस्तावेज था, जिसमें घोषणा थी कि सभी मनुष्य स्वाधीन हैं और उन्हें समान अधिकार है। इसके अतिरिक्त, यह भी सुनिश्चित था कि राज्य की संप्रभुता जनसाधारण के हाथों में है। साथ ही, नेशनल असेंबली ने चर्च अधिकृत विशाल भूमि द्वारा फ्रांस की बिगड़ती वित्तीय दशा सँवारने का भी प्रयास किया। इस भूमि संपदा को बेचकर सरकार द्वारा लिए गए ऋण चुकाने में मदद मिली। चर्च में चुनाव द्वारा पदों को भरकर चर्च को भी सरकार के बढ़ते नियंत्रण में लाया गया। इससे चर्च के कुछ खण्ड बुरी तरह क्रांति के विरुद्ध हो गए। फ्रांस के अभिजात-वर्ग के कई सदस्यों ने क्रांति के प्रति अपना विरोध प्रदर्शित किया, क्योंकि वह अधिक उग्र होती जा रही थी। इन सब घटनाओं से विचलित होकर सम्राट लुई XVI ने परिवार सहित देश से भागने का प्रयास किया। किन्तु वे रास्ते में ही पकड़े गए और जून 1790 में उन्हें वापस पेरिस लाया गया। अब उनके समक्ष सितम्बर 1790 में फ्रांस को एक संवैधानिक राजतंत्र घोषित करने वाले नए संविधान को स्वीकारने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचा था।

गतिविधि: निबंधात्मक प्रश्न उत्तर लिखना

निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर देने के लिए विवेचनात्मक विश्लेषण की योग्यता के साथ-साथ सुगठित उत्तर देने के कौशलों की भी अपेक्षा होती है। विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त भाषा व्यवहार की भी आवश्यकता होती है। अतएव शिक्षक विद्यार्थियों से निम्नलिखित निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर पूछ सकते हैं। इससे फ्रांसीसी क्रांति के इस महत्त्वपूर्ण पहलू पर उनकी अर्जित समझ का स्तर जानने में मदद मिल सकती है। इसके अलावा विद्यार्थी अपने 'पुन:स्मरण', 'संप्रत्ययीकरण', 'वर्गीकरण', 'तुलना', 'व्याख्या', 'विश्लेषण' और आकलन जैसी क्षमताओं की परख भी कर सकते हैं। इससे उन्हें पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के कार्यान्वयन का बोध होगा।

1. आप नेशनल असेंबली की गतिविधियों पर किस दृष्टि से विचार करते हैं?
2. नेशनल असेंबली की गतिविधियाँ क्रांति के उद्देश्यों को किस प्रकार पूरा करती हैं?
3. क्रांति के चरम लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा मे संवैधानिक राजतंत्र अनिवार्य सोपान था क्या?
4. क्रांति का लक्ष्य क्या था?
5. इस स्थिति में फ्रांस में किसी ने सोचा होगा कि क्रांति का लक्ष्य पूरा हो गया?

G. द्वितीय क्रांति: गणतंत्र की स्थापना

नए संविधान की व्यवस्थाओं के अनुरूप चुनाव द्वारा एक विधान सभा का गठन किया गया, जिसमें मात्र एक छोटा मध्यवर्गीय निर्वाचक मण्डल था, जिनमें मतदाता होने की योग्यता इसलिए थी क्योंकि वे सम्पन्न थे। इससे मजदूर वर्ग में व्यापक विरक्ति उत्पन्न हो गई। दूसरी ओर फ्रांस छोड़कर भाग रहे अभिजात्य वर्ग के सदस्य ने ऑस्ट्रिया के सम्राट और फ्रांस की रानी मारी एंटॉइनेट के भाई, लिओपोड II को सफलतापूर्वक राजी कर लिया कि वे क्रांतिकारियों को चेतावनी दे दें कि वह फ्रांस में राजतंत्र की पुन:स्थापना करने के लिए पूरे यूरोप को अपने साथ लेकर वापस लौटेगा। इस चेतावनी को खतरा मानते हुए, विधान सभा ने ऑस्ट्रिया के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जैसे ही युद्ध प्रचंड हुआ, लोगों को संविधान के प्रति सम्राट की निष्ठा पर संदेह होने लगा। हिंसा ने राष्ट्र को जकड़ लिया और अंतरिम सरकार द्वारा सैकड़ों राजतंत्र वादियों को मौत के घाट उतारने के लिए राज्य की जेलों से बाहर निकाला गया। इससे फ्रांस में 'गणतंत्र' की स्थापना की मांग बढ़ गई। परिणाम स्वरूप, व्यापक वयस्क मताधिकार के आधार पर एक अधिक लोकतांत्रिक संविधान बनाने के लिए नेशनल कॉन्सिट्यूशनल कन्वेंशन (राष्ट्रीय संवैधानिक सभा) का चुनाव किया गया। प्रचलन में नेशनल कन्वेंशन के नाम से जानी जाने वाली इस सभा की बैठक 21 सितंबर 1792 को हुई और इसने जनता की माँग को वास्तविकता में बदल दिया। फ्रांस को गणतंत्र घोषित कर दिया गया। सम्राट को एक झूठे मुकदमें के बाद मौत की सजा दी गई और गिलोटिन (कर्त्तन यंत्र- दो खम्बों के बीच लटकते आरे वाली मशीन) में रख दिया गया।

गतिविधि: संरचनात्मक विश्लेषण

'संरचनात्मक विश्लेषण' एक महत्वपूर्ण शिक्षाशास्त्रीय टूल (साधन) है जो विद्यार्थियों को उस सिद्धांत का परिप्रेक्ष्य समझने में मदद करता है, जिसे इतिहास में 'चुनौती और प्रत्युत्तर' कहते है। विद्यार्थियों से यह गतिविधि करवाने के लिए शिक्षक निम्नलिखित चरणों को अपना सकता है।

चरण I: पहले विद्यार्थियों से एक 'तुलनात्मक चार्ट' बनाने को कहा जा सकता हैं, जिसमें दो ऊर्ध्व कॉलम 'चुनौती' और 'प्रत्युत्तर' शीर्षको से होंगे।

चरण II: फिर शिक्षक विद्यार्थियों से कहेगा कि चुनौतियों वाले कॉलम में वे चुनौतियाँ भरे जो 'नेशनल असेंबली' और 'नेशनल कनवेंशन' के सामने थी और 'प्रत्युत्तर' वाले कॉलम में वह प्रतिक्रियाएँ भरें जो इन

दो संगठनों द्वारा की गई।

चरण III: तब शिक्षक विद्यार्थियों से पूछेगा कि क्या आप यहाँ कोई पैटर्न (अनुक्रम) बनता देख रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी कई प्रकार से देंगे।

चरण IV: अत: शिक्षक को स्वयं विद्यार्थियों को पैटर्न दिखाना होगा-

(a) पहले, विद्यार्थियों के चार्ट से चुनौती की पहचान करें, (b) फिर बताएँ कि उद्देश्यों के एक समूह के साथ गठित संबंधित संगठन/संस्था ने कुछ कार्रवाई करके चुनौती का उत्तर दिया, (c) तीसरे, दर्शाएँ कि लोगों की इन कार्रवाइयों के प्रति क्या प्रतिक्रिया थी, यह सोचते हुए कि संबंधित उत्तर भिन्न हो सकते थे। (d) चौथा, किस प्रकार इस संस्था के विस्थापन के लिए आंदोलनों का प्रारम्भ हुआ, (e) पाँचवां, दर्शाएँ कि कैसे एक नई संस्था ने इसका स्थान लिया, और (f) अंतिम, बताएँ कि क्रांति को उग्र रूप देने के लिए प्रक्रिया कैसे चलती रही।

चरण V: अंत में, शिक्षक विद्यार्थियों से कहेगा कि वे विश्लेषण के आधार पर घटना पर एक विश्लेषणात्मक रिपोर्ट लिखें।

(नोट: इस प्रकार का 'संरचनात्मक विश्लेषण' वास्तव में एक साथ तीन गतिविधियों को शामिल करता है, जैसे (1) एक 'फ्लो चार्ट' (प्रवाह चार्ट) बनाना (2) 'तथ्यात्मक विश्लेषण' करना; और (3) एक 'विश्लेषणात्मक रिपोर्ट' लिखना। यह गतिविधि आगे आने वाले भागों मे दी गई घटनाओं को लेकर भी की जा सकती है।)

H. अराजकता की ओर- आतंकराज

आंतरिक प्रतिवादों के कारण नेशनल कन्वेंशन अपने को एकजुट रखने में असफल रही। संयमी गिरोन्डिन्स और उग्र जैकोबिन्स के झगड़ों के साथ-साथ विदेश में फ्रांसीसी सेनाओं की हार और देश में खाद्य पदार्थों की अनुपलब्धता और आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में भारी वृद्धि ने अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर दी। जबकि एक उग्र भीड़ के द्वारा नेशनल कन्वेंशन पर हमला करने पर सरकार जैकोबिन्स के हाथों में चली गई, गिरोन्डिन्स दक्षिण के शहरों में भाग गए और क्रांति-विरोधी गतिविधियों में लग गए। इस संकट को रोकने के लिए कन्वेन्शन द्वारा एक बारह सदस्यीय जन सुरक्षा समिति का गठन किया गया जिसका मुखिया मैक्समिलियन रोबेस्प्येर था और उसको सभी प्रशासकीय अधिकार दे दिए गए। इसने अगस्त 1793 से जुलाई 1794 के काल में आंतक के राज को कमजोर कर दिया, जिसमें लगभग चालीस हजार लोग मारे गए और इससे भी कहीं अधिक लोगों को संदेह के आधार पर जेलों में डाल दिया गया। साथ ही समिति ने देश की सम्पूर्ण जनता को संसाधनों सहित राष्ट्र का युद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया। परिणाम स्वरूप, शक्तिशाली राष्ट्रवादी भावनाओं से ओतप्रोत 800-1000 लोगों की 'जन सेना' जिसने निचले पदों से पदोन्नत होकर आए युवा अधिकारियों के योग्य नेतृत्व में क्रांति के विरोधियों के विरूद्ध अनेक बार विजय प्राप्त की, जिसे तब 'गठबंधन' कहा गया। यद्यपि युद्ध अभी जारी था, परन्तु ऐसा लगता था कि रोबेसप्येर के प्रति लोगों धैर्य खत्म होने लगा। यह दिलचस्प था कि जैसे उन्होंने मात्र संदेह के आधार पर कइयों के साथ किया, उन्हें और उनके अनुयाइयों को भी गिलोटिन में भेज दिया गया और इस प्रकार भंयकर आतंकराज का अंत हो गया।

गतिविधि: समूह परिचर्चा

एक शिक्षाशास्त्रीय टूल (साधन) के रूप में 'समूह परिचर्चा' को बहुत प्रभावी ढ़ंग से काम में लिया जा सकता है। विशेष रूप से प्रशासन के मुद्दों पर जहाँ परिस्थितियों को नियंत्रित करने के लिए किए गए उपाय चरम सीमा पर पहुँच जाते है, जैसा की 'आतंकराज' के मामले में हुआ। नागरिकों के पास क्या विकल्प हो सकते थे, इस पर समूहों में परिचर्चा की जा सकती है, क्योंकि इन विषयों पर अलग-अलग विचार हो सकते हैं।

चरण I: अध्याय के इस भाग के संदर्भ में "समूह परिचर्चा" निम्नलिखित प्रश्नों के इर्द-गिर्द हो सकती है।

1. गिरॉन्डिन्स और जैकोबिन्स के मध्य मतभेदों को निपटाने में नेशनल कन्वेंशन के पास क्या विकल्प थे?
2. क्या संघर्षरत दोनो दलों के मतभेदों के मुद्दे निपटाए नहीं जा सकते थे?
3. क्या आंतकराज के द्वारा सुधार आवश्यक था?
4. क्या लोकतांत्रिक सरकार स्थापित करने के लिए विरोधियों को मिटा देना अनिवार्य था?
5. क्या हिंसा को अधिक हिंसा से समाप्त किया जा सकता है?

चरण II: वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए जिससे विद्यार्थी ठीक से समझ सकें, परिचर्चा में हाल की घटनाओं को जोड़ा जा सकता है जो मिश्र, यमन, सीरिया, आदि देशों में घटित हो रही है।

I. उदारवादी/मध्यमार्गीय गणतंत्र

आतंकराज को संरक्षण देने वालों से ठीक से निपटने के बाद एक मध्यमार्गी गणतंत्र बनाने का प्रयास किया गया। अत: नया संविधान बनाया गया जिसके आधार पर एक नई पाँच सदस्यीय सरकार अक्टूबर 1795 को बनाई गई, जिसे डिरेक्ट्री कहा गया। परन्तु लोगों में व्यापक असंतोष बना रहा। ऐसा आंशिक रूप से निरंतर राष्ट्रीय युद्ध प्रयासों और मंहगाई के कारण और आंशिक रूप से इस कारण था कि नए संविधान के अंतर्गत एक बार फिर वोट देने का अधिकार मध्यमवर्गीय संपत्ति मालिकों तक सीमित कर दिया गया। इसके परिणाम स्वरूप जब दो वर्ष बाद (1797) स्वतंत्र चुनाव कराए गए, तो बहुत से अभिजात्य वर्ग के लोग विजयी हुए। इससे घबराकर डिरेक्ट्री को मदद के लिए सेना बुलानी पड़ीं। परन्तु अगले वर्ष परिस्थितियाँ अधिक बिगड़ गई जब ब्रिटेन और रूस ने फ्रांस के विरूद्ध दूसरे गठबंधन में परस्पर हाथ मिला लिए। इसने युवा नेपोलियन बोनापार्ट के लिए रास्ता बना दिया, जिसके नेतृत्व में एक वर्ष पहले सेना डिरेक्ट्री को बचाने और उसे गद्दी से उतार कर उसके स्थान पर नया विधान 'कॉन्सुलेट' लाने के लिए आयी थी।

गतिविधि : संसदीय वाद-विवाद

संसदीय वाद-विवाद एक ऐसा फार्मेट है जो विद्यार्थियों को व्यक्तिगत विचारों से ऊपर उठकर सरकारी नीतियों का विश्लेषण करने देता है। इस बहस को आयोजित करने के लिए शिक्षक निम्नलिखित चरणों का अनुसरण कर सकता है।

चरण I: विद्यार्थियों से कहे कि वे दो समूह - (1) पक्ष और (2) विपक्ष बना लें।

चरण II: वाद-विवाद के लिए प्रस्ताव तय करें, जैसे- डिरेक्ट्री को सत्ता में बने रहने का कोई अधिकार नहीं है।

चरण III: विद्यार्थियों को बताएँ कि वाद-विवाद के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदु होने चाहिए-

1. क्या लोकतांत्रिक गणतंत्र में सीमित मताधिकार होना चाहिए?
2. क्या लोकतंत्र में सरकार को अपने ही लोगों से बचाने के लिए सेना बुलानी चाहिए?
3. क्या लोकतंत्र में आर्थिक नीति जन केंद्रित या सरकार केंद्रित होनी चाहिए?
4. क्या कुछ राजनीतिक विचार, यदि आपत्तिजनक पाए जाएँ, तो उन्हें जनता को दिए जाने वाले भाषण से हटा देना चाहिए?

चरण IV: वाद विवाद के अंत में प्रस्ताव पर मतदान कराए।

चरण V: मतदान के परिणाम के आधार पर, विद्यार्थियों से डिरेक्ट्री और उसकी भूमिका तथा कार्यों के आकलन पर लिखने के लिए कहें।

चरण VI: विद्यार्थियों द्वारा दी गई सामग्री का मूल्यांकन करने के बाद आप अपने विचार रखें।

J. नेपोलियन कालीन फ्रांस और क्रांति

कॉन्सुलेट (1799-1804) ने फ्रांस को एक नया संविधान दिया। ऊपरी तौर पर देखने पर, यह विधानमंडल और व्यापक मताधिकार प्रदान करके समकालीन सभी जनप्रिय माँगें पूरी करता है। परन्तु, वास्तविकता में उसने पूरी सत्ता प्रथम कन्सुल नेपोलियन, के हाथों में दे दी। निसंदेह, क्रांति के फलस्वरूप उसने इसको आगे बढ़ाया और फ्रांस के समाज में विद्यमान विशेषाधिकारों को नकार दिया। इसके बाद से कानून के समक्ष समानता को सख्ती से लागू किया गया, जिसे संयुक्त रूप से 'कोड नेपोलियन कहा गया। आदेशों को दृढता से लागू किया गया, मँहगाई को घटाया गया और सार्वजनिक ऋणों को नियंत्रित किया गया। सेना सहित सरकारी कार्यालयों में भर्ती और पदोन्नति योग्यता के आधार पर की गई, लम्बे समय से लम्बित 1789 के कर सुधारों को लागू किया गया और दक्षता दिन प्रतिदिन के प्रशासन की पहचान बन गई। बाहरी मोरचे पर दूसरे गठबंधन को हराने के लिए ऑस्ट्रिया और इंग्लैण्ड पर विजय प्राप्त की गई। परन्तु नेपोलियन की व्यक्तिगत महत्वकांक्षा और निरंतर राजतंत्रवादी विरोध के कारण उसने 1804 में स्वयं को फ्रांस का सम्राट घोषित कर दिया। जल्द ही कुशल सेना और कूटनीतिक युद्धाभ्यास के कारण वह इंग्लैंड को छोड़कर सम्पूर्ण यूरोप को अपने नियंत्रण में ले आया। इंग्लैंड ने उसको आर्थिक नाकाबंदी, जिसे प्राय: कॉन्टीनेंटल सिस्टम (महाद्वीपीयी व्यवस्था) के नाम से जाना जाता है, सहित आक्रामक उद्देश्यों को चुनौती दी, क्योंकि वह विश्व में नौसैनिक आधिपत्य स्थापित कर चुका था। इसके साथ-साथ फ्रांस द्वारा जीते गए देशों में राष्ट्रवाद की एकजुट पुकार से अंतत: 1815 में वाटरलू के युद्ध में उसका पतन हुआ। यद्यपि अपने दस वर्षों के शासन काल मे जब उसने यूरोप पर एकछत्र राज किया तो इसके दूरगामी परिणाम स्वरूप फ्रांसीसी क्रांति से जुड़े बहुत से विचारों और सुधारों को दृढ़ता से लागू किया। और सभी अर्थों में यह उसकी स्वाधीनता के संदेश को बढ़ावा देने की मात्र अनिच्छा थी जिसने उसे पीछे धकेल दिया। आने वाले समय में, यही वह आदर्श था जिसने नए आधार पर यूरोप के पुनर्निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। आगे समानता और भाईचारे के इस आदर्श ने पूरे विश्व के देशों को प्रतिध्वनित और प्रेरित किया।

गतिविधि: मानचित्र पढ़ना

'मानचित्र पढ़ने' के शिक्षाशास्त्रीय साधन का प्रयोग शिक्षक निम्नलिखित क्रियाकलापों के लिए कर सकता है।

1. पहले कुछ स्थानों जैसे कॉर्सिका, पेरिस, ट्रैफलगर, नैपल्स, सिसिली, वेस्टफैलिया, वार्शा, लिस्बन, मैड्रिड, लिपजिग, एलबा, वाटरलू, सेंट हेलेना, इत्यादि के नाम किसी भी क्रम में बोर्ड पर लिख दें।
2. विद्यार्थियों से कहें कि वे इन स्थानों को दीवार पर लगे यूरोप के मानचित्र पर देखे।
3. विद्यार्थियों से पूछें कि इन स्थानों पर नैपोलियन बोनापार्ट के जीवन से जुड़ी कौन-कौन सी घटनाएँ घटी।
4. विद्यार्थियों से कहें कि वे इन घटनाओं को क्रमानुसार लिखे।
5. अन्त में विद्यार्थियों से कहें कि वे (a) नेपोलियन बोनापार्ट के सत्ता में आने के कारणों का पता लगाएँ , (b) उसके सैनिक अभियानों और उनके महत्व के बारे में लिखें, और (c) उसके पतन के कारण बताएँ।

निष्कर्षात्मक गतिविधि: टाइमलाइन तैयार करना

अध्याय की समाप्ति पर, शिक्षक विद्यार्थियों से कह सकता है कि वे 1789 से 1815 के मध्य, फ्रांसीसी क्रांति से संबद्ध मुख्य घटनाओं की टाइमलाइन तैयार करें और उसमें प्रत्येक घटना में प्रमुख व्यक्तियों, विचारों और संस्थाओं द्वारा निभाई गई भूमिकाओं को प्रदर्शित करें।

समेकित आकलन के लिए प्रश्न

समेकित आकलन के लिए शिक्षक कक्षा IX की इतिहास की पाठ्यपुस्तक भारत और समकालीन विश्व-1 में पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों पर विद्यार्थियों से चर्चा करें। साथ ही विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों के आंकलन में सहायता के लिए नीचे दिए गए शिक्षाशास्त्रीय नवाचारी उदाहरणस्वरूप दिये गये प्रश्न बना सकते हैं।

1. क्रांति-पूर्व फ्रांस में सामाजिक तंत्र किन रूपों में भेदभाव पूर्ण था? यह किस सीमा तक लोगों में असंतोष फैलाने के लिये उत्तरदायी था? (3+2)
2. वे कौन सी आर्थिक समस्याएँ थी जिन्होंने क्रांति के अंतिम दौर में फ्रांसीसी सम्राटों को परेशान किया? उन समस्याओं को सुलझाने के उनके प्रयास क्यों असफल हो गए? (3+2)
3. क्या लुई XVI ने एस्टेट जनरल को बुलाकर सही काम किया था? (4)
4. नेशनल असेंबली का निर्माण किस प्रकार हुआ? क्या इसे उन उद्देश्यों की प्राप्ति हुई जिसके लिए यह बनी थी? (3+3)
5. क्या नेशनल कन्वेंशन ने लोगों की अपेक्षाएँ पूरी की? यदि हाँ, तो कैसे, यदि नहीं तो क्यों? (2+3)
6. क्या आतंक राज का सहारा लेने का तर्क सही था? (3)
7. डिरेक्ट्री की उत्पत्ति क्यों हुई? क्या इसने अपने उद्देश्य प्राप्त किए? (2+2)
8. उन परिस्थितियों का उल्लेख करें जिन्होंने नेपोलियन को सत्ता में आने में सहायता की। क्या आप कहेंगे कि उसका सत्ता में आना क्रांति की भावना के विरूद्ध था? (5)
9. महाद्वीपीय व्यवस्था क्यों असफल हुई? (3)
10. यूरोपीय शक्तियाँ नेपोलियन की नीतियों के विरूद्ध क्यों थी? (3)
11. आपके विचार से नेपोलियन बोनापार्ट के पतन के क्या कारण थे? (3)
12. नेपोलियन के कार्यों का आकलन कीजिए। क्या हम उसे 'क्रांति की उपज' कह सकते हैं? (5)

सुझाई गई पठन सामग्री

1. Robert R. Palmer, The Age of the Democratic Revolution: A Political History of Europe and America, 1760-1800 (2 Vols): 1969, USA.
2. Christopher Hibbert, The Days of the French Revolution, New York: Morrow, 1980
3. William Doyle, The Oxford History of the French Revolution, Oxford: OUP, 2002
4. C.J.H. Hayes, Modern Europe (Indian Rpt), Delhi: Surjeet-Publication, 2000

दृश्य-श्रव्य सामग्री

1. The French Revolution: Birth of a New France, 16 mm film (21 min 2 colour/b&w), Encyclopedia Britannica Educational Corporation, Chicago, USA.
2. The French Revolution: Death of an Old Regime, 16 mm film (21 min, colour/b&W), Encyclopedia Britannica Corporation, Chicago, USA.

‘औद्योगीकरण युग’ का संप्रेषण

संक्षिप्त परिचय

जैसा हमने पिछले माड्यूल में देखा कि फ्रांसीसी क्रांति ने तेजी से नाटकीय ढ़ंग से फ्रांस का राजनीतिक ढ़ाँचा बदल दिया, और नेपोलियन की विजयों ने उसी तीव्रता और चमत्कारिक ढंग से इनमें से अनेक क्रांतिकारी सिद्धांतों को विश्व के अन्य भागों में फैला दिया। अट्ठारहवीं शताब्दी के अंतिम दौर और उन्नीसवी शताब्दी के आरंभ में, औद्यौगीकरण, यूरोप के आर्थिक और सामाजिक ढाँचें को बदल रहा था। यद्यपि उनकी गति बहुत धीमी और कम नाटकीय थी। औद्योगिकरण सामान्यत: कारखाना उद्योग से संबद्ध रहता है, परन्तु इंग्लैण्ड और यूरोप में 17वीं और 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में कारखाने शुरू होने से पहले से ही अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन कार्य हो रहा था, जो कारखाना आधारित नहीं था। यह चरण सामान्यत: ‘आदि औद्योगीकरण’ (Proto Industrialisation) कहलाता है। इसके बाद प्रमुख प्रौद्योगिकी परिवर्तन हुए, कारखाने स्थापित हुए और नए औद्यौगिक मजदूर वर्ग का उदय हुआ। अन्य विकास की तरह ही औद्यौगीकरण के भी इंग्लैण्ड के लोगों के समाज, अर्थव्यवस्था और जीविका पर अपने प्रभाव पड़े। औद्यौगीकरण के प्रभाव इंग्लैण्ड तक ही सीमित नहीं थे, ये सम्पूर्ण विश्व में, जैसे कि भारत में भी फैल गए।

शिक्षण-अधिगम उद्देश्य

‘औद्योगीकरण’ का संप्रेषण करते समय शिक्षक को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है-

- स्पष्ट रूप से यह समझना कि ‘औद्योगीकरण’ का क्या अर्थ है और यह किस रुप में विकसित हुआ।
- औद्योगीकरण के विस्तार का पता लगाना।
- पारंपरिक और लघु उद्योगों के अस्तित्व को देखें- उनका क्या हुआ और उन्होंने औद्योगिक विकास में किस प्रकार योगदान किया।
- औद्योगीकरण के पर्यावरण, जन सामान्य और सामान्य रूप से विश्व पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों (सामाजिक, आर्थिक और जीविका संबंधी) को परखें और उनका विश्लेषण करें।
- एक औपनिवेशिक देश मे औद्योगीकरण के प्रभावों को समझें।
-

मुख्य संकल्पनाएँ

A. औद्योगीकरण से पहले

अक्सर हम कारखाना उद्योग की वृद्धि को औद्योगीकरण से जोड़ लेते हैं। जब हम औद्योगिक उत्पादन की बात करते हैं तो हमारा आशय कारखाने के उत्पादन से होता है। जब हम उद्योग में काम करने वालों की बात करते हैं तो हमारा आशय कारखाने में काम करने वालों से होता है। परन्तु इंग्लैण्ड और यूरोप में कारखाने शुरू होने से पहले भी अंतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन किया जाता था। यह कारखानों पर आधारित नहीं था। बहुत से इतिहासकार औद्योगीकरण के इस काल को आदि औद्योगीकरण युग कहते हैं।

गतिविधि 1: चित्र विश्लेषण

शिक्षक पुस्तकों और इंटरनेट से ऐसे दृश्य/चित्र एकत्रित कर सकता है जो इस काल के जीवन को दर्शाते हों। दृश्य/चित्र विद्यार्थियों को दिखाए जा सकते है जिनसे अपेक्षा की जाती है कि वे उन्हें ध्यान से देखें। उदाहरण के लिए हम पाठ्यपुस्तक में दिये गए चित्र (चित्र A) का प्रयोग कर सकते है। यह गतिविधि विद्यार्थियों को आदि-औद्योगीकरण काल को समझने में सहायता करेगी। विद्यार्थियों को समझाइए कि यह चित्र एक ऐसे काल को दर्शाता है जब परिवार का प्रत्येक सदस्य सूत का उत्पादन करता था। इस अवधि में आप देख सकते हैं कि लोग अपने घरों से ही काम करते थे। यह 'घरेलू व्यवस्था' कहलाती थी। चित्र का विश्लेषण करते समय शिक्षक विद्यार्थियों का ध्यान इस ओर दिला सकता है कि चरखे का पहिया केवल एक तकली चला रहा है और इस प्रकार के उत्पादन के तरीके के लाभ और हानियों पर परिचर्चा शुरू करवा सकता है।

(नोट: परिचर्चा शुरू करने से पहले शिक्षक और विद्यार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को चित्र की विषय-वस्तु के बारे में विस्तार से बताएं।)

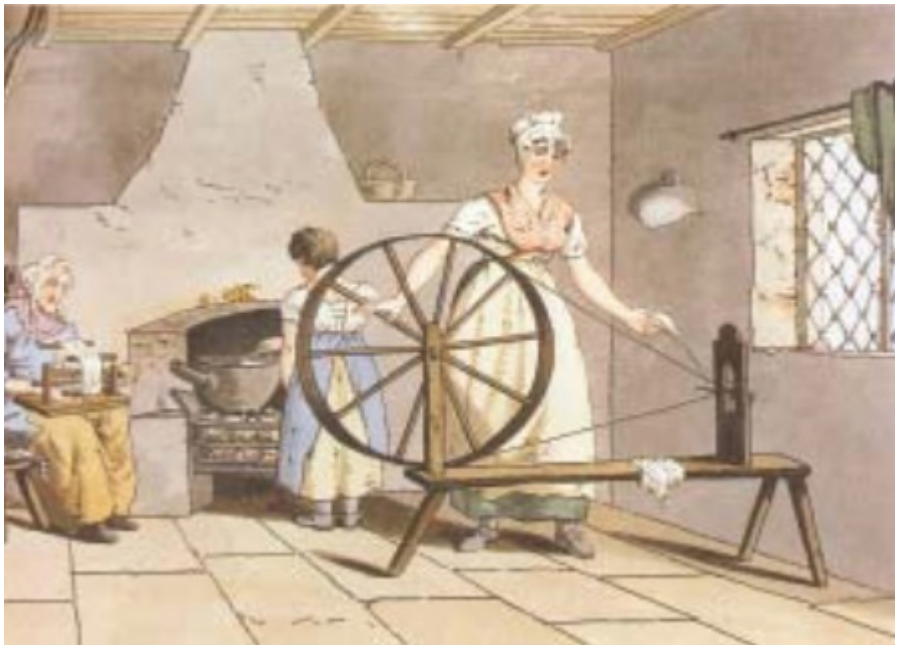

चित्र A: अट्ठारहवी शताब्दी में कताई करना

गतिविधि 2: रोलप्ले (भूमिका निर्वाह)

आदि औद्योगीकरण के काल में यूरोप में व्यापारियों ने शहरों से गांवो की ओर रूख किया और किसानो तथा कारीगरों को धन देकर उन्हें अन्तरराष्ट्रीय बाजार के लिए उत्पादन करने को राजी कर लिया।

आप ग्रामीण समाज को अन्तराष्ट्रीय बाजार के लिए वस्तुओं के उत्पादन के लिए राजी करने में व्यापारियों की भूमिका पर रोलप्ले का आयोजन कर सकते हैं। यह गतिविधि विद्यार्थियों को विषय की समझ पर अपने विचार रखने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

यह उनको उनकी भूमिका के अनुरूप उपयुक्त तर्क देने के लिए भी प्रेरित करेगी। यह उनको उन चरित्रों की स्थिति और भावनाओं को समझने के साथ अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करेगी, जिन चरित्रों को वे निभा रहे है। रोलप्ले में हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए। (ए) व्यापारी गांवों में क्यों आ रहे थे? (बी) उन्होंने किसानों और कारीगरों को कैसे मनाया? (सी) किसानों ने उनकी मांगों को क्यों मान लिया? नीचे कुछ महत्वपूर्ण चरण दिए गए है जिनका गतिविधि करवाते समय शिक्षक को अनुसरण करना चाहिए। ये चरण है:

1. शिक्षक द्वारा गतिविधि को तैयार करना और समझाना - चार विद्यार्थियों को व्यापारियों की भूमिका दे और पाँच को (बालिकाओं सहित) किसानो तथा कारीगरों की भूमिका दें। शेष कक्षा दर्शको की भूमिका में होगी जो रोलप्ले के बाद इन मुद्दों पर चर्चा करेंगे।
2. गतिविधि के लिए विद्यार्थी की तैयारी (चरित्रों के बारे मे शोध और आलेख लेखन)
3. रोलप्ले करना
4. रोलप्ले गतिविधि के बाद परिचर्चा या जानकारी लेना
5. श्रोताओं/दर्शकों की भागीदारी

आकलन: विद्यार्थियों का आकलन उनके द्वारा चित्र विश्लेषण के साथ-साथ रोलप्ले गतिविधि में उनकी भागीदारी के आधार पर किया जाएगा।

B. कारखानों का अस्तित्व में आना

इंग्लैण्ड में सर्वप्रथम 1730 के दशक में कारखाने अस्तित्व में आए। परन्तु अट्ठारहवीं शताब्दी के आखिरी वर्षो में इनकी संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई। उन्नीसवी शताब्दी के अंतिम वर्षों में कपास के उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई और यह वृद्धि उत्पादन की प्रक्रिया में हुए अनेक परिवर्तनों से जुड़ी थी। अट्ठारहवीं शताब्दी में हुए अविष्कारों की श्रृंखला ने उत्पादन प्रक्रम के प्रत्येक चरण की क्षमता को बढ़ा दिया। पहले कपड़ा घरों में ही बनता था, अब यह कारखानों में बनने लगा।

गतिविधि 1: समूह कार्य

शिक्षक कक्षा में उस काल के कुछ प्रमुख नवाचारों (भाप का इंजन, फ्लाई शटल, स्पिनिंग जेनी और वाटर फ्रेम, इत्यादि) के बारे में परिचय दे सकता है और उनका महत्व बता सकता है। विद्यार्थियों को चार-चार के समूहों में बाँट दें और प्रत्येक समूह से प्रत्येक नवाचार के उस देश और व्यक्तियों पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाने को कहें। ये गतिविधि विद्यार्थियों को प्रमुख अविष्कारों की पहचान करने और इंग्लैण्ड तथा वहाँ के लोगों पर उसके प्रभाव का पता लगाने में सक्षम बनाएँगी। यह सहयोगी अधिगम (Cooperative Learning) को भी सुगम बनाएगी। इसके लिए विद्यार्थियों को पुस्तकालय और इंटरनेट का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। प्रत्येक समूह को एक नवाचार पर अपनी खोजों को साझा करने दें। इन अविष्कारों के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों पर परिचर्चा करें। इन्होंने इस संसार को कैसे परिवर्तित किया है जिसमें हम रहते है? इसके महत्व को बताएं कि इन नवाचारों ने किस प्रकार घरेलू व्यवस्था को परिवर्तित किया।

(नोट: इस गतिविधि के लिए शिक्षक www.history.com पर उपलब्ध आविष्कारों और आविष्कारकों के चित्रों को उपयोग में ले सकते है।)

गतिविधि 2: एक विज्ञापन डिज़ाइन करना

शिक्षक विद्यार्थियों को इंग्लैण्ड में इस युग में हुए किसी आविष्कार के एक विज्ञापन का डिज़ाइन बनाने के लिए कह सकते हैं। विद्यार्थी समूहों में कार्य कर सकते हैं, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी किसी विशेष कार्य जैसे आलेख (स्क्रिप्ट) लिखने, विज्ञापन के ग्राफिक्स प्रस्तुत करने आदि का दायित्व लेगा। विज्ञापन में आविष्कार का चित्र, तथा उसकी प्रमुख विशेषताएं अवश्य शामिल होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी बताएं कि यह चित्र व्यक्तियों और विश्व के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करेगा। यह गतिविधि विद्यार्थियों में रचनात्मक और संप्रेषण कौशल को विकसित करने में सहायक होगी।

क्रियाकलाप 3: परिचर्चा

शिक्षक कक्षा में इस विषय पर परिचर्चा करवा सकते हैं कि "उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में किस प्रकार कारखाने तेजी से इंग्लैंड के परिदृश्य का अभिन्न अंग बन गए"। परिचर्चा के समय निम्नलिखित बातो को स्पष्ट किया जाना चाहिए-

- औद्योगीकरण की प्रक्रिया कितनी तेजी से हुई? वे कौन से क्षेत्र थे जो तेजी से विकसित हुए?
- पारंपरिक उद्योगों का क्या हुआ? क्या नए उद्योगों ने परम्परागत उद्योगों का स्थान ले लिया?
- पारंपरिक उद्योगों में परिवर्तन की गति क्या थी? क्या औद्योगीकरण का अर्थ केवल कारखाना उद्योगों की वृद्धि ही था?

एक शिक्षण पद्धति के रूप में परिचर्चा विद्यार्थियों को अधिक गहराई से सोचने और अपने विचारों को स्पष्ट करने को प्रेरित करेगी। शिक्षक अथवा विद्यार्थियों द्वारा निरंतर प्रश्न पूछने से विषय-वस्तु की मुख्य संकल्पनाओं को सीखने और गहराई से उनको समझने मे सहायता मिलती हैं।

आकलन: विद्यार्थियों का आकलन उनकी समूहों में भागीदारी, कक्षागत परिचर्चा/वाद-विवाद और विज्ञापन के आधार पर होगी। उनके द्वारा तैयार किए गए विज्ञापन का आकलन उसकी विषय-वस्तु, यथार्थता, रचनात्मकता और आकर्षण के आधार पर किया जाएगा। विज्ञापन पाठकों का ध्यान आकर्षित करने वाला और सुव्यवस्थित होना चाहिए।

C. श्रम की उपलब्धता और इसका श्रमिकों के जीवन पर प्रभाव

इंग्लैण्ड में मानव श्रमिकों की कमी नहीं थी। गरीब किसान बड़ी संख्या में शहरों में रोजगार की तलाश में जाते थे और काम मिलने की प्रतीक्षा करते थे। बहुत से उद्योगों में श्रमिकों की माँग अल्पकालिक होती थी, जैसे गैस संबंधी कार्य, मद्यनिर्माणशाला, किताबों पर जिल्द चढ़ाना, छपाई, आदि। बहुत से उत्पाद ऐसे थे जिन्हें हाथों द्वारा ही बनाया जा सकता था। विक्टोरिया शासित ब्रिटेन में उच्च वर्गों के लोग हाथ से बनी चीजों को पसंद करते थे। दूसरी ओर बाज़ार में श्रमिकों की अधिकता से उनके जीवन पर प्रभाव पड़ा- उन्हें कम पैसा मिलता था और वे लम्बे समय तक बेरोज़गार भी रहते थे। बेरोज़गारी के भय से श्रमिक अकसर नई प्रौद्योगिकी के उपयोग का विरोध करते थे। श्रमिक जिन परिस्थितियों में काम करते थे वे बहुत खराब थी- जैसे खराब वायुसंचार, गंदगी, नमी और कम रोशनी। ये कारखाने काम करने की दृष्टि से अस्वास्थ्यकर और खतरनाक होते थी। सामान्यत: श्रमिक प्रतिदिन बारह से चौदह घंटे काम करता था। कारखाना व्यवस्था ने काम करने के तरीके को बदल दिया। घरेलू व्यवस्था के विपरीत इसमें घर से दूर काम करना होता था। श्रमिकों को उनके नियोक्ताओं द्वारा मात्र सहायकों के रूप में देखा जाता था।

गतिविधि 1: क्षेत्र भ्रमण

किसी निकटवर्ती औद्योगिक शहर या क्षेत्र के लिए क्षेत्र भ्रमण आयोजित करें। विद्यार्थियों को सलाह दी जा सकती है कि वे उस क्षेत्र के प्रमुख उद्योगों की पहचान करें और उस शहर, वहां के लोगों के जीवन तथा आस-पास के पर्यावरण पर औद्योगीकरण के प्रभावों का अध्ययन करें। विद्यार्थी औद्योगीकरण से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के सम्भावित समाधानों पर भी सलाह दे सकते हैं। समूहों में निम्नलिखित क्षेत्रों में औद्योगीकरण के प्रभावों की पड़ताल की जा सकती है- जनसंख्या वृद्धि, जल एवं वायु प्रदूषण, जन आवास परियोजनाएँ, उद्यान और खेल के मैदान, सार्वजनिक परिवहन, गंदी बस्तियों को हटाना, औद्योगिक और प्रौद्योगिक परिवर्तन से उत्पन्न बेरोज़गारी, सौंदर्यीकरण और परिरक्षण परियोजनाएँ, तथा औद्योगिक या संबंधित उपयोग के लिए ऐतिहासिक या सौन्दर्यपरक भूसम्पत्ति का विनाश। विद्यार्थियों को अपने-अपने विषय पर प्रस्तुति देने को कहें।

यह गतिविधि विद्यार्थियों को शहर और उसके आस-पास औद्योगीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को परखने में मदद करेगी। यह आज के विश्व में हो रहे विकास से विषय-वस्तु को जोड़ने में भी उन्हें सहायता करेगी।

गतिविधि 2: परिचर्चा

कक्षा में 'महिलाओं और बच्चों पर औद्योगीकरण का प्रभाव' पर एक परिचर्चा कराएं। परिचर्चा प्रारम्भ करने से पहले शिक्षक मज़दूरी करती हुई महिलाओं और बच्चों के चित्र दिखा सकता है। निम्नलिखित बातें परिचर्चा का मुख्य विषय होना चाहिए:

महिलाएँ और बच्चे किस प्रकार के कामों में लगे हुए है? कारखानो में कार्य स्थितियां कैसी होती थी? इसमे क्या समस्यायें थी? क्या बाल श्रम आज भी विद्यमान है? इन्हें किस प्रकार के श्रमकार्यों में लगाया जाता है?

शिक्षक इस पर भी परिचर्चा करवा सकता है कि 'ब्रिटेन के उच्च वर्ग के लोग हाथ से बनी वस्तुओं को क्यों पसंद करते और उपयोग में लेते थे तथा मशीनों से बनी वस्तुओं को औपनिवेशिक देशों को निर्यात कर देते थे। 'क्या वे ऐसा हाथ के काम की विशिष्टता के कारण करते थे? क्या यह उपनिवेश बसाने वालों की उपनिवेशों के प्रति मनोवृत्ति का संकेत है?

अंत में शिक्षक विद्यार्थियों से उत्तर आमंत्रित कर के पूरी सामग्री को समेकित कर सकते हैं।

गतिविधि 3: फिल्म देखना

फिल्में घटनाओं और प्रक्रियाओं पर विद्यार्थियों की समझ विकसित करने में बहुत मदद करती है। फिल्म ओलिवर ट्विस्ट (2005) औद्योगीकरण से संबंधित थीम को समझने के लिए दिखाई जा सकती है। यह फिल्म औद्योगिक क्रांति के समय एक अनाथ बालक के जीवन पर चार्ल्स डिकेन्स के उपन्यास का रूपांतरण है। यह फिल्म उस युग के अनेक शहरी बच्चों के जीवन की कठोरता को दर्शाती है और लोगों के परिवेश और जीवन की परिस्थितियों को देखने और समझने में विद्यार्थियों की मदद करती है। पूरी फिल्म दिखाने के बजाए शिक्षक उसके कुछ हिस्से दिखा सकता है और फिर उस युग के शहरों में रहने वालों, विशेषकर बच्चों के जीवन की गुणवत्ता पर परिचर्चा शुरू करवा सकता है।

- फिल्म देखने के बाद विद्यार्थियों की रूचि जागृत करने के लिए विचारोत्तेजक प्रश्न पूछे जा सकते हैं। नमूने के लिए कुछ प्रश्न यहाँ दिए जा रहे हैं:
  - क्या आपने इस फिल्म से कुछ सीखा? यदि आपने सीखा तो वह क्या था?
  - आपको फिल्म में क्या सबसे अच्छा या सबसे बुरा लगा? कारण बताइए।
  - फिल्म में आपकी सबसे अधिक या कम पसंद का चरित्र कौन सा था? क्यों?
  - क्या फिल्म में कुछ ऐसा हुआ जो आपको याद दिलाता है कि ऐसा ही कुछ आपके जीवन में भी घटा या आपने दूसरों के जीवन में घटते देखा?
  - फिल्म के समाप्त होने पर आप क्या सोच रहे थे?
- विद्यार्थी निम्नलिखित कुछ बिंदुओं पर छोटे लेख लिख सकते हैं या मौखिक प्रस्तुतियाँ दे सकते है: जब आप फिल्म देख रहे थे तो आपने कौन सी सबसे प्रबल भावना का अनुभव किया? आपने किस चरित्र की सबसे अधिक (प्रशंसा / घृणा / पसंद / दया) की? उस चरित्र में ऐसा क्या था जिससे कारण आपने ऐसी प्रतिक्रिया व्यक्त की? ऐसे कौन से मुद्दे इस कहानी में प्रस्तुत किए गए है जो आज भी प्रासंगिक है? ऐसे किसी एक मुद्दे की प्रस्तुति का वर्णन करें और बताएं कि यह किस प्रकार आज के समय से संबधित हैं? किसी एक ऐसी बात का वर्णन कीजिए जो आज भी चलन

में है जो आपने फिल्म से सीखी। किसी एक ऐसी बात का वर्णन कीजिए जो आपने उस देश की संस्कृति के बारे में सीखी जहाँ फिल्म बनाई गई।

- कुछ और गतिविधियाँ जो की जा सकती है:
  - इस फिल्म के किसी एक विचार से संबंधित कविताओं, गीतों या नृत्य की रचना करें;
  - एक चित्र या पोस्टर बनाएँ, और फिल्म की समीक्षा लिखें, जिसे आप: स्कूल की पत्रिका में छपवा सकते हैं। विद्यार्थियों को अनुदेश दें कि वे अपने विचारों के समर्थन में प्रमाण प्रस्तुत करें (समीक्षा की शब्द सीमा भी बताएँ);
  - विद्यार्थी फिल्म या उसके किसी दृश्य की ऐतिहासिक यथार्थता के बारे में खोज-बीन कर के उसका मूल्यांकन कर सकते हैं और यदि कुछ बातें यर्थाथ नहीं पाई जाएँ, तो विद्यार्थी विचार कर सकते हैं कि तथ्यों को परिवर्तित करने के पीछे फिल्म निर्माताओं के क्या कारण हो सकते है।

फिल्म देखने और संबंधित गतिविधियाँ को करने से न केवल विद्यार्थियों को उस युग के परिवेश और लोगों के रहन-सहन को देखने और समझने में मदद मिलेगी, बल्कि विषय को अपने आज के जीवन से जोड़ने और उसे विवेचनात्मक रूप से परखने में भी मदद करेंगी।

गतिविधि 4: पढ़ना और परिचर्चा

चार्ल्स डिकेन्स का उपन्यास 'हार्ड टाईम्स' साहित्य की एक कालजयी रचना है, जिसे शिक्षक एक संसाधन के रूप में कक्षा में उपयोग में ले सकते है। उपन्यास पढ़ने के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को अथवा छोटे या बड़ें समूहों में विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए सामग्री दी जा सकती है अथवा शिक्षक स्वयं भी कक्षा में ऊँचे स्वर में उसे पढ़ सकता है। डिकेन्स का उपन्यास विद्यार्थियों को उस युग के इंग्लैण्ड के जीवन की सही जानकारी देता है और उनकी सामाजिक आलोचनायें जो उसमें सुस्पष्ट हैं, विद्यार्थियों को उस समय के मुद्दों को समझने में सहायता करती हैं।

परिचर्चा के लिए सुझाये गए प्रश्न:

- 'हार्ड टाईम्स' में डिकेन्स द्वारा अंग्रेजों के जीवन के कौन से पहलुओं की आलोचना की गई थी?
- आपके विचार से कहानी के कौन से चरित्र हीरो (नायक) है? समझाइए।
- आपको कौन से चरित्र खलनायक लगे? समझाइए।
- क्या कहानी का अंत दुखद: है, या इससे आपको अच्छे समय की उम्मीद बंधती है?
- चार्ल्स डिकेन्स ने अपनी बहुत सी रचनाओं में अपराध और गरीबी की आलोचना की है। आपके विचार से चार्ल्स डिकेन्स किस प्रकार का व्यक्ति था?

गतिविधि 5: स्रोत विश्लेषण

शिक्षक अध्याय से चित्र 3, 7 और 11 दिखा सकता है और फिर विद्यार्थियों को अध्याय में स्त्रोत B पृष्ठ संख्या 111 पढ़ने के लिए कह सकता है। विद्यार्थी विशेषरूप से यह पता लगाने का प्रयास करें कि श्रमिक स्पिनिंग जेनी के उपयोग के विरूद्ध क्यों थे।

नीचे दिया गया चित्र भी विद्यार्थियों को दिखाया जा सकता है तथा उनसे इस चित्र पर विचार करने के लिए कहें कि लोग खुदरा (पुस्कर-retail) व्यापार में एफ.डी.आई. के विरूद्ध आंदोलन क्यों कर रहे है? क्या आप इस विरोध और नई प्रौद्योगिकी को शुरू करने के विरोध में कुछ समानताएँ पाते है?

एफ.डी.आई. के खुदरा व्यापार का विरोध, दी हिन्दु, 13 अक्टूबर, 2013

यह गतिविधि विद्यार्थियों को यह समझने में मदद करेगी कि जब नई प्रौद्योगिकी शुरू की जाती है या विकास होता है तो बहुत से लोग प्रभावित होते हैं। यदि हम विकास के बारे में जानना चाहते है तो हमें उस विकास विशेष के लाभों को ही नहीं देखना चाहिए, बल्कि उन हजारों जिंदगियों का भी ध्यान रखना चाहिए जो उससे प्रभावित हुई या प्रभावित होने जा रही हैं।

आकलन: विद्यार्थियों का आकलन उनके चार्टों, समूह में भागीदारी, परिचर्चा और अन्य परियोजना कार्यों के आधार पर होगा।

D. उपनिवेशों में औद्योगीकरण- औद्योगीकरण से पहले भारतीय वस्त्र

मशीनी उद्योगों के युग से पहले, भारत की रेशम और सूत से बनी वस्तुएं, वस्त्रों के अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रभुत्व रखती थीं। भारत अपने उच्च कोटि के सूती कपड़ों के लिए प्रसिद्ध था। यह निर्यात सड़क और समुद्री मार्गों से होता था। लेकिन 1750 के दशक के आस-पास जब यूरोपीय कंपनियाँ सत्ता में आई तो यह फलता फूलता व्यापार थम सा गया। इन्होंने पहले स्थानीय दरबार से कई प्रकार की छूट प्राप्त की और फिर इन लोगों ने व्यापार के एकाधिकार प्राप्त कर लिए। यूरोपीय कंपनियों के राजनीतिक सत्ता में स्थापित होने के साथ पुराने बंदरगाहों का ह्रास होने लगा और कुछ नए केन्द्र पनपने लगे।

गतिविधि 1: मानचित्र कार्य

अध्याय में दी गई जानकारी के आधार पर शिक्षक विद्यार्थियों को एशिया के मानचित्र में भारत से मध्य एशिया, पश्चिमी एशिया और दक्षिण एशिया तक वस्त्र व्यापार के सड़क और समुद्री मार्ग ढूँढ़ने और उनके चित्र बनाने और उन क्षेत्रों और बंदरगाहों, जिनके माध्यम से यह व्यापार हो रहा था, को ढूँढ़ने में भी मदद कर सकता है।

गतिविधि 2: तुलनात्मक चार्ट

अब तक विद्यार्थियों को ब्रिटेन में आदि- औद्योगीकरण का कुछ ज्ञान प्राप्त हो चुका है। अत: उन्हें इस काल में ब्रिटेन में व्यापार के नेटवर्क और इस व्यापार में शामिल लोगों के बारे कुछ जानकारी हो गई होगी। मशीन-पूर्व युग में भारत जैसे उपनिवेश इसकी समझ बनाने के लिए विद्यार्थी दोनों नेटवर्को का एक तुलनात्मक चार्ट बना सकते है, जिसमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये -

- व्यापार के इस नेटवर्क में शामिल लोगों के प्रकार
- उनकी मुख्य गतिविधियाँ
- व्यापार के नेटवर्क में महिलाओं और बच्चों की भूमिका

यह गतिविधि विद्यार्थियों को इन दो नेटवर्को में समानताएँ और विभिन्नताएँ ढूँढ़ने में सक्षम बनाएगी।

गतिविधि 3: परिचर्चा

इस विषय पर एक परिचर्चा आरम्भ करें कि क्यों इस काल में सूरत और हुगली के पुराने बंदरगाहों का ह्रास हुआ और बॉम्बे तथा कलकत्ता जैसे नए बंदरगाहों का विकास हुआ और किस प्रकार इससे भारतीय व्यापार का नेटवर्क प्रभावित हुआ। यह समझाएँ कि ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनीतिक सत्ता में स्थापना के साथ वे केन्द्र पनपने लगे जहाँ यूरोपीय कंपनियाँ कार्यरत थी। यह परिचर्चा विद्यार्थियों को विदेशी व्यापारी कंपनियों की कार्य-प्रणाली और हितों को और देशवासियो पर उसके प्रभावों को समझने में मदद करेगी।

आकलन: विद्यार्थियों का आकलन उनके मानचित्रों, समूहों में भागीदारी, कक्षा में परिचर्चा और चार्ट के आधार पर किया जाएगा।

E. भारतीय बुनकरों की स्थिति

1760 के दशक के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथ में सत्ता आ जाने से वास्तव में भारतीय वस्त्र निर्यात प्रभावित नहीं हुआ था। ब्रिटिश सूती उद्योगों का अभी विस्तार नहीं हुआ था और भारत मे बने उत्कृष्ट वस्त्रों की यूरोप में भारी मांग थी। भारत में केवल अंग्रेज ही नहीं थे जो इस व्यापार को साझा करना चाहते थे, वहाँ फ्रांसीसी, डच, पुर्तगालियों के साथ-साथ स्थानीय व्यापारी भी थे जिनके साथ उन्हें स्पर्धा करनी पड़ती थी। स्वयं को राजनीतिक सत्ता के रूप में स्थापित करने के पश्चात् अंग्रेजो ने इस व्यापार को विविध तरीकों से नियंत्रित करने का प्रयास किया। पहले उन्होंने विद्यमान व्यापारियों और दलालों को हटाकर और गुमास्ताओं को नियुक्त कर बुनकरों के ऊपर सीधा नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने बुनकरों को पेशगी रकम दी और इस प्रकार कंपनी के बुनकरो पर अन्य खरीदारों के साथ कारोबार करने पर पाबंदी लगा दी गई। जैसे-जैसे कर्जा मिलने लगा और उत्कृष्ट कपड़े की माँग बढ़ गई, बुनकरों ने उत्साहपूर्वक इस उम्मीद में पेशगी रकम ले ली कि वे अधिक कमाई करेंगे। इस कारण वे कोई खेती-बाड़ी नहीं कर पाते थें क्योंकि पूरा परिवार कपड़ा बुनने के विभिन्न कार्यों में लगा रहता था। कई बार वे माँग को पूरा करने में असमर्थ रहते थे और उन्हें गुमास्ताओं द्वारा दिए गए कष्टों को झेलना पड़ता था। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इंग्लैण्ड में कपास उद्योग के विकास ने उनकी समस्याओं को और बढ़ा दिया। इंग्लैण्ड में औद्योगिक समूहों ने सरकार पर दूसरे देशों से आने वाले सूती कपड़ों पर आयात शुल्क वसूल करने का दबाव डाला और ईस्ट इंडिया कंपनी को ब्रिटेन में बने कपड़ों को भारत में बेचने के लिए राजी कर लिया। मशीनों से बने होने के कारण आयातित कपड़े इतने सस्ते थे कि भारतीय बुनकर उनका मुकाबला नहीं कर सके।1860 के दशक में उन्हें नई समस्या का सामना करना पड़ा। अमेरिकी गृहयुद्ध के समय ब्रिटेन ने भारत से कच्ची कपास का आयात किया और

इसने कच्ची कपास के मूल्य में वृद्धि कर दी। भारतीय बुनकरों को कच्चे माल की अत्यधिक कमी हो गई और उन्हें मनमानी कीमतों पर कच्ची कपास खरीदनी पड़ती थी।

गतिविधि 1: विद्यार्थियों के लिए परियोजना कार्य

परियोजना कार्य अंग्रेंजो के भारत में राजनीतिक सत्ता के रूप में स्थापित होने के बाद कारखानों के प्रारम्भ होने तक भारतीय बुनकरों की दशा पर केंद्रित होना चाहिए। इस परियोजना कार्य में वे निम्नलिखित मुद्दों पर विचार कर सकते हैं और तद्नुसार अपने परियोजना कार्य तैयार कर सकते हैं-

- अंग्रेजों द्वारा स्वयं को एक राजनीतिक सत्ता के रुप मे स्थापित करने से पहले भारतीय बुनकर कैसे काम करते थे?
- अंग्रेजो के आने के बाद क्या परिवर्तन हुए?
- क्या इन परिवर्तनों ने उनकी दशा को सुधारा या और खराब कर दिया?
- क्या इस काल में इंग्लैण्ड में हुए औद्योगिक विकास और भारतीय बुनकरो की दशा के मध्य कोई संबंध था?
- अन्य अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं, जैसे अमेरिकी गृहयुद्ध ने उनकी दशा को कैसे प्रभावित किया?

शिक्षक विद्यार्थियों को परियोजना कार्य के भाग और उपभागों का निर्धारण तय करने में मदद कर सकता है और अपनी परियोजना तैयार करने के लिए पुस्तकालय और इंटरनेट संसाधनों का प्रयोग करने हेतु प्रोत्साहित कर सकता है। विद्यार्थी अपनी परियोजना में चित्र और ग्राफ भी जोड़ सकते हैं और इस परियोजना कार्य को एक लेख अथवा पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण (पी पी टी) के रूप में तैयार कर सकते हैं।

परियोजना कार्य का उद्देश्य उस काल में बुनकरों की दशा को समझना मात्र नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों को प्राप्त जानकारी का संश्लेषण करने, उनका विवेचनात्मक विश्लेषण करने और उसे रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत करने में भी मदद करेगी।

गतिविधि 2: वाद-विवाद

इनमें से किसी एक विषय पर वाद-विवाद आयोजित करें-

- यदि भारत को संरक्षण मिलता तो क्या इसका कपड़ा उद्योग जल्द शुरू हो जाता और तेजी से बढ़ता? (इस बात पर विशेष जोर दें कि किस प्रकार औपनिवेशिक शक्तियाँ अपने देश और उपनिवेशों में भिन्न प्रकार से काम करती थी)
- औद्योगीकरण भारतीय बुनकरों की दुर्दशा का कारण है।

विषय के पक्ष और विपक्ष में बोलने के लिए चार-चार विद्यार्थियों को लें। शेष कक्षा श्रोता के रूप में भाग लेगी और वाद-विवाद की समाप्ति पर मुद्दों पर परिचर्चा करेगी। शिक्षक निर्णायक के रूप में कार्य कर सकता है। प्रत्येक वक्ता को 5-6 मिनट का समय दिया जायेगा। विद्यार्थियों का आकलन उनके द्वारा दिए गए तर्कों, परिचर्चा में भागीदारी के स्तर, संप्रेषण कौशलों, इत्यादि के आधार पर किया जाएगा।

वाद-विवाद करना तार्किक बहस की एक प्रतियोगिता है, जिसमें दो विरोधी व्यक्ति या दल एक प्रस्ताव के पक्ष अथवा विपक्ष में बोलते हैं? प्रक्रिया नियमों से बंधी होती है। वाद-विवाद विद्यार्थियों को न केवल किसी स्थिति के तथ्यों, बल्कि उसके निहितार्थो पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता है। भाग लेने वाले अपनी और अपने विरोधियों दोनों की स्थिति, पर विवेचनात्मक और कुशलतापूर्वक विचार करते हैं। वाद-विवाद में विद्यार्थी को शोध कार्य करने, सुनने और बोलने के कौशल विकसित करने तथा एक ऐसा वातावरण तैयार करने की आवश्यकता होती है जहाँ वे विवेचनात्मक रूप से सोचें।

आकलन: विद्यार्थियों का आकलन उनके परियोजना कार्य, समूहों में भागीदारी और वाद-विवाद के आधार पर किया जाएगा।

F. भारत में कारखानों का प्रारम्भ

अठारहवीं सदी के अंतिम वर्षो से ही अंग्रेज़ भारत से अफ़ीम का निर्यात चीन को करने लगे थे। उसके बदले वे चीन से चाय खरीदते थे जो इंग्लैण्ड जाती थी। इस व्यापार में बहुत से भारतीय भी शामिल हो गए थे। वे पैसा उपलब्ध कराते थे, आपूर्ति सुनिश्चित करते थे और माल को जहाजों में लादकर रवाना करते थे। कुछ भारतीय व्यवसायियों ने बर्मा के साथ व्यापार किया जबकि अन्य के संबंध मध्य पूर्व और पूर्वी अफ्रीका से थे। इसके अलावा कुछ लोग थे जो विदेश व्यापार से सीधे जुड़े हुए नहीं थे। वे भारत में ही व्यवसाय करते थे। एक जगह से दूसरी जगह माल ले जाते थे, सूद पर पैसा देते थे, एक शहर से दूसरे शहर में पैसा पहुँचाते थे और व्यापारियों को पैसा देते थे। जब उद्योगों में निवेश के अवसर आए तो उनमें से बहुतो ने कारखाने लगा लिए। परन्तु भारतीय व्यवसाय पर जैसे-जैसे औपनिवेशिक शिकंजा कसता गया, भारतीय व्यावसायियों को अपना तैयार माल यूरोप में बेचने से रोक दिया गया और उन्हें केवल अपने कच्चे माल और अनाज के निर्यात की ही अनुमति दी गई।

बीसवीं सदी के पहले दशक तक भारत में औद्योगीकरण का तरीका (पैटर्न) बदल गया। एक ओर स्वदेशी आंदोलन था जिसने विदेशी कपड़े का बहिष्कार किया और दूसरी ओर भारतीय औद्योगिक समूह थे जिन्होंने संरक्षण और रियायतों की माँग की। प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय उद्योगपतियों को भरपूर अवसर उपलब्ध कराया जिससे पुराने कारखानों में कई शिफ्टों में कम हाने लगा औद्योगिक उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई। इस काल में नये कारखाने लगाये गए। स्थानीय उद्योगों ने धीरे-धीरे अपनी स्थिति मजबूत कर ली और विदेशी निर्माताओं का स्थान ले लिया।

गतिविधि 1: प्रश्न पूछना और परिचर्चा

शिक्षक बहुत से विचारोत्तेजक प्रश्न पूछ सकता है और विद्यार्थियों को निम्नलिखित पर परिचर्चा के लिए प्रोत्साहित कर सकता है:

- आरंभिक भारतीय उद्यमी कैसे उभर कर आए? उनके व्यापार की कौन सी वस्तुएँ थी? उन्होंने किन क्षेत्रों के साथ व्यापार किया? उनकी सीमाएं क्या थी? उनकी स्थिति किस प्रकार उनके अंग्रेज प्रतिपक्षों के समान या भिन्न थी? प्रथम विश्वयुद्ध के काल में भारतीय उद्योगो में क्यों वृद्धि हुई थी?
- यह गतिविधि विद्यार्थियों को उस काल और परिस्थिति को समझने में मदद करेगी जिसमें भारतीय उद्यमी काम कर रहे थे। शिक्षक विषय-वस्तु को आज के समय के साथ जोड़ने का भी प्रयास कर सकता है। इसके लिए वह विद्यार्थियों से विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय उद्यमियों (पुरूष एवं महिला) को आज उपलब्ध अवसरों पर अपने विचार रखने के लिए कह सकता है।

गतिविधि 2: स्रोत विश्लेषण

विद्यार्थियों से कहें कि वे इस स्रोत को पढ़े और भारतीय कारखानों में श्रमिकों के बारे में, निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए पता लगाऐ-

- श्रमिक किन क्षेत्रों से आते थे?
- उनकी दशा कैसी थी? और
- उनकी दशा किस प्रकार इंग्लैंड के कारखानों के श्रमिकों के समान या उनसे भिन्न थी?

स्त्रोत

बम्बई के एक श्रमिक नेता, भाई भौसले ने 1930 और 1940 के दशकों के अपने बचपन को याद किया- 'उन दिनों एक शिफ्ट 10 घंटों की होती थी- 5 बजे सांय से 3 बजे सुबह तक- जोकि अत्यधिक कष्टदायी था। मेरे पिता ने 35 वर्षों तक काम किया; उन्हें अस्थमा जैसी बीमारी हो गई तथा वे और अधिक काम न कर पाए- फिर मेरे पिता वापस गाँव चले गए'।

— मीना मेनन और नीरा अदरकर, वन हंड्रेड यीअर्स: वन हंड्रेड वायसेज़

आकलन: विद्यार्थियों का आकलन उनके समूहों में भाग लेने, स्रोत विश्लेषण और नोट्स के आधार पर होगा।

G . लघु उद्योगों का क्या हुआ?

जहां कारखाना उद्योगों में तेजी से वृद्धि हुई, वही बड़े उद्योग अर्थव्यवस्था के सिर्फ एक छोटे भाग के रूप में थे। लघु उद्योगों पर उत्पादन का दबदबा बना रहा। हस्तशिल्पकारों ने कुछ छोटे-छोटे नवाचार अपनाए, जिसने बुनकरों को अपना उत्पादन सुधारने और मिल क्षेत्र के साथ प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिली।

क्रियाकलाप 1: परिचर्चा

शिक्षक कोई विषय मुद्दा चुनकर परिचर्चा शुरू करें, जैसे- जब कारखाने सस्ते कपड़ों का उत्पादन कर रहे थे, तो भारतीय लघु उद्योगों ने कैसे स्वयं को बनाए रखा था? क्या उन्होंने नवाचार अपनाए थे? इन लघु उद्योगों में किस प्रकार के कपड़े तैयार किए जाते थे? ऐसे उत्पादों को खरीदने वाले कौन लोग थे? क्या ये बुनकर पर्याप्त पैसा कमा लेते थे? उनका जीवन कैसा था?

यह गतिविधि विद्यार्थियों को विकास के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करेगा, इससे उन्हें यें समझने में मदद मिलेगी कि विकास धीरे-धीरे होता है और कई बार कुछ चीज़े परिवर्तित हो जाती है, जबकि कुछ चीज़े वैसी ही बनी रहती है और यह कि परम्परागत चीज़े/उद्योग अलग-थलग या अप्रभावित नहीं रहते, वे भी समय और नवाचार के साथ बदल जाते हैं।

आकलन: विद्यार्थियों का आकलन कक्षा में परिचर्चा के आधार पर होगा।

H. वस्तुओं का विपणन

यह एक ज्ञात तथ्य है कि जब नयी चीजें बनती हैं, तो उन्हें खरीदने के लिए लोगों को समझाना पड़ता है। उन्हें उत्पाद का उपयोग करने के लिए प्रेरित करना पड़ता है। नए उपभोक्ता तैयार करने का एक तरीका विज्ञापनों के माध्यम से होता है। औद्योगिक युग के प्रारम्भ से ही विज्ञापनों ने उत्पादों के लिए बाजार का विस्तार करने और नवीन उपभोक्ता संस्कृति को आकार देने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गतिविधि 1: मौखिक प्रस्तुतीकरण

विद्यार्थियों से कहें कि वे कल्पना करें कि वे उद्योगपति है, जिन्हें अपने उत्पादों को विभिन्न स्थान या देशों में बढ़ावा देना है। ध्यान में रखने योग्य कुछ महत्वपूर्ण बाते है: वे अपने उत्पाद को बढ़ावा देने के लिए क्या करेगें? अपने उत्पाद को बढ़ावा

देते समय वे किन बातों पर विचार करेंगे?

विद्यार्थी अपने उत्पाद को बढ़ावा देने और लोकप्रिय बनाने के लिए कई तरीके अपना सकते है। यह उन्हें औपनिवेशिक निर्माताओं की सोच, उनके हिसाब किताब और लोगों को आकर्षित करने के तरीकों, पर कुछ विचार उपलब्ध कराएगी। कुछ रोचक परिचर्चाएँ उन विज्ञापनों पर भी हो सकती हैं, जो आज प्रचलित हैं और विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे इनमें से कुछ का विवेचनात्मक विश्लेषण करें।

गतिविधि 2: चित्र विश्लेषण

विद्यार्थियों को नीचे दिए गए दृश्यों को ध्यान से देखने के लिए कहा जा सकता है। इन चित्रों में से एक मैनचेस्टर लेबल का है और दूसरा भारतीय मिल के कपड़े का लेबल है। उदाहरण के रूप में पूछे जाने वाले कुछ प्रश्न हो सकते हैं:

आप इन चित्रों में क्या देखते हैं? इन लेबलों से आपको क्या जानकारी मिलती है? इन लेबलों पर देवताओं और देवियों के चित्र या महत्वपूर्ण आकृतियाँ क्यों दिखाई जाती हैं? क्या अंग्रेज और भारतीय उद्योगपति एक ही प्रयोजन से इन आकृतियों का उपयोग करते थे? इन दोनो लेबलों में क्या समानताएं और विषमताएं हैं? विद्यार्थियों को आज के समय के कुछ लेबलों के चित्र एकत्रित करने और कक्षा में उन्हें दिखाने और उन पर परिचर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

मैनचेस्टर लेबल

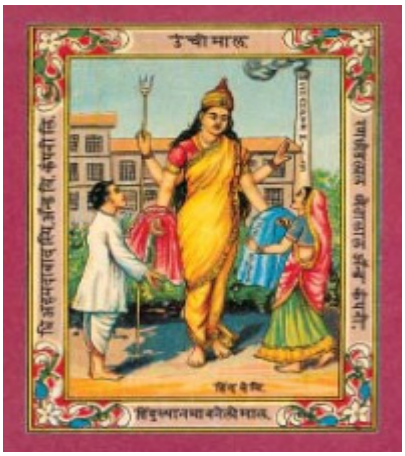

एक भारतीय मिल के कपड़े का लेबल

इस गतिविधि के द्वारा विद्यार्थी वस्तुओं के लिए बाजार का विस्तार करने के लियें विज्ञापनों की महत्वपूर्ण भूमिका को समझ पाएँगे।

गतिविधि 3: औद्योगीकरण पर विद्यार्थियों के लिए एक उदाहरणात्मक समाचार पत्र परियोजना

किसी विद्यार्थी से कहें कि वह यह कल्पना करे कि वह एक खोजी पत्रकार है जो एक भारतीय समाचार पत्र के लिए काम करता है, जिसने औद्योगीकरण पर एक विशेषांक प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इस विद्यार्थी को, तीन अन्य विद्यार्थियों के साथ, इस परियोजना का प्रमुख बनने का दायित्व दीजिए। यह सब उन पर निर्भर होगा कि उन समाचार पत्र के लिए शोध और लेखन करें तथा उनका डिजाइन तैयार करें। उन्हें बता दें कि उनसे ये अपेक्षा है कि अपने समाचार पत्र में दो समाचार कहानियाँ, दो आविष्कार, कम से कम दो चित्र और एक संपादकीय को शामिल करें। इन दो समाचार कहानियों में एक कोई ऐसी घटना या परिस्थिति का वर्णन होनी चाहिए जो पाठकों का ध्यान आकर्षित करें। उदाहरण के लिए, उनकी कहानी मे ये जानने का प्रयास होना चाहिए कि औद्योगीकरण किस प्रकार सामान्य रूप से बच्चों, महिलाओं और काम की परिस्थितियों को प्रभावित कर रहा था। कहानियां कम से कम 250 शब्दों की होनी चाहिए और उनमें उपयोग की गई

जानकारी प्राथमिक स्रोत से प्राप्त की जानी चाहिए। दो अविष्कारों पर जानकारी में जीवनी (बायोग्राफी) सम्बंधी जानकारी, मुख्य अविष्कार की संक्षिप्त जानकारी और अविष्कार के महत्व पर टिप्पणी होनी चाहिए। वे कितने भी चित्र डाल सकते हैं, परन्तु कम से कम दो अवश्य होने चाहिए। चित्र कहानियों से संबंधित होने चाहिए। वे सामूहिक रूप से एक संपादकीय लिखेंगे, जिसमें अपने विचार रखेंगे कि क्या औद्योगिक क्रांति की प्रगति ने उस समाज को हानि पहुँचायी है जिसमें वे रहते है। संपादकीय 300 शब्दों का होना चाहिए और उसमें उन्हें औद्योगीकरण का एक अच्छा परिचय देना चाहिए।

> ***नोट:*** *उन्हें सलाह दी जानी चाहिए कि वे मात्र स्रोतों का चयन कर के उसे संक्षेप में न लिख दें। उनकी समाचार कहानियाँ विषय का संक्षिप्त परिचय होना चाहिए, जिसमें कम से कम 3-5 संसाधनों से जानकारी ली गई हो। उन्हें प्रयास करके इसे एक समाचार पत्र के प्रारूप में व्यवस्थित करना चाहिए। सभी लेखों में वर्तनी और व्याकरण संबधी त्रुटियों की जाँच की जानी चाहिए। प्रत्येक लेख का एक उचित शीर्षक होना चाहिए।*

आकलन: विद्यार्थियों का आकलन उनकी समूहों में भागीदारी और कक्षा में परिचर्चा के आधार पर होगा। उनके समाचार पत्र का आकलन उसकी विषय-वस्तु, यथार्थता, रचनात्मकता, विविध स्रोतों के उपयोग, शब्दों की संख्या और विचारों की व्यवस्थित प्रस्तुति के आधार पर होगा। समाचार पत्र देखने में कैसा लगता है, इसका आकलन भी होगा। इसमें दिए गए चित्र और आलेख (ग्राफिक्स) पठन सामग्री के अनुरूप होने चाहिए। समाचार पत्र का नाम प्रभावशाली होना चाहिए; कहानियाँ कॉलमों में होनी चाहिए और यह ठीक से व्यवस्थित होना चाहिए।

निष्कर्ष

जैसा कि हमने देखा औद्योगीकरण के युग का अर्थ है वह समय जब प्रमुख प्रौद्योगिकी परिवर्तन हुए, कारखाने स्थापित किए गए और नये औद्योगिक वर्ग का उदय हुआ। लेकिन हम यह भी ध्यान रखना चाहिए कि औद्योगीकरण का अर्थ केवल कारखाना उद्योग में वृद्धि नहीं है, जैसा कि हम सामान्य रूप से मानते हैं। हस्तशिल्प और लघु स्तर पर उत्पादन भी औद्योगिक परिदृश्य के महत्वपूर्ण भाग हैं। अत: प्रत्येक क्षेत्र ने औद्योगिक विकास में अपना योगदान किया है।

समेकित आकलन के लिए प्रश्न

अध्याय 'औद्योगीकरण का युग' के अन्त में दिए गए प्रश्नों की विद्यार्थियों के साथ परिचर्चा करने के अतिरिक्त, शिक्षक समेकित परीक्षाओं में विद्यार्थियों के अधिगम का आकलन करने के लिए कुछ प्रश्न विकसित कर सकता है। नीचे ऐसे प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए है:

1. घरेलू व्यवस्था में काम करने वाले लोगों को क्या लाभ और हानियाँ थी?
2. कारखाना व्यवस्था किन कारणों से अस्तित्व में आई, और क्यों यह प्रारंभिक औद्योगिक प्रणाली का बहुत महत्वपूर्ण भाग थी? इसका श्रमिकों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?
3. ऐसे दो अविष्कारों के नाम बताएँ जो औद्योगिक क्रांति के समय हुए। इनके प्रभावों का वर्णन कीजिए।
4. औद्योगीकरण द्वारा हुए परिवर्तन विश्व के लिए कितने महत्वपूर्ण थे? वे कितने स्थायी थे? अपने निष्कर्ष की व्याख्या करें। आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों पर विचार करें।
5. औद्योगीकरण ब्रिटेन से औपनिवेशिक देशों तक कैसे फैला? इन क्षेत्रों का औद्योगीकरण ब्रिटेन के औद्योगीकरण से किस प्रकार भिन्न था?

सुझाई गई पठन सामग्री

1. Eric Hopkins, Industrial Station and Society: A Social History, 1830-1951, Routledge, London, 2000
2. Katrina Honeyman, Women Gender and Industrialisation in England, 1700-1870 (British Studies), Palgrave Macmillan, 2000
3. Dietmar Rothermund, An Economic History of India, From Precolonial Times to 1991, Routledge, 1993
4. Richard Llewellyn, How Green Was My Valley (Penguin Modern Classics), Punguin, 2001

फिल्में

1. Naya Daur, directed by B.R. Chopra (173 Minutes), 1957, India
2. Modern Times, directed by Charlie Chaplin (87 mins), 1936
3. How Green was My Valley, directed by John Ford (118 mins), 1941, USA
4. Oliver Twist, directed by Roman Polanski (130 mins) 2005, USA

भूगोल

भूगोल शिक्षण

भूगोल वह विषय है जो स्थानों के लक्षण और लोगों, लक्षणों और घटनाओं के वितरण को जैसे वे पृथ्वी की सतह पर विद्यमान होते हैं और विकसित होते हैं को समझाता है। यह विशिष्ट स्थानों और स्थितियों के संदर्भ में मानव-पर्यावरण अत:क्रिया से संबंधित है। चूँकि भूगोल की विषय-वस्तु प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान दोनों से ली गई है, अत: अन्य सामाजिक विज्ञान विषयों से भिन्न, यह मात्र मानव व्यवहार का अध्ययन नहीं करता, अपितु यह भौतिक परिघटनाओं का अध्ययन भी करता है, जो 'कारण और प्रभाव' से नियंत्रित होती हैं।

माध्यमिक स्तर पर, सामाजिक विज्ञान के अन्य घटकों की तरह भूगोल का अलग अस्तित्व है। फिर भी कुछ चयनित विषयवस्तुओं पर बहुविध परिप्रेक्ष्य विकसित करने हेतु इसे स्थान दिया गया है जिससे कि व्यक्ति का व्यापक दृष्टिकोण विकसित हो सके। यह भी माना जाता है कि विषय वस्तु अध्ययनों का एक क्षेत्रीय आधार होना चाहिए, अत: माध्यमिक स्तर पर 'समकालीन भारत' कक्षा IX के लिए 'भूमि और लोग' और 'संसाधन और उनका विकास' को कक्षा X में लिया गया है। ये विषय वस्तुएं उन विद्यार्थियों को भारत को ठीक से समझने के पूरे अवसर देती हैं जो संभव है उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हों अथवा इस स्तर पर भूगोल को एक वैकल्पिक विषय के रूप में न ले सकें।

मुद्दों पर आधारित अभिगमों जैसे आपदाएँ, खाद्य सुरक्षा, भूमंडलीय तापन, संरक्षण, इत्यादि को भी उप-विषयों के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इन्हें शामिल करने का उद्देश्य भूगोल के दृष्टिकोण से सामयिक मुद्दों और समस्याओं का अध्ययन करना है। ये मुद्दे स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तरों से संबंधित हैं।

इस स्तर पर विद्यार्थी देश के समक्ष सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों पर गहन समझ विकसित करने हेतु गहन अध्ययन करने के लिए तैयार रहते हैं। स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय संदर्भ, अधिगम को प्रासंगिक और आनंद दायक बना देते हैं। पाठ्यपुस्तकों में संगत स्थानों पर जेंडर और हाशिए के समूहों के मुद्दे विषय वस्तु में अंतर्गुंफित हुए हैं। उदाहरण के लिए , कक्षा X में 'वन और वन्य जीवन संसाधन' पर चर्चा करते हुए एक कोलाज का उपयोग एक नर्सरी में छोटे-मोटे वन्य उत्पादों, इकट्ठी की हुई पत्तियों का कचरा बेचकर और बाँस के पौधे का उपयोग कर आदिवासी महिलाओं की जीविका को उजागर किया गया है। इस स्तर पर भूगोल का उद्देश्य हैं कि विद्यार्थी अपने स्वयं के स्थान की तुलना में भारत की विशाल भूमि और लोगों में विविधता को समझने और उसके महत्व को जानने में सक्षम हों। विद्यार्थी अपने आस-पास होने वाले सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों और विकास के प्रक्रमों को समझने और उन्हें देश के अन्य भागों से जोड़ने में सक्षम हो सकें। देश की भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक संरचना में और विश्व के अन्य भागों में बहुत से परिवर्तन हो रहे हैं। इसलिए इस स्तर पर भूगोल का पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को विश्व अर्थव्यवस्था की तुलना में भारत में हो रहे इन परिवर्तनों और विकास के प्रक्रम को समझने में सक्षम बनाता है।

किसी देश का भूमि क्षेत्र, उसकी उर्वरक मृदाएँ , नदियाँ, जलाशय, मत्स्य-क्षेत्र, वनस्पतियाँ, चट्टानें और खनिज इत्यादि उसके प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। प्राकृतिक और मानव संसाधन किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी होते हैं। ये देश की आर्थिक शक्ति और लोगों की समृद्धि के आधार हैं, अत: भूगोल के पाठ्यक्रम का एक मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को संसाधनों का न्यायोचित उपयोग करना समझाना और साथ ही संरक्षण और पर्यावरणीय सरोकारों के विशिष्ट महत्व को उनके मन में बैठाना है। इन सबको ध्यान में रखते हुए शिक्षार्थी स्थानीय समुदायों के उनके पर्यावरण संबंधी अधिकारों के महत्व को समझने में सक्षम होने चाहिए।

एन०सी०एफ०-2005 पर आधारित भूगोल की पाठ्यपुस्तकें विद्याथिर्यों को प्रश्न पूछने और खोजबीन के लिए प्रोत्साहित करती हैं। पाठ्यांतर प्रश्नों, बॉक्स में दी जानकारी से विषय-वस्तु का संवर्धन, दृश्य आधारित प्रश्न और पहेलियाँ जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को कई प्रकार के क्रियाकलापों में व्यस्त रखती हैं। ये क्रियाकलाप उनकी अधिगम क्षमताओं को बढ़ाने और विषय में रुचि उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

यह आवश्यक है कि शिक्षार्थी अंतरालों को व्यवस्थित करने हेतु वर्तमान और भावी समस्याओं के समाधान के लिए भौगोलिक कौशल विकसित करें। इस स्तर पर भूगोल मानचित्र पढ़ने, मानचित्र की व्याख्या करने, ग्राफ बनाने और श्रव्य से दृश्य तथा दृश्य से श्रव्य के लिए कुछ मूलभूत कौशलों को प्राप्त करने पर बल देता है। बहुत से फोटोग्राफ, समाचार पत्रों की कतरनें और कोलाज पाठ्यपुस्तकों में शामिल किए गए हैं, ताकि उनके द्वारा परिलक्षित विस्तृत वर्णन को देखने और पता लगाने का कौशल विकसित हो सके। शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को दिए गए चित्र में विभिन्न आकृतियों में संबंध स्थापित करने और भौतिक तत्वों तथा सांस्कृतिक लक्षणों को स्वरूप देने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

पाठ्यपुस्तक में शामिल किए गए विषय जहां एक ओर भौतिक संसार के सौदंर्य वहीं दूसरी ओर लोगों की विभिन्न जीवन परिस्थितियों को समझने की व्यक्तिगत और सामाजिक क्षमता के विकास में सहायता करते हैं। विद्यार्थी अपने कार्यों के मार्गदर्शन के लिए अपने स्वयं के व्यवहार के प्रभाव और पर्यावरणीय नैतिकता के प्रति जागरूक हो जाते हैं। विद्यालय स्तर पर, भूगोल का शिक्षण इस प्रकार होना चाहिए कि विद्यार्थी वैयक्तिक रूप से अपने समुदायों, क्षेत्रों, देशों और पूरे विश्व की समस्याओं के समाधान में भाग लेने के लिए तैयार हो सकें।

यह भी सुझाव दिया गया कि भूगोल के शिक्षकों को शिक्षण के लिए केवल कोई एक विशेष विधि उपयोग में नहीं लेनी चाहिए बल्कि उन्हें विभिन्न प्रकार की विधियों का उपयोग करना चाहिए और यह समझना चाहिए कि किस विषय के लिए कौन सी विशेष विधि उपयुक्त रहेगी। कक्षा में भूगोल पढ़ाते समय ग्लोब, मानचित्र, एटलस, फोटोग्राफ, दृश्य-श्रव्य सामग्री, वेबसाइट स्रोत जैसे http://nroer.in (National Repository of Open Educational Resources of Ministry of Human Resource Development, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के खुले शैक्षिक स्रोतों का राष्ट्रीय भंडार) और यू-ट्यूब पर उपलब्ध शैक्षिक कार्यक्रम, रेडियो, डिस्कवरी चैनल और नेशनल ज्योग्राफिक चैनेल द्वारा प्रसारित टेलीविज़न कार्यक्रमों का उपयोग किया जाना चाहिए।

यह सर्वविदित है कि शिक्षक जिस संदर्भ में और जिन विद्यार्थियों के साथ कार्य करते हैं और जो स्रोत उन्हें उपलब्ध होते हैं, उन सब से वे प्रभावित होते हैं। अनेक अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय मंचों से इस बात पर बल दिया गया है कि विद्यालयों में भूगोल विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाना चाहिए। परन्तु सभी विषयों में प्रशिक्षित स्नातक शिक्षकों की अनुपलब्धता या कुछ अन्य कारणों से, भारत में माध्यमिक स्तर पर भूगोल अन्य विषय के शिक्षक द्वारा पढ़ाया जा रहा है। अत: इस 'प्रशिक्षण पैकेज' में देश के विभिन्न भागों के सामाजिक विज्ञान शिक्षकों से प्राप्त प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के अनुसार माड्यूल तैयार किए गए हैं। सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, माड्यूल संकल्पनाओं पर चर्चा की गई है जो 'जलवायु' की संकल्पना को समझने के लिए आवश्यक हैं। भूगोल के ये माड्यूल केवल उनके लिए ही विकसित नहीं किए गए हैं जो भूगोल भली-भांति जानते हैं बल्कि उनके लिए भी हैं जिन्हें माध्यमिक स्तर पर भूगोल पढ़ाने का उत्तरदायित्व दे दिया गया है।

अत: माड्यूलों को और बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों की टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत रहेगा।

'जलवायु' शिक्षण

माध्यमिक स्तर पर भूगोल सामाजिक विज्ञान का एक भाग है और सामान्यत: उन शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता है जिन्होंने स्वयं स्नातक स्तर पर भूगोल का अध्ययन नहीं किया है। यह भी पाया गया है कि सामाजिक विज्ञान के अधिकांश शिक्षक केवल माध्यमिक कक्षाओं को ही पढ़ाते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यचर्या में भूगोल की मूलभूत संकल्पनाओं को अध्ययन हेतु लिया गया है। भारत का भूगोल समझने के लिए ये संकल्पनाएँ आवश्यक हैं। अत: 'जलवायु' विषय के प्रभावी शिक्षण हेतु शिक्षकों की मदद के लिए माड्यूल में कुछ संकल्पनाओं को समझाया गया है।

जलवायु प्राकृतिक पर्यावरण के सबसे मूलभूत घटकों में से एक है। यह सजीव वायुमंडल को दर्शाती है जो जलमंडल, स्थलमंडल और जैवमंडल के साथ मिलकर प्राकृतिक पर्यावरण की रचना करता है। भूगोल पृथ्वी पर मानव-पर्यावरण अत: क्रिया का अध्ययन है। जलवायु का प्रभाव प्राकृतिक पर्यावरण के साथ-साथ मानव-निर्मित पर्यावरण, जैसे वनस्पति, जल, भूमि, मृदा इत्यादि और कृषि, वेशभूषा, बस्तियों आदि पर भी क्रमश: देखा जा सकता है। अत: किसी भी क्षेत्र के भूगोल का अध्ययन करने के लिए उस क्षेत्र की जलवायु को समझने की आवश्यकता है, चाहे वह भौतिक भूगोल जैसे- भू-आकृति विज्ञान या जलवायु विज्ञान और मानव भूगोल जैसे- राजनीतिक भूगोल, ऐतिहासिक भूगोल और सांस्कृतिक भूगोल हो। भारत की जलवायु मानसून प्रकार के रूप में वर्णित है। इस प्रकार की जलवायु पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया में पाई जाती है। आनुवांशिक प्रक्रमों और पृथ्वी की सतह के निकटवर्ती वायुमंडलीय दशाओं का वितरक प्रारूप का अध्ययन जलवायु-विज्ञान कहलाता है। जलवायु-विज्ञान में किसी स्थान, क्षेत्र या संपूर्ण पृथ्वी की जलवायु और मौसम दोनों का अध्ययन शामिल होता है।

शिक्षण-अधिगम उद्देश्य

'जलवायु' का संप्रेषण करते समय शिक्षक को निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है:

- जलवायु को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की पहचान करना।
- भारतीय मानसून की व्याख्या करना।
- लोगों के जीवन पर जलवायु के प्रभाव को समझाना।
- मानसून की समेकक भूमिका के महत्व को स्पष्ट करना।

शिक्षकों से अपेक्षाएँ

- विद्यार्थियों को जलवायु का अर्थ, जलवायु और मौसम में अतंर और जलवायु के घटकों के बारे में समझाएँ।
- मानसून की क्रियाविधि को ठीक से समझने के लिए वायुमंडलीय दाब, भूमंडलीय पवनों- व्यापारिक पवन और पश्चिमी पवन (पछुआ हवाएँ), आपेक्षिक आर्द्रता, कोरिऑलिस बल, जेट स्ट्रीम (जेट धारा), एल नीनों, ई०एन०एस०ओ०, आई०टी०सी०जेड०, मानसून का बरसना, बादल फटना और स्पंदी गतियाँ, उष्ण कटिबंधीय चक्रवात, पश्चिमी विक्षोभ, भूमंडलीय तापन इत्यादि जैसी संकल्पनाओं और तकनीकी शब्दों को समझाने योग्य होना।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के समय दृश्य साधनों का उपयोग करने योग्य होना।
- विश्व के किसी देश/क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए जलवायु का महत्व विद्यार्थियों को समझाना।

- जलवायु के शिक्षण-अधिगम के साथ सी०सी०ई० को संबद्ध करने के योग्य होना।

प्रमुख संकल्पनाएँ

A. जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी पढ़ चुके हैं कि दिन और रात पृथ्वी के घूर्णन (रोटेशन) से संबंधित हैं; सरदी और गरमी के मौसम पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर परिक्रमण से संबंधित हैं। यह तथ्य कि पृथ्वी जब सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है तो अपने झुके हुए अक्ष पर घूमती है तब इसका हमारी जलवायु पर आधारभूत प्रभाव पड़ता है।

विषय को पढ़ाना शुरू करने से पूर्व विद्यार्थियों का स्तर समझने के लिए उनसे कुछ प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

निर्माणात्मक आकलन के लिए प्रश्न–

शिक्षक विद्यार्थियों का पूर्व ज्ञान जानने के लिए, 'जलवायु' विषय का संप्रेषण शुरू करने से पहले, कक्षा में निम्नलिखित प्रश्न पूछ सकते हैं:

- आप मौसम से क्या समझते हैं?
- क्या मौसम का संबंध ऋतु या जलवायु से होता है?
- यदि पृथ्वी का अक्ष कक्षीय तल से और अधिक झुका होता, जैसे 37 डिग्री पर तो:
  - इसका पृथ्वी की जलवायु पर क्या प्रभाव पड़ता?
  - कर्क रेखा और मकर रेखा तथा दोनों ध्रुव वृत्त कहाँ होते?
  - आपके अपने देश की जलवायु में आप किन परिवर्तनों की अपेक्षा रखते?

शिक्षक के लिए–

यदि विद्यार्थी पृथ्वी की गतियाँ (घूर्णन और चक्रण); कक्ष के तल पर लम्ब से 23.5O झुके हुए पृथ्वी के अंश का महत्व; भूमध्य रेखा, कर्क-रेखा और मकर-रेखा के सापेक्ष ग्लोब पर भारत की स्थिति को समझते हैं, तभी शिक्षक आगे बढ़ सकता/ती है।

आकाशीय संदर्भ में, जलवायु संपूर्ण पृथ्वी या उसके एक भाग से संबंधित हो सकती है। जलवायु का अर्थ किसी एक दिन या एक सप्ताह की मौसमी दशाओं से नहीं होता। इसका संबंध लम्बी समयावधि से होता है। अधिकतर जलवायु किसी अकेले मौसमी तत्व के लक्षणों और वितरण से संबंधित न होकर उनके संयोजनों से भी संबंधित होती है। ये संयोजन लम्बे समय तक रहकर जलवायु के लक्षणों को उत्पन्न करते हैं। इन संयोजनों में अलग-अलग घटनाएँ जो केवल कुछ अवसरों पर घटित होती हैं, उन्हें भी शामिल किया जाता है, जैसे भारी वर्षा और विध्वंसकारी चक्रवातों का आना। जबकि मौसम किसी विशिष्ट समय पर किसी स्थान पर विद्यमान वायुमंडलीय दशाओं का समूहन है।

मौसम और जलवायु में मूल अंतर यह है कि मौसम एक बहुत कम समयावधि से संबंधित है जबकि जलवायु का संबंध कहीं अधिक लम्बी समयावधि से है। सामान्यत: जलवायु को एक विशिष्ट क्षेत्र के लिए 30-35 वर्षो की समयावधि में मौसम के पैटर्नों के आधार पर मापा जाता है। जलवायु को कुछ जलवायवीय तत्वों, विशेषरूप से ताप और वर्षण को मिलाकर निर्धारित किया जा सकता है। आकाशीय संदर्भ में जलवायु संपूर्ण पृथ्वी या उसके एक भाग से संबंधित हो सकती है।

जो तत्व जलवायु निर्माण को प्रभावित करते हैं वे हैं- ताप, वर्षण, आर्द्रता, वायु दाब और पवन। चूँकि जलवायु, मौसम और जलवायु के तत्वों के अर्थ विस्तार से पाठ्यपुस्तक में दिए गए हैं, अत: इन प्रकरणों को समझने के बाद कक्षा में विद्यार्थियों को कुछ अभ्यास कराए जाने चाहिए, जो सामान्य प्रेक्षणों पर आधारित हो सकते हैं।

गतिविधि : परिचर्चा/ समूह कार्य

शिक्षक कक्षा में किन्हीं स्थानों के जलवायु से सीधे प्रभावित होने वाले प्राकृतिक और मानव-निर्मित लक्षणों; पर परिचर्चा प्रारम्भ कर सकते हैं। उदाहरण के लिए वनस्पति, घरों के प्रकार, भोजन, वेशभूषा, इत्यादि।

> *केरल और अरुणांचल प्रदेश की जलवायवीय दशाओं/ मौसमों पर परिचर्चा करें। जलवायु के कौन से घटक हैं जो इन राज्यों/क्षेत्रों की जलवायवीय दशाओं को प्रभावित करते हैं?*

गतिविधि का उद्देश्य– ये दो भिन्न स्थान भिन्न अक्षांशों पर स्थित हैं। भारत के भौतिक मानचित्र को कक्षा में दीवार पर लगाना चाहिए। परिचर्चा के समय विद्यार्थियों द्वारा इन स्थानों की भौतिक विशेषताओं जैसे- स्थलाकृति और सांस्कृतिक विशेषताओं जैसे- घरों के प्रकार, भोजन, वेशभूषा पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है। शिक्षक निम्नलिखित आकलन करेंगे– क्या विद्यार्थियों को भारत के मानचित्र पर अरुणांचल प्रदेश और केरल की स्थितियों की समझ है और क्या विद्यार्थी अक्षांश, स्थलाकृति और ऊँचाई जैसे कारकों को जानते हैं जो किसी स्थान की जलवायु को प्रभावित करते हैं और क्या स्थान की सांस्कृतिक विशेषतओं पर उनके प्रभाव को भी समझते हैं।

समूह गतिविधि में विद्यार्थियों का मूल्यांकन– विद्यार्थियों को दृश्य साधनों सहित ऊपर दी गई जानकारी पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और वेबसाइटों से इकट्ठे करने के अवसर दिए जाने चाहिए। बड़े आकार की कक्षा में जानकारी इकट्ठा करने के लिए विद्यार्थियों को समूहों में बाँटा जा सकता है। उनके निष्पादन का मूल्यांकन उनकी प्रस्तुति, इकट्ठी की गई सामग्री के स्तर, प्रस्तुती/परिचर्चा की मौलिकता, समूह के अन्य सदस्यों के साथ सहयोग, परस्पर आदर, दूसरे समूहों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की ग्राह्यता, साथियों से सीखना और कक्षा में आनंददायीक वातावरण बनाने में उनके योगदान के आधार पर किया जाना चाहिए।

चूँकि जलवायु पाठ्यपुस्तक का दूसरा या तीसरा अध्याय होगा, इस समय तक विद्यार्थी भारत की स्थिति और इसके भू-आकृति विज्ञान को ठीक से समझ गए होंगे, अत: जलवायु के शिक्षण-अधिगम में शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे भारत की स्थिति, अर्थात अक्षांश, रेखांश, भौतिक-लक्षण, अपवाह-तंत्र और समुद्र से निकटता को जलवायु से संबंद्ध करेंगे, क्योंकि ये महत्वपूर्ण घटक हैं जो भारत की जलवायु को प्रभावित करते हैं।

माध्यमिक स्तर पर भूगोल सामाजिक विज्ञान का एक घटक है और सामान्यत: उन शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता है, जिन्होंने स्नातक स्तर पर भूगोल का अध्ययन नहीं किया होता है। यह भी पाया गया है कि अधिकांश सामाजिक विज्ञान शिक्षक केवल माध्यमिक कक्षाएँ ही लेते हैं। भूगोल की मूलभूत संकल्पनाएँ उच्च प्राथमिक स्तरों पर पढ़ाई जाती हैं जो भारत के भूगोल को समझने के लिए आवश्यक हैं। समीक्षा कार्यशाला के समय कार्यरत शिक्षकों से निवेदन किया गया था कि कक्षा में जलवायु विषय के प्रभावी संप्रेषण के लिए शिक्षकों की मदद करने के लिए माड्यूल में कुछ संकल्पनाओं को समझाया जाना चाहिए।

B. भारतीय मानसून

कक्षा में विषय को शुरू करने से पहले शिक्षक का निम्नलिखित शब्दों से परिचित होना आवश्यक है–

- **वायुमंडलीय दाब**– वायुमंडलीय दाब और पवन वायुमंडलीय तत्वों की अपेक्षा वायुमंडलीय नियंत्रकों के रूप में

अधिक महत्वपूर्ण हैं। ताप में विषमता दाब में परिवर्तन करती है जिससे पवन उत्पन्न होती है। पवन से वर्षण होता है और ये ताप और आर्द्रता को प्रभावित करती है।

- **उच्च दाब और निम्न दाब**– दाब तंत्र दो प्रकार के हैं- उच्च दाब और निम्न दाब। अधिकांशत: उच्च दाब को प्रतिचक्रवात और 'उच्च' के रूप में भी जाना जाता है। जब यह लम्बा अण्डाकार आकृति का होता है तो इसे 'रिज' या 'वेज' कहते हैं। निम्नदाब भी अवनमन, चक्रवात या 'निम्न' के रूप में जाना जाता है। जब यह लम्बाई में होता है तो इसे गर्त कहते हैं।

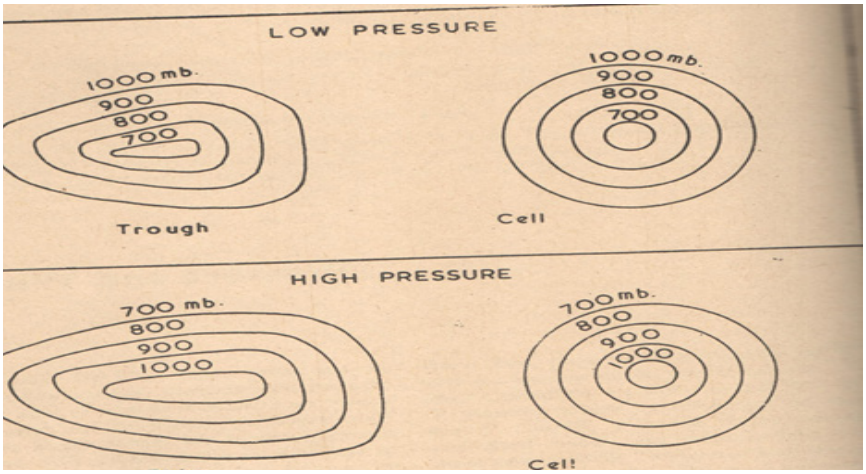

चित्र 1: निम्न दाब और उच्च दाब

- **दाब कटिबंध**– पृथ्वी की सतह पर कुल सात दाब कटिबंध हैं। ध्रुवीय उच्चदाब, उपोष्ण उच्चदाब और उप-ध्रुवीय निम्नदाब उत्तरी और दक्षिणी गोलार्धों में सुमेलित जोड़े बनाते हैं। उत्तरी गोलार्ध के तीन कटिबंध दक्षिणी गोलार्ध के कटिबंधों से भूमध्यीय कटिबंध द्वारा पृथक किए जाते हैं।

पवन किस प्रकार उत्पन्न होती है?

दाब के क्षैतिज अंतरों से वायुदाब में क्षैतिज अंतर आते हैं। इनसे पवन उत्पन्न होती है। पवन उच्च दाब क्षेत्र से निम्न दाब क्षेत्र की ओर बहती है।

- **फेरेल का नियम**– इस नियम के अनुसार, उत्तरी गोलार्ध में पवन अपने दायीं ओर और दक्षिणी गोलार्ध में अपनी बायीं ओर मुड़ती है। पवन अपने सही प्रवणता (ग्रेडिएन्ट) मार्ग से 'कोरिऑलिस बल' के कारण विक्षेपित होती है, जो पृथ्वी के घूर्णन के कारण उत्पन्न होता है।
- **कोरिऑलिस बल**– पृथ्वी के घूर्णन से उत्पन्न बल का प्रभाव प्रत्येक गतिमान वस्तु पर होता है, चाहे वह कोई महासागर धारा हो या बंदूक से चली हुई एक गोली। यह वह प्रभाव है जो पृथ्वी की घूर्णन गति और पृथ्वी की सापेक्ष वायु की गतिशीलता के कारण उत्पन्न होता है। उत्तरी गोलार्ध में 'कारिऑलिस बल' पवन की दिशा के दायीं ओर कार्य करता है और दक्षिणी गोलार्ध में पवन की दिशा के बायीं ओर कार्य करता है। यही कारण है कि उत्तरी ध्रुव में सभी पवन दायीं ओर जाने की प्रवृत्ति रखती हैं और दक्षिणी गोलार्ध में बायीं ओर जाने की प्रवृति रखती हैं। यह इस तथ्य को समझाता है कि उत्तरी गोलार्ध में पवन निम्न दाब केन्द्रों के चारों ओर वामावर्त बहती हैं परन्तु दक्षिण गोलार्ध में दक्षिणा वर्त।
- **दाब प्रवणता**– जिस दर से क्षैतिज दाब परिवर्तित होता है वह दाब प्रवणता से इंगित की जाती है। वायु के बहने की दर या पवन का वेग दाब प्रवणता के ढ़ाल से दर्शाया जाता है। ढाल और वेग एक दूसरे के समानुपाती होते हैं।

गतिविधि: एक अनुच्छेद लिखें

शिक्षक निम्नलिखित पर विद्यार्थियों को कक्षा में विमर्श करने और दस मिनट में अपनी कापी में एक पैराग्राफ लिखने के लिए कह सकते हैं।

- तूफान क्यों आते हैं?
- पवन का वेग परिवर्तित क्यों होता है?
- यदि पहाड़ों पर हिमपात होता है तो आस-पास के मैदानी इलाकों में पवन का वेग उच्च होता है। क्यों?

गतिविधि का उद्देश्य

विभिन्न स्थानों पर वायुमंडलीय दाब का अंतर पवनों की गति, पवन दिशा और पवनों के वेग के लिए उत्तरदायी होता है। शिक्षक आकलन करेगे कि क्या विद्यार्थी दाब प्रवणता को व्यक्त करने और उसे ऊँचाई और अक्षांश से संबद्ध करने में सक्षम हैं।

- **भूमंडलीय पवन**– भूमंडलीय पवन स्थाई पवन है जो वायु दाब के अक्षांशीय अंतर की प्रतिक्रिया में निम्न अक्षांश से दूसरे अंक्षाश की ओर वर्ष भर चलती रहती है। वे महाद्वीपों और महासागरों के विशाल क्षेत्रों के ऊपर बहती है। जलवायु और मानवीय गतिविधियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण दो पवन, व्यापारिक पवन और पछवाँ/पश्चिमी पवन हैं।
- **व्यापारिक पवन**– व्यापारिक पवन उष्णकटिबंधीय पूर्वी पवन भी कहलाती है, क्योंकि दोनों गोलार्धों में वे भूमध्यीय रेखा की ओर 30 डिग्री उत्तर और 30 डिग्री दक्षिण, पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है (विस्तृत जानकारी के लिए कृपया एन०सी०ई०आर०टी० की कक्षा IX की पुस्तक भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत, देखें)।
- **पश्चिमी पवन**– पश्चिमी पवन 30-40 डिग्री से 60-65 डिग्री उत्तर और दक्षिण अक्षांशों से बहती हैं। ये उप-उष्णकटिबंधीय कक्षों के उत्तरी भागों में उत्पन्न होती हैं और ध्रुवों की ओर बहती हैं।

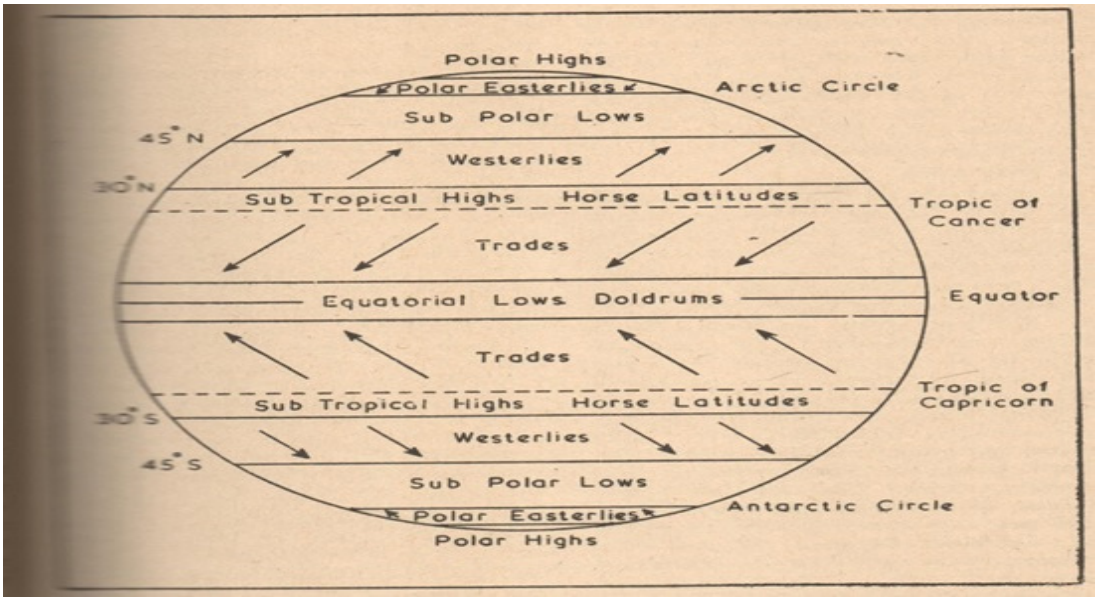

चित्र 2: दाब कटिबंध और भूमंडलीय पवन

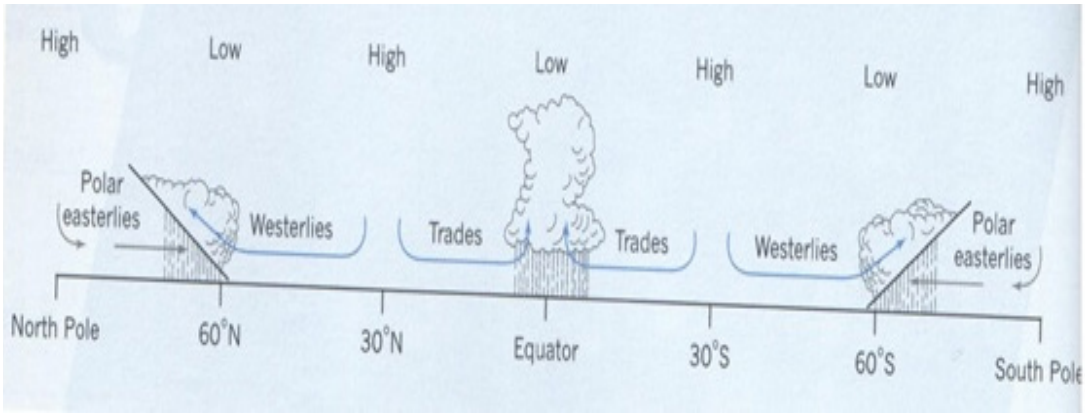

चित्र 3: पृथ्वी के वायुमंडल का एक सरलीकृत अनुप्रस्त काट संरचरण का एक सामान्य पैटर्न दर्शाता है

- **आर्द्रता**– यह जल-वाष्प की मात्रा के संदर्भ में वायुमंडल की अवस्था है और यदि किसी अन्य प्रकार से इसे वर्णित न किया गया हो तो सामान्यत: यह आपेक्षिक आर्द्रता कहलाती है।
- **आपेक्षिक आर्द्रता**– यह वायुमंडल में उपस्थित जल-वाष्प का सूचकांक है। यह वास्तविक वाष्प दाब है जो कि उस वायु ताप पर सम्भावित संतृप्त वाष्प दाब के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है। आपेक्षिक आर्द्रता उस तत्परता के मापन का प्रयास है जिससे वायु से वाष्प संघनित हो जाएगी और यह दो चरों से संबंधित है– एक वायुमंडल के दिए गए द्रव्यमान जलवाष्प की वास्तविक मात्रा और दूसरा, वायु के उस द्रव्यमान का ताप क्योंकि यह वायु की जलवाष्प को रखने की क्षमता को निर्धारित करता है। आपेक्षिक आर्द्रता का मान ताप के अनुक्रमित आधार पर परिवर्तित होता है और इस कारण सामान्यत: यह रात में बढ़ जाता है क्योंकि ताप गिर जाता है, भले ही जलवाष्प की मात्रा स्थिर रहे। यह हाइग्रोमीटर से मापी जाती है।

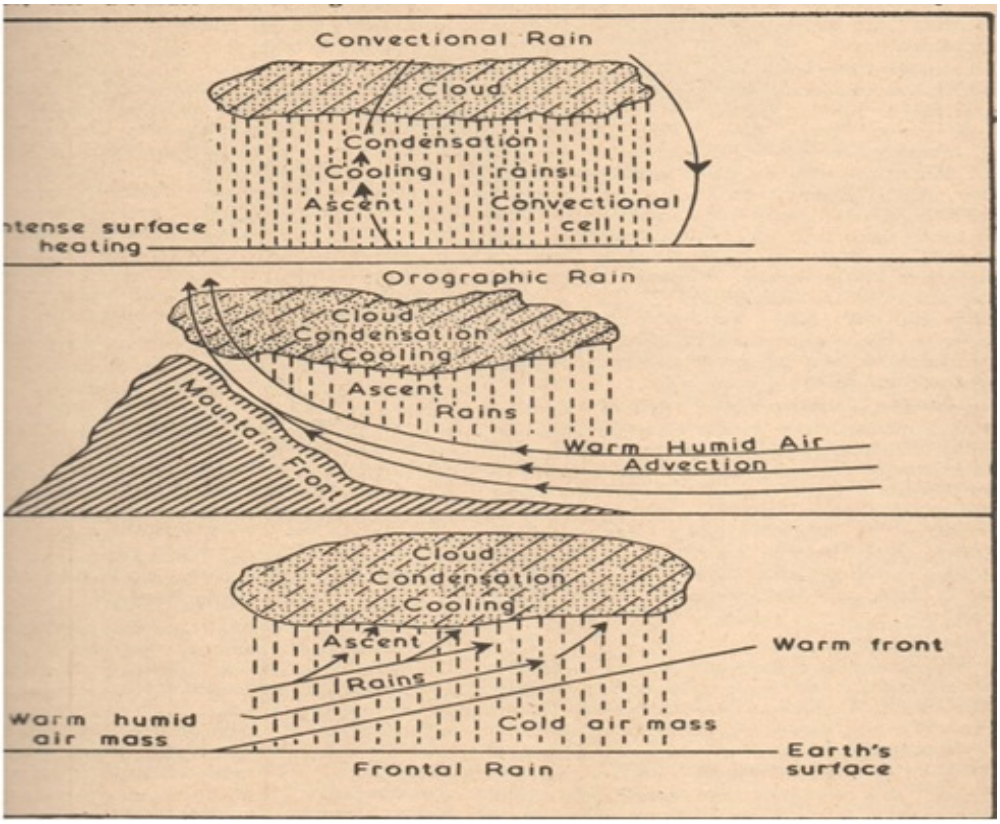

चित्र 4: वर्षा के प्रकार – संवहनीय, पर्वतीय और चक्रवातीय/फ्रंटल

- **वर्षा के प्रकार**– संवहनीय, पर्वतीय और चक्रवातीय अग्रगम और पवनाभिमुखी तथा प्रतिपवन ढाल (विस्तृत विवरण के लिए कक्षा VII और XI की भूगोल की पाठ्यपुस्तकों को देखा जा सकता है)।
- **एल नीनो**– एल नीनो गरम महासागरीय धाराएँ हैं जो कभी-कभी सामान्य ठंडे पेरू धाराओं को विस्थापित कर देती हैं, जो दक्षिणी अमेरिका के पश्चिमी तट के साथ-साथ उत्तर की ओर बहती हैं। गरम सागरीय जल की पुनरावृत्ति प्रत्येक तीन से पाँच वर्ष में होती है और छह से अठारह माह तक बनी रहती है (एल निनो के मध्य, बहुधा उसी क्षेत्र में सतही जल धाराओं के शीतलन अवधियाँ होती हैं जिन्हें ला निनां कहते हैं।)
- **ई०एन०एस०ओ०**– एल नीनो घटना का मध्य प्रशांत महासागर और आस्ट्रेलिया के वायुदाब परिवर्तनों से गहरा संबंध है। प्रशांत महासागर पर वायुदाब में यह परिवर्तन दक्षिणी दोलन कहलाता है। दक्षिण दोलन और एल नीनो की संयुक्त परिघटना ई०एन०एस०ओ० (EL Nino Southern Oscillation,एल-निनो दक्षिणी दोलन) कहलाती है।

शिक्षक के लिए

समाचार पत्र, टेलीविज़न या इंटरनेट साइटों से पता लगाएँ कि जब आप यह अध्याय पढ़ा रहे हैं, तो क्या उस समय भारत या विश्व के किसी भाग में कोई प्रमुख वायुमंडलीय घटना घट रही है।

- **अंतर उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (आई०टी०सी०ज़ेड०)-** यह भूमध्य रेखा पर स्थित निम्न दाब क्षेत्र है जहाँ व्यापारिक पवनें अभिसारित होती हैं और इस कारण यह ऐसा क्षेत्र है जहाँ वायु ऊपर की ओर उठती है। जुलाई में आई०टी०सी०जेड० लगभग 20 डिग्री उत्तर-25 डिग्री उत्तर अक्षाशों पर बना रहता है (गंगा के मैदानों के ऊपर), जिसे कभी-कभी मानसून अवतलन कहते हैं। यह मानसून अवतलन उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भारत में तापीय निम्नदाब विकसित करता है। आई०टी०सी०जेड० के स्थान बदलने से दक्षिणी गोलार्ध की व्यापारिक पवनें भूमध्य रेखा की 40 डिग्री और 60 डिग्री ई देशांतरों के मध्य पार करती हैं और कारिऑलिस बल के कारण दक्षिण से उत्तर की ओर बहना प्रारम्भ कर देती हैं। यह दक्षिण-पश्चिमी मानसून बन जाता है। सरदी में आई०टी०सी०जेड० दक्षिण की ओर गतिमान होता है और इस कारण पवनों का उत्तर-पूर्वी दिशा से दक्षिण और दक्षिण-पश्चिमी दिशा में विपरीत परिसंचरण होता है। ये उत्तर-पूर्वी मानसून कहलाती हैं।
- **बौछारें, मूसलाधार वर्षा और स्पंदी गतियाँ**– दक्षिण-पश्चिमी मानसून भी बौछारों, मूसलाधार वर्षा और स्पंदी गतियों से जाना जाता है। भारत के पूर्वी भागों में मानसून के उत्कर्ष पर एक या दो सप्ताह वर्षा की बौछारें होती हैं। भारी बादलों और वर्षा के साथ मानसून का अचानक सक्रिय होना मूसलाधार वर्षा कहलाता है। जब पछवा जेट धाराएँ हिमालय के दक्षिण से उत्तर में अपना स्थान बदल लेती हैं, तो मानसून अचानक सिंधु-गंगा मैदानी क्षेत्रों में प्रवेश करता है। स्पंदी गतियों का अर्थ वर्षा के साथ मानसूनी पवनों की तीव्रता में बारी-बारी से बढ़ना और घटना है।
- **पश्चिमी विक्षोभ और उष्णकटिबंधीय चक्रवात**– पश्चिमी विक्षोभ जो भारतीय उपमहाद्वीप में सरदी के महीनों में पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में प्रवेश करता है, भूमध्य सागर से उत्पन्न होता है और भारत में पश्चिमी जेट धाराओं द्वारा लाया जाता है। विद्यमान रात्रि ताप में वृद्धि पहले से ही इन चक्रवाती विक्षोभों के आने का संकेत देती है।
- **उष्णकटिबंधीय चक्रवात-** बंगाल की खाड़ी और भारतीय महासागर के ऊपर उत्पन्न होते हैं। ये अति उच्च पवन वेग वाले और भारी वर्षा वाले होते हैं और तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और ओडिशा के तट से टकराते हैं। इनमें से अधिकांश चक्रवात अपने उच्च पवन वेग और साथ में होने वाली मूसलाधार वर्षा के कारण बहुत विनाशकारी होते हैं।

गतिविधि – मानचित्र कार्य और परिचर्चा

शिक्षक इस गतिविधि को भारत के मानचित्र पर करने के लिए विद्यार्थियों से कह सकते हैं। मानचित्र कार्य शुरू करने से पहले शिक्षक विद्यार्थियों से पूछ सकते हैं कि उन्होंने समाचार पत्रों या टेलीविज़न में किन्हीं चक्रवातों की गति की दिशा को देखा है।

विद्यार्थियों को भारत के मानचित्र पर उष्णकटिबंधीय चक्रवात का मार्ग दिखाना होगा। वे जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और इसके समाज के हाशिये पर के वर्गों और प्राकृतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर परिचर्चा कर सकते हैं। हाल ही में चक्रवात 'फैलिन', जो ओडिसा के तट से टकराया था, ने लोगों विशेषकर मछुआरा समाज की भारी तबाही की । शिक्षक लोगों की जीविका, विशेष रूप से महिलाओं की जीविका पर चक्रवातों के प्रभाव, तटीय क्षेत्रों में आपदा प्रबंधन की तैयारी, ऐसे क्षेत्रों को उपलब्ध सहायता की प्रकृति, पर्यावरण पर चक्रवाती तूफानों का प्रभाव इत्यादि पर परिचर्चाओं का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

गतिविधि के उद्देश्य: शिक्षक विद्यार्थियों की जागरूकता के स्तर का आकलन समाचार पत्रों को पढ़कर और रेडियो/टी.वी समाचारों के माध्यम से कर सकते हैं और इससे भी कि क्या विद्यार्थी बताई गई जानकारी को मानचित्र की सहायता से शब्द से दृश्य में व्यक्त करने मे सक्षम है। विद्यार्थियों को प्राकृतिक पर्यावरण और समाज। हाशिये के समूहों के प्रति भी संवेदनशील बनाया जाए।

- **जेट धारा**– जेट धारा से संबंधित रोचक तथ्यों पर परिचर्चा की जा सकती है। दूसरे विश्व युद्ध के आखिरी समय में मौसमविज्ञों को ऊपरी क्षोभमंडल में जेट धारा का पता चला। जेट धारा के ज्ञात होने की घटनाओं का क्रम बहुत रोचक है। जब द्वितीय विश्व युद्ध के आखिरी चरण में अमेरिका के बमवर्षक वायुयानों के पायलट लगभग 13000 मीटर की ऊँचाई पर जापान की तरफ उड़ रहे थे तो उनका सामना सामने की तेज पवनों से हुआ, जिन्होंने उनकी गति को बहुत धीमा (कभी-कभी शून्य) कर दिया। परन्तु उत्तर में अपने आधार स्थल की ओर लौटते समय, उन्होंने पाया कि उनकी गति बहुत बढ़ गई और कभी-कभी पीछे से आने वाली पवन के कारण दुगनी भी हो जाती थी। इस प्रकार उच्च-स्तरीय लक्ष्यों से घर लौटते समय पायलट अति-तीव्र गति से ऊँचाई पर बहने वाली पवनों के अनोखे अनुभव अपने साथ लाए। अंतत: जेट धारा कहलाने वाली परिघटना की औपचारिक खोज हुई।

शरद ऋतु में जेट धारा और ऊपरी वायु का परिसंचरण

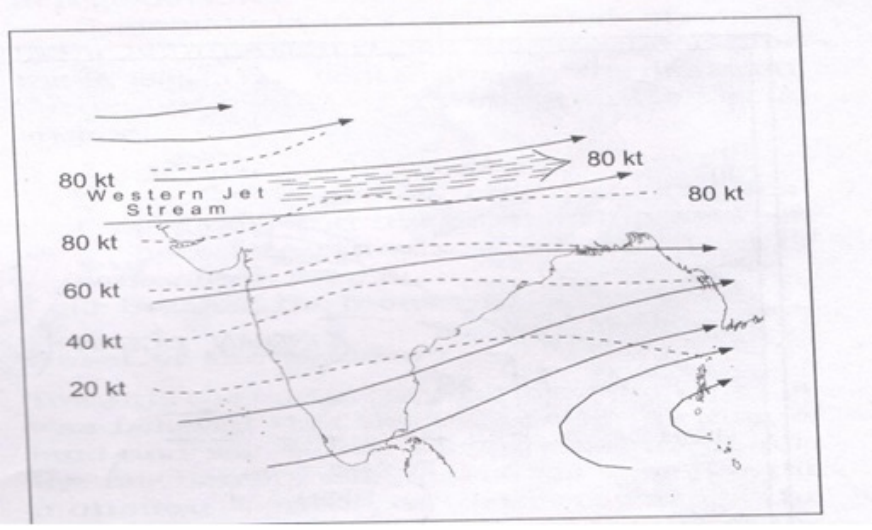

चित्र 5: शरद ऋतु में 9-13 km ऊँचाई पर पवनों की दिशा और पश्चिमी जेट धारा

ग्रीष्म ऋतु में जेट धारा और ऊपरी वायु का संचरण

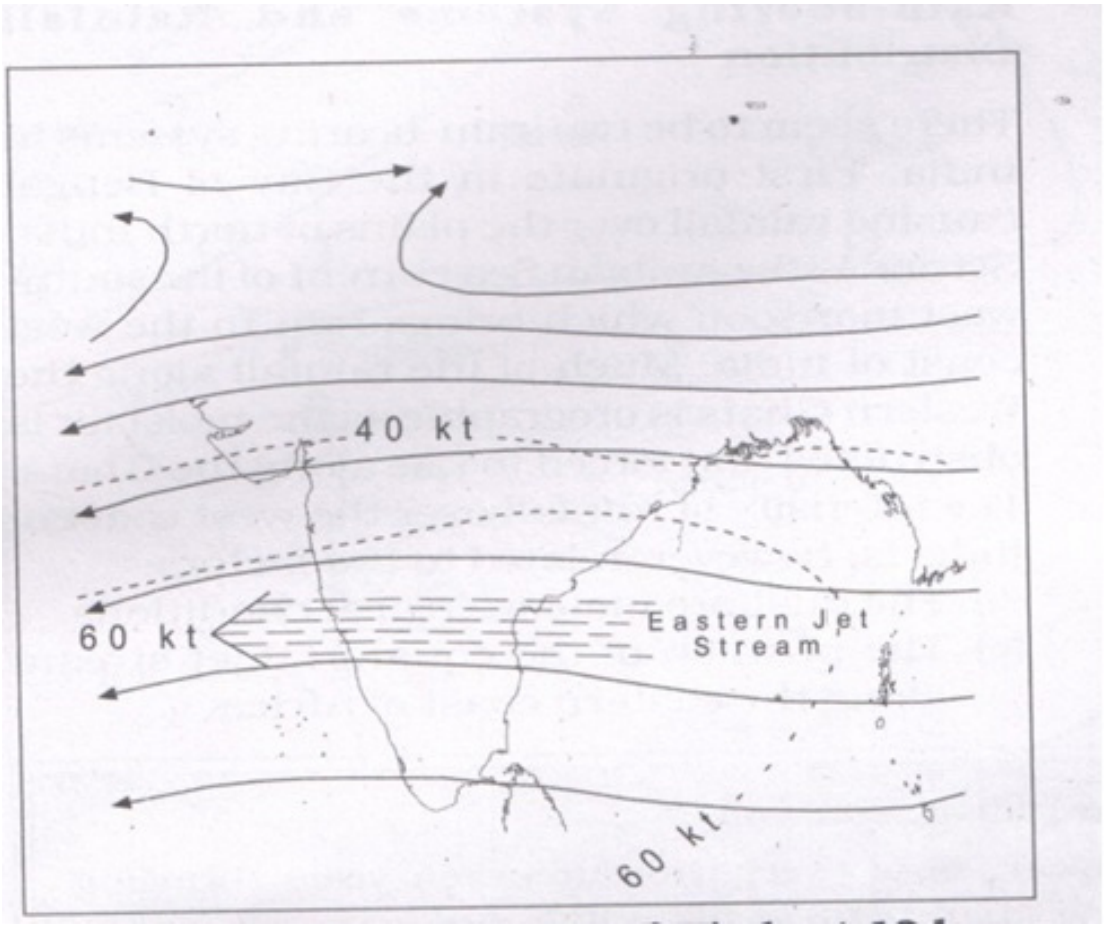

चित्र 6: ग्रीष्म ऋतु में 13 km ऊँचाई पर पवनों की दिशा और पूर्वी जेट धारा

.

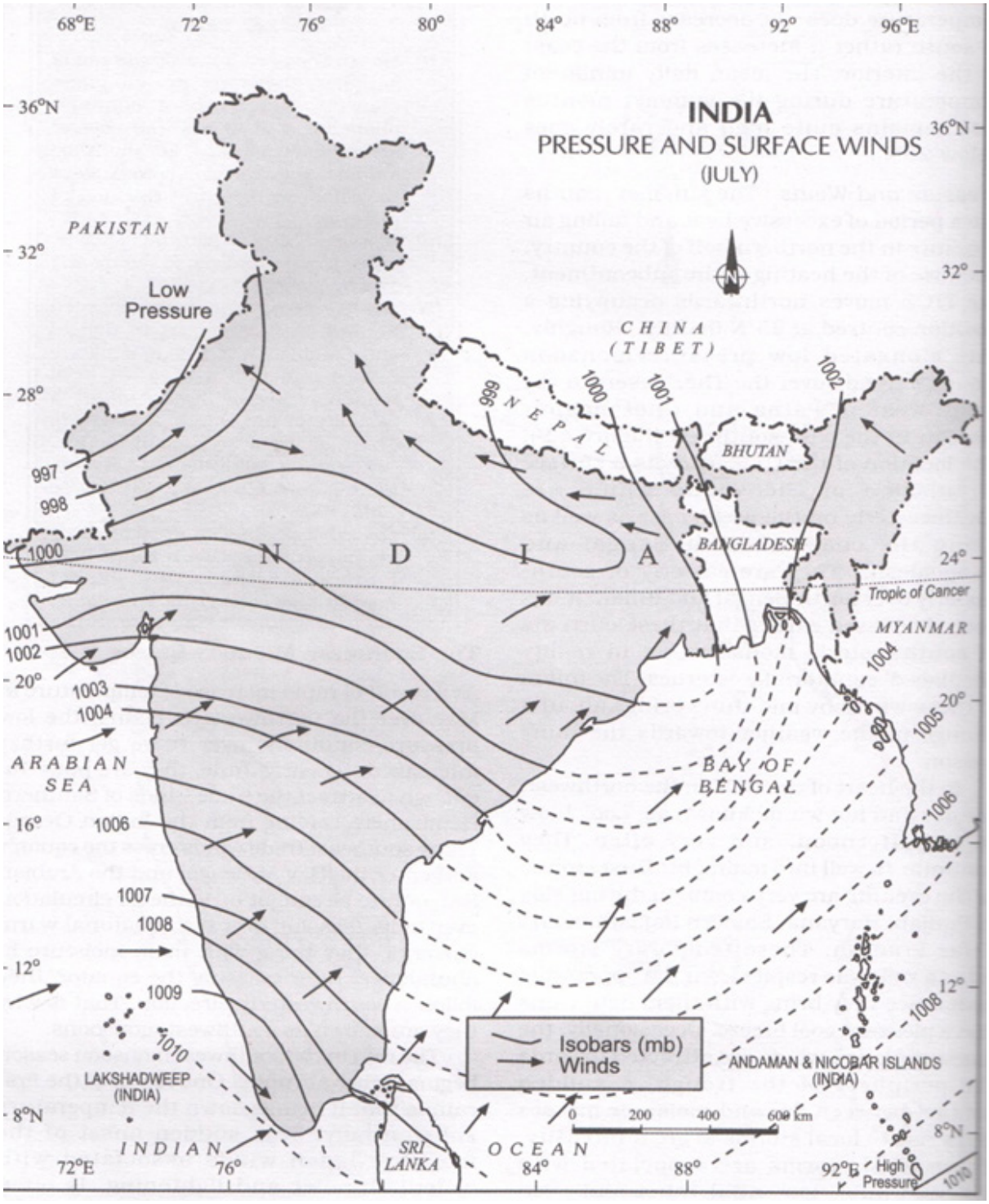

चित्र 7 : जुलाई में वायुमंडलीय दाब और सतही पवनें

.

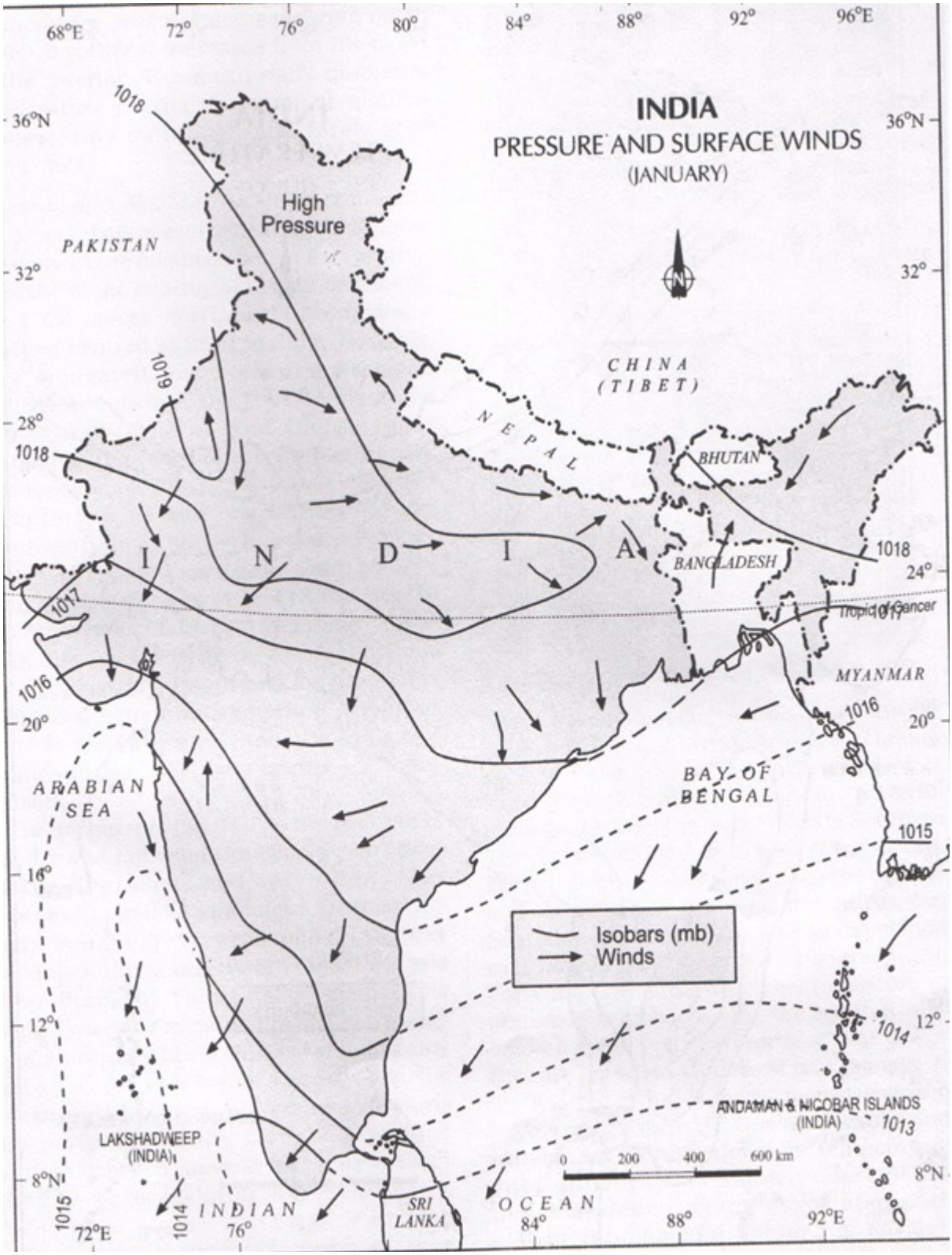

चित्र 8 : जनवरी में वायुमंडल दाब और सतही पवनें

गतिविधि : मानचित्र पढ़ना

विद्यार्थियों को ऊपर दिए गए मानचित्रों (चित्र 5,6,7,8) को ध्यान से देखने और जेट धारा की स्थिति और उसके बहने की दिशा, जनवरी तथा जुलाई में पवन की दिशा में परिवर्तन के कारण और राज्यों/स्थानों को पहचान कर उच्च दाब और निम्न दाब वाले क्षेत्रों की स्थिति ज्ञात करने के लिए कहा जा सकता है।

गतिविधि का उद्देश्य–

विद्यार्थी किसी भी परिघटना जैसे स्थानों की स्थिति, अक्षांश, पवनों की दिशा, समदाबी, नॉट में व्यक्त पवन वेग इत्यादि को देखते समय सभी लक्षणों/आकृतियों पर ध्यान दें।

मानसून का प्रारम्भ सामान्यत: एक बहुत जटिल परिघटना माना जाता है और कोई भी एक अकेला सिद्धांत नहीं है जो इसे पूरी तरह समझा सके। यह अभी भी विश्वास किया जाता है कि गरमी के महीनों में स्थल और समुद्र के भिन्न प्रकार से गरम होने की क्रियाविधि है जो मानसून पवनों के उपमहाद्वीप की ओर संवहन के लिए आधार तैयार करती है। कक्षा में मानसून की कार्यविधि बताने से पहले शिक्षक को आई०टी०सी०जेड०, जेट धारा, दाब कटिबंधों, भूमंडलीय पवनों, विभेदी तापन, समदाब रेखाएं, समताप रेखाएँ, समवर्षा रेखाएँ, वर्षा के प्रकार, पवनाभिमुख और प्रतिपवन ढाल, रूद्घोष्म ह्रास दर (Adiabetic lapse) इत्यादि से संबंधित शब्दों और संकल्पनाओं की जानकारी होनी चाहिए।

गतिविधियाँ: ताप रिकॉर्ड करना, जानकारी इकट्ठी करना और विभेद करना

- विद्यार्थियों को एक सप्ताह के लिए दैनिक समाचार पत्रों से अपने शहर के उच्चतम और न्यूनतम ताप और वर्षा को रिकॉर्ड करने के लिए कह सकते हैं।
- जानकारी इकट्ठा करें– विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे भारत के विभिन्न भागों में जलवायु की परिवर्तनशीलता पर जानकारी इकट्ठा करें और इस परिवर्तनशीलता के कारण भी खोजें।
- मानसून की बौछार और मूसलाधार वर्षा में अंतर बताएँ।

मानचित्र आधारित प्रश्न

भारत के मानचित्र के खाके में विद्यार्थियों से निम्नलिखित करने को कहें:

1. तीर के चिह्नों की मदद से जून-जुलाई में मानसून पवनों की दिशा दर्शाएँ।
2. पवनाभिमुख ढाल और प्रतिपवन ढाल पर स्थित स्थानों को दर्शाएँ।
3. उत्तर-पूर्वी मानसून के कारण शरद ऋतु की वर्षा पाने वाले क्षेत्र दर्शाएँ।

जन जीवन पर जलवायु का प्रभाव

विद्यार्थियों के लिए गतिविधि/परियोजना

एक कोलाज बनाएँ जो दर्शाता हो कि मानसून मानव जीवन को कैसे प्रभावित करता है। विद्यार्थियों से मानसून के समय जून से सितम्बर माह के समाचार पत्र की कतरनें इकट्ठी करने के लिए कहा जा सकता है।

अध्यापकों के लिए गतिविधियाँ

चित्र 9: मानव जीवन पर मानसून का प्रभाव

संकेत– कृषि, परिवहन, स्कूल जाते बच्चे, महिलाएँ, विक्रेताओं, रिक्शाचालक, बरसातियाँ/छतरिया/तिरपाल बेचने वाले, मरीज़, वृद्ध, विकलांग, इत्यादि को परिप्रेक्ष्यों में रखते हुए कोलाज बनाए जा सकते हैं। विद्यार्थियों को एक माह की अवधि के अपने शहर, कस्बे के दैनिक समाचार पत्रों से तापमान, सापेक्ष आर्द्रता, सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय को इकट्ठा करने के लिए कहा जा सकता है। इसी प्रकार के आँकड़े महानगरों के समाचार पत्रों से इकट्ठे किए जा सकते हैं (यदि विद्यार्थी भारत के उत्तरी भाग में रह रही है तो उसे दक्षिण भारत के शहर से आँकड़े इकट्ठे करने चाहिए और इसके विपरीत भी) फिर वे इन दोनों स्थानों के औसत मौसम दशाओं की तुलना कर सकते हैं और एक रिपोर्ट बना सकते हैं।

विद्यार्थियों के लिए रोचक गतिविधि

वर्षामापी बनाना

विद्यार्थियों को वर्षामापी बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है जिसका उपयोग वर्षा को मापने हेतु किया जाता है।

आवश्यक सामग्री :

- एक खाली बोतल
- कैंची
- चिपकाने वाला टेप
- पैमाना
- कागज़
- पेंसिल

विधि–

4. प्लास्टिक की बोतल को नीचे से दो तिहाई ऊपर की ओर चारों ओर से काट लें।
5. बोतल के ऊपरी हिस्से को उलट कर नीचे वाले हिस्से में लगा दें, एक टेप से उसे ठीक से चिपका दें।
6. टेप के एक टुकड़े पर पैमाने की सहायता से सेंटीमीटर में एक पैमाना बनाएँ और अपनी बोतल पर उसे चिपका दें।
7. बाहर किसी जगह वर्षामापी को रख दें। यह स्थान खुला होना चाहिए और आस-पास कोई पेड़ नहीं होना चाहिए।
8. एक गड्ढ़ा खोदकर उसमें वर्षामापी को गाड़ दें, ताकि ऊपरी भाग भूमि से 5 cm बाहर हो। इससे तेज हवा के कारण वर्षामापी उड़ेगा नहीं।
9. एक निश्चित समय पर प्रतिदिन मानसून के मौसम में वर्षामापी की जाँच करें, वर्षा जल की मात्रा को माप लें और फिर बोतल खाली कर दें।

(www.metoffice.gov.uk से लिया गया है)

भूमंडलीय तापन पर गतिविधि – पोस्टर बनाना

विद्यार्थियों को भूमंडलीय तापन पर पोस्टर बनाने के लिए कहा जा सकता है। 1 सितम्बर, 2011 को एन०सी०ई०आर०टी० में जनसंख्या शिक्षा पर एक राष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। मदद के लिए विद्यार्थियों द्वारा इस प्रतियोगिता में बनाए गए कुछ पोस्टर नीचे दिए गए हैं।

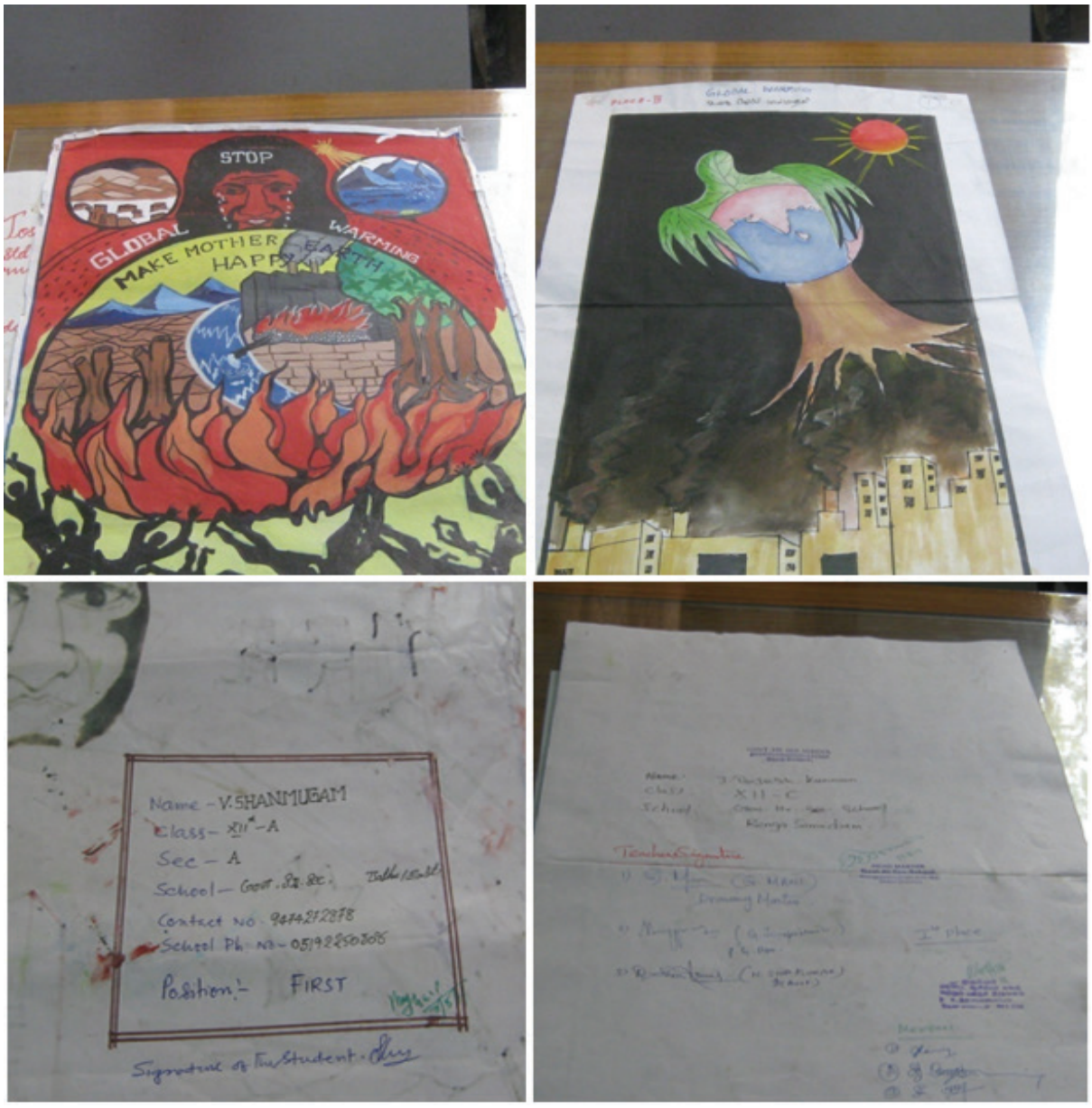

चित्र 10: ग्लोबल वार्मिंग

D. मानसून की समेकक भूमिका

देश के विभिन्न क्षेत्रों के प्राकृतिक पर्यावरण में विभिन्नताएँ होने पर भी मानसून की चाल एकरूपता के प्रबल तत्व उपलब्ध कराती है। शुष्क और नम मौसमों का एक के बाद एक आना और वर्ष के कुछ माह जीवन दायिनी वर्षा का निरंतर होना, सामान्य रूप से पूरे भारत की परिघटना है; यद्यपि शुष्क मौसम का सूखापन और नम मौसम का गीलापन देश के एक भाग से दूसरे भाग तक बहुत परिवर्तनशील पाया जाता है। धूप से झुलसी हुई भूमि पर वर्षा की बूँदों के गिरने से उत्पन्न संगीत और

सुगंध, प्यासी धरती भारत के लोगों में मरूस्थली थार से आर्द्र उत्तर-पूर्व तक लगभग सभी जगह तीव्र भावात्मक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करती है– भोजपुर की कजरी और ब्रज के मल्हार के प्रतिरूप भारत के लगभग सभी भागों में हैं। वर्षा-पोषित, जीवन निर्वाह हेतु कृषि और उस पर आधारित ग्रामीण समुदाय के फैलाव हर प्रकार से मानसून की देन हैं। मानसून की सारी व्यापकता ने – बहुत सी क्षेत्रीय विभिन्नताएँ होने पर भी– पूरे देश की लम्बाई चौड़ाई में मानव प्रकृति की अंत:क्रिया में एकरूपता के एक स्तर के लिए प्राकृतिक आधार उपलब्ध कराया है; भारत की एकता इसी एकरूपता में गहराई से समाहित है।

शिक्षकों के लिए गतिविधि

दिए गए बॉक्स में विद्यार्थियों के लिए मानसून की समेकक भूमिका पर आधारित एक गतिविधि तैयार करें।

सुझाई गई पठन सामग्री

1. "पृथ्वी: हमारा आवास" कक्षा VI के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक, एन०सी०ई०आर०टी०-2006
2. "हमारा पर्यावरण" कक्षा VII के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक, एन०सी०ई०आर०टी०-2007
3. "संसाधन एवं विकास" कक्षा VIII के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक-2008
4. "भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत" कक्षा XI के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक, एन०सी०ई०आर०टी०-2006
5. "भारत: भौतिक पर्यावरण" कक्षा XI के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक, एन०सी०ई०आर०टी०-2006
6. "जल संसाधन" पर अध्याय, समकालीन भारत-2, कक्षा X के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक, एन०सी०ई०आर०टी०-2007
7. Haggett, Peter, Geography: A Global Synthesis, (2000) Prentice Hall
8. Lal, D.S., Climatology, Chaitanya Publishing House, Allahabad
9. Kendrew, K.G., Climates of the Continents, (Fifth Edition, 1961) Oxford University Press London
10. Website www.ind.gov.in

संसाधनों का संप्रेषण

' संसाधन होते नहीं हैं वे बन जाते हैं; वे स्थिर नहीं होते, बल्कि मानवीय आवश्यकताओं और कार्रवाइयों की अनुक्रिया में फैलते और संकुचित होते रहते हैं।'

(जीमरमान, पीच और कॉनस्टेन्टाइन)

परिचय

सभी वस्तुएँ जो पर्यावरण में उपलब्ध हैं और जो मानव द्वारा अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपयोग में लाई जाती हैं, संसाधन कहलाती हैं। संसाधन कुछ निश्चित वस्तुएँ नहीं हैं। जिसे मानव ने संसाधन माना, उसमें समय के साथ परिवर्तन हुआ। कुछ वस्तुएँ जिन्हें हम संसाधन मानते हैं, जैसे भूमि, जल, सूर्य का प्रकाश, पवन मानव के अस्तित्व के पहले से मौजूद हैं, परन्तु ये संसाधन तभी बने जब मानव ने इन्हें विभिन्न कार्यों के लिए उपयोगी समझा, जैसे कृषि के लिए भूमि, ऊर्जा उत्पादन के लिए जल, सूर्य का प्रकाश, पवन, इत्यादि। मनुष्य भी महत्वपूर्ण संसाधन माने जाते हैं। ये उनकी सोच और अविष्कार हैं जो संसाधन उत्पन्न करते हैं। संसाधन देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी होते हैं।

शिक्षण-अधिगम उद्देश्य

संसाधनों का संप्रेषण करते समय शिक्षकों को निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करना होगा:

- संसाधनों का अर्थ समझना
- विभिन्न प्रकार के संसाधनों की पहचान करना– नवीकरणीय और गैरनवीकरणीय संसाधनों में अंतर
- संसाधनों के न्यायोचित उपयोग और संरक्षण पर जागरूकता उत्पन्न करना
- चित्रों और मानचित्रों की व्याख्या करना

प्रमुख संकल्पनाएँ

A. संसाधनों का अर्थ

शिक्षक स्पष्ट रूप से समझा सकते हैं कि हम जिसे संसाधन मानते हैं, वह समय और स्थान के साथ परिवर्तित हो जाता है। कोई वस्तु संसाधन मानी जाती है क्योंकि मानव समाज उसको महत्व देने लगता है। अत: संसाधनों को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं कि संसाधन वह है जिसे इस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है कि वह मनुष्यों के लिए अधिक मूल्यवान और उपयोगी बन जाए है। भूमि, जल, मृदा, वनस्पतिजात, प्राणिजात, खनिज जैसे कोयला और पेट्रोलियम, सूर्य का प्रकाश, पवन आदि संसाधन माने जाते हैं। ये सभी चीज़े पृथ्वीं पर मानव विकास से बहुत पहले से मौजूद थीं। परन्तु ये तभी संसाधन बनी जब मानव ने इन्हें उपयोगी पाया। इन वस्तुओं का उपयोग समय के साथ तभी संभव हुआ, जब उपयुक्त प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो पाई।

गतिविधि : परिचर्चा

शिक्षक निम्नलिखित पर कक्षा में परिचर्चा करा सकते हैं– पदार्थ जिनको आज हम 'संसाधन' मानते हैं परन्तु पहले इनका कोई महत्व नहीं था और भविष्य में इनका महत्व कम हो सकता है (संकेत– पेट्रोलियम)। किस प्रकार मनुष्य की आवश्यकताएँ और क्रियाएँ किसी वस्तु को संसाधन बनाती हैं?

शिक्षक कक्षा को छोटे समूहों मे बाँट सकते हैं। छोटे समूहों में विद्यार्थी आगे पूरी कक्षा में परिचर्चा करने के लिए परस्पर परिचर्चा करके कुछ बिंदु तैयार कर सकते हैं। विद्यार्थी ऐसे संसाधनों और उनके उपयोगों की एक सूची तैयार कर सकते हैं और उन पर परिचर्चा विद्यार्थियों को स्पष्ट करेगी कि जिसे मानव संसाधन समझते हैं वह समय और स्थान के साथ परिवर्तनशील है। उदाहरण के लिए, पेट्रोलियम को मानव इतिहास में महत्वपूर्ण संसाधन बने अधिक समय नहीं हुआ। इसी प्रकार, हो सकता है कि पवन तथा सौर उर्जा आने वाले समय में बहुत महत्वपूर्ण संसाधन बन जाएँ।

आकलन- विद्यार्थियों द्वारा उठाए गए बिंदुओं के आधार पर, शिक्षक उनके समझने की योग्यता, तार्किक चिंतन और संसाधनों के बारे में अपनी समझ को व्यक्त करने की योग्यता का आकलन करने में सक्षम होंगे। शिक्षक परिचर्चा के समय अपने विचारों को संप्रेषित करने की योग्यता को परखने में भी सक्षम होंगे।

B. संसाधनों का वर्गीकरण

संसाधनों को उनकी समाप्यता के आधार पर दो वर्गों - नवीकरणीय और गैरनवीकरणीय में विभाजित कर सकते हैं, जिन्हें क्रमश: प्रवाह और संचित संसाधनों के रूप में भी जाना जाता है। गैरनवीकरणीय संसाधन वे हैं जो मनुष्यों द्वारा उपयोग में लाए जाने की अवधि के भीतर प्राकृतिक रूप से पुन: प्राप्त हो जाते हैं अर्थात् उनका नवीकरण हो जाता है, जैसे जल, वन, पवन, इत्यादि। परन्तु इन नवीकरणीय संसाधनों का आवश्यकता से अधिक या बिना विचारे उपयोग किया जाए तो यह उनके भंडार को प्रभावित कर सकता है। अनवीकरणीय संसाधन मुख्य रूप से खनिज हैं और उनकी उपलब्धता सीमित है। ये संसाधन लाखों वर्षों में बनते हैं और उनका मानव के प्रासंगिक समय के पैमाने के अनुसार पुनर्भरण होना संभव नहीं। इस वर्ग में संसाधनों को दो भागों में बाँटा जा सकता है, एक तो वे जो उपयोग के साथ समाप्त हो जाते हैं जैसे- तेल, कोयला और दूसरे वे जिनका पुन: चक्रण हो सकता है, जैसे बाक्साइट ऐलुमिनियम।

संसाधनों को उनकी उत्पत्ति, स्वामित्व और विकास के स्तर के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है। उनके विकास के स्तर के आधार पर उन्हें चार वर्गो में बाँटा जा सकता है– संभावी संसाधन, विकसित संसाधन, भंडारण संसाधन और संचित कोष संसाधन। संभावी संसाधन वे हैं जिनकी पहचान कुछ स्थानों पर कर ली गई है परन्तु उनका उपयोग अभी तक नहीं किया गया है। इस प्रकार इन संसाधनों को उपयोग में लिए जाने की संभावना या क्षमता है परन्तु उस दृष्टि से ये अभी विकसित नहीं हुए हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थान में सौर ऊर्जा को विद्युत उत्पादन के लिए संसाधन के रूप में उपयोग में लिया जा सकता है, परन्तु इसे अभी विकसित नहीं किया गया है। विकसित संसाधन वे हैं जिनका उनकी गुणवत्ता और मात्रा के लिए सर्वेक्षण हो चुका है और उनकी पहचान हो चुकी है। उनका विकास प्रौद्योगिकी की उपलब्धता पर निर्भर करता है उदाहरण; के लिए, बस्तर जिले की बैलाडालिया पर्वत श्रेणियों में लौह अयस्क। भंडारण संसाधन वे पदार्थ हैं, जिनका उपयोग संसाधनों के रूप में किया जा सकता है, परन्तु उपयुक्त प्रौद्योगिकी की कमी उनके विकास में बाधा डालती है; उदाहरण के लिए अंटार्कटिका में लौह अयस्क का भंडार है, परन्तु वह बर्फ की मोटी चादर से ढका हुआ है। संचित कोष संसाधन वे पदार्थ हैं जो विद्यमान प्रौद्यागिकी के साथ उपयोग में लाए जा सकते हैं, परंतु उनका उपयोग अभी प्रारम्भ नहीं हुआ है। उदाहरण के लिए मिडल ईस्ट में कच्चे तेल का संचित कोष 807.7 सौ करोड़ बैरल है और विश्व का कच्चे तेल का अनुमानित संचित कोष 1668.9 सौ करोड़ बैरल है।

गतिविधि– प्रवाह चार्ट को पूरा करो

शिक्षक संसाधनों के वर्गीकरण से संबंधित एक अपूर्ण प्रवाह चार्ट दे सकते हैं, जैसा कि उदाहरण स्वरूप नीचे दिया गया है। विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे संसाधनों की समाप्यता के आधार पर उनके प्रकारों को अपनी समझ से पूरा करें।

यह गतिविधि विद्यार्थियों द्वारा अकेले की जा सकती है। एक बार जब सभी विद्यार्थी क्रियाकलाप पूरा कर लें, तो शिक्षक उनके उत्तरों के आधार पर परिचर्चा कर सकते हैं–

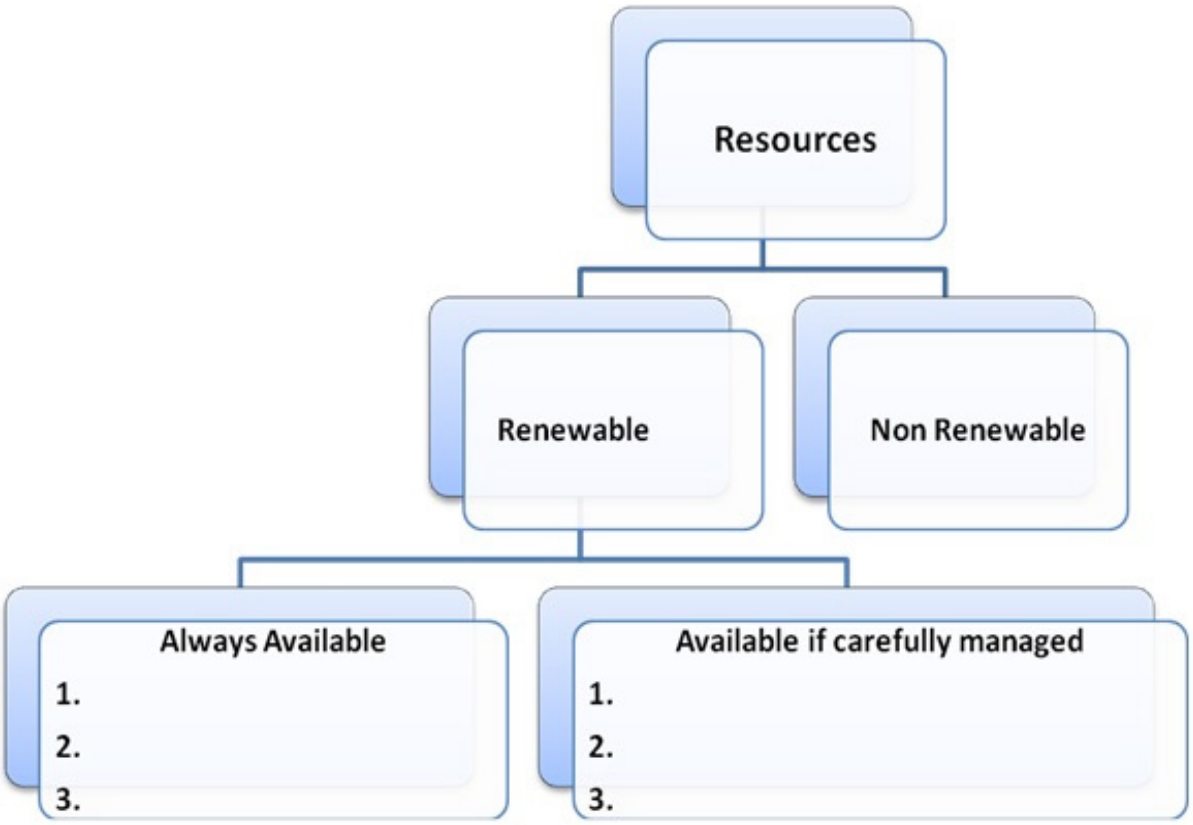

1. किन संसाधनों की मांग विश्व में बढ़ रही है और क्यों?
2. मानव द्वारा विभिन्न संसाधनों के संरक्षण हेतु क्या कदम उठाए जा सकते हैं?

> **नोट**– *क्रियाकलाप 2 के लिए दृष्टि-बाधित विद्यार्थियों को आरेख भरने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु वे नवीकरणीय संसाधनों पर परिचर्चा कर सकते हैं जो सदैव उपलब्ध होते हैं और जो तभी उपलब्ध होंगे यदि ठीक से उनका क्रमश: वर्गीकरण और प्रबंधन किया जाए।*

आकलन– शिक्षक जान पाएँगे कि विद्यार्थी संसाधनों के बारे में कितना समझ पाए हैं। क्या वे इस बारे में संवेदनशील हो गए हैं कि यदि संसाधनों का उपयोग सही ढंग से नहीं किया गया तो वे ज्यादा नहीं चलेंगे। जब विद्यार्थी संसाधनों के संरक्षण के तरीके सुझाएँ तो शिक्षक उनके तर्कों का आकलन भी कर सकते हैं।

क्रियाकलाप– वर्कशीट (कार्य पत्र) तैयार करना

यह क्रियाकलाप विद्यार्थी अकेले कर सकते हैं। एक वर्कशीट में वे निम्नलिखित शीर्षकों में अपने दैनिक जीवन में उपयोग में लिए जाने वाले संसाधनों का वर्गीकरण कर सकते हैं–

(a) नवीकरणीय और गैरनवीकरणीय

(b) उपयोग कम करने, पुन: उपयोग में लेने और पुन: चक्रित करने की आवश्यकता

शिक्षक उन्हें वर्कशीट में सारणियाँ तैयार करने के लिए संकेत दे सकते हैं।

संकेत: सारणी 1

नवीकरणीय	अनवीकरणीय

संकेत: सारणी 2

उपयोग कम करना	पुन: उपयोग में लेना	पुन: चक्रण

आकलन– शिक्षक आकलन कर सकते हैं कि विद्यार्थी संकल्पनाओं के बारे में कितना समझ पाए हैं और क्या वे विभिन्न प्रकार के संसाधनों, जिन्हें वे अपने दैनिक जीवन में देखते व उपयोग में लेते हैं, को विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत कर पाते हैं।

C. ऊर्जा के परंपरागत और गैर-परम्परागत स्रोत

भारत की बढ़ती जनसंख्या और बढ़ती आर्थिक गतिविधियों ने विभिन्न ऊर्जा संसाधनो की माँग में वृद्धि की है और यह वृद्धि आगे और बढ़ेगी। ऊर्जा के संसाधनों को आगे परंपरागत और गैर-परंपरागत में विभाजित कर सकते हैं। ऊर्जा के परंपरागत स्रोत वे हैं जो लम्बे समय से सामान्य रूप से काम में लिए जा रहे हैं, जैसे जलाऊ लकड़ी, जीवाश्म ईंधन। ये स्रोत लम्बे समय तक चलने वाले नहीं हैं, और इस कारण हमें गैर-परंपरागत स्रोतों के पक्ष-विपक्ष के बारे में विचार करना होगा, जो हैं– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायो गैस, ज्वारीय ऊर्जा और भूतापीय ऊर्जा। इन स्रोतों और संबंधित मुद्दों के बारे में अधिक सीखने के लिए इनमें से किसी एक स्रोत, जो असमाप्य और अपेक्षाकृत स्वच्छ (कम प्रदूषणकारी) हो, पर केस अध्ययन किया जा सकता है। गैर-परंपरागत ऊर्जा से संबंधित परियोजनाओं को स्थापित करना वनों, जलाशयों और वहाँ आस-पास रहने वालों को किसी न किसी रूप में प्रभावित कर सकता है। अत: प्रारम्भ से ही क्या उपाय करें कि वह भविष्य में समस्या न बने।

गतिविधि – केस अध्ययन

विधि– शिक्षक संसाधनों के बारे में विद्यार्थियों को समझाने के लिए केस अध्ययन विधि का उपयोग कर सकते हैं। विद्यार्थी केस अध्ययन को पढ़ेगें और अपने प्रेक्षणों पर कक्षा में परिचर्चा करेंगे। सभी विद्यार्थी पूना में भीमाशंकर पवन फार्म के केस अध्ययन को पढ़ें और अपने प्रेक्षणों पर कक्षा में परिचर्चा करें–

1. एक पवन फार्म स्थापित करने के क्या लाभ और हानियाँ हैं?
2. क्या भारत में पवन ऊर्जा पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न करना संभव है?
3. पवन ऊर्जा को काम में लेने में आप किन बाधाओं का अनुभव करते हैं?
4. दिए गए पवन फार्म का महिलाओं पर क्या प्रभाव पढ़ सकता है? (संकेत – उस क्षेत्र में जलाऊ लकड़ी ओर चारा इकट्ठा करने के संदर्भ में)

नोट– *शिक्षक यू ट्यूब पर उपलब्ध "हार्नेसिंग विंड पावर (जी०ई०इंडिया)" के वीडियो को दिखा सकते हैं, जो विद्यार्थियों को पवन फार्मों और पवन ऊर्जा को काम में लेने के बारे में और अधिक सीखने में मदद कर सकता है।*

केस अध्ययन

परियोजना स्थान– भीमाशंकर खेड़ तालुका, जिला पुणे, महाराष्ट्र

अक्षांश – $18^0$59'39.06"N, रेखांश– $73^0$35'8.96"E

यह पवन फार्म महाराष्ट्र के पुणे जिले में भीमाशंकर में स्थित है। मुख्य प्रभाव जो भीमाशंकर में देखे गए, उनमें शामिल हैं– भू उपयोग रूपांतरण, सड़क निर्माण के लिए पेड़ों की कटाई। जहाँ आवश्यकता थी वन विभाग की स्वीकृति ली गई और केवल कच्ची सड़क का निर्माण ही किया गया। स्थानीय गाँव के लोगों के लिए पहाड़ी तक जाने और चराई के लिए क्षेत्र का उपयोग करने में कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया।

भीमाशंकर में विंड फार्म

देखे गए पर्यावर्णीय प्रभाव	देखे गए सामाजिक प्रभाव
भूमि: पवन टर्बाइन वन भूमि में स्थापित किए गए; टर्बाइन लगाने के लिए वन विभाग से अनुमति ली गई। सहायक आधारभूत संरचना – टर्बाइनों तक पहुँचने वाली सड़क पर डामर किया हुआ नहीं था, क्षेत्र में चारों ओर सुरक्षा हेतु कोई चारदीवारी नहीं थी। स्थान के आस-पास जैव विविधता के अलावा पहाड़ी तक जाने वाली कच्ची सड़क - सामान्य रूप से पाई जाने वाली जैव विविधता, पेड़ों और अन्य वनस्पति सहित, देखी गई। पक्षियों और वन्य जीवन पर प्रभाव– कार्य के चलते जैव विविधता और प्राणिजात की क्षति नहीं देखी गई। सड़कों और संयंत्र स्थल के विकास के लिए पेड़ों की कटाई देखी गई। स्थल के आस-पास के जलाशय– आस-पास के जलाशयों पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया। पवन फार्मों से शोर प्रदूषण- जब प्रेक्षण लिए गए तो पाया गया कि शोर का स्तर न्यून था। पवन चक्कियों के पास कोई आबादी नहीं थी, इसलिए शोर प्रभाव निम्न आँका गया। सुरक्षा और संकट के मुद्दे– पवन चक्की, बस्ती और सड़क जैसे उपयोग में लिए जाने वाले स्थानों से काफी सुरक्षित दूरी पर थी। मानव स्वास्थ्य और सुरक्षा पर कोई पूर्वानुमानित प्रभाव नहीं थे। पवन फार्म के कार्य करते समय अन्य उत्सर्जन– पवन फार्मों के काम करने से कोई SO_2 , NO_2 उत्सर्जन नहीं था और कुल कार्बन उत्सर्जन शून्य था।	समुदाय पर प्रभाव – समुदाय, क्षेत्र से कम से कम 5 किलोमीटर दूर था। विंड फार्म के आस-पास का क्षेत्र विंड फार्म की गतिविधियों के लिए सीमित था और समुदाय के लोग इस क्षेत्र में देखे नहीं गए। फिर भी, समुदाय से संपर्क करने पर भ्रमणकारी दल को यह बताया गया कि लोगों को पहाड़ियों में जाने और लकड़ी तथा चारा इकट्ठा करने के लिए कोई मनाही नहीं थी। भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया– वन भूमि के व्यावसायिक भूमि में रूपांतरण का कार्य वन विभाग की अनुमति से किया गया। पुनर्वास और पुन: स्थापना के मुद्दे- पुनर्वास और पुन: स्थापना से संबंधित कोई झगड़े नहीं देखे गए और वहाँ रह रहे किसी भी व्यक्ति का पुनर्वास नहीं हुआ। आदिवासी और अतिसंवेदनशील समूहों पर प्रभाव- परियोजना के निकट आदिवासियों की कोई आबादी नहीं है, गाँव वाले और स्थानीय लोग बहुत अधिक प्रभावित नहीं हुए, क्योकिं निर्माण कार्यों में समुदाय की कोई भूमि नहीं ली गई और समुदाय के वहाँ आने-जाने में कोई बाधा नहीं थी। स्थानीय लोगों को जलाऊ लकड़ी लेने या पशुओं को चराने जैसे सामान्य कार्यों हेतु वन भूमि का उपयोग करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। आर्थिक दशाओं में परिवर्तन– पवन फार्मों की व्यवस्था और रखरखाव हेतु कार्यस्थल कर्मचारी के रूप में छोटे स्तर का रोज़गार।

**स्रोत- नवी और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार*

आकलन– शिक्षक विद्यार्थियों की समझ और विमर्श का आकलन एक ऐसे मुद्दे पर करेंगे जो उनके अपने अनुभव पर आधारित नहीं है, बल्कि उनके विषय (टॉपिक) की विषयवस्तु से संबंधित है। विद्यार्थियों को उनके पठन और तर्क देने के आधार पर आकलित किया जा सकता है जब वे अपने प्रेक्षणों और समझ से संबंधित वैध बिंदु समक्ष रखते हैं।

D. संसाधनों का संरक्षण

बढ़ती जनसंख्या और संसाधन उपयोग की बढ़ती मांग से संसाधन निम्नीकृत और कम होते जा रहे हैं। अत: संसाधनों के सावधानी पूर्वक उपयोग की आवश्यकता है, जिससे कि वर्तमान पीढ़ी भी लाभान्वित हो और भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता को भी ध्यान में रखा जा सके। संरक्षण संसाधनों की सुरक्षा के साथ-साथ न्यायोचित उपयोग को ध्यान में रखता है। संसाधनों और उनके वर्गीकरण को समझाते समय, शिक्षक साथ ही विद्यार्थियों को संसाधनों के संरक्षण के विषम में संवेदनशील बनाएँ।

गतिविधि: विचार मंथन

विधि: जैसा कि हम जानते हैं ऊर्जा के पारम्परिक स्त्रोत उनके उपयोग की वर्तमान दर से समाप्त हो सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों से कह सकते हैं कि उस स्थिति की कल्पना करें जब ये संसाधन पूर्णरूप से समाप्त हो जाएँगे तो उनके जीवन पर इसका क्या प्रभाव होगा। शिक्षक उन्हें कुछ संकेत दे सकते हैं, जैसे परिवहन, उद्योग, घरेलू परिस्थितियों आदि पर प्रभाव। सभी विद्यार्थी कक्षा में इस पर विचार करेंगे और परिचर्चा में अपने दृष्टिकोण साझा करेंगे।

आकलन- यह क्रियाकलाप कुछ संसाधनों के विषय में शिक्षकों को विद्यार्थियों की कल्पना और जागरूकता का आकलन करने में सहायता करेगा।

गतिविधि– इसे स्वयं करें

विधि- यह क्रियाकलाप विद्यार्थी छोटे समूहों में या अकेले कर सकते हैं। शिक्षार्थियों से कहें कि वे अपने घर/स्कूल में विभिन्न उपकरणों द्वारा विद्युत के उपभोग के बारे में जानकारी इकट्ठा करें और ऑकड़ा पत्र (डाटा शीट) तैयार करें। एक सप्ताह में व्यय होने वाली विद्युत की मात्रा का परिकलन करें। इसे बचाने के तरीके सुझाएँ। विद्यार्थी विद्युत के उपयोग और दुरुपयोग की मात्रा ज्ञात करेंगे। साथ ही विद्यार्थी ऊर्जा की दक्षता बढ़ाने के तरीके भी सुझाएँगे।

विभिन्न विद्युत उपकरणों द्वारा औसत विद्युत उपयोग के परिकलन हेतु चार्ट

(स्रोत– बी०एस०ई०एस० राजधानी)

उपकरण	लगभग भार (वाट)	उपकरणों की संख्या	औसत घंटे	लगभग यूनिट
लैम्प	100	1	1	3
ट्यूब लाइट	40	1	1	1.2
बिजली का पंखा	600-1000	1	1	30
इमर्शन हीटर	1500	1	1	45
वाटर हीटर	1000-2000	1	1	60
टोस्टर	750	1	1	22.5
रूम हीटर (रॉड वाला)	1000-2000	1	1	60
रूम हीटर (ब्लोअर)	1000-2000	1	1	60
रेफ्रीजरेटर (165 लीटर)	200	1	1	6
एयर कंडीशनर (खिड़की में लगने वाला, 1.5 टन)	1000-2000	1	1	60

डेजर्ट कूलर (मध्यम)	200	1	1	6
रूम कूलर	60-200	1	1	3
पंखा (टेबल फैन/छत वाला)	60-100	1	1	2.4
निर्वात पंखा (एग्जॉस्ट फैन)	150	1	1	4.5
कपड़े धोने की मशीन	700	1	1	7
रेडियो	40	1	1	1.2
टेलीविज़न	200	1	1	6
मिक्सर कम ग्राइंडर	200	1	1	6
कंप्यूटर	200	1	1	6
पंप की मोटर	740	1	1	22
कुल खर्च इकाइयाँ				409

नोट- *दिया गया चार्ट बी०एस०ई०एस० राजधानी से प्राप्त किया गया है और इसमें विद्युत उपकरणों का सीमित संदर्भ है। इसके अलावा और भी बहुत से विद्युत उपकरण हैं, जैसे अनाज पीसने की मशीन, छाछ बनाने वाली मशीन, विद्युत सिलाई मशीन आदि जिनके लिए उनका लगभग भार (वाट में) दिया हुआ नहीं है। शिक्षक विद्यार्थियों से कह सकते हैं कि बड़ों की या इंटरनेट की सहायता लें और पता लगाएँ कि ये उपकरण कितनी बिजली खर्च करते हैं।*

इसके अलावा बहुत से ग्रामीण इलाकों में बिजली उपलब्ध नहीं है। इस स्थिति में विद्यार्थियों से कह सकते हैं कि वे एक चार्ट तैयार करें और उन उपकरणों से होने वाले उपयोग का पता लगाएँ, जिनको वे उपयोग में लाते, यदि बिजली उपलब्ध होती।

संकेत

उपकरण	लगभग भार (वाट में)	उपकरणों की संख्या	उपयोग के औसत घंटे	लगभग विद्युत इकाइयाँ
लैम्प	100	1	1	3
टेबल फैन/छत का पंखा	60-100	1	1	2.4
छाछ बनाने वाली मशीन	200	1	1	6
जल पम्प	740	1	1	22
कुल उपयोग इकाइयाँ				पता लगाएँ

आकलन: विद्यार्थी इस विधि को घर पर अकेले या स्कूल में समूह बना कर सकते हैं। शिक्षक उनकी, समझ, प्रेक्षण, खोज-बीन, शोध कौशल और समस्या समाधन करने की योग्यता का आकलन कर सकते हैं।

गतिविधि– आइए पता लगाएँ

शिक्षक विद्यार्थियों से पूछ सकते हैं कि क्या उनके समुदाय में सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, बायोगैस, भूतापीय ऊर्जा संसाधनों को उपयोग में लाया जाता है। यदि ऐसा है, तो विद्यार्थियों को छोटे समूहों में बाँटकर उनसे संक्षेप में लिखने के लिए कह सकते हैं कि इन ऊर्जा स्त्रोतों को क्यों पसंद किया जाता है। उनकी खोजों के आधार पर कक्षा में एक परिचर्चा का आयोजन किया जा सकता है।

आकलन– इस गतिविधि द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों को अपने समुदाय में गैर-परम्परागत ऊर्जा संसाधनों के उपयोग के बारे में जागरूकता और हमारे लिए इन संसाधनों के महत्व के विषय में उनकी समझ का आकलन कर सकते हैं। शिक्षक उनकी जाँच-पड़ताल और शोध कौशलों का आकलन कर सकते हैं। कक्षा में इस पर विस्तृत परिचर्चा शिक्षक को विद्यार्थियों की पर्याप्त साक्ष्यों सहित प्रभावी रूप से संप्रेषण करने की योग्यता को परखने में मदद करेगी।

E. मानचित्रों का विश्लेषणा और उन्हें सहसंबद्ध करना

एक महत्वपूर्ण कौशल जो विद्यार्थियों में विकसित किया जाना चाहिए , वह मानचित्रों का विश्लेषण करना और उन्हें सहसंबद्ध करना है। विभिन्न भौगोलिक संकल्पनाओं को भली प्रकार समझने के लिए विद्यार्थियों को मानचित्र देखना, तुलना करना और संबद्ध करना सिखाया जा सकता है। उदाहरणार्थ, विद्यार्थियों ने कक्षा IX में भारत के भू-आकृतिक भागों के बारे मे सीखा है। कक्षा X में जब वे भारत की मृदाओं के बारे में पढ़ते हैं, तो उनका पूर्वज्ञान इसे आसानी से समझने और व्याख्या करने में मदद करेगा। उदाहरणार्थ, हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं में सामान्यत: वन और पर्वतीय मृदा पाई जाएगी। कछारी (ऐलूवयी) मृदा उत्तरी मैदानों और दक्षिण की नदियों के डेल्टाओं में पाई जाएगी, काली और लाल तथा पीली मृदा प्रायद्विपीय पठारों में तथा शुष्क मृदा भारतीय मरुस्थल में पाई जाएगी।

गतिविधि– मानचित्र पढ़ना और विश्लेषण करना

यह क्रियाकलाप विद्यार्थी अकेले कर सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को भारत के दो भिन्न मानचित्र उपलब्ध करा सकते हैं, जैसे भू-आकृतिक भागों के मानचित्र और प्रमुख मृदा प्रकारों के मानचित्र। विद्यार्थियों को उन्हें ध्यान से देखने और विश्लेषण करने के लिए कहा जा सकता है। शिक्षक फिर परिचर्चा कर सकते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की मृदाएँ क्यों पाई जाती हैं। इसके क्या सम्भावित कारण है? शिक्षक विद्यार्थियों को समकालीन भारत भाग– 1 और 2 में दिए गए अन्य मानचित्रों की तुलना करने और परस्पर संबद्ध करने के लिए कह सकते हैं (संकेत– जलवायु और फसलें; खनिज और उद्योग)।

(A) भारत – भूआकृतिक भाग

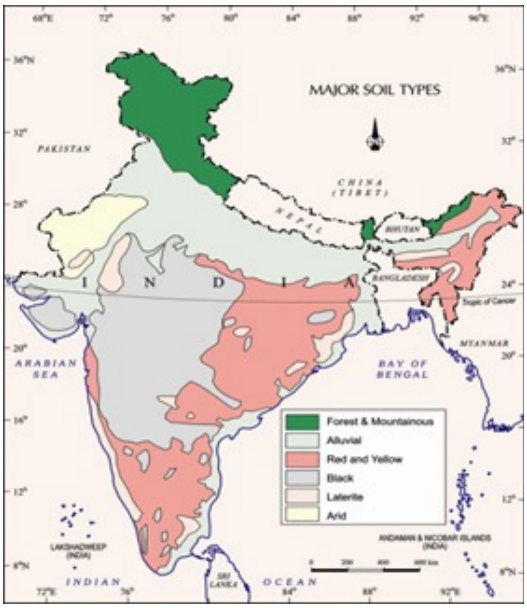

(B) भारत – मृदा के प्रमुख प्रकार

नोट– *दृष्टि-बाधित विद्यार्थियों के लिए मानचित्रों को समझने और तुलना करने के लिए टैक्टाइल (स्पर्शिक) मानचित्रों को उपयोग में लिया जा सकता है। यह ध्यान रखना होगा कि टैक्टाइल मानचित्रों में अत्यधिक जानकारी न हो (संकेत– कुछ संस्थाओं जैसे नेशनल ऐटलस और थीमैटिक मैपिंग ऑर्गेनाइजेशन ने दृष्टि-बाधित बच्चों के लिए मानचित्रावलियाँ (ऐटलस) बनाई हैं। ऐसे मानचित्र/मानचित्रावलियाँ उपलब्ध न होने पर उन्हें ऊन, धागों और अनाज के दानों आदि द्वारा बनाया जा सकता है।)*

आकलन– भूगोल के मानचित्र महत्वपूर्ण उपकरण हैं। दी गई गतिविधि से शिक्षक विद्यार्थी का मानचित्र पढ़ने और निष्कर्ष निकालने की योग्यता का आकलन कर सकते हैं। शिक्षक देख सकते हैं कि क्या वे दिए गए दोनों मानचित्रों में दी गई जानकारी में संबंध स्थापित करने में सक्षम हैं।

विभिन्न गतिविधियाँ जो ऊपर दी गई हैं, उन्हें विद्यार्थी कक्षा में समूह में या अकेले कर सकते हैं। एक शिक्षक अपनी कक्षा के लिए सदैव सर्वोत्तम पारखी होता/ती है अत: वे इन गतिविधियों को विद्यार्थियों के अनुरूप डिजाइन और रूपांतरित कर सकता/ती है। कक्षा में परिचर्चाएँ शिक्षक को यह जानने मे मदद करेंगी कि विषय पर किसी विद्यार्थी की क्या समझ बनी है। विद्यार्थियों की विचारों को संप्रेषित करने की क्षमता उनके तर्कों से परिलक्षित होगी। शिक्षक यह भी आकलित कर सकेंगे कि क्या विद्यार्थी अपने ज्ञान को अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन के साथ जोड़ पाने में सक्षम हैं।

सुझाई गई पठन सामग्री

1. समकालीन भारत, भाग-2 (2006), कक्षा X के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक, एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली
2. Daugherty Thomas B.(2001) Managing Our Natural Resources, Thomson Learning
3. भारत– संसाधन और क्षेत्रीय विकास (1998), कक्षा XII के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक, एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली
4. Morgan Sally (2008), Natural Resources, M. Evans And Company, UK
5. Rees, J. (1985), Natural Resources, Allocation, Economics and Policy, London, Routledge
6. संसाधन और विकास (2008), कक्षा VIII के लिए सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली
7. आर्थिक विकास की समझ (2007), कक्षा के लिए अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक, एन सी ई आर टी, नई दिल्ली
8. Zimmermann E. W , Peach W. N. , Constantine J. A. (1972), World Resources and Industries, Harper & Row

राजनीति विज्ञान

राजनीति विज्ञान शिक्षण

राजनीति विज्ञान में बहुत सी "अनिवार्यत: विवादित संकल्पनाएँ" हैं। जिनमें से अधिकांशत: जटिल और समकालीन होने के कारण विविदास्पद हैं। ये संकल्पनाएं अध्यापकों को सक्षम बनाने के लिए सम्मिलित की गई हैं, ताकि वे विवेकपूर्ण एवं स्वस्थ परिचर्चा में शिक्षार्थियों को शामिल कर सकें। पाठ्यपुस्तकें विभिन्न समकालीन मुद्दों पर सन्दर्भ या परिप्रेक्ष्य विकसित करने में मदद के लिए साधन मानी जाती हैं। शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे प्रत्येक विषय की जानकारी को मात्र स्मरण करने के बजाय अवधारणाओं को समझें और उनका अनुप्रयोग करें । उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा VI से VIII) पर अप्रैल 2006 से नागरिक शास्त्र के स्थान पर एक नया विषय सामाजिक और राजनीतिक जीवन प्रारम्भ किया गया। माध्यमिक स्तर (कक्षा IX एवं X) पर अप्रैल 2006 से नागरिक शास्त्र के स्थान पर राजनीतिक विज्ञान शुरू किया गया।

माध्यमिक स्तर पर विषय के नाम मे **नागरिक शास्त्र** के स्थान पर **राजनीति शास्त्र** परिवर्तन महत्वपूर्ण है। यह परिवर्तन केवल नाम का ही नहीं है वरन् विषय क्षेत्र के महत्व का भी है। जिस रूप में स्कूलों में लोकतांत्रिक नागरिकता की शिक्षा दी जाती है, उस दिशा में ये पाठ्यपुस्तकें प्रमुख बदलाव प्रस्तुत करती हैं। ये पुस्तकें माध्यमिक स्तर पर ही राजनीति विज्ञान विषय का परिचय प्रदान करती है। इनमें राजनीति विज्ञान के प्रमुख विषय क्षेत्रों जैसे- राजनीतिक सिद्धांत, भारत सरकार और राजनीति, तुलनात्मक राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय संबंध और लोक प्रशासन के पहलू शामिल हैं। इस प्रकार विषय का कार्यक्षेत्र काफी व्यापक और गहन हो गया है। इन पाठ्यपुस्तकों का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को अपने राजनीतिक जगत् का बोध कराने में मदद करना है। परन्तु राजनीति अलगाव में कार्यरत नही होती। अत: यह आवश्यक है कि हम उस वृहद् सामाजिक जगत का ध्यान रखें जिसमें राजनीति कार्य करती है। इसलिए लक्ष्य स्कूली विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना का विकास करना है।

कक्षा IX और X की राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों में केन्द्रीय विषय लोकतांत्रिक राजनीति है । ये पुस्तकें लोकतंत्र के झरोखों से समकालीन विश्व की राजनीति का परिचय देती हैं । ये पुस्तकें विश्व के विभिन्न भागों में लोकतांत्रिक और गैर-लोकतांत्रिक राजनीति की तुलना उपलब्ध कराती हैं। कक्षा IX की पाठ्यपुस्तक ''लोकतांत्रिक राजनीति-1'' कई उदाहरणों की सहायता से आधुनिक लोकतंत्र की व्यापक जानकारी देती है। इसके अध्याय लोकतांत्रिक राजनीति– सरकार की संस्थाओं, अधिकारों और दायित्वों जैसे विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हैं। कक्षा X की पाठ्यपुस्तक, ''लोकतांत्रिक राजनीति-2 प्रक्रमों पर केंद्रित है और यह वास्तविक जगत में लोकतंत्र की कार्य प्रणाली के उदाहरण उपलब्ध कराती है।

ये पुस्तकें हमारे संविधान की प्रस्तावना की भावना और दर्शन को समझाती हैं और उन्हें विस्तार देती हैं। संविधान देश का सर्वोच्च कानून है और कानून के नियम लोकतंत्र की आधारशिला हैं। कक्षा X के अध्ययन की समाप्ति पर शिक्षार्थी से इस बात की उम्मीद की जाती है कि वे हमारे देश के संवैधानिक मूल्यों के महत्व को समझ पाएँगे और भारत के संविधान की मूलभूत संरचना को भी समझेंगे । प्रयास विद्यार्थियों को मात्र यह बताना नहीं है कि भारत के संविधान में क्या लिखा है, अपितु यह बताना भी है कि वास्तव में क्या हो रहा है ।

माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का लक्ष्य शिक्षकों और शिक्षार्थियों को सिखाने, सीखने और आकलन प्रक्रम में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना है । ये पुस्तकें शिक्षकों और शिक्षार्थियों को विषय को पढ़ाते समय प्रासंगिक स्थानीय तत्वों को शामिल करने के भी पर्याप्त अवसर देती हैं।

राजनीति विज्ञान के अनेक विषय (topics) उच्चमाध्यमिक स्तर पर अधिक गहनता से शामिल किए गए हैं। अत: राजनीति विज्ञान में ज्ञान को व्यापक और गहन बनाने के लिए एन०सी०ई०आर०टी० की निम्नलिखित पुस्तकों की सहायता ली जा सकती है:

कक्षा XI की राजनीति विज्ञान की पुस्तक, भारत का संविधान: सिद्धांत और व्यवहार (अप्रैल 2006)

कक्षा XI की राजनीति विज्ञान की पुस्तक, राजनीति सिद्धांत (अप्रैल 2006)

कक्षा XII की राजनीति विज्ञान की पुस्तक, समकालीन विश्व राजनीति (अप्रैल 2007)

कक्षा XII की राजनीति विज्ञान की पुस्तक, स्वतंत्र भारत में राजनीति (अप्रैल 2007)

कक्षा XII की इतिहास की पुस्तक, भारतीय इतिहास के कुछ विषय भाग-3 (अप्रैल 2007)

कक्षा XII की सामाजिक विज्ञान की पुस्तक, भारतीय समाज (अप्रैल 2007)

कक्षा XII की सामाजिक विज्ञान की पुस्तक, भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास (अप्रैल 2007)

"लोकतांत्रिक और गैर-लोकतांत्रिक सरकारें: एक खोज-बीन" का संप्रेषण

संक्षिप्त परिचय

यह माड्यूल माध्यमिक स्तर के आरंभ में शिक्षार्थियों को लोकतंत्र और उससे संबंधित अवधारणाओं से परिचित कराने पर केंद्रित है। लोकतांत्रिक राष्ट्र के नागरिक होने के नाते, शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए यह आवश्यक है कि वे लोकतंत्र के व्यावहारिक और सैद्धांतिक पक्षों को जानें। उच्च प्राथमिक स्तर पर शिक्षार्थियों का परिचय भारत में लोकतांत्रिक सरकार और समाज के विभिन्न लक्षणों से कराया जाता है। जिन विद्यार्थियों ने अभी कक्षा IX में प्रवेश लिया है, वे लोकतंत्र शब्द से परिचित हैं। वे अकसर लोकतंत्र के बारे में अब्राहिम लिंकन का उदाहरण देते हैं– ''लोगों के लिए, लोगों द्वारा, लोगों की सरकार।''

उच्च प्राथमिक स्तर पर लोकतंत्र से संबंधित बहुत सी संकल्पनाएँ दी गई हैं। इनमें संविधान, गरिमा, भेदभाव, विविधता, चुनाव, समानता, स्वाधीनता, सरकार, न्याय, भागीदारी, प्रतिनिधित्व, उत्तरदायित्व, अधिकार और कानून के नियम शामिल हैं। इनमें से अधिकांश संकल्पनाएँ जटिल हैं। इन संकल्पनाओं को समझने में समय लगता है।

सभी शिक्षार्थियों के लिए उच्च प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर में स्वयं को बदलना मुश्किल होता है। उन्हें यह बताना महत्वपूर्ण होता है कि लगभग चार वर्ष बाद वे मतदान करने के अधिकारी होंगे। शिक्षार्थी, जो लगभग 14 वर्ष की आयु के हैं, अपनी पहचान और यहाँ तक कि राजनीतिक अभिवृत्ति बनाने की अवधि में एक निर्णायक परिस्थिति में होते हैं। अत: शिक्षक को चाहिए कि वे युवा नागरिकों को हमारे संवैधानिक मूल्यों को स्वीकार करें और उन आदर्शों का पालन करें, जिन्होंने हमारे स्वाधीनता संग्राम को प्रेरित किया।

शिक्षण-अधिगम उद्देश्य

- शिक्षार्थियों को सरकार के महत्व से परिचित कराना।
- उन्हें लोकतांत्रिक सरकार के प्रमुख लक्षण समझाना।
- उनमें लोकतांत्रिक और गैरलोकतांत्रिक सरकारों के बीच अंतर की समझ विकसित करना।

शिक्षकों के लिए टिप्पणी

एन०सी०ई०आर०टी० की राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक (लोकतांत्रिक राजनीति) का उपयोग करने वाले शिक्षकों के लिए-

इस माड्यूल की विषय-वस्तु राजनीति विज्ञान की उन पाठ्यपुस्तकों की पूरक है। अत: आपसे आग्रह है कि आप अपनाई गई पद्धति को जानने के लिए पाठ्यपुस्तक लोकतांत्रिक राजनीति-1 के निम्नलिखित भागों को अच्छी तरह देख लें। यह माड्यूल पाठ्य पुस्तक की विषय वस्तु का स्थान नहीं ले सकता। पाठ्यपुस्तक की विषय वस्तु इस माड्यूल में दोहराई नहीं गई है।

कक्षा IX लोकतांत्रिक राजनीति-1: एक चिट्ठी आपके नाम (पृष्ठ v-vi)

इस पुस्तक का उपयोग कैसे करें ? (पृष्ठ vii-ix)

अध्याय 1 समकालीन विश्व में लोकतंत्र

अध्याय 2 लोकतंत्र क्या है? लोकतंत्र क्यों ?

अध्याय 3 संविधान निर्माण

उन शिक्षकों के लिए जो एन०सी०ई०आर०टी० की पाठ्यपुस्तकें उपयोग में नहीं ले रहे हैं–

यह माड्यूल लोकतंत्र पर बात करता है जो माध्यमिक स्तर पर बहुत से राज्य बोर्डों के राजनीति विज्ञान/नागरिक शास्त्र पाठ्यक्रम का अनिवार्य विषय है। यह पूरक सूचनाएं उपलब्ध कराता है, जिसे गतिविधियों की रचना में उपयोग में लाया जा सकता है। अत: यह आपके कुछ काम आ सकती है, भले ही आप एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा प्रकाशित पुस्तकें उपयोग न कर रहे हों।

शिक्षक की आवश्यकताएँ

नए उत्पाद के प्रयोक्ता के पास कुछ ज्ञान और कौशल होना चाहिए ताकि उत्पाद के उपयोग को प्रभावी एवं दक्ष बनाया जा सके। अत: माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के उपयोग को उत्कृष्ट बनाने के लिए यह लाभप्रद होगा यदि आपको बीसवीं सदी के इतिहास, समकालीन विश्व राजनीति और भारत की राजनीति का ज्ञान है।

शिक्षण-अधिगम संसाधन

ग्लोब, एटलस मानचित्र (राजनीतिक) (विश्व, एशिया, भारत और राज्य)

दो दैनिक समाचार पत्र (अंग्रेजी और हिन्दी/क्षेत्रीय भाषा संस्करण)

दो समाचार पत्रिकाएँ (अंग्रेजी और हिन्दी/क्षेत्रीय भाषा संस्करण)

दृश्य-श्रव्य सामग्री (फिल्में, वृत्तचित्र, लघुफिल्म इत्यादि)

भारत का संविधान (संविधान के अंग्रेजी और हिन्दी संस्करण वेब लिंक http://indiacode.nic.in/coiweb/welcome.html से प्राप्त (डाउनलोड) किए जा सकते हैं।)

प्रमुख संकल्पनाएँ (शिक्षण बिंदु)

A. सरकार का महत्व

प्रतिदिन स्कूल आने-जाने के समय विद्यार्थी कई बातों पर ध्यान देते हैं। सरकार की भूमिका पर परिचर्चा शुरू करने के लिए विभिन्न सरकारी सेवाओं और संस्थाओं (स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, केन्द्रीय/प्रांतीय/स्थानीय सरकारों के कार्यालय) से संबंधित विद्यार्थियों के प्रेक्षणों का उपयोग किया जा सकता है।

परिचर्चा का प्रारंभ – सरकार के बारे में शिक्षार्थियों के पूर्वज्ञान को आँकने के लिये निम्न प्रकार से प्रश्न पूछ कर परिचर्चा का आरंभ किया जा सकता है।

'सरकार' से आप क्या समझते हैं?

हमें क्यों सरकार की आवश्यकता होती है?

आप अपने जीवन में सरकार द्वारा प्रदत्त कौन सी विशेष वस्तुओं और सेवाओं को उपयोग करते हैं?

आपके इलाके में कौन से सरकारी कार्यालय और सेवाएँ उपलब्ध हैं?

आप और आपका परिवार सरकार से किस प्रकार प्रभावित होता है?

सरकार के कार्य समाज को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

समाज सरकार पर किस प्रकार प्रभाव डालता है?

हम अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में सरकार की भूमिका को कई रूपों में देखते हैं। सरकार के व्यापक कार्य व्यक्ति के जीवन में जन्म से मृत्यु तक जुड़े रहते हैं। यह सरकारी संस्थाएं ही होती हैं जो जन्म प्रमाण पत्र, वाहन चलाने का लाइसेंस, पासपोर्ट, विवाह प्रमाणपत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र जैसे दस्तावेज़ जारी करती हैं। वर्तमान समय में वास्तव में यह कल्पना करना ही कठिन है कि कोई समाज बिना सरकार के भी हो सकता है। संभवत: वर्तमान विश्व में सोमालिया ही एक अकेला राष्ट्र है जो सरकार विहीन है। इस राष्ट्र की 1991 से प्रभावी रूप से कोई सरकार नहीं है और परिणाम स्वरूप यह अराजकता और हिंसा का स्थल बन गया है।

गतिविधि

विद्यार्थियों को भारत और विश्व के अन्य भागों की सरकार के कार्यों और पदाधिकारियों, अधिकारों के उल्लंघन और संरक्षण, भारत और विश्व के अन्य भागों के चुनावों के बारे में समाचार पत्र की कतरनें इकट्ठी करने के लिए कहा जा सकता है। वह इसका एक कोलाज (समुच्चित चित्र) तैयार कर सकते हैं और उसे कक्षा में प्रदर्शित कर सकते हैं।

B. सरकार के लोकतांत्रिक स्वरूप के प्रमुख लक्षण

- जनता के द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों के पास अंतिम रूप से निर्णय लेने की शक्ति होती है।
- जनता के प्रतिनिधियों का विधानमंडल (संसद और विधानसभाओं) में चयन स्वतंत्र, निष्पक्ष और नियमित चुनावों मे माध्यम से होता है। वे कानून बनाते है। एक लोकतांत्रिक सरकार शासित लोगों की सहमति पर आधारित होती है।
- राजनीतिक समानता सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (एक व्यक्ति, एकमत, एक मूल्य) से संकेतित होती है।
- विधि का शासन का सिद्धांत लोकतंत्र का केन्द्रबिंदु है। इसका अर्थ है कानून के समक्ष समानता। विधि का शासन व्यक्ति या व्यक्तियों के नियम (तानाशाही) से बेहतर माना जाता है।संविधान को किसी देश के बुनियादी नियम के रूप में जाना जाता है।
- अधिकार लोकतंत्र के निर्माण-स्तंभ (Building blocks) होते हैं। लोकतांत्रिक संविधान सरकार की शक्तियों को नियंत्रित करता है। यह नागरिकों के मूलभूत मानवाधिकारों का उल्लेख करते हुए उन्हें सुनिश्चित भी करता है। कुछ अधिकार अन्य अधिकारों को बल प्रदान करते हैं, और इस प्रकार लोकतंत्र को सशक्त बनाते हैं। वोट देने का अधिकार (18 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के लिए), सूचना का अधिकार (आर०टी०आई०), शिक्षा का अधिकार (आर०टी०ई०) कुछ प्रमुख अधिकार हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से लोकतंत्र का विस्तार हो रहा है। इस परिघटना के कई कारण हैं । लोकतंत्र सरकार का एक बेहतर स्वरूप है, क्योंकि यह अधिक उत्तरदायित्व वाली सरकार है; यह निर्णय लेने की गुणवत्ता में सुधार करती है; यह विशेष रूप

से विविधता पूर्ण समाजों मे विवादों का शांतिपूर्ण तरीके से समाधान करती है और नागरिकों की गरिमा बढ़ाती है।

C. सरकार के लोकतांत्रिक और गैर-लोकतांत्रिक स्वरूप

सरकार के विभिन्न स्वरूप क्या हैं ? मोटे तौर पर सरकार के दो स्वरूप हैं– लोकतांत्रिक और गैर-लोकतांत्रिक। गैर-लोकतांत्रिक स्वरूपों में राजतंत्र, तानाशाही और धर्मतंत्र शामिल हैं। किसी समाज में सरकार को दी गई महत्वपूर्ण भूमिका के कारण सरकार के स्वरूप का नागरिकों के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। आइए, लोकतांत्रिक स्वरूपों के बारे में पता लगाते हैं। चलिये अब विश्व के विभिन्न भागों में लोकतांत्रिक और गैर-लोकतांत्रिक स्वरूपों वाली सरकार का पता लगाते हैं।

मानचित्र गतिविधि

प्रारंभिक कार्य के रूप में, विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे विश्व के मानचित्र में निम्नलिखित 24 देशों और 8 सार्क (SAARC) सदस्य देशों को चिह्नित करें। यह गतिविधि कक्षा में की जा सकती है ताकि उसमें सभी विद्यार्थी भाग लें और सीखें।

विश्व मानचित्र (महाद्वीप)

स्रोत: http://www.freeworldmaps.net/continents/

अफ्रीका (5): घाना, नाइज़ीरिया, सोमालिया, दक्षिण अफ्रीका, जिम्बावे

अमेरिका (5): ब्राज़ील, चिली, कनाडा, मेक्सिको, यू०एस०ए०

एशिया (7): चीन, इंडोनेशिया, इराक, जापान, म्यांमार, फिलीपींस, सउदी अरब

यूरोप (7): फ्रांस, जर्मनी, इटली, पोलैण्ड, रूस, स्विट्ज़रलैंड, यू०के०

यह मानचित्र-गतिविधि विद्यार्थियों को इन राष्ट्रों और इनके पड़ोसियों के बारे में जानने में मदद करती है। वे भारत के संदर्भ में इन देशों की स्थितियाँ देखते हैं और इस प्रकार उनका दृष्टिकोण व्यापक बनता है।

एन०सी०ई०आर०टी० की कक्षा IX की पाठ्यपुस्तक 'लोकतांत्रिक राजनीति-1' के पहले दो अध्याय शिक्षार्थियों को विश्व भर में लोकतंत्र के खोजपरक भ्रमण पर ले जाने का प्रयास करते हैं। ये अध्याय विविध स्तरों पर न्याय के लिए हुए विभिन्न संघर्षो पर प्रकाश डालते हैं। वे विश्व के विभिन्न भागों में लोकतंत्रीकरण के लिए आंदोलनों और भेदभाव के विरुद्ध आंदोलनों पर केंद्रित है। भारत के इतिहास को विश्व के इतिहास से पृथक रखकर नहीं पढ़ा जा सकता। इसी प्रकार भारत की सरकार और राजनीति को तभी बेहतर तरीके से समझा जा सकता है, जब हम उन्हें समकालीन विश्व की राजनीति के संदर्भ में देखें। अत: जिस संदर्भ मे इन देशों का उल्लेख पाठ्यपुस्तकों में किया गया है उसके लिए कम से कम उन देशों की राजनीतिक पृष्ठभूमि का जानना उपयोगी होगा। यह भी उपयोगी होगा कि आप उनके वर्तमान घटनाक्रम के बारे में अपनी जानकारी ताजा करते रहें और उसकी तुलना पाठ्यपुस्तक में दी गई विषय-वस्तु से करें।

एन०सी०ई०आर०टी० की कक्षा IX की इतिहास की पाठ्यपुस्तक 'भारत और समकालीन विश्व-1' विभिन्न घटनाओं और प्रक्रियाओं जैसे (1) फ्रांसीसी क्रांति; (2) यूरोप में समाजवाद और रूसी क्रांति; तथा (3) नाज़ीवाद और हिटलर का उदय की चर्चा करती है। ये न्याय, स्वाधीनता, समानता और भ्रातृत्व के लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए मानव संघर्षो के बारे में अधिक गहराई से समझने के लिए आवश्यक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि उपलब्ध कराती हैं।

हम संकल्पनाओं के बारे में निगमनात्मक (deductive) और/या आगमनात्मक (Inductive) पद्धतियों द्वारा सीखते हैं। कक्षा IX और X की पाठ्यपुस्तकें मुख्य रूप से आगमनात्मक पद्धति का अनुसरण करती है। अत: बहुत से अध्याय विशिष्ट से शुरू होते हैं और अमूर्त/ सामान्य की ओर बढ़ते हैं। केस अध्ययन विधि का उपयोग करते हुए अध्याय-1 विश्व के दो भिन्न भागों से ली गई लोकतंत्र की दो कथाओं से प्रारम्भ होता है। पहली कथा चिली (दक्षिण अमेरिका) और दूसरा पोलैंड (पूर्वी यूरोप) से है। दोनों ही 1970 और 1980 के दशकों की वास्तविक कथाएं हैं। ये वास्तविक प्रसंग हैं परंतु अपरिचित संदर्भों से। भारत के विद्यार्थियों के लिए दोनों ही दूरी और समय की दृष्टि से दूर हैं। इसलिए हमें इन दो कथाओं से शिक्षार्थियों को धीरे-धीरे अवगत कराना होगा। चिली जनसंख्या के हिसाब से दिल्ली के समतुल्य है (लगभग 180 लाख) और पोलैण्ड की जनसंख्या (लगभग 380 लाख) दिल्ली की जनसंख्या से लगभग दो गुनी है। दिल्ली की अपेक्षा, जिस राज्य में इस माड्यूल को उपयोग में लिया जा रहा है, उस राज्य की जनसंख्या से भी इसकी तुलना की जा सकती है।

इन दो अध्ययनों के माध्यम से विद्यार्थी वास्तविक दुनिया में सरकार के लोकतांत्रिक और गैर-लोकतांत्रिक स्वरूपों की कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। बाद में विश्व के विभिन्न भागों की स्थितियों की तुलना भारत में लोकतंत्र की कार्य प्रणाली से कर सकते हैं। सरकार के विभिन्न स्वरूपों के उदाहरण स्वरूप आस-पास के देशों जैसे-अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका (सभी सार्क सदस्य), चीन और म्यांमार के उदाहरण भी दिए जा सकते हैं।

समूह परियोजना

यह समूह परियोजना जाँच पद्धति (inquiry approach) का अनुसरण कर सकती है। इस परियोजना पर कार्य करने के लिए विद्यार्थियों के चार समूह (अफ्रीका, अमेरिका, एशिया और यूरोप) बनाए जा सकते हैं। प्रत्येक समूह में 10 विद्यार्थी रखे जा सकते हैं।

जाँच में मार्गदर्शन के लिए दो प्रमुख प्रश्न हैं– सरकार के अन्य स्वरूपों की तुलना में लोकतंत्र क्यों बेहतर माना जाता है ? अच्छे लोकतंत्र के कौन से गुण होते हैं ? इन मार्गदर्शक प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए समूहों को दक्षिण अफ्रीका, चिली, म्यांमार और पोलैण्ड के अनुभवों की जाँच करने और उनकी प्रोफाइल (पार्श्वचित्र) तैयार करने के लिए कहा जा सकता है। प्रत्येक समूह को इन राष्ट्रों में से लॉटरी के आधार पर एक राष्ट्र जाँच हेतु दिया जा सकता है। बेहतर होगा कि यह परियोजना ग्रीष्मावकाश शुरू होने से पहले दे दी जाए। अत: प्रत्येक समूह को अपनी परियोजना पूरी करने के लिए एक माह से अधिक

समय मिलेगा। प्रत्येक समूह इस विषय पर पोस्टर तैयार कर सकते हैं कि इनमें से प्रत्येक राष्ट्र के नागरिकों का जीवन लोकतंत्र की उपस्थिति या अनुपस्थिति से किस प्रकार प्रभावित हुआ। वे तुलनात्मक ढंग से लोकतंत्र की संकल्पना पर अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। लोकतंत्र के प्रमुख लक्षणों पर परिचर्चा करते समय इन चार उदाहरणों का संदर्भ नियमित रूप से दिया जा सकता है। इन परियोजनाओं से विद्यार्थी जो कुछ सीखते हैं, वह उन्हें भारत में लोकतांत्रिक राजनीति को समझने में मदद प्रदान करेगा।

प्रस्तावित गतिविधियाँ (व्यक्तिगत/सामूहिक)

विद्यार्थी द्वारा विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का शिक्षक आकलन (teacher assessment), स्व-आकलन (self assessment) और साथी द्वारा आकलन (peer assessment) संबंधी विभिन्न प्रकार की गतिविधियों द्वारा नियमित रूप से उनकी प्रगति का मापन किया जा सकता है।

परियोजना-1 भारतीय राजनीतिक तंत्र की जटिलताओं को समझने के लिए अन्य राष्ट्रों की राजनीति को जानना उपयोगी होगा। विभिन्न राष्ट्रों के नेता भारत आते हैं और भारतीय नेता भी इन देशों में जाते हैं। ऐसे समय में उन्हें मीडिया में व्यापक रूप से दिखाया जाता है। विद्यार्थी मानचित्र गतिविधि में पहले बताए गए राष्ट्रों की सरकारों और राजनीति संबंधी एक संक्षिप्त प्रोफाइल (लगभग 500 शब्द) तैयार कर सकते हैं। वे पत्र-पत्रिकाओं से इन राष्ट्रों के बारे में जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं और इनकी चर्चा कक्षा में कर सकते हैं।

परियोजना-2 इस पाठ्यपुस्तक में विश्व के विभिन्न भागों में निम्नलिखित प्रमुख व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है। इनमें से कुछ व्यक्तियों का उल्लेख अन्य विषयों की पुस्तकों में भी मिलता हैं। इन व्यक्तियों के जीवन और कार्यकाल के बारे में जानना उपयोगी होगा। इनमें से अधिकांश को मात्र इतिहास की पुस्तकों तक सीमित नहीं रखा जा सकता, क्योंकि उनके विचारों और कार्यों ने वर्तमान विश्व के निर्माण को काफी सीमा तक प्रभावित किया है। विद्यार्थियों से इन व्यक्तियों के संक्षिप्त प्रोफाइल और पोस्टर बनाने तथा उन्हें कक्षा में प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है।

लोकतंत्र और अधिकारों के लिए विभिन्न नेताओं के संघर्ष विस्मयकारी रूप से प्रेरणादायक हैं। विद्यार्थी अब्राहम लिंकन (यू०एस०ए०), ऑन्ग सैन सू क्यी (म्यांमार), लेक वालेशा (पोलैण्ड), मिशेल वैशेले (चिली) और नेल्सन मंडेला (दक्षिण अफ्रीका) जैसे नेताओं के योगदान पर पोस्टर तैयार कर सकते हैं। इनमें से कुछ को नोबल शांति पुरस्कार भी मिल चुका हैं।

समकालीन विश्व ने जनरल ऑगस्तो पिनोशे (चिली), फर्डीनंद मार्कोस (फिलीपीन्स), सद्दाम हुसैन (ईराक) और जनरल सानी अबाका (नाइजीरिया) जैसे निरंकुश नेताओं के शासन को भी देखा है। विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे इन देशों में इन तानाशाहों के समय में लोगों को हुए कष्टों के बारे में पता लगाएँ।

परियोजना-3 इस पाठ्यपुस्तक में निम्नलिखित घटनाओं और संस्थाओं का उल्लेख है। इनके सम्पूर्ण विश्व में सशक्त प्रभाव के कारण इनके बारे में जानना उपयोगी है। अत: विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे इन घटनाओं और संस्थाओं का संक्षिप्त प्रोफाइल और पोस्टर तैयार करें तथा कक्षा में इनका प्रस्तुति दें।

घटनाएँ

अमरीकी क्रांति और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के संविधान का निर्माण, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय संविधान का निर्माण, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन, पोलैण्ड में सॉलिडेरिटी आंदोलन, सोवियत संघ का विघटन, दक्षिण अफ्रीका का रंगभेद विरोधी संघर्ष और प्रजातांत्रिक संविधान का निर्माण, नेपाल में प्रजातंत्र आंदोलन और संविधान निर्माण, 2001 से अफगानिस्तान और ईराक में युद्ध।

संस्थाएँ

संयुक्त राष्ट्र (UN), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोश (आई०एम०एफ०), विश्व बैंक

परियोजना-4 सरकारें समाज के संवेदनशील (Vulnerable) वर्गो के लाभ के लिए कानून बनाती हैं। संसद द्वारा बनाया गया इस प्रकार का एक कानून नि:शक्तता जन (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 है। इस नियम में संशोधन किया जा रहा है। पता लगाएँ कि आपके क्षेत्र (विद्यालय/आस-पड़ोस) में कितने प्रभावपूर्ण तरीके से इसका क्रियान्वयन हो रहा है।

दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग

1. फिल्म *Beyond Rangoon* (1995) USA.

   यह फिल्म म्यांमार (बर्मा) में सैनिक शासन के विरुद्ध खड़े हो रहे लोकतंत्र के पक्ष मे 8888 (8 अगस्त 1988) की पृष्ठभूमि में बनाई गई थी। इसे आर (R) की रेटिंग दी गई क्योंकि यह हिंसक राजनीतिक दमन को प्रदर्शित करती थी। (अवधि 102 मिनट)

   यह फिल्म निम्नलिखित वेब लिंक से प्राप्त (डाउनलोड) की जा सकती है–

   http://www.youtube.com/watch?v=z2tWpplmk

   फिल्म दिखाने के तुंरत बाद विद्यार्थियों को प्रश्न 'मैंने फिल्म से क्या सीखा?' के उत्तर के रूप में एक लिखित कार्य (assignment) देने के लिए कहा जा सकता है। इस प्रकार का कार्य देने से शिक्षार्थियों को अपने आप को परिलक्षित (reflect) और व्यक्त (express) करने के अवसर प्राप्त होते हैं। वे बृहत्तर विश्व के साथ इस विषय वस्तु को जोड़ सकते हैं। इसके माध्यम से विद्यार्थियों के लेखन कौशलों का आकलन किया जा सकता है।

2. वृत्त-चित्र (Documentry): *Aung San Suu Kri– The Choice* (2012).

   यह बी०बी०सी० का वृत्तचित्र है। (समयावधि– 59 मिनट)

   Web link: http://www.bbc.co.uk/programmes/b0lnzwfw(or)

   Web link: http://www.youtube.com/watch?v=1_IjNKT_T50

3. लघु फिल्म– *suffragette Emily Davison Killed – 100th Anniversary* (समयावधि – 7 मिनट)

   महिलाओं के लिए मतदान का अधिकार प्राप्त करने के लिए महिला मताधिकार आंदोलन (women's suffrage movement) ने प्रमुख भूमिका निभाई। ब्रिटेन में 'वोट्स फॉर विमेन' अभियान के दौरान 4 जून 1913 को एमिली डेविसन ने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। उस दिन क्या हुआ यह निम्नलिखित वेबलिंक पर देखा जा सकता है– http://www.youtube.com/watch?u=-G4fJ9I_wQg। विश्व के अलग-अलग भागों में लोकतांत्रिक आंदोलनों में विभिन्न व्यक्तियों और घटनाओं के बारे में बहुत सी फिल्में, वृत्त-चित्र और वीडियो आनॅलाइन उपलब्ध हैं। ये सब विद्यार्थियों को दिखाए जा सकते है, परन्तु यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि विद्यालय में आवश्यक संसाधन उपलब्ध हों।

समाचार पत्रों का उपयोग

पाठ्यपुस्तकों का सामान्यत: हर वर्ष अद्यतनीकरण (update) नहीं होता। परन्तु जब विषयवस्तु वर्तमान इतिहास के मामलों से संबंधित हो तो उसका अद्यतन किया जाना चाहिए। राजनीति एक गत्यात्मक परिघटना होने के कारण निरंतर प्रवाह की

अवस्था में रहती है। उदाहरण के लिए पिछले दशक में म्यांमार, नेपाल और पाकिस्तान में परिस्थिति काफी परिवर्तित हुई है। पाठ्पुस्तकों में दिए राष्ट्रों में हाल ही में हुए परिवर्तनों के बारे में विद्यार्थियों को ताज़ा जानकारी देने के लिए समाचारपत्रों और पत्रिकाओं का उपयोग किया जा सकता है। ये अतिरिक्त विषय-सामग्री भी उपलब्ध कराती हैं। एन०सी०एफ०-2005 के प्रथम सिद्धांत, 'ज्ञान को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ना' के संदर्भ में मीडिया का संसाधन के रूप में उपयोग भी महत्वपूर्ण है।

उदाहरण के लिए, निम्नलिखित लेख म्यांमार में लोकतंत्र के लिए आंदोलन का एक संक्षिप्त परिचय देता है। म्यांमार में विद्यार्थियों का सैनिक शासन के विरुद्ध खड़ा होना 8 अगस्त, 1988 (8.8.88) से प्रारम्भ हुआ। यह लेख इस आंदोलन के 25वीं जयंती पर प्रकाशित हुआ। सभी विद्यार्थियों से ऐसे किसी एक लेख को पढ़ने के लिए कहा जा सकता है। उन्हें विषय-वस्तु पर विमर्श करने और अपने विचारों पर कक्षा में चर्चा करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जा सकता है।

म्यांमार के लिए चार-आठ नवीन मार्ग

(A New Route Four Eight for Mayanmar)

नेह्गींपाओ किप्जेन, 8 अगस्त 2013, हिन्दू

(Nehginpao Kipgen, 8 August, 2013 The Hindu)

म्यांमार के ऐतिहासिक 8888 आन्दोलन की 25 वीं सालगिरह यांगून में 6 से 8 अगस्त तक मनाई गई। यह घटना अब 88 की पीढ़ी के नाम से जानी जाने वाले छात्रों के समूह के नेतृत्वकर्ताओं द्वारा आयोजित की गई और जिसके लिए आम जनता से चंदा लिया गया।

यह कार्यक्रम स्मरणोत्सव के साथ-साथ एक उत्सव भी है। यह जनरल ने विन के शासन के विरुद्ध 1988 के विद्यार्थियों के नेतृत्व किए गए विद्रोह में मारे गए नायकों का स्मरण है। यह उत्सव है, क्योकिं ऐसा पहली बार हुआ कि सरकार ने ऐसा स्मरणोत्सव मनाने की अनुमति दी, जो देश में क्रमिक लोकतांत्रिक सुधारों का साक्षी है।

इससे पहले के वर्षो में म्यांमार में यह कार्यक्रम आयोजित करना असम्भव था। मात्र '88' बोलना आपको सलाखों के पीछे ले जा सकता था। यह केवल निर्वासित या प्रवासी म्यांमारियों द्वारा देश के बाहर मनाया जा सकता था।

थीम (विषयवस्तु)

तीन दिन के कार्यक्रम ने देश के सम्भावित भावी नेताओं को देखा जिनमें 88 पीढ़ी के नेता भी शामिल थे, जो इकट्ठे हुए और उन्होंने राजनीतिक रणनीतियों पर चर्चा की। इसकी विषयवस्तु शांति और राष्ट्रीय पुनर्मिलन है। आयोजकों ने परिचर्चा मे भाग लेने के लिए विभिन्न जीवनशैली के लोगों केा बुलाया, जिनमें जातीय अल्पसंख्यक और वे लोग थे जिन्होंने 1988 के विद्रोह में भाग नहीं लिया।

यह चार आठ (8888) आंदोलन के ऐतिहासिक महत्व के बारे में, यह कैसे शुरू हुआ इस बारे में और उस विनाशकारी दिन वास्तव में क्या हुआ, के बारे में युवा पीढ़ी को शिक्षित करने का अवसर है।

ने विन द्वारा कुछ मूल्यवर्ग की मुद्रा को अचानक बंद करने, जिसने लोगों की बचत को नष्ट कर दिया, के विरुद्ध देश भर में हुए विद्यार्थियों के आंदोलनों के कुछ माह बाद, 8 अगस्त, 1988 की सुबह आंदोलनकारी सड़को पर

उतर आए और रंगून में सिटी सेंटर तक पैदल चले। प्रदर्शनकारियों और सैनिकों का आमना-सामना हुआ, फिर झड़पें हुई जो कुछ दिनों तक चलती रहीं। प्रदर्शनो को सैनिक शासकों ने बुरी तरह कुचल दिया।

मरने वालों की सही संख्या ज्ञात नहीं, परन्तु एक अनुमान के अनुसार लगभग 3000 लोग मारे गए, जिनमें से अधिकांश छात्र थे। बहुत सी अन्य मांगों के साथ, आंदोलनकारी एक-दलीय शासन के स्थान पर बहु-दलीय शासन की मांग कर रहे थे। लोग लोकतांत्रिक सरकार के साथ एक नई शुरुआत करना चाहते थे।

म्यांमार की आज की अधिकांश राजनीति 8888 के विद्रोह से प्रारम्भ हुई। इस विद्रोह के नेता जनरल ने विन को त्यागपत्र देना पड़ा, जिसने 1962 में शासन परिवर्तन कर सत्ता पर कब्जा किया था और उसकी बर्मा सोशलिस्ट प्रोग्राम पार्टी का अंत हुआ जिसमें पूर्व-सैनिक अधिकारी थे और जिसके माध्यम से उसने एक-दलीय शासन को स्थापित किया था। उसके त्यागपत्र से लोकतांत्रिक सुधारों की आशा तो नहीं बंधी, परन्तु सितम्बर 1988 मे एक और सैनिक शासन परिवर्तन हुआ। इस बार सरकार स्टेट लॉ एण्ड आर्डर रेस्टोरेशन काउंसिल (राज्य कानून और व्यवस्था पुर्नस्थापन परिषद) कहलाई । वर्ष 1989 में देश का नाम बर्मा से म्यांमार और राजधानी रंगून का नाम यांगोन हो गया।

अगस्त के विद्रोह के साथ ही आंग सान सू क्यी का राजनीति में प्रवेश हुआ। उस समय अपनी बीमार माँ की देख-भाल करने के लिए इंगलैंड से म्यांमार आने पर वे आंदोलनों की ओर आकर्षित हुईं और जनरल आंग सान (जिसने ब्रिटिश शासन से बर्मा को स्वतंत्र कराने के लिए लड़ाई लड़ी) की पुत्री के रूप में उन्हें तुरंत ही नेता के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

जब आंदोलन को दबा दिया गया, तो हजारों बर्मा निवासी आस-पड़ोस के देशों में भाग गए। कुछ भाग्यशाली थे जो यूरोप और उत्तरी अमेरिका पहुँच पाए। परन्तु अधिकांश ने अपना जीवन भारत-बर्मा और थाई-बर्मा सीमाओं के निकट जंगलों में या शरणार्थी शिविरों में बिताया। बहुत से युवाओं (अधिकांश छात्रों ने) या तो नए सैन्य समूह बना लिए या पहले से स्थापित सैन्य समूहों (जैसे कैरेन नेशनल लिबरेशन आर्मी, काचिन इंडिपेंडेंट आर्मी और शान स्टेट आर्मी) से जुड़ गए।

8888 आंदोलन 1990 के चुनावों में परिणत हुआ। यह तीन दशकों में होने वाला पहला स्वतंत्र चुनाव था, जिसे आंग सान सू क्यी के नेतृत्व में नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी (एन०एल०डी०) ने जीता, परन्तु परिणाम को मान्यता प्राप्त नहीं हुई।

1989 का वर्ष, लगभग दो दशकों का प्रारम्भ था जिसमें सू क्यी को नजरबंद किया गया, कुछ समय के लिए छोड़ा गया और फिर घर पर नजरबंद कर लिया गया।

भावी रणनीति

यदि वर्तमान लोकतंत्रीकरण प्रक्रिया पलटती नहीं है, तो म्यांमार को स्थायीत्व प्राप्त करने के लिए यदि कुछ दशक नहीं तो कई वर्ष लग जाएँगे।

इसीलिए यह महत्वपूर्ण है कि 8888 की सालगिरह को एक उत्तरदायी, लोकतांत्रिक समाज बनाने की दिशा में लोगों को गतिशील करने के लिए युवा पीढ़ी द्वारा उपयोग में लाया जाए। प्रजातीय समुदायों के मध्य संबंधो को सुधारने के लिए शांति स्थापना को सबसे निचले स्तर से शुरू करना चाहिए।

म्यांमार मे 2014 में होने वाली जनसंख्या गणना और 2015 में आम चुनाव को ध्यान में रखते हुए, 88 पीढ़ी के छात्र नेताओं के लिए यह बहुत आवश्यक है कि जातीय बर्मावासियों और उस समय के सीमावर्ती लोगों के बीच लड़खड़ाते संबंधों को दृढ़ बनाया जाए और सुधारा जाए।

यह कार्यक्रम सुदृढ़ नागरिक समाज संगठनों के निमार्ण की शुरुआत का संकेत हो सकता है जो लोकतांत्रिक दृढ़ीकरण के लिए आवश्यक बिंदु है। 88 पीढ़ी के नेताओं को ऐसी गतिविधियों को प्रोत्साहित करने में लग जाना चाहिए जो सभी नागरिकों की समानता और बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक संबंधों को सुदृढ़ करने मे प्रयासरत हों।

देर-सवेर, सरकार को भी इस दिन के महत्व का अनुभव होगा।

(नेघीपाओ किप्जेन, अमेरिका में कुकी इंटरनेशनल फोरम के महासचिव हैं)

स्रोत:http://www.thehindu.com/opinion/op-ed/a-new-route-four-eight-for-myanmar/article5000201.ece?ref=relatedNews

समेकित आकलन

इस विषय की समझ के स्तर को निम्नलिखित दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों की मदद से आँका जा सकता है–

- लोकतंत्र को सरकार के अन्य स्वरूपों से बेहतर माना जाता है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दें।
- प्रजातांत्रिक सरकार की अनुपस्थिति में क्या होता है? उदाहरण दीजिए।
- उदाहरण देकर लोकतंत्र के प्रमुख लक्षणों को स्पष्ट कीजिए।
- 'भारत में लोकतांत्रिक स्वरूप की सरकार है। व्याख्या कीजिये।'

प्रस्तावित पठन सामग्री

1. एन०सी०ई०आर०टी०, कक्षा XI, राजनीति विज्ञान, भारत का संविधान- सिद्धांत और व्यवहार
2. एन०सी०ई०आर०टी०, कक्षा XI, राजनीति विज्ञान, राजनीतिक सिद्धांत (अप्रैल 2006)
3. एन०सी०ई०आर०टी०, कक्षा XII, राजनीति विज्ञान, समकालीन विश्व राजनीति (अप्रैल 2007)
4. एन०सी०ई०आर०टी०, कक्षा XII, राजनीति विज्ञान, स्वतंत्र भारत में राजनीति (अप्रैल 2007)
5. एन०सी०ई०आर०टी०, कक्षा XII, सामाजशास्त्र, भारतीय समाज (अप्रैल 2007)
6. एन०सी०ई०आर०टी०, कक्षा XII, सामाजशास्त्र, भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास
7. (इन पुस्तकों को यहां से डाउनलोड किया जा सकता है- http://ncert.nic.in/NCERTS/textbook/textbook.htm)

“लोकतंत्र को चुनौतियाँ” का संप्रेषण

संक्षिप्त परिचय

लोकतंत्र हमारी सामाजिक-राजनीतिक बातचीत में अक्सर दोहराया जाने वाला शब्द है। सभी प्रकार के मुद्दे और तर्क लोकतंत्र को एक कसौटी के रूप में संदर्भित करते हैं। यह केवल हमारे अपने देश तक सीमित नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चाएँ, राजनयिक बातचीत और गतिविधियों में अक्सर लोकतंत्र, लोकतांत्रिक, अलोकतांत्रिक, इत्यादि शब्दों का उल्लेख होता हैं। इसके अतिरिक्त, लोकतांत्रिक देश का नागरिक होने के नाते, व्यक्ति को अपने कर्त्तव्यों के साथ-साथ अपने अधिकारों के प्रति भी जागरूक होना चाहिए। राज्यव्यवस्था के लोकतांत्रिक कार्यों के लिए भी यह आवश्यक है कि वह दृढ़ता से आगे बढ़ें और समय के साथ उनमें सुधार हो। उपर्युक्त सभी कारणों से हमारे शिक्षकों और विद्यार्थियों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में लोकतंत्र के सिद्धांत और अभ्यास के बारे में पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति को लोकतांत्रिक तानाशाही लक्षणों में विभेद करने में सक्षम हो। आज विश्व में लोकतांत्रिक और तानाशाही शासन तंत्र साथ-साथ चल रहे हैं। अत: इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन की व्यावहारिक प्रासंगिकता भी है। यह अभ्यास लोकतंत्र के केन्द्रीय लक्षणों को भी स्पष्ट करेगा। लोकतंत्र की चुनौतियों के बारे में सही प्रकार से सीखना इस अभ्यास का एक अभिन्न (inalienable) भाग है। भीतरी और बाहरी चुनौतियाँ विभिन्न रूपों में विभिन्न देशों में चुनौतियाँ, आबादी के विभिन्न वर्गों के सामने खड़ी समस्याएँ, विशेष रूप से महिलाएँ, कमजोर वर्ग,अल्पसंख्यक और हाशिये का समूह, इन सबको समान ढंग से और अलग ढंग से किस प्रकार लोकतंत्र अर्थपूर्ण लगता है- यह सब उचित परिप्रेक्ष्य में समझा जाना चाहिए। तभी लोकतंत्र की चुनौतियों पर सार्थक समझ बन सकती है।

शिक्षण-अधिगम उद्देश्य

‘लोकतंत्र की चुनौतियों’ का संप्रेषण करते समय शिक्षकों को निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए:

- लोकतंत्र और तानाशाही में भेद कैसे करें।
- हमारे और अन्य राष्ट्रों में लोकतंत्र को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- व्यवहार में लोकतंत्र किस प्रकार बेहतर और प्रभावी हो सकता है।

प्रमुख संकल्पनाएँ

A. लोकतांत्रिक और तानाशाही

सामान्य रूप से लोकतंत्र सरकार के एक ऐसे तंत्र को दर्शाता है जिसमें लोगों द्वारा चुने गए प्रतिनिधि उनकी तरफ से काम करते हैं। ऐसे प्रतिनिधि एक अवधि के लिए चुने जाते हैं और इस अवधि के समाप्त होने पर उन्हें बने रहने के लिए मतदाताओं की पुन: स्वीकृति लेनी पड़ती है। यह तंत्र मूलरूप से राजनीतिक कार्यों अर्थात् राज्य के मामले और जुड़ी हुई गतिविधियों से संबंधित होता है। परन्तु, इसी प्रकार का तंत्र विभिन्न गैर-राजनीतिक गतिविधियों और विश्वभर में लागू किया जाता है। उदाहरण के लिए समाज सेवा संगठन, शैक्षिक शिविर, राहत कार्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि।

गतिविधि- एक कृत्रिम (Mock) सरकार का गठन

शिक्षक कक्षा में एक कृत्रिम सरकार का गठन कर सकते हैं, जिसमें बच्चों के लिए, बच्चों द्वारा और बच्चों की सरकार हो। शिक्षक इस प्रकार की कक्षा- सरकार के स्वरूप, विषय और कार्यों को तय करने के लिए स्वयं विद्यार्थियों को अनुमति दे सकते हैं। सत्ताधारी दल की भूमिका निर्वाह के लिए 15 विद्यार्थियों के एक समूह को, और विरोधी दल की भूमिका के लिए 10 विद्यार्थियों के समूह का चयन किया जा सकता है। शेष कक्षा प्रेक्षकों के रूप में कार्य कर सकती है और अपनी टिप्पणियाँ दे सकती है। कृत्रिम सरकार चुनाव की प्रक्रिया शुरू करके आगे बढ़ती है, जिसे एक नाटक का रूप दिया जा सकता है। सत्ताधारी दल के कुछ विद्यार्थी स्कूल में विभिन्न कार्यों के प्रभावी मंत्रियों की भूमिका निभा सकते हैं, जबकि विरोधी अनुपयुक्त/गलत कार्रवाइयों की आलोचना कर सकते हैं और सही तरीके सुझा सकते हैं। प्रेक्षक सत्ताधारी दल और विरोधी दल के कार्यों पर रचनात्मक तर्क दे सकते हैं। शिक्षक की भूमिका संपूर्ण संप्रेषण (transaction) में एक पर्यवेक्षक की होगी। नाटक की समाप्ति पर वह गतिविधियों का विश्लेषण करेंगे, जिससे वे राजनीतिक लोकतंत्र में सरकार के लोकतांत्रिक तरीकों की झलकियाँ देंगे, यद्यपि यह वास्तविक रूप में उससे कहीं अधिक होता है जितना कि जिसे कक्षा में नाटक के रूप में दिखाया जा सकता है।

जिन मापदण्डों द्वारा प्रजातांत्रिक सरकार की पहचान होती है उसमें एक प्रतिनिधि सभा होती है जो मतदाताओं की इच्छाओं को उपयुक्त कानूनों का रूप देती है, एक कार्यकारिणी जो सुव्यवस्थित रूप से कानूनों का कार्यान्वयन करती है उसमें यह सब शामिल है- एक स्वतंत्र न्यायपालिका यह देखने के लिए कि कानून लागू होते हैं और किसी भी प्रकार के विवादों का निपटारा करते हैं; सभी नागरिकों को स्वतंत्र रूप से बोलने का अधिकार; निष्पक्ष और निश्चित अवधि के बाद चुनाव; सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, आर्थिक या राजनीतिक उद्देश्यों के लिए लोगों को संघ बनाने का अधिकार; और बिना भेदभाव के, समाज के सभी वर्गों को सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन करने के लियें।

दूसरी ओर, जहाँ लोगों का सरकार पर या नीति निर्माण पर कोई अधिकार नहीं होता, ऐसी सरकार तानाशाह कहलाती है। असामान्य रूप से ऐसी सरकारें एक दलीय शासन से पहचानी जाती हैं। सैनिक तानाशाही या धर्मतांत्रिक व्यवस्थाएँ इसके कुछ अन्य महत्वपूर्ण रूप हैं। यहाँ देश के नागरिकों को सरकार चुनने का कोई अवसर नहीं मिलता। कुछ देशों में चुनाव होते हैं, परन्तु वे सत्तादल के उम्मीदवारों को मान्यता देने की औपचारिकता भर होते हैं। ऐसे देशों में किसी भी संगठित राजनीतिक विरोधी दल के गठन की अनुमति नहीं होती। जब सत्तावादी शासन किसी विचारधारा की वकालत करता है जिसे समाज अपने जीवन के सभी पहलुओं में अपनाने के लिये बाध्य होता है ऐसी यह शासन पद्धति सर्वसत्तावादी कहलाती है। इसका अर्थ है देश के नागरिकों के जीवन पर पूर्ण नियंत्रण। अभी हाल ही के इतिहास में नाजी शासन में जर्मनी और स्टालिन काल में सोवियत संघ सर्वसत्तावादी शासन के उदाहरण थे।

B. लोकतंत्र को चुनौती कब?

सामान्य तौर पर यह प्रतीत होता है कि इस प्रकार का तंत्र सबके द्वारा स्वीकार्य और अपनाया जाना चाहिए। वास्तव में 'लोकतांत्रिक' शब्द लम्बे समय से एक सामान्य विशेषण बन गया है। आज किसी को 'अलोकतांत्रिक' कहना उस पर भारी दोष मढ़ना है, जिसका प्राय: तुरंत विरोध होता है। इस प्रकार लोकतंत्र एक राजनीतिक और सामाजिक संस्था के तंत्र के रूप में इतने व्यापक रूप से लोकप्रिय है कि इसे किसी भी प्रकार 'चुनौती' एक बेतुका विचार लगेगी। यदि कोई चीज़ मानवजाति में इतनी मान्य, इतनी आकर्षक और इतनी व्याप्त है तो किन स्थितियों में इसे चुनौती कहा जा सकता है।

प्रश्न महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक आदर्श के रूप में लोकतंत्र की व्याख्या विभिन्न प्रकार से की गई है। यद्यपि लोकतंत्र को राजनीतिक संगठन के लिए एक पद्धति के रूप में स्वीकार कर लिया गया है, परन्तु इसके अर्थ और ऊपर दिए गए मापदण्डों के लक्षणों पर कोई सर्वमान्य सहमति नहीं है। स्वाधीनता, समानता और न्याय के सिद्धांत की विषय-वस्तु पर बहसें कभी समाप्त होने वाली नहीं हैं। एक दृष्टिकोण से स्वाधीनता का अंतिम लक्ष्य 'वर्ग हीन समाज' के रूप में है, दूसरा ठीक इसके

विपरीत स्वाधीनता का शत्रु है। दोनों दृष्टिकोणों के गम्भीर अनुयायी हैं, फिर भी उनकी संख्या में अंतर है। इसी प्रकार जाति के आधार पर नौकरियों में आरक्षण और तकनीकी तथा उच्च शिक्षा में प्रवेश संबंधी प्रावधान तीखी बहस से भरे पड़े हैं। अत: अनेक मुद्दों पर विचारों में मदभेदों ने कुछ लोगों को बहुत अधिक अलोकतांत्रिक बना दिया।

इतना अधिक लोकतांत्रिक तरीके से मतभेदों को मिटाना भी बहस का कारण बना। इसी से यह निन्दा योग्य शब्द 'बहुमतवाद' बना। यह दावा करता है कि लोगों के मत लेकर किया गया निर्णय सदा सही नहीं होता। कुछ समाजों या समूहों में, कुछ सामान्य विशेषताओं जैसे मजबूत निहित स्वार्थो के कारण अथवा जातीय, धार्मिक, भाषाई, इत्यादि संबंध के आधार पर बहुमत द्वारा लिए गए निर्णय अनुचित परिणाम दे सकते हैं। ऐसे में अल्पसंख्यक खराब स्थितियों में रहने के लिए अभिशप्त है। ऐसी स्थिति के उदाहरण धर्मतांत्रिक राज्यों में देखे जा सकते है जहाँ एक धर्म या एक सम्प्रदाय के लोगों की भारी संख्या अन्य धर्मों या सम्प्रदायों के लिए अवरोध खड़े कर सकती है और इस प्रकार अल्पसंख्यकों के लिए जीने की अपमानजनक परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है। परन्तु स्थितियां इसके विपरीत भी हैं। कुछ प्रजातांत्रिक देशों में कोई आक्रामक और संगठित अल्पसंख्यक समूह भी राजनीतिक दलों से अपने मतों (वोटों) के बलबूते पर शर्ते मनवा सकता है जो अन्य, धर्म, सम्प्रदाय या पहचान के आधार पर संगठित नहीं है। इस प्रकार के लाभ प्राप्त करना भेदभावपूर्ण है। अत: विश्व के कई लोकतंत्रों में प्रयोग किया जाने वाला शब्द वोट-बैंक राजनीति है, जो कुछ संगठित अल्पसंख्यकों पर विशेष कृपादृष्टि दर्शाता है।

गतिविधि– समाचार पत्रों/पत्रिकाओं/रेडियों के माध्यम से राजनीतिक संकल्पनाओं को सीखना

शिक्षक विद्यार्थियों को विभिन्न समाचार पत्र, रिपोर्टों/विश्लेषणों से जानकारी, 'बहुमतवाद' और 'वोट-बैंक' राजनीति के उदाहरण इकट्ठा करने के लिए कह सकते हैं। कोई भी समाचार पत्र, चाहे वह राष्ट्रीय, स्थानीय या देशी भाषा में हो, उपयोग में लाया जा सकता है, यह इस पर निर्भर करता है कि समाचार पत्र विद्यार्थियों को नियमित रूप से उपलब्ध हो पा रहा है। समाचार पत्र और या राजनीतिक पत्रिका की एक माह की फाइल को भी ऐसी खबरें इकट्ठा करने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है जहाँ इन शब्दों का संदर्भ है। विद्यार्थियों को इन्हें पढ़ने और तर्कों और उनकी विशेषताओं को अलग करने को कहें या फिर अध्यापक से राय मशविरा करें। वैकल्पिक रूप से, इन शब्दों की परिचर्चा स्थानीय राजनीतिक सक्रियतावादियों से करें और फिर इसे अपने शब्दों में संक्षेप में लिख लें। दृष्टिबाधित विद्यार्थी यह अभ्यास रेडियो की खबरें सुनकर अथवा अपने माता-पिता/शिक्षक/अन्य विद्यार्थी की मदद लेकर कर सकते हैं जो उन्हें इन समाचार पत्रों को पढ़ कर सुना सकें जिससे वे संबंधित जानकारी प्राप्त कर लें।

पूरे विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में अनेक उदाहरण है जो लोकतांत्रिक सिद्धांतों के कार्यान्वयन की चुनौतियों की ओर संकेत करते हैं। यह संकेत देता है कि लोगों में मामूली मतभेद के साथ कैसे लोकतांत्रिक विचारों का मित्र भाव से और न्यायोचित तरीके से अनुसरण किया जाए, जो आज किसी भी लोकतंत्र के लिए एक चुनौती है।

सभी स्थानों पर बहुसंख्यक की इच्छाओं और कल्याण से संबंधित सम्प्रदायवादी लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए संगठन की शक्ति, विचारधारा, मीडिया और धन की सहायता ली जाती है। प्रत्येक लोकतांत्रिक देश में शासकों के साथ-साथ लोगों के प्रतिनिधियों को अपने वैधानिक और प्रशासनिक कार्य करने में दबाव और दुविधाओं का सामना करने में कठिनाई होती है। न्याय के आदर्श और निर्वाचन वाली राजनीति के आदेशसूचक व्यवहार में सदा मेल नहीं खाते। इन परिस्थितियों में सही रास्ता ढूँढ़ना अच्छे नेतृत्व का गुण है।

इसके अलावा, लोकतंत्र के मूलभूत सिद्धांतों की भी बहुत सी व्याख्याएँ हैं। आर्थिक समानता, समतावादी समाज, सामाजिक न्याय अथवा मानवाधिकार जैसी संकल्पनाएँ विवादास्पद व्याख्याओं को सुलझाने के लिए अव्यवहारिक धारणाएँ हैं। कोई भी राजनीतिक तंत्र भी एक दिए गए समय में राष्ट्रीय समुदाय के मूल्यों को थोड़ा-बहुत परिलक्षित करता है। जिन मापदण्डों को यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए अपनाता है, वह भी किसी देश के राष्ट्रीय अनुभवों, परम्पराओं और पूर्वाग्रहों के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं। अत: एक विशेष मुद्दा विभिन्न लोकतांत्रिक देशों में विभिन्न तरीकों से तय किया जाता है।

अत: विश्व में प्रत्येक लोकतंत्र आज विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है। उदाहरण के लिए यू०एस०ए० सबसे शक्तिशाली लोकतंत्र और भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र प्रत्येक भिन्न समस्याओं का सामना करता है, संभव है कि इनमें से कुछ समस्याएँ किसी अन्य देश में पूर्णरूप से अनुपस्थित हों। रंगभेद का मुद्दा यू०एस०ए० में एक आम बात है परन्तु भारत में ऐसा कुछ भी नहीं है। दूसरी ओर जाति भेदभाव या पक्षपात का भारत में ज्वलंत मुद्दा है जबकि यह यू०एस०ए० में बिल्कुल नहीं है। इसी प्रकार सरकारी भाषा या उच्चशिक्षा की भाषा भारत में एक सुलगता प्रश्न है जबकि बहुत से बड़े लोकतंत्रों में ऐसा बिल्कुल नहीं है।

C. लोकतंत्र को चुनौतियाँ

लोकतंत्र की चुनौतियों को तीन प्रकार से बताया जा सकता है;

1. **बुनियादी चुनौती-** यह सत्तावादी सरकार से लोकतांत्रिक सरकार में बदलाव की चुनौती है। पोलैण्ड, रोमानिया आदि जैसे भूतपूर्व समाजवादी राष्ट्र इसके अच्छे उदाहरण हैं। इनमें से बहुत से घटिया संरचनाओं और लोकतंत्र की विकृतियों के कारण लोकतंत्रों को छोटा बना रहे हैं। एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन 'कम्यूनिटी ऑफ डेमोक्रेसीज' (लोकतंत्रों का समुदाय) है। इसमें बहुत से नए लोकतंत्र है अर्थात् देश जो पहले गैर लोकतांत्रिक सत्ताओं के अधीन थे, परन्तु अब लोकतंत्र के रूप में आगे बढ़ रहे हैं। ये नियमित रूप से मिलते है और अपने-अपने देश और विश्व में लोकतंत्र को सशक्त करने के मुद्दों पर परिचर्चा करते हैं।

   अधिक जानकारी वेबसाइट http: www.community-democracies.org/ से प्राप्त की जा सकती है।

   फिर भी विश्व का लगभग एक चौथाई भाग अभी भी गैर-लोकतांत्रिक सरकारों के अधीन रह रहा है। उदाहरण के लिए उत्तरी कोरिया और म्यांमार। ऐसे देशों में भी लोकतंत्र के लिए आंदोलन इस वर्ग की चुनौती का सामना कर रहा है अर्थात् एक लोकतंत्र व्यवस्था की ओर सफलतापूर्वक किस प्रकार बढ़ें।

   ### गतिविधि- कोलाज (समुचित चित्र) बनाना

   विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे चीन या उत्तरी कोरिया में होने वाली घटनाओं की समाचार पत्र फाइलों से समाचार पत्रों की रिपोर्टें इकट्ठा करें। विद्यार्थी उनके घर पर उपलब्ध समाचार पत्रों, इंटरनेट, आदि की सहायता ले सकते हैं। शिक्षक उन्हें समझा सकते हैं कि उन्हें सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर समाचार इकट्ठे करने हैं और खेलकूद, कूटनीति या अंतर्राष्ट्रीय व्यापार इत्यादि पर नहीं। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी तानाशाही शासन के कुछ लक्षणों को समझ सकते हैं और यह भी जान सकते हैं कि यह हमारे जैसे लोकतांत्रिक देश से कैसे भिन्न है। प्रत्येक विद्यार्थी आज देश की स्थिति को परिलक्षित करने वाले चित्रों और समाचारों की कतरनों से एक कोलाज तैयार करेगी। शिक्षक उनमें से कुछ रोचक कोलाजों को छाँटकर समाचार बोर्ड या कक्षा की दीवारों पर लगा सकते हैं और उनसे उभरने वाले मुद्दों पर परिचर्चा कर सकते हैं। इस प्रकार विद्यार्थी विभिन्न उदाहरणों के साथ तानाशाही तंत्र के लक्षणों और लोकतांत्रिक व्यवस्था के साथ उसकी भिन्नता को सीख पाएँगें।

2. **लोकतंत्र के विस्तार की चुनौतियाँ-** इसमें देश के राजनीतिक तंत्र में लोकतांत्रिक सरकार के मूलभूत सिद्धांतों के अनुप्रयोग शामिल होते हैं। स्थानीय सरकारों को अधिक शक्ति देना, संघ की घटक इकाइयों के संघीय सिद्धांतों का विस्तार, महिलाओं और अल्पसंख्यक समूहों आदि की पर्याप्त संख्या का समावेश इत्यादि इसी चुनौती में आते हैं। भारत सहित अधिकांश देश और कनाडा तथा यू०एस०ए० जैसे लोकतंत्र इस चुनौती का सामना करते हैं।

गतिविधि- तथ्यों और चित्रों का विश्लेषण करना

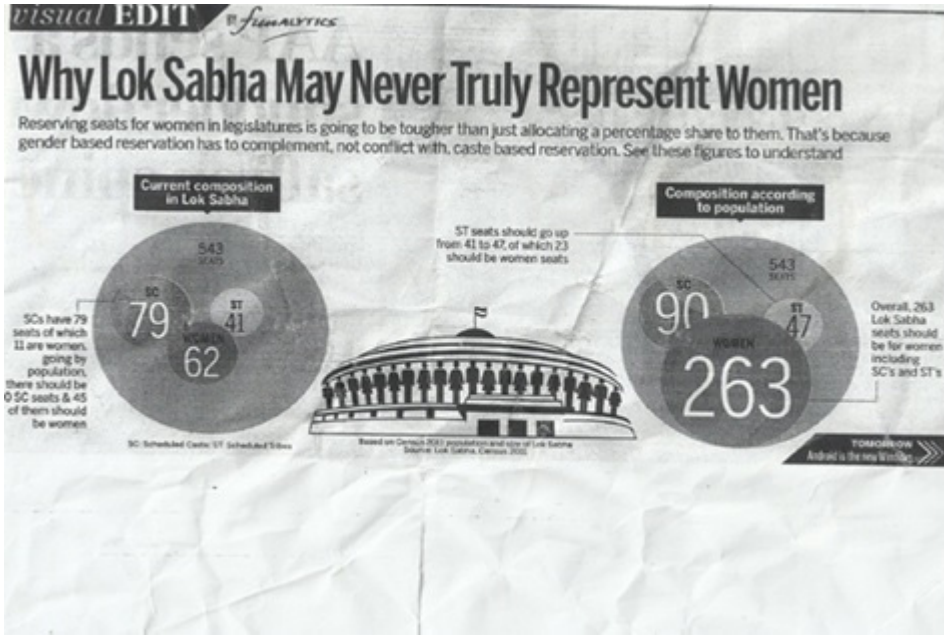

मेल टुडे 16, जनवरी, 2014

शिक्षक उपरोक्त चित्र कक्षा में दिखाकर विद्यार्थियों को निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर में चित्र का विश्लेषण करने के लिए कह सकते हैं-

- क्या आप सोचते हैं कि भारत में लोकतंत्र को मजबूत बनाने में राजनीतिक संस्थाओं में महिलाओं का समुचित प्रतिनिधित्व महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है?
- क्या आप सहमत हैं कि जेंडर आधारित आरक्षण को जाति आधारित आरक्षण का पूरक होना चाहिए? कारण दीजिए।
- राजनीतिक संस्थाओं में महिलाओं के कम प्रतिनिधित्व के क्या कारण हैं?
- क्या आप सोचते हैं कि राजनीतिक दल राजनीतिक संस्थाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के बारे में सही मायने में सरोकार रखते हैं?

गतिविधि- निबंध लेखन

शिक्षक कक्षा में सऊदी अरब की पृष्ठभूमि उपलब्ध करा सकते हैं जिसके केन्द्र में यह मुद्दा होगा कि महिलाओं को सार्वजनिक गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति नहीं है। अल्पसंख्यकों को यहाँ समान धार्मिक स्वतंत्रता नहीं है। विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे इस बारे में पाठ्यपुस्तक तथा अन्य जैसे स्रोतों समाचार पत्रों और पत्रिकाओं से और जानकारी लें। इस जानकारी के आधार पर विद्यार्थी सऊदी अरब में लोकतंत्र की चुनौतियों का वर्णन करते हुए 500 शब्दों का एक निबन्ध लिख सकते हैं। शिक्षक निबंधों की समीक्षा करेंगे और कक्षा में परिचर्चा के लिए अच्छे निबन्धों का चयन करेंगे। यह गतिविधि विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक दृष्टिकोण से महिलाओं और अल्पसंख्यकों से संबंधित मुद्दों को समझाएगी। यह अभ्यास विद्यार्थियों को लोकतंत्र के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी देगा।

3. **लोकतंत्र की गहनता सुदृढ़ता की चुनौतियाँ-** इस प्रकार की चुनौती का प्रत्येक लोकतंत्र को किसी न किसी रूप में सामना करना पड़ता है। इस चुनौती का सामना करने का अर्थ लोकतांत्रिक संस्थाओं को मज़बूत बनाना और लोकतंत्र का उचित निर्वहन है। इसके लिए सरकारी निर्णयों में निहित स्वार्थो और सत्ता के दलालों के प्रभाव को काम करने के सतत और यथार्थ प्रयासों की आवश्यकता है। इसमें उत्तरदायित्व के लिए प्रभावी व्यवस्थाएँ और शासकों को पुरस्कृत करने और दण्ड देने की उचित प्रणाली बनाना भी शमिल है। यह लोकतंत्र का कटु सत्य है जो इसे सरकारी तंत्र को 'अक्षम' उपनाम देता है। सरकारी सम्पत्ति और सरकारी धन किसी का नहीं समझा जाता, इस दृष्टि से इसके प्रति किसी की जवाबदेही नहीं होती।

गतिविधि 1- आर०टी०आई० पर परिचर्चा

शिक्षक हमारे देश में सूचना के अधिकार (आर०टी०आई०) अधिनियम पर कक्षा में परिचर्चा करा सकते हैं। परिचर्चा के केन्द्र बिन्दु हो सकते हैं- आर०टी०आई० अधिनियम के मुख्य लक्षण क्या हैं? अभी तक इसकी क्या उपलब्धियां हैं? इसके बारे में इसके उपयोग और दुरुप्रयोग (यदि कोई हो) आलोचना आदि के बारे में सामान्य जानकारी क्या है जिसकी बात विद्यार्थियों के साथ की जानी चाहिए। शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को अधिक से अधिक बोलने दें ताकि विद्यार्थियों के स्वयं के विचार और दृष्टिकोण सामने आ सकें। इस आधार पर ही परिचर्चा हो जिसमें शिक्षक केवल संदर्भ, सुधार और अतिरिक्त जानकारी उपलब्ध कराते रहें। अंत में इसे भारतीय लोकतंत्र में जोड़ने योग्य अभिनव संघटक के रूप में समेकित किया जा सकता है। यह परिचर्चा लोकतांत्रिक चुनौतियों के प्रति समझ को बढ़ाएगी।

गतिविधि 2- जानकारी और परिचर्चा का संग्रहण

आपको ज्ञात होगा कि हमारे देश में प्रत्येक राज्य में विशिष्ट उद्देश्यों और कार्यों वाला पंचायती राज-तंत्र है। अत:शिक्षक विद्यार्थियों को उनके राज की पंचायती राज की कार्य प्रणाली और उसके कार्यों को जानने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। इस गतिविधि को छात्र पाँच के समूह में या अकेले कर सकते हैं। यह समाचार पत्रों के लेख, स्थानीय पत्रिकाओं में देखकर और पढ़कर, इंटरनेट में जानकारी देखकर, रेडियो को सुनकर भी की जा सकती है। संबंधित जानकारी के इकट्ठा कर लिए जाने पर विद्यार्थियों से उसे पढ़ने के लिए कहा जा सकता है और फिर वे जानकारी लेंगे कि विभिन्न स्तरों पर पंचायती राज के काम करने के तरीके क्या हैं और ग्रामीण समाज पर इसका क्या प्रभाव है। वे यह जानकारी भी प्राप्त करें कि क्या उनके राज्य में पंचायत के चुनावों में कुछ पद, विशेष रूप से महिलाओं के लिए, आरक्षित होते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों से कह सकती है कि वे समाज के कुछ सदस्यों से बात करें कि स्थानीय प्रशासन में महिलाओं की भागीदारी पर उनके क्या विचार हैं और क्या इससे स्थानीय राजनीति में कुछ बदलाव आया है?

जानकारी इकट्ठा करने के बाद प्रत्येक समूह अपने निष्कर्षों को कक्षा में प्रस्तुत करेगा और प्रत्येक प्रस्तुतीकरण के बाद परिचर्चा होगी। शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर निष्कर्षों का समेकन करेंगे।

D. भारतीय लोकतंत्र की चुनौतियाँ

अभी तक हुई चर्चा से पता चलता है कि हम भारत में लोकतंत्र से जुड़ी कुछ विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हैं। आइए इनमें से कुछ की चर्चा करें।

1. सरकार और समाज में सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार: आम आदमी भ्रष्टाचार से दिन-प्रतिदिन पीड़ित है किन्तु इसे रोकने की असमर्थता और अक्षमता के कारण यह व्यापक रूप से फैला हुआ है। व्यावहारिक और ऐतिहासिक कारणों से

भी भारत में मतदाता विभिन्न स्थानों में प्रशासनिक व्यवहार के नकारात्मक पहलुओं को रोकने में स्वयं को असहाय पाते हैं। गरीबी और शिक्षा की कमी भी इसे बनाए रखने में सहायक है। बहुत से राजनीतिक दल या तो भ्रष्टाचार की परवाह नहीं करते या उसे अपने संकीर्ण हितों के लिए उपयोग में लेते हैं। यह एक प्रमुख समस्या है जिसे पूरे देश में, यद्यपि भिन्न स्तरों में अनुभव किया गया।

2. यह एक आम शिकायत है कि सरकारी दफ्तरों में बैठै कुछ लोग अयोग्य और अनैतिक सिद्ध हो चुके हैं। कभी-कभी चरित्रहीन प्रत्याशी राजनीतिक जीवन में प्रमुख पदों पर जीत हासिल कर लेते हैं। राजनीतिक नेताओं से संबंधित बहुत से भ्रष्टाचार, पक्षपात के मामले भी इसमें शामिल हैं। यह केवल वित्तीय अनियमितताओं तक सीमित नहीं हैं। गलत धारणाओं के नियम, संस्थाएँ बनाना; अप्रचलित नियमों को जारी रखना; विभिन्न चालों से कानूनी तंत्र को बिगाड़ना; कर्त्तव्य पालन में लापरवाही; राष्ट्र और व्यापक रूप से समाज की कीमत पर वर्गीय हितों की दलाली करना; लोक-जीवन में आत्मसम्मान की कमी दर्शाना इत्यादि भी हमारे लोकतंत्र की कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ है।

गतिविधि- पोस्टर बनाना

शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी को पूरे महीने की अखबार की कतरनों का उपयोग कर हमारे देश में लोकतंत्र की विभिन्न चुनौतियों का उदाहरण देते हुए, पोस्टर बनाने को कह सकते हैं। वे चीजों को चुनने के लिए स्वयं निर्णय लें। संग्रहण साथियों को शिक्षा देने में मदद करेगा, क्योंकि विद्यार्थियों के अपने प्रयास मुद्दों को उजागर करने में साझा किए जाएँगे और इससे उनकी समझ बढ़ेगी। पोस्टर बनाने में सकारात्मक समाचारों/घटनाओं को भी शामिल किया जाए, जो एक स्वस्थ लोकतंत्र के प्रति विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किए गए प्रयासों को परिलक्षित करेंगे।

3. विभिन्न बुराइयों का जारी रहना देश के शिक्षित वर्ग के कारण भी हो सकता है, जो कभी-कभी थोड़े स्वार्थी लगते हैं। इनमें से कुछ नकारात्मक सोच से पीड़ित होते हैं, जो यह विश्वास करते हैं कि हमारे देश के सामने आई मुसीबतों के लिए कुछ नहीं किया जा सकता। अत: सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को सुधारने की दिशा में उनका रवैया उदासीन रहता है। इसके परिणामस्वरूप इन परिहार्य व्यावधियों के साथ जन-जीवन प्रभावित होता।

4. व्यर्थ और निरंकुश प्रशासन- बड़े मंत्रालयों, अफसरशाही और बड़े प्रतिष्ठानों पर बहुत अधिक खर्चा होता है, परन्तु उत्तरदायित्व की भारी कमी होती है। 'मार्च लूट' जैसा बदनाम शब्द निराशाजनक परिस्थिति का द्योतक है। सब कुछ जानते हुए भी हम भारी मात्रा में वार्षिक बरबादी को रोकने में असफल रहे हैं।

गतिविधि- न्यायोचित हस्तक्षेप पर परिचर्चा

हाल ही में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने दोषी साबित हो चुके व्यक्तियों विधानमंडल के चुनाव लड़ने से को वंचित कर दिया। शिक्षक कक्षा में 'दोषी ठहराए गए व्यक्तियों को विधानमंडल के चुनाव लड़ने की अनुमति देना लोकतंत्र की एक चुनौती' विषय पर परिचर्चा आयोजित कर सकते हैं। पाँच विद्यार्थियों को पक्ष में और पाँच विद्यार्थियों को विपक्ष में बोलने के लिए चुना जा सकता है। प्रत्येक विद्यार्थी को पाँच मिनट दिए जा सकते हैं। शिक्षक संचालक के रूप में कार्य कर सकते हैं, जबकि शेष सभी विद्यार्थी सक्रिय प्रेक्षकों की भूमिका निभा सकते हैं। विद्यार्थी संचालक की भूमिका निभा रहे शिक्षक के साथ भी वाद-विवाद कर सकते हैं, जो संचालक है, कि लोकतंत्र की किस चुनौती से यह निर्णय संबंधित है और किस क्षमता से न्यायिक हस्तक्षेप भ्रष्टाचार से निपट रहा है। वाद-विवाद के बाद, प्रेक्षकों को प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे वक्ताओं के दोनों समूहों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर अपने विचार प्रकट करें। इस प्रकार वे अपने साथी समूह के बीच पता लगा सकते है कि इसके कार्यान्वयन के साथ इस संबंध में और किन प्रयासों की आवश्यकता है। शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों द्वारा सुझाए गए नए प्रस्तावों के सम्भावित परिणामों पर उन्हें जानकारी देने के अलावा तथ्यात्मक बिन्दुओं पर उन्हें सही करने की भी हो सकती है।

5. राजनीतिक भाषण में चपलता और भावुकता- इस उदाहरण में आम आदमी कम दोषी है। प्रादेशिकता, जातिवाद और साम्प्रदायिकता फूट डालने की राजनीति के नाम पर इस चुनौती के मुख्य प्रकार हैं। मत प्राप्त करने और सरकार में पद हासिल करने के लिए राजनीतिक नेताओं द्वारा सभी प्रकार के 'फूट डालों और राज करो' वाले हथकण्डे अपनाए जाते हैं। इसे प्रभावी बुद्धिजीवी वर्ग की संकीर्ण और स्वयं का हित करने वाली विचारधाराओं द्वारा बनाए रखा जाता है। साम्प्रदायिक नारे और राजनीतिक दलों के कार्यक्रम, जहाँ राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा करते हुए बहुत से बुद्धिजीवी सक्रिय या निष्क्रिय रूप से उन्हें समर्थन देते हैं, इस चुनौती का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

गतिविधि- लोकतंत्र की स्थानीय चुनौतियों पर निबंध लिखना

शिक्षक विद्यार्थियों को अपने शहर/नगर/गाँव या आस-पास के क्षेत्र में "लोकतंत्र की चुनौतियां" विषय पर लगभग 500 शब्दों का एक लेख लिखने के लिए कह सकते हैं। स्वयं यह विचार करते हुए कि क्षेत्र में लोकतंत्र को सबसे ऊपर किस प्रकार की चुनौती है। वे स्थानीय से लेकर राज्य स्तर तक विमर्श कर सकते हैं। शिक्षक उठाए गए मुद्दों, लोकतंत्र पर विद्यार्थियों की समझ और इसे चुनौतियों इत्यादि के संदर्भ में निबंधों का आकलन करेंगे। यह अभ्यास विद्यार्थियों को अकादमिक उद्देश्यों के लिए सामाजिक प्रेक्षणों की प्रारंभिक विधि सीखने में मदद करेगा।

6. एक अच्छे लोकतंत्र को विशेष आवश्यकताओं वाले नागरिकों पर ध्यान देने की भी आवश्यकता होती है। इनमें सबसे पहले नि:शक्त जन हैं। इनमें से बहुतों को अपने कार्यस्थल पर या अपनी बस्ती में विभिन्न अवसरों पर प्रत्यक्ष या परोक्ष अपमान का सामना करना पड़ता है। यद्यपि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से स्थिति को सुधारने के लिए काफी कुछ किया जा चुका है, परन्तु काफी चुनौतियाँ अभी बाकी है। भारत सरकार और सर्वोच्च न्यायालय ने विविध नि:शक्तताओं वाले नागरिकों के सही उपचार की घोषणा की है और इसे सुनिश्चित किया है। उदाहरण के लिए, उपयुक्त परिस्थितियों में नौकरियों का आरक्षण। कुछ कॉर्पोरेट और व्यवसायी भी नि:शक्त लोगों को मुख्यधारा में ठीक से जोड़ने के लिए तरीके और साधन उत्पन्न करने के लिए काम कर रहे हैं। लोकतंत्र की चुनौतियाँ सभी देशों या समाजों के लिए एक समान अथवा एक सीमित सूची के भीतर नहीं हो सकती। हमने आधारभूत सिद्धांत और संबंधित मुद्दों को जानने के लिए कुछ पर चर्चा की है। विद्यार्थी इस आधार पर आगे बढ़ सकते हैं और स्वयं सीखने तथा इसे परस्पर साझा करके अपनी समझ को बढ़ा सकते हैं।

प्रस्तावित पठन सामग्री

1. रजनी कोठारी, पोलिटिक्स इन इंडिया, नई दिल्ली, ओरिएन्ट लौंगमैन, 1970
2. रजनी कोठारी, कास्ट इन इंडियन पोलिटिक्स, नई दिल्ली, ओरिएन्ट लौंगमैन, 1970
3. प्रताप भानु मेहता, द बर्डन ऑफ डेमोक्रेसी, नई दिल्ली, पेंग्युइन इंडिया, 2003
4. Karl Paper, The Open Society and is Enemies, New Jersey, Princeton, 1971
5. SM Lipset, Political Man, New York, Doubleday and Co, 1960
6. Ernest Baker, Principals of Social and Political Theory, New Delhi, Oxfort University Press, India, 1978
7. (ऊपर से तीसरी पुस्तक के अतिरिक्त, सभी इंटरनेट पर पढ़ने के लिए नि:शुल्क उपलब्ध हैं।)

फिल्म

1. *राजनीति*, प्रकाश झा द्वारा निर्देशित

अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र शिक्षण

विद्यालय स्तर पर अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान के एक भाग के रूप में पढ़ाया जाता है। उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा VI से VIII) पर यह विषय समेकित रूप में पढ़ाया जाता है। यह राजनीति विज्ञान के साथ सामाजिक और राजनीतिक जीवन के रूप में अंतर्गुंफित रहता है। इस स्तर पर, बच्चों को अर्थशास्त्र के विषयो जैसे आजीविका, बाजार, 'कार्य' की धारणा और सरकार की आर्थिक भूमिका आदि से संबंधित वृतांतों द्वारा समझाया जाता है। विषयों को अंतर विषय परिप्रेक्ष्यों में राजनीतिक, सामाजिक और ऐतिहासिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए अधिगम के मिश्रित तरीके से पढ़ाया जाता है। यहाँ सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों को विकास अर्थशास्त्र का परिचय दिया जाता है, अर्थात् विकास को कैसे मापा जाता है, विकास के संकेतक और संसाधन के रूप में मानव पर निवेश करना। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र स्वयं को विषय के रूप में विस्तारित करता है। जो विद्यार्थी अर्थशास्त्र के विषय को उच्च शिक्षा के लिए पढ़ना चाहते हैं उन्हें चार पाठ्यक्रम दिए जाते हैं। ये पाठ्यक्रम हैं– अर्थशास्त्र के लिए सांख्यिकी, भारतीय आर्थिक विकास, प्रारम्भिक व्यष्टि अर्थशास्त्र और प्रारम्भिक समष्टि अर्थशास्त्र।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा-2005 की अनुशंसाएँ सामाजिक विज्ञान और विशिष्ट अवस्थाओं के अधिगम की पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन करती हैं। अध्ययन की विभिन्न पद्धतियों के कारण सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषय जैसे इतिहास, भूगोल, राजनीतिक विज्ञान और अर्थशास्त्र इन विषयों को सीमाओं में बांधने को उचित ठहराती है। सामाजिक विज्ञान के शिक्षण को पुन: प्राणित करने की आवश्यकता है ताकि शिक्षार्थियों को एक पारस्परिक क्रियाकारक पर्यावरण में ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में मदद मिल सके। सामाजिक विज्ञान शिक्षण को इस प्रकार की विधियाँ अपनानी चाहिए जो रचनात्मकता, सौंदर्यबोध और विशिष्ट परिप्रेक्ष्यों को बढ़ावा दें और बच्चों को अतीत तथा वर्तमान में संबंधों को बनाने, समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझने में सक्षम बनाए (एन०सी०एफ०-2005: 51, 53-54)। जब हम इस दृष्टि से देखते हैं, तो अर्थशास्त्र के शिक्षण अधिगम का उद्देश्य वास्तव में बहु-आयामी परिप्रेक्ष्य से शिक्षार्थियों की विभिन्न आर्थिक मुद्दों के बारे में समझ को बढ़ाना है। अर्थशास्त्र मात्र आर्थिक सिद्धांतों के बारे में ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, अपितु अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों में समाज का एक सदस्य बनने के लिए अपनी समझ/सोच को व्यापक बनाना भी है। यह विषय तर्कसंगत कारण देने, एकतरफा सोच से परे हटने और दैनिक जीवन की आर्थिक वास्तविकताओं के लिए इसके अनुप्रयोग करने के अवसर देता है।

अर्थशास्त्र में सेवारत शिक्षकों का व्यावसायिक विकास

व्यावसायिक विकास विषय वस्तु और शिक्षाशास्त्र में संवर्धन कार्यक्रम है। एक प्रभावी शिक्षक बनना अथवा सहायक के रूप में शिक्षक बनना एक सतत् प्रक्रिया है, न कि समयबद्ध गतिविधि और घटनाओं की एक श्रृंखला। शिक्षक के व्यावसायिक विकास का अंतिम लाभार्थी विद्यार्थी है यद्यपि प्राप्तकर्त्ता शिक्षक है।

अर्थशास्त्र में सेवारत शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लक्ष्य निम्नलिखित हैं:

1. माध्यमिक स्तर पर समेकित सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के एक भाग के रूप में अर्थशास्त्र शिक्षा में शिक्षक के ज्ञान को समृद्ध और अद्यतन बनाना।
2. सामाजिक मुद्दों पर उनके ज्ञान को समझना तथा अद्यतन बनाना।
3. शिक्षकों की वर्तमान अधिगम पद्धतियों को शिक्षार्थी केंद्रित/हितैषी कार्य- नीतियों में बदलना जैसे खुद करके सीखना, प्रयोग करना, विमर्श करना, अन्वेषण करना और विभिन्न संदर्भो में प्रयुक्त करना।

4. अपनी कक्षा में भेदभाव दूर करने के लिए शिक्षकों को हाशिये और अन्य समूहों के सरोकारों पर बात करने के लिए तैयार करना।
5. अर्थशास्त्र शिक्षण- अधिगम/अर्थशास्त्र शिक्षा में शैक्षिक नवाचारों में रुचि पैदा करना।

मॉड्यूल

इस पैकेज के लिए उदाहरण स्वरूप दो मॉड्यूल विकसित किए गए हैं। पहला- विकास और दूसरा- मुद्रा और साख।

पहले मॉड्यूल में विकास में विभिन्न कारकों के योगदान को समझने के लिए विचारोत्तेजक प्रश्नों का उपयोग करते हुए व्यापक रूप से विकास पर चर्चा की गई है। यह मॉड्यूल व्यक्ति के समेकित कल्याण जैसे-शिक्षा, स्वास्थ्य, लिंग, जाति के निरपेक्ष अवसरों की समानता और निर्णय लेने मे लोगों की भागीदारी पर केन्द्रित है। मॉड्यूल विशेष रूप से विविध सरोकारों पर विवेचनात्मक रूप से प्रकाश डालता है, जैसे- शिक्षार्थियों में तर्क देने, कारण बताने और विश्लेषक कौशलों को विकसित करने हेतु यह प्रश्न पूछा जा सकता है क्या आपके विचार से अभी तक अपनाई गई कार्य नीति का पुन: निरीक्षण करने और कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कदम उठाने की आवश्यकता है? तीन मुख्य बिन्दु जिनकी चर्चा की गई है वे हैं - विकास के सूचक, विकास के प्रक्रम में तीन क्षेत्रों का योगदान प्रक्रम और संधारणीय विकास जिनमें सहस्त्राब्दि विकास, ग्रामीण विकास और समावेशी विकास के लक्ष्य शामिल हैं। संधारणीय विकास की चर्चा विस्तार से यह बताने के लिए की गई है कि इन विषयों को अर्थव्यवस्था में वृद्धि तथा आधारिक परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी रूप से कैसे काम में लिया जा सकता है। आगे यह स्पष्ट करने के लिए कहा गया है कि यू०एन०डी०पी० (संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम) की रिपोर्ट महिला सशक्तीकरण पर केंद्रित क्यों है और सभी देशों में विकास समान रूप से क्यों नहीं हुआ है? सामाजिक समावेशन के लिए ग्रामीण विकास, समावेशी विकास जैसे विषयों को लिया गया है।

दूसरे मॉड्यूल में, साख की संकल्पना और सभी के लिए इसकी उपलब्धता, विशेष रूप से गरीबों के लिए और उचित शर्तों पर, को केस अध्ययनों और उदाहरणों के साथ समझाया गया है। इस पर बल दिया गया है कि यह लोगों का अधिकार है और इसके बिना उनका बड़ा हिस्सा विकास की प्रक्रिया से बाहर रह जाएगा। भूमिका निर्वाह और परिचर्चा की सहायता से धन के विकास को समझाया गया है और किसका आकलन किया जाना है, इसकी भी चर्चा की गई है। गतिविधि और परिचर्चा के माध्यम से भुगतान की विधियों को समझाया गया है। लोगों के जीवन पर बैंक के प्रभाव को जानने के लिए परियोजना कार्य सुझाया गया है और इसकी भी चर्चा की गई है कि शिक्षार्थी के अधिगम के लिए किसका आकलन किया जाए।

गतिविधियों की सहायता से हम एक साथ मिलकर भागीदारी के माध्यम से सीख सकते हैं।

विकास का संप्रेषण

संक्षिप्त परिचय

विकास एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसकी आवश्यकता आर्थिक प्रगति के साथ-साथ सामाजिक संरचना, अभिवृत्तियों और संस्थागत ढाँचों में परिवर्तन करने के लिए आवश्यक है। यह लोगों की मूलभूत आवश्यकताएँ उपलब्ध कराने और आत्मविश्वास का एक स्तर सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। विकास का कार्यक्षेत्र और फैलाव आर्थिक वृद्धि की अपेक्षा बहुत व्यापक है। इससे आर्थिक वृद्धि में तेजी आती है, साथ ही असमानता न्यूनतम हो जाती है और गरीबी दूर होती है।

यह मॉड्यूल विकासशील देशों के विशिष्ट आयामों पर भी ध्यान देता है और देश भर में किसी भी व्यक्ति के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए आवश्यक संरचनात्मक परिवर्तनों के प्रक्रमों की बात करता है। किसी भी देश का विकास प्राकृतिक संसाधनों, आर्थिक के साथ-साथ गैर-आर्थिक कारकों से प्रभावित होता है। इस संबंध में कृषि में उत्पादकता कम करने वाले कारकों, कमज़ोर विनिर्माण क्षेत्र और नौकरियों के क्षेत्र में रोज़गार के अवसरों की निम्न वृद्धि का विश्लेषण किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर विचार-विमर्श करने के लिए आजीविका प्राप्त करने और रोज़गार-गारंटी की विभिन्न योजनाओं को लिया गया है। विकास का सरोकार अब मानवीय कारकों पर बल देता है और यह सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों, मानव विकास सूचकांक और जेंडर विकास सूचकांक में परिलक्षित होता है। विकास प्राप्ति के बहुत से उपाय सुझाए गए हैं और इसके लिए आवश्यक है कि इसे संधारणीय (टिकाऊ) बनाने के लिए पर्यावरणीय सरोकारों को प्राथमिकता दी जाए।

शिक्षण-अधिगम उद्देश्य

विकास के संप्रेषण में शिक्षण के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता होगी-

- विकास का अर्थ और किस प्रकार हम वृद्धि से इसका भेद करें।
- विकास के नए और परम्परागत अर्थों में तुलना करना।
- विकास सूचकों के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना।
- संयुक्त राष्ट्र सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों की जागरूकता का विकास करना।
- विकास के सबंध में विशिष्ट मुद्दों जैसे लोक-केंद्रित अभिगम को समझना।
- राष्ट्रीय आय में तीनों क्षेत्रों के योगदान का अध्ययन करना और वृद्धि का ऐच्छिक स्तर प्राप्त करने के लिए उनमें अनौपचारिक संबंध स्थापित करना।
- ग्रामीण विकास पर केंद्रित योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करना।
- संधारणीय विकास सुनिश्चित करने के लिए विचारणीय पर्यावरणीय सरोकार।
- विकास के समावेशी पक्ष पर समझ विकसित करना।

विषय से अपेक्षाएँ

मॉड्यूल का एक उद्देश्य विकास के संबंधित मुख्य मुद्दों पर परिचर्चा के लिए मंच उपलब्ध कराना है। यह मॉड्यूल आर्थिक के साथ-साथ गैर-आर्थिक कार्यों को भी आगे लाता है और कक्षा में वाद-विवाद और परिचर्चा आयोजित करने के अवसर

प्रदान करता है। विद्यार्थी विकास के बहुआयामी पक्षों और उन्हें आर्थिक वास्तविकताओं से संबद्ध करने और ये किस प्रकार विकास पर प्रभाव डालते हैं आदि, को समझने में सक्षम होंगे। वे विकास की प्रक्रिया में उत्पादन के विभिन्न कारकों के योगदान का भी पता लगा सकते हैं।

इस मॉड्यूल में विकास के क्षेत्र में उभरती विभिन्न प्रवृत्तियों और चुनौतियों के अध्ययन के लिए मात्रात्मक आँकड़े भी दिए गए हैं। विद्यार्थी आँकड़ों की व्याख्या कर सकते हैं और देश के विकास के विविध पहलुओं को जान सकते हैं। वे यह समझने में सक्षम होंगे कि क्यों 'आय-पद्धति' से 'जनकेंद्रित पद्धति' में बदलाव हुआ है। क्या समावेशी वृद्धि हाशिये के समूह के लोगों तक पहुँचने में मदद करेगी? अंत में संसाधनों के न्यायोचित उपयोग के प्रति शिक्षार्थियों को संवेदनशील करने के लिए संधारणीय विकास संबंधी सुझावों की अनुशंसा की गई है।

प्रमुख संकल्पनाएँ

A. विकास का अर्थ- नया और परम्परागत

परम्परागत रूप से विकास का अर्थ है सकल राष्ट्रीय उत्पाद में 5% से 7% या अधिक की दर से वार्षिक वृद्धि। इसे उत्पादन के तरीके में भी देखा जाता है जहाँ सकल घरेलू उत्पाद (जी०डी०पी०) में कृषि का भाग कम हो जाता है, जबकि विनिर्माण और सेवा क्षेत्र का भाग बढ़ जाता है। विकास के ये मापक सामाजिक सूचकों जैसे-साक्षरता, विद्यालयी शिक्षा और स्वास्थ्य दशा इत्यादि में उपलब्धियों से संबंध नहीं रखते। अत: विकास के परम्परागत सूचक सीमित अर्थ वाले लगते हैं क्योंकि इसने व्यापक गरीबी, बेरोजगारी, आय के वितरण में असमानता, राजनीतिक स्वतंत्रताओं में उल्लंघन, महिलाओं की उपेक्षा, पर्यावरण का खतरा और हमारे आर्थिक और सामाजिक जीवन की संधारणीयता की उपेक्षा की है।

जैसा कि आज समझा जाता है, आर्थिक विकास परिवर्तनों के साथ वृद्धि की एक प्रक्रिया है, जो नागरिकों के भलाई की ओर अधिक ध्यान देती है। अत: आर्थिक विकास का अर्थ संसाधनों की वृद्धि के साथ उनका पुनर्वितरण है जिसका अर्थ किसी व्यक्ति, विशेष रूप से निम्न वर्ग से संबंधित लोगों का कल्याण, व्यापक गरीबी को दूर करना, निर्णय लेने में लोगों की अधिक भागीदारी, जनता को लाभकर रोज़गार और समाज में असमानता में कमी है। लोगों को उनकी आधारभूत आवश्यकताएँ उपलब्ध कराने हेतु और आत्म-सम्मान तथा स्वतंत्रता का एक स्तर सुनिश्चित करने के लिए विकास की आवश्यकता होती है।

अमर्त्य सेन को 'अर्थशास्त्र में सामाजिक विकल्प सिद्धांत' को विकसित करने हेतु 1998 में नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। अकाल के कारणों पर उनका काम बताता है कि हजारों की संख्या में लोग भूख से नहीं मरे होते यदि खाद्य अनाजों का उत्पादन कम न हुआ होता। उनका मानना है कि लोग इसलिए मरे क्योंकि उस समय की सरकार द्वारा अनाज की एक कृत्रिम कमी पैदा कर दी गई थी। उनके योगदानों में से एक 'ह्यूमन डेवलपमेंट इंडेक्स (HDI, मानव विकास सूचकांक) है, जो व्यक्ति की खुशहाली को मापता है और जिसने देश में कल्याण सूचकांक की तुलना को सम्भव बनाया है। उन्होंने जेंडर समानता के क्षेत्र में भी योगदान दिया। उन्हें सैद्धान्तिक, आनुभाविक और नीति अर्थशास्त्रियों ने बहुत सराहा। अमर्त्य सेन ने अपनी पुस्तक 'डेवलपमेंट एज़ फ्रीडम' में माना कि आदमी की स्वतंत्रता विकास का मुख्य उद्देश्य है। विकास का उद्देश्य लोगों द्वारा अनुभव की गई वास्तविक स्वतंत्रता के मूल्य से संबंधित है। वे आगे स्वतंत्रता की आवश्यकताओं की सहायक भूमिका, आर्थिक सुविधाओं, राजनीतिक स्वतंत्रता, सामाजिक अवसरों, प्रशासन में पारदर्शिता और व्यक्ति की सुरक्षा की बात करते हैं।

गतिविधि–वाद विवाद

शिक्षक कक्षा में से आठ विद्यार्थियों का चयन कर सकते हैं अथवा विद्यार्थी स्वयं भाग लेने के लिए अपना नाम दे सकते हैं। चार विद्यार्थी विषय के पक्ष में बोल सकते हैं और दूसरे चार विद्यार्थी विषय के विपक्ष में बोल सकते हैं। प्रत्येक प्रतिभागी को पाँच मिनट दिए जाएँगे।

वाद-विवाद का विषय- क्या आप सहमत हैं कि विकास के लिए सहायक अधिकारों, अवसरों सरकार-समर्पित और हकदार के बीच परस्परिक संबंध जरूरी है।

निम्नलिखित बिंदुओं को विशेष रूप से बताएँ–

- आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रताएँ क्या हैं?
- ये एक-दूसरे को किस प्रकार मजबूत करती हैं?
- क्या शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल के प्रावधानों को राज्य के हस्तक्षेप की आवश्यकता है?
- क्या शिक्षा और स्वास्थ्य निर्णय लेने में वैयक्तिक अवसरों के पूरक होते हैं और इस प्रकार वे आर्थिक प्रवंचना के प्रभाव से बचाते हैं?

संकेत- ये प्रश्न विद्यार्थियों को विकास के विभिन्न संबंधों पर विमर्श करने हेतु मदद करेंगे।

विद्यार्थियों का आकलन वाद-विवाद में उनके तर्कों के आधार पर किया जा सकता है। श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों और वक्ताओं द्वारा दिए गए उत्तरों के आधार पर भी आकलन किया जा सकता है।

B. विकास के सूचक– सामाजिक कारक

राष्ट्रीय आय में वृद्धि को किसी भी देश के विकास के मापन की महत्वपूर्ण इकाई माना गया है। मापन की इस विधि की शिक्षा, विशेषकर लड़कियों की, स्वास्थ्य, रोजगार, समता, सामाजिक न्याय, जनता द्वारा समावेशी भागीदारी जैसे उद्देश्यों की उपेक्षा के संदर्भ में विविध सीमाओं के कारण आलोचना हुई। अभी हाल के वर्षों में, एक विकल्प सुझाया गया है जिससे मानव विकास सूचकांक, जेंडर संबंधी विकास सूचकांक जैसे जेंडर विकास सूचकांक (GDI), जेंडर सशक्तीकरण माप (GEM) इत्यादि का परिकलन हो पाया।

सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य एक समयबद्ध कार्यक्रम है जिसका लक्ष्य है सभी देशों में विभिन्न आयामों में गरीबी दूर करना। वर्ष 2002 में संयुक्त राष्ट्र सहस्त्राब्दि अभियान ने सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक व्यावहारिक समाधान प्राचुन किया। ये लक्ष्य क्या हो सकते हैं? आपके विचार से ये लक्ष्य महत्वपूर्ण क्यों हैं? ये आयाम हैं - आय, गरीबी, भूख, बीमारी, आश्रय की कमी और जेंडर समानता को बढ़ावा देते हुए बहिष्कार की समस्या, शिक्षा और पर्यावरण की स्थिरता। कुछ मूलभूत मानव अधिकार हैं- प्रत्येक व्यक्ति का स्वास्थ्य, शिक्षा, आश्रय और सुरक्षा इनके बारे में मानवाधिकारों के सर्वव्यापी घोषणा में संकल्प लिया गया।

ये लक्ष्य महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये आधार हैं जिन पर विभिन्न देशों की विकास नीतियाँ टिकी हैं। ये लक्ष्य उस देश के लिए उत्पादक जीवन, आर्थिक वृद्धि के साधनों के प्रतीक हैं और विकास को आगे बढ़ाते हैं, जहाँ गरीब लोगो को भारी संख्या है।

सहस्त्राब्दि विकास के लक्ष्य है-

लक्ष्य 1- अत्यधिक गरीबी और भूख को दूर करना

लक्ष्य 2- विश्वव्यापी प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करना

लक्ष्य 3- जेंडर समानता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना

लक्ष्य 4- बाल मृत्युदर को घटाना

लक्ष्य 5- मातृ स्वास्थ्य में सुधार लाना

लक्ष्य 6- एच०आई०वी०/एड्स, मलेरिया और अन्य बीमारियों का सामना करना

लक्ष्य 7- पर्यावरण स्थिरता सुनिश्चित करना

लक्ष्य 8- विकास के लिए वैश्विक भागीदारी विकसित करना

स्रोत- यू०एन०डी०पी०-2002

एक ही माप सबके लिए उपयुक्त नहीं होता क्योंकि विभिन्न देशों की परिस्थितियाँ एक दूसरे से भिन्न होती हैं। कुछ देश भ्रष्टाचार और मानवाधिकारों के नकारे जाने वाले निम्न स्तर के प्रशासन की समस्या से ग्रसित होते हैं। उन देशों के कुछ ही भागों में विकास देखने को मिलता है, सभी भागों में नहीं। वहाँ आवश्यक निवेश के लिए आर्थिक व्यवस्था बहुत कमजोर होती है। उन देशों में से प्रत्येक देश के लिए लक्ष्यों की प्राप्ति के व्यावहारिक कदम उठाते हुए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से उपयुक्त सहायता लेकर निदान, नियोजित, केंद्रित और संयोजित करना चाहिए।

गतिविधि- परिचर्चा

शिक्षक कक्षा को समूहों में बाँट सकते हैं। प्रत्येक समूह को एक प्रश्न दें। शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी बच्चों को चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लेने के समान अवसर मिलें।

1. इनमें से किन लक्ष्यों को पूरा करना कठिन है?
2. इनमें से किन लक्ष्यों को प्राप्त करना अपेक्षाकृत से आसान है?
3. क्या आप विकास के लिए आवश्यक कुछ अन्य लक्ष्य सुझा सकते हैं?
4. आप इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कैसे प्रयास करेंगे?
5. क्या विकास को प्राप्त करने के लिए लक्ष्यों की आवश्यकता होती है?
6. इन लक्ष्यों को संयुक्त राष्ट्र ने क्यों बनाया?

विद्यार्थियों का आकलन टीम में उनके योगदान के आधार पर किया जा सकता है। क्या वे सक्रिय रूप से चर्चा में भाग लेते हैं या निष्क्रिय रूप से बैठे रहते हैं? विद्यार्थी उत्तर देने के लिए सक्षम होने चाहिए कि क्यों ये लक्ष्य गरीबी कम करने, जेंडर सशक्तिकरण, शिक्षा, और धारणीय विकास पर केंद्रित होने के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित हैं।

मानव विकास सूचकांक (HDI)

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) ने महबूब-उल-हक के मार्गदर्शन में मानव विकास सूचकांक को शुरू किया। सूचकांक तीन मुख्य बिन्दुओं पर केंद्रित है- (i) शिक्षा सूचकांक, (ii) स्वास्थ्य सूचकांक (iii) आय सूचकांक। पिछले कुछ वर्षों में मानव विकास से संबंधित बहुत से सूचकांक विकसित हुए हैं, जैसे जेंडर विकसित सूचकांक (GDI), जेंडर सशक्तिकरण माप (GEM), जेंडर असमानता सूचकांक (GII)। पुरुषों और महिलाओं में व्याप्त असमानता के कारण 1995 में जी०आई०आई० विकसित हुआ। भारत में कुछ राज्यों जैसे गोवा, केरल, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश में जी०डी०आई० की स्थिति बेहतर है, जबकि बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिसा, राजस्थान में यह सूचकांक निम्न स्तर पर है। जी०ई०एम० सूचकांक महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी (संसद में महिलाओं की संख्या), आर्थिक भागीदारी (महिला व्यावसायी), और उनका

घर के भीतर और बाहर आर्थिक संसाधनों पर पूरे नियंत्रण पर केन्द्रित हैं। ये सूचकांक पुरुषों और महिलाओं में समानता लाने के लिए विकसित किए ग थे और वे आर्थिक विकास के लिए जीवनदायी हैं। सूचकांक महिलाओं की समाज में परिवर्तनकारी भूमिका (अभिकर्ता) के रूप में बढ़ावा देते हैं। ये महिलाओं के सशक्तिकरण, क्रियाशीलता और जनन स्वास्थ्य के संदर्भ में प्रतिकूल स्थितियों का अध्ययन करते हैं। इनमें नीति स्तर पर काम और श्रम बाजार में भागीदारी को महत्व दिया जाता है।

गतिविधि 1: परिचर्चा

कक्षा में बिहार, ओडिसा, मध्यप्रदेश आदि में निम्न जी०डी०आई० के लिए उत्तरदायी कारकों पर एक परिचर्चा प्रारम्भ करें।

शिक्षक जनगणना रिपोर्ट 2011, आर्थिक सर्वे (अद्यतन) से आँकड़े इकट्ठा कर सकते हैं और स्वास्थ्य, शिक्षा जैसे विकास सूचकांकों की पहचान करें।

विद्यार्थी चार राज्यों में जी०डी०आई० के निम्न स्तर के कारणों का पता लगाने के लिए जनगणना में दिए गए आँकड़ों का विश्लेषण करें।

कार्यबल में महिलाओं की कम भागीदारी के विभिन्न कारणों और देश के विकास के लिए महिलाओं के सशक्तीकरण को प्रोत्साहन देने के बारे में विद्यार्थियों को समझाया जाना चाहिए।

गतिविधि 2: एक केस अध्ययन बनाएँ

विकास की प्रक्रिया में महिलाओं के सशक्तीकरण को उजागर करने हेतु विद्यार्थियों को एक केस अध्ययन बनाने के लिए कहा जा सकता है। समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और वेबसाइट से फोटोग्राफ इकट्ठे किए जा सकते हैं। इसमें शिक्षा, स्वामित्व अधिकार, रोज़गार के अवसर और श्रम बाजार में भागीदारी शामिल है। महिलाओं को बहुतायत रूप से परिवर्तन के अभिकर्ताओं, सामाजिक रूपांतरण के गत्यात्मक प्रोत्साहकों के रूप में देखा जा रहा है जो पुरुषों और महिलाओं दोनों के जीवन बदल सकता है। अनुभवजन्य साक्ष्य ने दर्शाया है कि महिला का मान-सम्मान उसकी स्वतंत्र आय कमाने, घर से बाहर रोज़गार पाने, स्वामित्व का अधिकार पाने और परिवार के भीतर और बाहर निर्णय लेने की क्षमता से बहुत अधिक प्रभावित होता है।

1. आपके विचार से महिलाओं का सशक्तीकरण समाज के विकास के लिए क्यों आवश्यक है?
2. जेंडर समानता सूचकांक (जी०आई०आई०) क्या है?
3. अपने आस-पास महिलाओं की पहचान करें, जिन्हें परिवर्तन के अभिकर्त्ता के रूप में जाना जा सकता है।
4. अपने क्षेत्र में किसी महिला के केस अध्ययन को लिखें और उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक पृष्ठभूमि, वैवाहिक स्थिति, पारिवारिक आय और समाज में उसके योगदान का पता लगाएँ।

C. विभिन्न देशों में विकास

यह तर्क अकसर दिया जाता है कि विकास की अवधि में देश कुछ अवस्थाओं से गुजरते हैं, प्रारम्भ प्राथमिक उत्पादकों के रूप में करते हैं और जब मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं, तो संसाधन बड़े पैमाने पर वस्तुओं के उत्पादन और तृतीयक गतिविधियों मे लग जाते हैं। देशों का निम्न आय, मध्य आय और उच्च आय वर्गों में वर्गीकरण उनके तीन क्षेत्रों में भाग लेने पर आधारित है। निम्न आय वाले देश वे हैं जहाँ आबादी का अधिकांश भाग प्राथमिक उत्पादन में संलग्न रहता है। मध्य आय वाले देशों के मामलें में, द्वितीयक क्षेत्र अधिकतम रोजगार उपलब्ध कराते हैं। उच्च आय वाले देश अपनी आबादी

का उच्च प्रतिशत सेवा क्षेत्र में लगाते हैं।

निम्नलिखित सारणी क्षेत्रों में रोजगार के वितरण को दर्शाती है और अर्थव्यवस्था का निम्न आय, मध्य आय और उच्च आय देशों में वर्गीकरण करती है।

गतिविधि- आँकड़ों की व्याख्या

सेक्टरों में रोजगार का वितरण (प्रतिशत)

देश	कृषि	उद्योग	सेवाएँ
निम्न आय	61	19	20
मध्य आय	22	34	44
उच्च आय	4	26	70

स्रोत- अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, 2009

समूह में आँकड़ों पर परिचर्चा करें और निम्नलिखित का पता लगाएँ-

निम्न आय और उच्च आय वाले देशों में कृषि में संलग्न आबादी के प्रतिशत की तुलना करें।

निम्न आय, मध्य आय और उच्च आय वाले देशों में उद्योग में संलग्न आबादी के प्रतिशत की तुलना करें।

(i) आप प्रथमिक क्षेत्र में संलग्न अधिकतम संख्या में लोग कहाँ पाते है?

(ii) आप तृतीयक क्षेत्र में संलग्न अधिकतम संख्या में लोग कहाँ पाते हैं?

(iii) क्यों निम्न आय वाले देशों में जीवन-निर्वाह करने वाले किसान (केवल अपने लिए ही उत्पादन करते हैं), काश्तकार (जमीन पर अधिकार नहीं) और भूमिहीन श्रमिक (प्रतिदिन लगने वाले बाजार में अपना श्रम बेचते हैं) हैं?

ये नमूने के कुछ प्रश्न हैं जो आँकड़ों पर उठाए गए हैं। कक्षा को समूहों में बाँटा जा सकता है और एक समूह को उनके उत्तर देने के लिए कहा जा सकता है। दूसरे चक्र में समूहों की प्रश्न पूछने और उत्तर देने की भूमिका को परस्पर बदला जा सकता है। सही उत्तरों पर अंक दिए जा सकते हैं और अंत में समूह को श्रेय दिया जा सकता है।

सहपाठी मूल्यांकन– विद्यार्थी एक दूसरे के कार्य का मूल्यांकन कर सकते हैं।

D. विकास में तीन क्षेत्रों- प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों का योगदान

प्राथमिक क्षेत्र

भारतीय अर्थव्यवस्था में **कृषि** एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। वर्ष 1951 में आबादी का 70 प्रतिशत भाग कृषि में संलग्न था। वर्ष 2007-10 तक 46 प्रतिशत पुरुष श्रमिक और 65 प्रतिशत महिला श्रमिक तब तक भी कृषि पर निर्भर थे। अभी भी भूमि पर जनसंख्या का भारी दबाव है, भोजन की माँग भी तेज गति से बढ़ रही है। कृषि में निम्न उत्पादकता अन्य क्षेत्र में विकास को कम कर देती है। यदि अन्य क्षेत्रों को विकसित करना है तो कृषि में बाजार के लिए अधिक उत्पादन करना होगा। पिछले दशक में, सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 1950-51 में 53 प्रतिशत से गिरकर, 1990-91 में 20 प्रतिशत और फिर 2011-12 में 14 प्रतिशत हो गया। पता लगाएँ ऐसा क्यों है?

गतिविधि: निबंध

विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे कृषि क्षेत्र में आने वाली समस्याओं को उजागर करते हुए एक निबंध लिखें।

संकेत

1. कृषि क्षेत्र औद्योगिक वस्तुओं को बाजार उपलब्ध कराता है और विदेशी मुद्रा कमाता है। ऐसा किस प्रकार है?
2. चूँकि भूमि की उपलब्धता सीमित है, हम कृषि उत्पादकता कैसे बढ़ा सकते है?
3. हरित क्रांति

   परिचर्चा में बताएँ कि कैसे हरित क्रांति केवल बड़े किसानों के लिए ही लाभकारी सिद्ध हुई (गरीब और अमीर किसानों के मध्य असमानता का मुद्दा उठाएँ)। समझाएँ कि किस प्रकार अर्थव्यवस्था में स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए हरित क्रांति ने सरकार के भंडार को भरा रखने में मदद की थी?

   कृषि के विकास में महिलाओं के योगदान को शामिल करें।

   एक सप्ताह की अवधि में विद्यार्थी बुलेटिन बोर्ड (पत्रिका पट) पर लगाने के लिए पाँच निबंध छाँट सकते हैं। अन्य विद्यार्थी इन्हें पढ़ सकते हैं।

अनाज के उत्पादन में वृद्धि अधिक उपज देने वाले बीजों (HYVs), उर्वरकों, कीट नाशकों के साथ-साथ जल की आपूर्ति से संभव थी। धनवान किसानों को अधिक उपज देने वाले बीजों, उर्वरकों, कीट नाशकों और सिंचाई सुविधाओं का लाभ मिला।

गतिविधि- एक पैराग्राफ लिखें (300 शब्द)

विद्यार्थी निम्नलिखित पर एक पैराग्राफ लिखें-

क्या आपके विचार से कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए अभी तक उपयोग में लाई जाने वाली कृषि कार्य नीतियों को पुन: परखने की आवश्यकता है? इन संदर्भो में चर्चा करें-

1. भूमि सुधार
2. जोत-क्षेत्रों की सहकारिता और चकबंदी
3. योजना निर्माण में लोगों की भागीदारी शामिल करने वाली संस्थाएँ
4. संस्थागत ऋण
5. समर्थन मूल्य की प्राप्ति
6. कृषि को अनुदान
7. खाद्य सुरक्षा व्यवस्था

विद्यार्थियों को अपने तर्क पूरी तरह लिखित रूप में प्रस्तुत करने के योग्य होना चाहिए। सबसे श्रेष्ठ पैराग्राफ को कक्षा में पढ़कर सुनाया जा सकता है।

द्वितीयक सेक्टर

विनिर्माण (बड़े पैमाने पर उत्पादन) द्वितीयक की एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। यह दो भागों में बाँटी गई है- **पंजीयक** और **अपंजीयक**। पंजीयक विनिर्माण के अंतर्गत इकाइयाँ बढ़ी हैं और इन्होंने सकल घरेलू उत्पाद में योगदान किया है। असंगठित क्षेत्र ने काफी क्षति को झेला है, अत: जनसाधारण के लिए रोजगार पैदा करने के लिए इसको फिर से देखने की जरूरत है।

गतिविधि 1: समाचार पढ़ना और उनका विश्लेषण करना

1. विद्यार्थी एक जैसी खबरों की पहचान कर सकते हैं और उन्हें कक्षा में प्रस्तुत कर सकते हैं।
2. विनिर्माण क्षेत्र के कमज़ोर निष्पादन के कारणों का पता लगाने के लिए परिचर्चा शुरू की जा सकती है।

गतिविधि 2:

शिक्षक विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ जैसे खिलौने, लेखन सामग्री, इलेक्ट्रॉनिक सामग्री कक्षा में ला सकते हैं।

विद्यार्थी प्रत्येक उत्पाद की विस्तृत जानकारी देखकर नोट कर सकते हैं, जैसे-

1. विनिर्माण की तिथि
2. विनिर्माण के सुरक्षा मानदण्ड
3. उत्पादों की गुणवत्ता

ये क्या संकेत देते है?

विमर्श के लिए- क्या वे उत्पाद स्थानीय रूप से बनाए जा सकते हैं? विद्यार्थियों को विनिर्माण क्षेत्र द्वारा झेली जाने वाली समस्याओं को समझने योग्य होना चाहिए।

गतिविधि: समाचार सामग्री का विश्लेषण करना

शिक्षक कक्षा में कोई नई पठन सामग्री दिखाकर विद्यार्थियों से उसे पढ़ने और उसका विश्लेषण करने के लिए कह सकते हैं।

अरक्षित दुर्बल

सहायक पर्यावरण की अनुपस्थिति में भारत स्वतंत्र व्यापार समझौतों (FTAs) में कुछ ज्यादा लाभ प्राप्त नहीं करेगा। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में खुलापन उन देशों को जोड़ने के लिए एक सामान्य धागा रहा है जो देश समकालीन आर्थिक नीति निर्माता इसके स्वतंत्र व्यापार समझौतों की दक्षता पर वाद-विवाद करते हैं। वाद-विवाद का फिर भी स्वागत है क्योंकि व्यापार और संपन्नता में पारस्परिक संबंध उन कारकों को छिपाने का प्रयास करता है जो सकारात्मक भूमिका निभाते हैं। इससे पहले कि भारत स्वतंत्र व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर करें, विद्यमान समझौतों के आर्थिक प्रभाव का अधिक सख्ती से विश्लेषण करने की आवश्यकता है और उन अंतरालों को देखने की भी जरूरत है जो हमें स्वतंत्र व्यापार समझौतों से और अधिक प्राप्त करने में मदद करते हैं।

जगदीश भागवती, संभवत: स्वतंत्र व्यापार के सबसे अधिक जाने माने और बहुत बोलने वाले वकील है, वह एक महत्वपूर्ण बात बताते हैं कि व्यापार एक सुसाध्य बनाने वाली युक्ति है और व्यापार के खुलेपन से लाभ तब प्राप्त किए जा सकते हैं जब पूरक नीतियाँ सही होती है। इस संदर्भ में नीतिनिर्माताओं को जिस मुख्य प्रश्न का उत्तर देने की आवश्यकता है, वह है कि भारत को किन पूरक नीतियों की आवश्यकता है। भारत की आर्थिक नीतियों के दो महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं- विनिर्माण के भाग को लगभग 10 प्रतिशत अंकों से लगभग 25% जी०डी०पी० (सकल घरेलू उत्पाद) बढ़ाना और प्रत्येक वर्ष कार्यबल में जुड़ने वाले 10 करोड़ लोगों को रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराना। लक्ष्य आपस में गुथ जाते है क्योंकि खेत छोड़कर आने वाले युवाओं को काम पर लगाने के लिए विनिर्माण श्रेष्ठतम तरीका है।

आज भारतीय विनिर्माण एक डावॉडोल स्थिति में है। इस पर परिचर्चा हो सकती है कि विनिर्माण को क्या अस्पर्धाकारी बनाता है, लेकिन सही यह है कि पिछले कुछ वर्षों से बात बहुत बिगड़ गई है। बहुत कम सम्भावना है कि विनिर्माण अधिक स्वतंत्र व्यापार समझौतों के परिणामों का तुरंत संभाल पाएगा। यह स्थाई सुरक्षा के लिए तर्क नहीं है, परन्तु सिकुड़ते विनिर्माण क्षेत्र के सामाजिक परिणाम होते हैं। यह अत्यावश्यक है कि सरकार दो मोरचों पर एक साथ कार्य करें। यह अपनी योजनाओं को विनिर्माण के लिए वास्तविकता में ढ़ाले और विनिर्माण में भारत की वर्तमान कमजोरियों को संतुलित करने के लिए भारत के व्यापारिक सहयोगियों के साथ उनके सेवा बाजार खोलने के लिए सख्त मोल-भाव करें।

स्रोत- टाईम्स आफ इंडिया, 7 नवम्बर, 2013

भारतीय विनिर्माण क्षेत्र के सामने कौनसी चुनौतियाँ हैं?

संकेत- एक कारण सड़क, बिजली और दूरसंचार तथा किसी प्रकार की और गुणवत्तापूर्ण आधारभूत संरचनाओं की अनुपस्थिति हो सकती है। भारतीय कंपनियाँ छोटी अथवा असंगठित क्षेत्र में बनी रहती हैं, ताकि कानूनों और करों से बचा जा सके। निम्न उत्पादकता उन्हें पनपने और अपनी इकाई को छोटे और मध्यम उद्यम में उन्नत करने में बहुत कम प्रेरित करती है। विभिन्न ऋण सुविधाएँ जैसे एंजल इंवेस्टर, वेंचर कैपिटल और इंपैक्ट इंवेस्टर्स उद्यमियों को ऋण सुविधाएँ उपलब्ध कराने में अभी भी आरंभिक अवस्था में है।

सेवा क्षेत्र

वृद्धि का क्षेत्रीय संघटन
सकल घरेलू उत्पाद (जी०डी०पी०) में हिस्सा (%)

	2007-12 का औसत
कृषि	15
उद्योग	28
सेवाएँ	56

स्रोत: भारतीय रिज़र्व बैंक, भारतीय अर्थव्यवस्था पर सांख्यिकी की पुस्तक, 2011-12

गतिविधि: आँकड़ों की व्याख्या करना

विद्यार्थियों से कक्षा में ऊपर दिए गए आँकड़ों की व्याख्या करने के लिए कह सकते हैं।

व्याख्या के बाद विद्यार्थियों से यह पता लगाने के लिए कह सकते हैं कि क्या सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं। यदि ऐसा हुआ था, तो क्या हमारे देश को बेरोज़गारी का सामना करना पड़ा था?

संकेत

4. ऊपर दिए गए आँकड़े हमारे देश में आर्थिक वृद्धि के सेवा मार्गदर्शी पैटर्न को दर्शाते हैं। अर्थशास्त्रियों ने बताया है कि सेवा क्षेत्र में तीव्र वृद्धि ने अर्थव्यवस्था को विकास के उच्च स्तर पर पहुँचाया है। परन्तु सेवा मार्गदर्शी वृद्धि के संबंध में उसके टिकाऊपन और लम्बे समय तक वृद्धि पर आपत्ति जताई गई है।

5. सेवा क्षेत्र की वृद्धि के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल प्राप्ति के लिए प्रावधान करने की आवश्यकता है। सूचना प्रौद्योगिकी, सॉफ्टवेयर विकास और वित्त में उच्च कोटि की सेवाओं के लिए उच्च शिक्षा में योग्यता आवश्यक हो जाती है। मध्य स्तरीय सेवाओं जैसे खुदरा व्यापार, होटल और रेस्ट्रॉ सेवाओं को भी श्रम बल के लिए पर्याप्त कुशलता की आवश्यकता होती है। सत्र के अंत में विद्यार्थियों को अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र के बढ़ते योगदान का विश्लेषण करने योग्य हो जाना चाहिए।

E. ग्रामीण विकास

ग्रामीण विकास सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, चूँकि देश की दो-तिहाई जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। जनसंख्या का एक तिहाई हिस्सा अभी भी अत्यन्त गरीबी में रहता है। विभिन्न योजनाओं और नीतियों ने सामुदायिक विकास परियोजनाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों को विकसित करने के प्रयास किए, परन्तु इसने ग्रामीण लोगों को अपनी प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध नहीं कराए। हम अभी भी ग्रामीण-शहरी विभाजन और ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में आबादी का पलायन देख सकते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था की वृद्धि के लिए बीजों, खेत की उत्पादकता बढ़ाने के लिए उर्वरकों और अन्य सामग्री खरीदने के लिए धन की आवश्यकता होती है। कुछ बैंकों ने आसान ऋणों का प्रावधान किया है, परन्तु ग्रामीण लोगों को इससे कोई ज्यादा लाभ नहीं हुआ। सरकार ने इस प्रकार उनकी जीविका की सुरक्षा और रोजगार की गारंठी के लिए आधारभूत संरचना विकसित करने के लिए बहुत सी योजनाएँ शुरू की हैं। कुछ की सूची नीचे दी गई है।

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा)

यह सरकार का मुख्य कार्यक्रम है, जिसका लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में परिवारों की जीविका सुरक्षा बढ़ाना है। इसके लिए एक वित्तीय वर्ष में प्रत्येक परिवार को कम से कम 100 दिन का गारंटी वाला आय रोजगार उपलब्ध कराना है, जिस परिवार के वयस्क सदस्य कौशल रहित श्रम करने को तैयार हों जहाँ एक तिहाई महिलाओं की भागीदारी का अनुबंध हो। मनरेगा वेतन वाला रोज़गार उपलब्ध कराने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन पर भी ध्यान देता है और उनको सुदृढ करता है तथा अकाल, वनोन्मूलन, भू-क्षरण जैसी लम्बी गरीबी के कारणों को उद्‌बोधित करता है तथा संधारणीय (टिकाऊ) विकास को प्रोत्साहित करता है।

ग्रामीण आधारभूत सरंचना और विकास

राष्ट्रीय महिला कोष अनौपचारिक तरीके से छोटे ऋण को उपलब्ध कराता है, जिससे विभिन्न राज्यों के बीच अंनवर्ती लघु ऋण संगठन (IMO) बने। यह जीविका से संबंधित गतिविधियों के लिए ऋण उपलब्ध कराकर गरीब महिलाओं और उनके सशक्तीकरण पर ध्यान देता है।

ग्रामीण आधारभूत संरचना और विकास कार्यक्रम

ग्रामीण शहरी एकीकरण और वृद्धि का समान पैटर्न तथा गरीब और समाज के वंचित वर्ग के लिए अवसरों की उच्च डिग्री प्राप्त करने के लिए है।

भारत निर्माण

भारत सरकार द्वारा 2005-06 में ग्रामीण भारत को मूलभूत सुविधाएँ और आधारभूत संरचना देने के लिए शुरू किया गया, जिसके छह घटक हैं- सिंचाई, सड़कें, मकान, जल आपूर्ति, विद्युतीकरण और दूरसंचार संबद्धता।

प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY)

प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना (पी०एम०जी०एस०वाई०) दिसंबर 2000 में प्रारंभ की गई, जो केंद्र सरकार द्वारा पूर्णतया वित्तपोषित योजना है। इसका उद्देश्य कोर नेटवर्क में डिज़िटल रूप से असंबंधित वासस्थानों को संबद्धता उपलब्ध कराना है। कार्यक्रम मैदानी क्षेत्रों में 500 व्यक्ति और अधिक की जनसंख्या (2001 की जनगणना के अनुसार) और पर्वतीय राज्यों, आदिवासी क्षेत्रों में 250 व्यक्ति और अधिक जनसंख्या वाले सभी वासस्थानों को संबद्ध करने पर लक्षित है।

ग्रामीण पेयजल

ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 73% ग्रामीण वासस्थान सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने हेतु पूर्णरूप से शामिल कर लिए गए हैं, जहाँ वासस्थानों द्वारा कम से कम 40 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन सुरक्षित पेयजल प्राप्त हो।

स्रोत: आर्थिक सर्वे 2012-13

गतिविधि ।- पोस्टर चार्ट

विद्यार्थियों से कहें कि वे ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए उपलब्ध योजनाओं पर पोस्टर चार्ट बनाएँ (विद्यार्थी रेखा चित्रों का उपयोग कर सकते है और रंग भर कर उन्हें बना सकते हैं।)

गतिविधि 2- कोलाज (समुच्चिस चित्र)

विद्यार्थियों को ग्रामीण क्षेत्रों की परियोजनाओं के प्रभावों को उजागर करने के लिए कोलाज बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस प्रकार का एक कोलाज विकसित किया गया है, जिसे नीचे दिया गया है। विद्यार्थियों का आकलन उनके पोस्टर या कोलाज में दी गई जानकारी और प्रदर्शित रचनात्मकता से किया जा सकता है।

संकेत-

- क्या योजनाओं और कार्यक्रमों का लोगों के जीवन पर सदैव सकारात्मक प्रभाव पड़ता है?
- ग्रामीण क्षेत्रों में योजनाओं के कार्यान्वयन द्वारा महिलाएँ और अन्य वंचित समूहों के लोग किस प्रकार प्रभावित होते हैं?
- विद्यार्थियों से पूछें क्या वे कुछ ऐसे मामलों को जानते हैं जहाँ परिवार इस प्रकार की योजनाओं और कार्यक्रमों से प्रभावित हुए हों।
- ऐसी योजनाओं को लागू करने में क्या बाधाएँ आती हैं?

F. संधारणीय (टिकाऊ) विकास के लिए पर्यावरणीय सरोकार

अर्थव्यवस्था और पर्यावरण एक दूसरे पर निर्भर करते हैं और इन्हें संधारणीय विकास के लिए एक दूसरे की आवश्यकता होती है। संधारणीय विकास की संकल्पना को पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन द्वारा प्रकाश में लाया गया। इसमें भावी पीढ़ियों की आवश्यकता और क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने की

बात को समझाया गया है। इसे मानव विकास के संदर्भ में व्यक्त किया गया है, क्योंकि यह व्यक्ति के विकल्प को शामिल करता है और निर्णय लेने में भागीदारी को सहज बनाता है।

अधिक से अधिक विशिष्ट शब्दों में यह गरीबों के लिए इस प्रकार जीविका का प्रबंध करता है कि संसाधनों का विनाश कम से कम होता है, पर्यावरण निम्नीकरण को रोकता है, सांस्कृतिक विघटन और सामाजिक अस्थिरता को रोकता है। यह कृषि की उपज, विनिर्माण और सेवा क्षेत्र को भी इस प्रकार सुनिश्चित करता है कि पर्यावरण निम्नीकरण कम से कम हो। पर्यावरण के टिकाऊपन की दूरदर्शिता को संप्रषित करने के लिए आवश्यक है कि विकास योजना में पर्यावरण सरोकारों को उच्च प्राथमिकता दी जाए।

गतिविधि 1: विवरणिका बनाना

कक्षा को समूहों में बाँटे और प्रत्येक समूह से एक विशेष योजना पर एक विवरणिका बनाने को कहें। विवरणिका को योजना के लक्ष्यों, उद्देश्यों और कार्यान्वयन को उजागर करना चाहिए; इसे लोगों के विभिन्न वर्गों की जानकारी देनी चाहिए जिन पर उनका प्रभाव पड़ने की सम्भावना है। विवरणिका बनाने के बाद प्रत्येक समूह उसे कक्षा में प्रस्तुत करेगा और दूसरे समूह इस पर परिचर्चा कर सकते हैं। यह गतिविधि ग्रामीण विकास के प्रभाव के प्रति प्रतिक्रिया उत्पन्न कर सकता है।

गतिविधि 2: निबंध लेखन

विद्यार्थियों से निम्नलिखित पर 500 शब्दों का निबंध लिखने के लिए कहा जा सकता है।

शहरी नियोजन- कल्पना करें कि आप अपने स्कूल के प्राचार्य हैं। आप स्कूल का पर्यावरण हरा-भरा कैसे बनाएँगे?

जल संरक्षण कार्यक्रम- माना आपके आस-पास के कुछ जलाशय गंदे और प्रदूषित हो गए हैं। उन जलाशयों के प्रदूषण को कम करने के उपाय बताएँ ताकि वह भावी पीढ़ी के लिए भी टिकाऊ बन जाए।

सामुदायिक भागीदारी- सामुदायिक भागीदारी के लिए संधारणीय जल संरक्षण के लिए एक योजना तैयार करें। योजना के लक्ष्यों की पहचान करें और इस पर विचार करें कि इसका कार्यान्वयन कैसे होगा? क्या आप सहमत हैं कि सुरक्षित और स्वस्थ पर्यावरण पाने के लिए सभी की भागीदारी की आवश्यकता है?

G. समावेशी विकास

भारत में विकास का लाभ सभी लोगों जैसे- विशेष रूप से एस०सी०, एस०टी०, अल्पसंख्यकों और शारीरिक रूप से नि:शक्त समूहों तक नहीं पहुँचता। जेंडर असमानता भी एक व्यापक समस्या है, क्योंकि समाज में हो रहे संरचनात्मक परिवर्तनों का उन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। गरीबी कुछ सीमांत समूहों जैसे अनुसूचित जनजातियों में शायद ही कम हुई है। अत: इन समूहों के लोगों को अपने कौशल विकसित करने और विकस की प्रक्रिया में भाग लेने के अवसर दिए जाने चाहिए।

गतिविधि 1: परिचर्चा

'क्या समावेशी विकास में सामाजिक समावेश के साथ वित्तीय समावेश भी या दोनों शामिल है' पर कक्षा में एक परिचर्चा शुरू की जा सकती है। परिचर्चा शुरू करने से पहले विद्यार्थी अपने पुस्तकालय में जाकर अर्थशास्त्र का शब्दकोष देखें और निम्नलिखित पदों के अर्थ का पता लगाएँ- (a) सामाजिक समावेश और (b) वित्तीय समावेश

गतिविधि 2: निबंध

विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए कहा जा सकता है-

- क्या पर्यावरण को हानि पहुँचाए बिना विकास संबंधी गतिविधियाँ लागू की जा सकती हैं?
- क्या पर्यावरण को नष्ट किए बिना गरीबों के लिए जीविका जुटाई जा सकती है?
- क्या आप सहमत है कि विकास के लिए 'जन केंद्रित उपागम' अधिक होने चाहिए?

सभी विद्यार्थियों को निबंध लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। बाद में उन्हें एक दूसरे का निबंध पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

गतिविधि: एक मिनट की वार्ता

विद्यार्थियों को ऐसे सुझाव देने के लिए कहा जा सकता है जिनसे विद्यालय प्रशासन विद्यालय और कक्षा को पर्यावरण हितैषी बनाएँ।

विद्यार्थियों का आकलन उनके द्वारा कक्षाकक्ष को हरित बनाने के लिए दिए गए विश्वसनीय सुझावों के आधार पर किया जा सकता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार देश के भीतर विकास के प्रक्रम के लिए आर्थिक और सामाजिक रूपांतरण अपरिहार्य है। उनको मॉनिटर करने के लिए मानव विकास सूचकांकों के समूह को शामिल किया गया है। यह कार्य चुनौतीपूर्ण है परंतु देशों में आपसी सहयोग से वर्तमान के साथ-साथ भावी पीढ़ी के लिए धारणीय विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

हम विकास को सेन के विचारों के साथ समेकित करते हैं, जब आधारभूत आवश्यकताओं में सुधार होता है, जब आर्थिक प्रगति देश और उसमें बसे लोगों के स्वाभिमान के लिए काफी योगदान करती है, और तब भौतिक उन्नति लोगों के अधिकारों, समताओं और स्वतंत्रताओं को व्यापक बनाती है।

सुझाई गई पठन सामग्री

- पुरी, वी०के०, एस०के० मिश्रा (2013) इंडियन इकोनॉमी, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
- थिरवाल ए०पी० (2011), इकोनॉमिक्स ऑफ डेवलपमेंट, पालग्रेव मैकमिलन बुक्स, एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा प्रकाशित
- भारतीय अर्थशास्त्र विकास, कक्षा XI के लिए एन०सी०ई०आर०टी० की पाठ्यपुस्तक, 2006
- अर्थशास्त्र, कक्षा IX के लिए एन०सी०ई०आर०टी० की पाठ्यपुस्तक, 2006
- चक्रवर्ती सुखमोय (1994), डेवलपमेन्ट प्लानिंग द इंडियन एक्सपीरिएंस, ओ०यू०पी० दिल्ली
- कपिला उमा (अन्य) (2006), प्लानिंग एण्ड रोल ऑफ स्टेट (अन्य नोट्स) इंडियन इकोनॉमिक्स सिन्स इंडिपेन्डेंट

अमृत्य सेन द्वारा लिखित पुस्तकें

- ऑन एथिक्स एण्ड इकोनॉमिक्स, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1987
- डेवेलपमेंट एण्ड फ्रीडम, ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999
- इंडियन डेवेलपमेंट एण्ड पार्टीसिपेशन, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002 (जीन ड्रेज़ के साथ)
- द आर्गुमेंटेटिव इंडियन, लंदन पेंग्यूइन, 2005

‘मुद्रा और साख’ का संप्रेषण

संक्षिप्त परिचय

मुद्रा एक वित्तीय साधन है। यह विनिमय, हिसाब की इकाई और मूल्य के भंडारण के कार्यों को पूरा कर सकती है। मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करती है, जब वह वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के लिए उपभोक्ता और उत्पादक दोनों द्वारा स्वीकार की जाती है। हिसाब (खाता) की इकाई के रूप में हम मुद्रा को एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से करने के योग्य होते हैं। मुद्रा भविष्य में उपयोग के लिए बचाई जा सकती है और इस कारण उसमें मूल्य का भंडार होगा। मुद्रा आपूर्ति का अर्थ है प्रचलन में नगदी और जो धनराशि लोगों के पास और व्यापार के लिए बैंक खातों में हैं। मुद्रा जब वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय में मध्यस्ता करने के लिए उपयोग में लाई जाती है, तो यह विनिमय के माध्यम का काम करती है। वस्तु विनिमय पद्धति में वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान के सदर्भ में अक्षमताएँ रहती हैं, क्योंकि माँगों के दोहरे संयोग की आवश्यकता होती है। मुद्रा हिसाब की इकाई से रूप में काम करती है, क्योंकि वह वस्तुओं, सेवाओं और अन्य आदानों-प्रदानों के बाजार मूल्य को मापने की मानक संख्यात्मक इकाई है। इसे बिना मूल्य खोए छोटी इकाइयों में बाँटने की आवश्यकता है; एक इकाई को किसी भी दूसरी के समतुल्य माना जा सकता हो, और इसका विशिष्ट भार, माप या आकार होना चाहिए। मूल्य का भंडारण कार्य मुद्रा को विश्वसनीय रूप से बचाने और भंडारित करने का काम करता है।

आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा की भूमिका, इसके भिन्न प्रकारों और विविध संस्थाओं जैसे बैंक से इसके संबंधों की चर्चा की जाती है। लोगों द्वारा विभिन्न उद्देश्यों के लिए ऋणों की आवश्यकता होती है। बैंक और दूसरे संस्थान ऋण उपलब्ध कराने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। ऋण उत्पादक निवेश, उच्चतर आय श्रृंखलाएँ और जीने के उच्चतर मानक उपलब्ध कराकर एक अच्छा चक्र उत्पन्न कर सकता है, जो विकास में योगदान के लिए अधिक उत्पादक निवेश की ओर ले जा सकता है। कभी-कभी ऋण/कर्ज गरीबी और ऋण के शिकंजे का दुष्चक्र भी पैदा कर सकता है और गरीबी को बढ़ाता है।

शिक्षण-अधिगम उद्देश्य

‘मुद्रा और साख’ के संप्रेषण के समय शिक्षकों को निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता रहेगी:

- मुद्रा, उसके उद्भव और महत्व की संकल्पना।
- मुद्रा का मूल्य क्यों होता है और यह किस प्रकार विनिमय और विशिष्टीकरण को सहज बनाती है।
- मुद्रा के आधुनिक रूप और उसका बैंक तंत्र के साथ संबंध।
- ऋण की संकल्पना, वे कौन से पक्ष हैं जो कोई किसी ऋण व्यवस्था में दिखाई देते हैं और वे किस प्रकार लोगों को प्रभावित करते हैं।
- ऋण की भूमिका जो विद्यार्थियों को यह अनुभव कराती है कि ऋण लोगों का अधिकार है।

प्रमुख संकल्पनाएँ

A. मुद्रा की उत्पत्ति

प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य सामान्यत: छोटे समुदायों में रहते थे, जहाँ वे जीवित रहने के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहते थे। आदिकालीन समुदायों में सभी वस्तुओं को आपस में साझा किया जाता था। कोई व्यापार अस्तित्व में नहीं था। बाद में

समुदायों के बीच वस्तुओं का विनिमय शुरू हुआ। सबसे पहले पालतू पशुओं के आदान-प्रदान से वस्तु विनिमय प्रारम्भ हुआ। वस्तु-विनिमय में व्यापार करना कठिन हो गया। इसका मुख्य कारण आवश्यकताओं का उभय संयोग पर आधारित होना था। प्रशांत महासागर और भारतीय महासागर में पाई जाने वाली कौड़ियाँ करेंसी के रूप में काम में ली जाने लगीं। ये २०वीं शताब्दी तक कपड़े से लेकर भोजन तक प्रत्येक वस्तु के व्यापार में काम में ली जाती थी। सबसे पहली ज्ञात धातु से बनी करेंसी, जिसने कौड़ियों का स्थान लिया, काँसे और ताँबे से निर्मित थी, इसे चीन ने शुरू किया, जिसका बाद में छेद युक्त सिक्कों में रूपांतरण हो गया था। बाद में चीन ने चमड़े की मुद्रा बनाई और कागज़ करेंसी बनाने में अग्रणी रहा। इससे लोगों को बाजार में व्यापार के लिए भारी धातुएँ ले जाने से छुटकारा मिला।

स्वर्ण मानक: कागज़ की करेंसी को स्वर्ण की कुछ मात्रा के रूप में दर्शाया गया। इससे लोग वस्तुओं या सेवाओं का भुगतान कागज़ के एक टुकड़े से कर पाते थे, जिसका उपयोग बैंक से उसके बदले स्वर्ण लेने या अन्य वस्तुओं या सेवाओं के लिए भुगतान करने हेतु किया जा सकता था। इसे इंग्लैण्ड में वर्ष 1816 में शुरू किया गया और उसके बाद ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र में प्रचलन में आया। स्वर्ण मानक भारी मंदी के साथ नीचे गिर गया। अब कागज़ की मुद्रा को स्वर्ण में बदला नहीं जा सकता था। यह अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान के लिए उपयोग में ली जाती थी। स्वर्ण मानक के अंतर्गत, स्वर्ण की कीमत प्रचलित करेंसी में तय की जाती थी और उस कीमत पर स्वर्ण खरीदा और बेचा जाता था। अन्य मूल्यवान धातुएँ, विशेष रूप से चांदी को भी मौद्रिक मानक के रूप में उपयोग में लाया जाता था। स्वर्ण और चांदी के मानकों का संयोजन द्विधातुवाद कहलाता है।

अधिदिष्ट मुद्रा: जब देशों में आदान-प्रदान बढ़ गया, तो स्वर्ण की कमी के कारण देशों के लिए स्वर्ण मानक का उपयोग करते हुए व्यापार करना कठिन हो गया। इससे कागज़ मुद्रा का प्रारम्भ हुआ। कागज़ मुद्रा का कोई आंतरिक मूल्य नहीं था। इसको केवल जारी करने वाले प्राधिकारी के स्वर्ण आस्था को समर्थन था। इसे कागज़ करेंसी कहा गया। कागज़ करेंसी किसी भी वस्तु और सेवा का मूल्य ग्रहण कर लेती थी, जिसका व्यापार उस देश में हो सकता था जो देश यह करेंसी जारी करता था। मुद्रा का मूल्य प्रबल होता है जैसे-जैसे देश की अर्थव्यवस्था प्रबल होती है। जब तक हम अपनी इच्छा की कोई वस्तु या उससे मुद्रा नहीं खरीद सकते, उस मुद्रा का कोई मूल्य नहीं होता। जब कोई देश बिना यह विचार किए, कि उसके पास क्या वस्तुएँ या सेवाएँ हैं, मुद्रा छाप देता है; तो मुद्रा का मूल्य गिर जाता है। लोग मुद्रा रखना पसंद नहीं करेंगे यदि वह उसी मूल्य की वस्तुएँ और सेवाएँ प्राप्त नहीं कर सकते।

प्लास्टिक मुद्रा: पैसे के लेन-देन के लिए नगदी के स्थान पर कार्ड का उपयोग शुरू किया गया है। प्लास्टिक कार्ड जो बैंक के नोटों के स्थान पर उपयोग में लिए जा रहे हैं, प्लास्टिक मुद्रा कहलातें हैं। यें विभिन्न रूपों में है, जैसे कैश कार्ड (ए०टी०एम० कार्ड), क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, इत्यादि। क्रेडिट कार्ड का आरम्भ 1966 में हुआ जब बैंक ऑफ अमेरिका ने अमेरीकी क्रेडिट ब्रैन्ड स्थापित किया, जो बाद में वीज़ा (VISA) के नाम से जाना गया। इससे उपयोगकर्ता वस्तुएँ और सेवाएँ सीधे खरीद सकता है। बैंक द्वारा खरीदारी के लिए क्रेडिट कार्ड उपयोग कर्ता को कुछ सीमा तक कुछ धन उधार दिया जाता है। कार्ड रखने वाला प्रतिमाह पूरी बकाया राशी का भुगतान कर दे तो जो उसमें उधार की राशि उपयोग में ली है, उसके ब्याज से वह बच सकता है। कैश कार्ड का उपयोग करके मुद्रा बैंक के खाते से सीधा, ऑटोमेटेड टेलर मशीन (ATM) से निकाला जा सकता है। डेबिट कार्ड का उपयोग वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के लिए किया जा सकता है, परन्तु यह उस राशि तक सीमित है जो व्यक्ति के खाते में जमा है।

गतिविधि– भूमिका निर्वाह

यह गतिविधि विद्यार्थियों को मुद्रा के महत्व और इसकी उत्पत्ति के बारे में समझने योग्य बनाएगी।

- आइए, कुछ विद्यार्थियों को विभिन्न भूमिकाएँ जैसे मोची, खाती, डॉक्टर, मछुआरा, कलाकार, रसोइया, इत्यादि, निभाने को कहें। जबकि शेष श्रोताओं के रूप में कार्य कर सकते हैं।

- वे अपने उत्पाद और सेवाएँ बेचने को तैयार हैं और बदले में उन्हें उपयोगी वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदनी हैं। मुद्रा का मूल्य तय करने के लिए कुछ भी नहीं है।
- विनिमय शुरू करने के लिए उन्हें विभिन्न परिस्थितियाँ दें, उदाहरण के लिए–

  "राधा एक खाती/बढ़ई है, जो बीमार हो जाती हैऔर डॉक्टर की सेवाएँ लेना चाहती है। डा. रेखा के पास उसके घर में खाती संबंधी ऐसा कोई भी काम नहीं है जो राधा डाक्टर की सेवाओं के बदले में देना चाहती है। इसके बजाए डॉक्टर को किसी रसोइए/बावर्ची की सेवाओं की जरूरत है। रसोइए रामू को खाना बनाने के लिए बर्तन चाहिए और वह बदले में खाना बना सकता है। मोची को फर्नीचर की आवश्यकता है, उसके लिए वह बर्तन दे सकता है जो उसके पास है। रसोइए और मछुआरे को इन बर्तनों की आवश्यकता है और वे बदले में खाना और मछलियाँ दे सकते हैं।"
- विद्यार्थियों को वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदने और बेचने दें।
- जब उनमें से प्रत्येक कम से कम एक एक लेन-देन कर ले, तो उन्हें परिचर्चा के लिए बुला लें।

परिचर्चा

भूमिका निर्वाह के बाद, एक परिचर्चा उन विभिन्न समस्याओं पर की जा सकती है जिनका सौदा करते समय उनको सामना करना पड़ा। लेन-देन गतिविधि को देखने वाले विद्यार्थियों से कहें कि वे उस प्रकम को समझाएँ और उन समस्याओं को बताएँ जो उन्होंने विनिमय प्रक्रिया में पाई। प्रश्न जैसे– क्या यह प्रक्रिया समय नष्ट करने वाली थी? क्या कभी-कभी उत्पाद को बेचना असम्भव हो जाता था? इत्यादि, पूछे जा सकते है। "आवश्यकताओं का उभय संयोग" होने की आवश्यकता पर चर्चा करें।

मुद्रा की अनुपस्थिति में लेन-देन का नाटक विद्यार्थियों को उस स्थिति की कल्पना करने की कठिनाई दूर करेगा, जब मुद्रा का अस्तित्व नहीं था, शामिल समस्याओं के बहुआयामी विनिमय मूल्य है, इस प्रकार मुद्रा के महत्व को उजागर किया जाता है।

B. मुद्रा का मूल्य

मुद्रा का वास्तविक मूल्य उसके द्वारा खरीदी जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं से निर्धारित होता है। जैसे किसी भी उत्पाद का मूल्य/महत्व होता है क्योंकि उसकी आपूर्ति और माँग सीमित है। इसी प्रकार मुद्रा की आपूर्ति (सप्लाई) भी सीमित और इसलिए उसकी माँग है। लोग मुद्रा रखते है क्योंकि वे जानते हैं कि दूसरों को इसकी जरूरत है और इस कारण इसका उपयोग उनसे वस्तुएँ और सेवाएँ प्राप्त करने हेतु किया जा सकता है। यदि अधिक करेंसी छाप कर मुद्रा को दो गुना भी कर दिया जाए तो भी इससे वस्तुओं और सेवाओं को समर्थन नहीं मिलेगा। इससे लोगों की दशा बेहतर नहीं होगी। मुद्रा का मूल्य कम हो जाएगा और वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतें बढ़ जाएँगी।

गतिविधि– भूमिका निर्वाह को दोहराना

- मुद्रा की संकल्पना से विद्यार्थियों का परिचय कराएँ।
- विद्यार्थियों को पिछली गतिविधि वाली भूमिकाएँ निभाने दें, परन्तु मुद्रा का उपयोग करके।
- वे अपने-अपने उत्पादों का मूल्य रूपयों में तय कर सकते हैं, और लेन-देन में कागज़ के नोटों और सिक्कों को विनिमय में प्रयोग कर सकते हैं।

- भूमिका निर्वाह के बाद परिचर्चा करें।

परिचर्चा करें

कागज़ के नोटों और सिक्कों के मूल्य पर परिचर्चा करें, जो उनके पास थे। उनसे पूछें कि क्या उन्हें अब कुछ अंतर लगा? क्या यह अधिक सुविधाजनक है? प्रत्येक ने किस प्रकार अपनी-अपनी उपयोगी वस्तुओं का मूल्य तय किया? वे क्या करते यदि उनकी वस्तुओं का उपभोक्ता उनके द्वारा तय की गई कीमत देने के लिए तैयार नहीं होता? विद्यार्थी यह जान जाएँ कि विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा को सभी दलों द्वारा भुगतान के साधन के रूप में मान्यता दी गई है। लेखे (हिसाब/खाता) की इकाई के रूप में मुद्रा प्रत्येक वस्तु और सेवा को मापने के लिए सामान्य रूप से स्वीकृत इकाई उपलब्ध कराती है।

विद्यार्थियों को याद दिलाएँ कि मुद्रा लेन-देन (विनिमय) के उद्देश्य से उपयोग में ली जाती है और उसका इसीलिए महत्व है सभी सहमत है कि इसे भुगतान के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। विद्यार्थियो से चर्चा करें कि क्या वे अपनी मुद्रा स्वयं छाप सकते हैं और वस्तुओं के भुगतान हेतु उसे काम में ले सकते हैं- क्यों या क्यों नहीं? मुद्रा के मूल्य की समझ विद्यार्थियों को इस तथ्य पर विचार करने हेतु सक्षम बनाती है कि मुद्रा को कहाँ खर्च किया जा रहा है इस पर निर्भर करते हुए मुद्रा का मान भिन्न हो सकता है। वे इस पर विचार करेंगे कि विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं की कीमत भिन्न होती है। अंतत: विद्यार्थी यह समझ विकसित करते है कि रूपए का मूल्य इस बात से निर्धारित होता है कि रूपया कहाँ खर्च हो रहा है।

क्या आकलन करना है?

गतिविधि और परिचर्चा के समय, शिक्षक को मुद्रा की संकल्पना, विनिमय को सहज बनाने में मुद्रा का क्या महत्व है और मुद्रा के यथार्थ मूल्य की समझ विकसित करना है। वे यह स्पष्ट करने में सक्षम होगें कि क्यों कुछ वस्तुएँ मुद्रा के स्थान पर प्रभावी रूप से काम में ली जा सकती है और कुछ नहीं। जाँच करें कि क्या वे अपने-अपने उत्पादों का मूल्य तय करने में सक्षम हैं और निर्णय लें कि जिन वस्तुओं की उनको आवश्यकता है वे उन वस्तुओं का मूल्य देने को तैयार हैं। उनकी मुद्रा को विनिमय के माध्यम के रूप में मानने की योग्यता, विशेष रूप से मूल्यांकन करने और दी गई परिस्थिति में परस्पर सहयोग करने को सीखने के संकेतकों के रूप में उपयोग में लिया जा सकता है।

C. बैंक और साख

बैंक और दूसरी वित्तीय संस्थाएँ मुद्रा को सुरक्षित रूप से रखने, ग्राहको को चेक लिखने की सुविधा देने, बिलों का भुगतान करने या दूसरों को पैसा भेजने और लोगों को ऋण उपलब्ध कराने का एक स्थान उपलब्ध कराती है। बैंक वित्तीय संस्था के रूप में कार्य करते हैं जो जमा करने के लिए धन स्वीकार करते है और इस जमा राशि को उधार देने के लिए उपयोग में लेते है। इस प्रकार एक ओर बचतकर्ताओं और ऋणदाताओं को और दूसरी ओर ऋण लेने वालों और निवेशकों की कार्रवाइयों का समन्वयन करते है। यह सब निवेश को सहज बनाता है जो एक विकासशील बाजार अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक

भारतीय रिज़र्व बैंक केंद्रीय बैंक है जो अर्थव्यस्था में मुद्रा की आपूर्ति को नियंत्रित करता है। आर०बी०आई० का मुख्य कार्य भारत सरकार की ओर से मुद्रा जारी करना है। यह मौद्रिक नीतियों के संदर्भ में सरकार के सलाहकार के रूप में भी कार्य

करता है। व्यापारिक बैंकों के कार्य को सहजता पूर्वक चलाने के लिए यह क्लिरिंग हाउस उधारदाता के रूप में कार्य करता है। मौद्रिक नीतियों द्वारा देश का यह केंद्रीय बैंक मुद्रा की आपूर्ति और ऋण की उपलब्धता में परिवर्तन लाता है। मुद्रा आपूर्ति में कोई भी बदलाव, खर्च करने, रोज़गार, उत्पादन और कीमतो के समस्त स्तरों को प्रभावित करता है।

वाणिज्यिक बैंक

वाणिज्यिक बैंक बचतकर्ताओं से जमापूँजी लेकर और निवेशकों को उधार देकर वित्तीय मध्यस्तता का कार्य करते हैं। अन्य व्यावसायिक कंपनियों की तरह वाणिज्यिक बैंकों का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना है। बैंक अपने ग्राहकों से जमा राशि को– माँग जमाराशि, आवधिक जमाराशि और बचत जमाराशि के रूप में स्वीकार करता है। माँग जमाराशि, जिसे अकसर चालू खाता कहा जाता है, पैसा देने के लिए सदैव तैयार रहते है और बैंक इस खाते में जमा धन पर कोई ब्याज नहीं देता। आवधिक जमा राशि केवल व्यवासय/ऋण देने के लिए उपलब्ध होते हैं, जबकि बचत जमा राशि को समय-समय पर निकाला जा सकता है। क्रेडिट चेकों, ड्राफ्टों, डेबिट कार्डों, क्रेडिट कार्डों आदि के साधनों के रूप वाणिज्यिक बैंक विनिमय (लेन-देन) के एक सरल माध्यम के रूप में कार्य करते है। जमाराशियों के साथ बैंक ऋण देने का कार्य संपन्न करते हैं।

महिला बैंकों का प्रारंभ– भारतीय महिला बैंक

महिलाएँ विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में जेंडर और जाति आधारित भेदभाव से दबी रहती हैं। वे सामान्यत: संपति के अधिकार से वंचित रहती है, अत: वे ऋण लेने के लिए कोई ऋणाधार नहीं दे पाती। महिला बैंको का प्रारम्भ देश में हाल ही में हुआ है। इनका अग्रिम देयराशि और जमाराशि का व्यवसाय वर्ष 2020 तक 60,000 करोड़ रूपए तक हो जाने का अनुमान है, जब इसका 770 सशक्त शाखाओं का नेटवर्क स्थापित हो जाएगा।

इस प्रकार के महिला बैंकों का प्रयोग दो देश– पाकिस्तान और तंजानिया पहले कर चुके है। पाकिस्तान पहला देश था जिसने महिला क्षेत्रीय बैंको की आवश्यकता को पूरा करने के लिए महिलाओं के लिए अलग से बैंक स्थापित किए। वर्ष 2007 में स्थापित तंजानिया महिला बैंक का ध्यान कम आय अर्जित करने वाली महिलाओं, छोटे व्यवसायों और छोटे तथा मध्यम उद्यमियों पर था। महिलाओं के लिए अन्य विशेष साधन का उदाहरण मिला वर्ल्ड बैंकिंग घाना सेविंग्स एण्ड लोन्स कंपनी लिमिटेट है जो वुमेन वर्ल्ड बैंकिंग ग्लोबल संगठन से संबद्ध है। भारत में कुछ सहकारी बैंक, जैसे श्री महिला सेवा सहकारी बैंक लिमिटेड और मान देशी महिला सहकारी बैंक लिमिटेड है जिन्हें केवल महिलाएँ ही चलाती है।

पूँजी प्राप्त करने में महिला उद्यमियों को प्रतिकूल व्यवसाय और नियामक वातावरण रूकावट डालता है। केवल महिलाओं के लिए चलाया जाने वाला बैंक ऋण लेने के कमियों के मुद्दों को दूर करता है।

भारत में स्वयं सहायता समूह और सुक्ष्मवित्त आंदोलन महिलाओं द्वारा चलाए जा रहे हैं। महिलाएँ पूँजी संबंधी कार्य संभालने में अधिक उत्तरदायी, अनुशासित और विशिष्ट भूमिका निभाती है। भारतीय महिला बैंक केवल महिलाओं को ही ऋण देता है जबकि वह पूरूषों से भी जमाराशि लेने पर विचार कर सकता है।

महिलाओं के लिए महिलाओं द्वारा बैंक चलाना

श्रुति सुसान उल्लास, टी०एन०एन०/22 नवम्बर, 2013, 02.21am, आई०एस०टी०

बैंगलोर– इस बैंक का वातावरण महिलामयी एवं नयापन लिए हुए है। केवल ऐसा नहीं है कि सभी काउन्टरों को महिलाओं ने संभाल रखा है, आने वाली अधिकतर महिलाएँ ही है और प्रबंधक कक्ष से महिला की आवाज आ रही है, परन्तु ऋण के प्रार्थनापत्रों से भी नारीजातीय महक है, जैसे रसोईघर के नवीकरण के लिए।

महिलाओं के लिए भारत के पहले सरकारी बैंक, भारतीय महिला बैंक ने मंगलवार को सात शहरों में अपना व्यवसाय प्रारंभ किया। बैंगलोर में यह बैंक हडसन सर्किल पर, पुलिस स्टेशन के पास, है जो मुख्य रूप से महिलाओं के लिए हैं। निर्माणाधीन भूतल पहले से गतिविधियों से गूँजने लगा है। ताजे पेन्ट की गंध अभी भी हवा में विद्यमान है और महिलाओं का उत्साह मुग्धकारी है। पहले तीन दिनों में बैंक ने 40 खाते खोले और पाँच ऋण स्वीकृत किए।

यद्यपि पुरूष यहाँ अपने खाते खोल सकते है। इसे नियमित बैंक-कार्यो के लिए उपयोग में ले सकते है, महिलाओं को 80:20 के अनुपात में प्राथमिकता दी जाती है। बैंक बचत खातों पर अच्छा ब्याज देता है और स्वयं सहायता समूहों, उद्यमियों और विद्यार्थियों को कम दरों पर ऋण देता है। नव रसोई योजना अपने आप में अनोखी है। आप अपनी रसोई के नवीकरण में कम से कम 50,000 रूपए और अधिकतम 7 लाख रूपए का ऋण ले सकते है। यह सिविल कार्य, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, फर्नीचर, बर्तनों तथा क्रॉकरी की खरीदारी के लिए हो सकता है। सारा ऋण बेस दर के ऊपर 2.5% की आकर्षक ब्याज पर है। परन्तु बैंगलोर शाखा पर अभी तक कोई यह ऋण लेने नहीं आया। अभी तक योजना के बारे में अधिक जागरूकता नहीं है। हमारे लिए चुनौती स्थापित बैंकों के साथ मुकाबला करना है। परन्तु महिलाएँ निश्चित रूप से इस बैंक की ओर आकर्षित होगीं। यह पहली बार मैं देख रहा हूँ कि इतनी महिलाएँ बैंक आ रही है। दूसरे बैंकों में ग्राहक अधिकतर पुरूष होते है। स्वयं सहायता समूहों और गैर सरकारी संगठनों ने आना शुरू कर दिया है। मुख्य प्रबंधक ज्योथी लक्षमी वी०जी० ने कहा:

प्रभा जी०बी० जो शहर में दो ब्यूटी पार्लर चलाती हैं, जैसी महिलाएँ इस संबंध में रोमांचित है, "मैं अपने ब्यूटी क्लिनिक का नवीकरण करना चाहती हूं और यहाँ अधिकारियों को अपने व्यवसाय के बारे में समझाना बहुत आसान है, वे इसे भली भाँति समझते है।"

एग्रीस राठी एम० सहाना, एक उद्यमी हैं, जो निर्यात का व्यवसाय करती हैं– "लोगों का यह मानना रहता है कि पुरूष अच्छा व्यवसाय कर सकते हैं। वे लोगों को अपनी बात जल्द मनवा सकते है। और कभी-कभी प्राधिकारियों से भी काम करा लेते है। बहुत सी महिला उद्यमी लाभों के के बारे में नहीं समझती है और आसानी से निरोत्साहित हो जाती है जब उन्हें कोई धक्का लगता है। यहाँ महिलाओं से बातचीत करना और अपनी जरूरतों को समझाना सरल है।" शाखा ने दो स्वयं सहायता समूहों को ऋण दिए हैं और एक शिक्षा के लिए ऋण दिया है।

सात कर्मचारियों में केवल एक पुरूष हैं। उससे पूछा कि उसे यहाँ काम करना कैसा लग रहा है। ओडिसा के भूपति ने मुस्कराते हुए कहा, "मुझे इस बैंक का हिस्सा बनने पर गर्व है, जो भारत के दूसरे आधे भाग को सशक्त बनाएगा।" एक ऐसे देश में जहाँ महिलाओं के मात्र 26% बैंक खाते हैं, यह शाखा निश्चित रूप से सशक्तिकरण का बोध अनुप्राणित करेगी।

विचारित बिंदु

- आप महिला बैंक के संबंध के बारे में क्या विचार रखते हैं? क्या आपके विचार से वित्तीय उत्पादों के वितरण को जेंडर-विशिष्ट होने की आवश्यकता है? कारण दें।
- और क्या तरीके हो सकते हैं जिनसे हम सशक्तिकरण का बोध अनुप्राणित कर सकते हैं।

D. भुगतान की विधियाँ

विद्यार्थियों को भुगतान के लिए उपयोग में आने वाली विभिन्न प्रकार की मुद्राओं का ज्ञान पहले से हो सकता है। कक्षा में एक विचार मंथन सत्र आयोजित करें, यह पता करने के लिए कि विद्यार्थी भुगतान के तरीकों जैसे चेक, ड्राफ्ट, डेबिट कार्डों, क्रेडिट कार्डों, मनी आर्डर, इत्यादि के बारे में क्या जानते हैं।

गतिविधि– विभिन्न ऋण विकल्पों का पता लगाना

विद्यार्थियों को समूहों में बाँट दें। प्रत्येक समूह को मोहल्लों में जाने दें और लोगों से बातचीत करने दें। वे पैसा उधार देने वालों, दुकानदारों, महिलाओं, इत्यादि से साक्षात्कार कर सकते हैं, यह पता लगाने के लिए कि व्यक्ति को उपलब्ध ऋण के विभिन्न रूप तथा उनके साथ संबद्ध शर्तें क्या हैं। जानकारी इकट्ठी करने के बाद ऋण के परिप्रेक्ष्यों में विद्यार्थियों के उत्तरों को प्रकाश में लाएँ।

चरण 1– विद्यार्थियों से यह पूछते हुए शुरू करें कि वे विभिन्न बैंको में क्या अंतर देखते हैं और ऋण के औपचारिक और अनौपचारिक स्त्रोतों में क्या अंतर है। उनके विचार से कौन-सा उपयुक्त है? वे ऐसा क्यों सोचते है? क्या संपार्श्विक ब्याज दरों और उपलब्ध ऋण की सीमाओं में अंतर है? समूहों के अनुभवों को बोर्ड पर लिखें।

चरण 2– विद्यार्थियों को ऋण स्त्रोत की अपनी पसंद के बारे में बताने के लिए आमंत्रित करें और वे समझाएँ कि उनकी यह पसंद क्यों है। उन्हें अपनी कक्षा के सहपाठियों की पसंदों को सुनने दें।

चरण 3– दी गई विभिन्न पसंदो/विकल्पों और विकल्प चुनने में शामिल समस्याओं, मुद्दों पर एक परिचर्चा करें, जिससे शिक्षार्थी जान सकें कि ब्याज दर, संपार्श्विक, स्वीकृत ऋण राशि और अन्य छिपे शुल्कों को ध्यान में रखना होगा, इससे पहले कि वे ऋण के प्रकार और स्त्रोत के बारे में निर्णय लें।

गतिविध– समूह कार्य

कक्षा को समूह में बाँट दें और प्रत्येक समूह भुगतान का विभिन्न विधियों पर कार्य करेंगे। एक समूह को भुगतान की एक विधि दे दें। प्रत्येक समूह को चार्ट तैयार करने होंगे जो भुगतान की किसी विशेष विधि के मूलभूत लक्षण दर्शाते हो। कब उपभोक्ता भुगतान का वह विशेष तरीका अपनाएँगे, क्या सावधानियाँ रखनी होंगी और बैंक किस प्रकार यह सेवा उपलब्ध कराता है। विद्यार्थियों को उदाहरण विकसित करने दें जहाँ यह भुगतान करने और लेने का सर्वश्रेष्ठ तरीका हो सकता है। विद्यार्थी इसे पूरी कक्षा के सामने प्रस्तुत कर सकते है।

परिचर्चा

भुगतान की विभिन्न विधियों को समुहों द्वारा प्रस्तुत करने के बाद, प्रत्येक विधि के लाभ और हानियों पर चर्चा करें। और इस पर भी परिचर्चा करें कि विभिन्न परिस्थितियों में आप कौन-सी विधि का उपयोग करना पसंद करेंगे।

भुगतान के वैकल्पिक तरीके के रूप में क्रेडिट कार्ड: कैसे और कब उपयोग करें

विद्यार्थियों से पूछें कि उनमें से कितनों ने क्रेडिट कार्ड देखें है। उन्हें इस बात का आश्चर्य हुआ होगा कि कितना आसान है– कार्ड स्वाइप करना और चाही गई वस्तु का भुगतान कर दें। परन्तु क्या वास्तव में ऐसा है? अपने विद्यार्थियों को सीखने दें

कि क्रेडिट कार्ड कैसे उपयोग में लिए जाते है और लोग क्रेडिट कार्डो का उपयोग क्यों करते है। जानकारी दें कि क्रेडिट कार्ड मुद्रा नहीं है, परन्तु इससे आप तत्काल कुछ प्राप्त कर सकते है और उसका भुगतान बाद में कर सकते है। परिचर्चा करें कि क्रेडित कार्ड कैसे कार्य करता है, इन्हे कौन बाँटता है, क्रेडिट कार्ड को उपयोग में लेने के लिए दाम कैसे चुकाना पड़ता है।

बैंक या अन्य व्यापारिक संस्थाएँ क्रेडिट कार्ड जारी करती है, जिससे कार्डधारी व्यक्ति वस्तुएँ और सेवाएँ बिना नगदी का उपयोग किए खरीद सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि आप उपयोग में लेने के लिए वस्तुएँ खरीद सकते है भले ही आपके पास भुगतान के लिए मुद्रा न हो। उसका भुगतान क्रेडिट कंपनी (बैंक) द्वारा हो जाता है। बाद में आपको आप द्वारा खरीदारी के बिल का भुगतान क्रेडिट कार्ड कंपनी को करना होगा। यदि आप पूरे बिल का भुगतान कर देते है, तो आपकों कुछ भी अतिरिक्त भुगतान नहीं करना होगा। परन्तु मान लें कि आपके पास वापस भुगतान के लिए पर्याप्त पैसे नहीं है, तब आप ऐसा कर सकते है कि क्रेडिट कंपनी द्वारा बिल में दी गई न्यूनतम आवश्यक राशि का भुगतान कर दें और पूरी राशि का भुगतान बाद में करें। यहाँ चूँकि क्रेडिट कार्ड कंपनी आपको एक राशि ऋण पर दे रही है, आपको उस राशि पर ब्याज देना होगा।

E. बैंक कैसे कार्य करते है?

बैंक पैसा उधार देकर कमाई करते है। वे वह धन उधार देते है जो ग्राहकों ने जमा कराया होता है। ग्राहकों द्वारा बचत के लिए जमा कराए गए पैसे को अन्य लोगों को ऋण के रूप में उसका एक भाग उपलब्ध कराया जाता है। लोग जो ऋण लेते है उन्हें ऋण की अवधि के लिए ब्याज देना पड़ता है। ब्याज दरें निवेशकों, उपभोक्ताओं और सरकारी एजेंसियों के पैसा उधार लेने और बचत करने को प्रभावित करती है। निवेशकों को अपने वर्तमान उपभोग को स्थगित करने के पुरस्कार के रूप में ब्याज़ दरें उपलब्ध करायी जाती है। जब बैंक पैसा उधार देते हैं तो वह उधार लेने वाले से ऋण पर ब्याज दर वसूल करते है। ब्याज दर उस धन की कीमत है जो उधार लिया जाता है या बचाया जाता है। ब्याज दरें जोखिमपूर्ण ऋणों पर अधिक होती है क्योंकि जोखिमपूर्ण ऋणों के वापस भुगतान के चूकने के संयोग अधिक होते है।

नकदी रिज़र्व अनुपात (C.R.R.), रेपो दर और विपरीत रेपो दर

व्यापारिक बैंकों को अपनी जमा राशियों का एक भाग केन्द्रीय बैंक के पास रखना पड़ता है। नकदी रिज़र्व अनुपात वह राशि है जिसे बैंकों को केन्द्रीय बैंक के पास रखना पड़ता है। केन्द्रीय बैंक अपनी मौद्रिक नीति के भाग के रूप में नकदी रिजर्व अनुपात को बढ़ा देते है जब मुद्रा की आपूर्ति घटानी होती है और इसके विपरीत भी। व्यापारिक बैंकों को जब कोष में धन की कमी का सामना करना पड़ता है, तो जिस दर पर केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों को पैसा उधार देते है, वह रेपो दर होती है। रेपो दरों को मौद्रिक माप के रूप में उपयोग में लेते हुए, केन्द्रीय बैंक मुद्रास्फीति पर नियंत्रण करते है। मुद्रास्फीति वाली अवधि में अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति कम करनी पड़ती है। रेपो दर में बढ़ोतरी व्यापारिक बैंकों के लिए केन्द्रीय बैंक से पैसा उधार लेने के लिए अवप्रेरक का कार्य करती है और इस कारण वे अपने उधार को सीमित कर देंगे। इससे अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति कम हो जाएगी। मुद्रास्फीतिक दबाव के समय केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों को अधिक धनराशि उपलब्ध कराएँगे ताकि वे अधिक ऋण देने में सक्षम हो सके। इससे अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति बढ़ेगी, जिसके अनुसरण में वस्तुओं और सेवाओं की माँग होगी, कीमतों और आर्थिक वृद्धि में बढ़त होगी। केन्द्रीय बैंक भी व्यापारिक बैंकों से पैसा उधार लेने के लिए सहारा लेगा। जिस दर से केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों से ऋण लेता है, उसे विपरीत रेपो दर कहते है। जब विपरीत रेपो रेट अधिक होता है, तो व्यापारिक बैंक केन्द्रीय बैंक को अधिक पैसा उधार देंगे। विपरीत दरों को बढ़ा दिया जाता है जब अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति को कम करना होता है। केन्द्रीय बैंक रेपो और विपरीत रेपो दरों को नकदी समायोजन सुविधा के एक भाग के रूप उपयोग में लेता है।

नकली नोटों की जाँच कैसे करें?

कोई भी करेंसी नोट जिससे असली करेंसी नोटों के वास्तविक गुण नहीं होते, जाली या नकली नोट कहलाते है। एक असली करेंसी नोट के कुछ विशिष्ट लक्षण होते है। नोट को देखकर, छूकर और टेढ़ा करके पहचाना जा सकता है।

देखें: http://www.paisaboltahai.rbi.org.in/1000.htm

बिज़नेस लाइन

रूपए के नकली नोट भारत और विदेश में बढ़ते जा रहे हैं।

29 मार्च, 2013

यह एक लड़ाई है जो बैंक के टेलर जीतते दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने 2010-11 में 4.4 लाख नोटों की तुलना में 5.2 लाख नोटों का पता लगाया। प्रतिशत के सदंर्भ में आर०बी०आई० के आँकड़े दिखाते हैं कि 2011-12 में इससे पिछले वर्ष 2010-11 की तुलना में जाली नोटों की 19.6 प्रतिशत वृद्धि पाई।

ज्ञात रहे कि जाली नोटों को निरोत्साहित किया जाता है। पिछले सप्ताह आर०बी०आई० के शोध पत्र के अनुसार, 2007-08 और 2011-12 के बीच प्रतिवर्ष औसतन 3.9 लाख नकली करेंसी नोट पाए गए थे। अधिक उद्यमी विदेशों में नकली नोट डाल रहे हैं। आर०बी०आई० के आँकड़े दर्शाते है कि वर्ष 2011 में पिछले वर्ष की तुलना में स्विटज़रलैण्ड के बैंकिंग तंत्र में जब्त किए गए नोटों का मूल्य तिगुना हो गया।

जब्त किए गए जाली नोटों की संख्या की दृष्टि से भारतीय रूपया शिखर पर नहीं है, बैंक के लोगों ने यू०एस० डॉलर, यूरो और स्विस फैंक नोट ज्यादा पकड़े हैं। लेकिन ये जब्त किए गए ब्रिटिश पौंड, रेनमिनली, रूबल रैंड क्लोनों की तुलना में काफी अधिक थे। वर्ष 2009 तक, स्विटज़रलैंड में पाए गए भारतीय नकली करेंसी नोटों की संख्या अन्य करेंसियों की तुलना में अति सूक्ष्म थी। परन्तु 2010 में जब्त किए गए नकली नोटों की संख्या 212 और 2011 में पाँच गुनी होकर 1,144 तक पहुँच गयी।

विचारणीय बिन्दु

- लोग नकली/जाली करेंसी नोट क्यों छापते हैं?
- क्या होगा यदि हम सभी जब जरूरत हो नोट छापना शुरू कर दें।

गतिविधि– बात करें और भ्रमण करें

1. किसी स्थानीय बैंक का भ्रमण आयोजित करें और कुछ रोचक तथ्यों का पता लगाएँ जैसे,
   - दिन भर में जमा किए गए विभिन्न चेकों का बैंक क्या करता है?
   - ड्राफ्ट किसी चेक से किस प्रकार भिन्न होता है?
   - ड्राफ्ट जारी करने का तरीका सीखें।
   - बैंक में विभिन्न पटल (काउंटर) कौन से होते हैं?
   - आप चेक कैसे जमा करते हैं और पे-इन-स्लिप कैसे भरते हैं?

- पैसा निकालने का फार्म (विद्ड्राल फार्म) और पासबुक के उपयोग जानना।

2. बैंक की कार्य प्रणाली और दी जाने वाली विभिन्न सुविधाओं जैसे क्रेडिट कार्ड, ए०टी०एम० कार्ड, इत्यादि को बताने हेतु बैंक के अधिकारियों को आमंत्रित करें।

मुद्रा और ऋण से संबंधित अवधारणाओं और बैंक किस प्रकार कार्य करते हैं, की समझ विद्यार्थियों को उनके दिन-प्रतिदिन के जीवन में मदद करेगी। विद्यार्थियों को आर्थिक जीवन की पक्की समझ देने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ विकसित की जा सकती है।

क्या आकलन करें?

विद्यार्थी बैंक की कार्यप्रणाली और किस प्रकार बैंक लोगों की जरूरतों को पूरा करने में मदद करते हैं, उस पर अपनी समझ बनाते है। शिक्षक यह बताने की उनकी योग्यता का आकलन कर सकती है कि दी गई परिस्थिति में भुगतान का श्रेष्ठ तरीका कौन है और इसे कैसे काम में लिया जाता है। पुन: भुगतान की क्षमता से अधिक क्रेडिट कार्ड की कठिनाइयों को सुस्पष्ट करने की उनकी क्षमता, आवश्यकताओं के मध्य विकल्प तय करने की क्षमता, वित्तीय साक्षरता के सूचक है।

F. आई०सी०टी० (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) समर्थ बैंक व्यवसाय

बैंकिग उद्योग चुम्बकीय स्थाई लक्षण पहचान के तरीके और ए०टी०एम० द्वारा ऑनलाइन बैंकिग के विकास से बहुत पहले से आई०सी०टी० (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) का प्रयोग कर रहा है। अब इसने अपने आई०सी०टी० के उत्पादों जैसे स्मार्ट कार्डों, टेलीफोन बैंकिग, एम०आई०सी०आर०, इलेक्ट्रॉनिक विधियाँ, स्थानांतरण, इलेक्ट्रॉनिक आँकड़े विनिमय, इलेक्ट्रॉनिक होम और ऑफिस बैंकिग के उपयोग को और आगे विस्तारित किया है। यह ग्रामीण वित्तीय समावेशन के लिए चौथरवा चुनौतियों- उपलब्धता, वहनीयता, जागरूकता, और सुलभता पर काबू पाने में मदद करती है। ऑनलाईन बैंकिग के समय ऐसे उपाय किए गए है कि ग्राहकों को कंम्प्यूटर हैकर्स का शिकार होने से बचाया जा सके। ऑन लाइन बैंकिंग का उपयोग कर, ग्राहक खाते में शेष धन का पता लगा सकते हैं, खातों के मध्य धनराशियाँ स्थानान्तर कर सकते हैं, बिल भर सकते हैं, बचत खातों की जाँच कर लेन-देन को देख सकते हैं। यह ग्राहक को दिन में 24 घंटे और यहाँ तक कि सप्ताह में सातों दिन सेवाएँ प्राप्त करने में मदद करता है। जब व्यक्ति ऑनलाइन बैंकिग का उपयोग करता है तब उसे बैंक तक जाने का झंझट भी नहीं रहता। आई०सी०टी० से बैंकों की कार्यवाही की लागत भी कम हो जाती है, जिससे ग्राहकों के लिए लेन-देन की लागत भी कम हो जाती है। भिन्न प्रकार से सक्षम लोगों के लिए इंटरनेट बैंकिंग सर्वश्रेष्ठ समाधान है।

बैंकों की वेबसाइट ग्राहकों की मदद के लिए प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं में भी सामग्री उपलब्ध करा रही है। यूनीकोड का उपयोग सभी के लिए बैंकिंग सुविधाएँ सुनिश्चित करने में मदद करेगा। दृश्य जानकारी को श्रव्य जानकारी के साथ मिला लेना चाहिए।

द हिन्दु

चेन्नई, 9 दिसम्बर, 2012

अद्यतित: 10 दिसम्बर, 2012, 03.50 IST

नि:शक्त लोगों के लिए कोई बैंक खाता नहीं- केस अध्ययन

नियम कहता है कि बैंक "बौद्धिक और मनोसामाजिक नि:शक्तता" युक्त लोगों के लिए खाते खोलने के लिए मना कर सकता है।

शारीरिक, बौद्धिक और मनोसामाजिक नि:शक्तताओं वाले लोगों को बैंक खाते खुलवाने का मुद्दा बहुत अस्पष्ट है। जब राजीव रंजन ने बैंक खाते के लिए आवेदन दिया, तो बैंक ने उसे यह सुविधा देने से साफ-साफ मना कर दिया। राजीव, एक व्यस्क है और विद्यासागर में नि:शक्तता कानून (डी०एल०यू०) का समन्वयक है। उन्होंने उसे नियम-पुस्तक दिखाई। नियम कहता है कि बैंक "बौद्धिक और मनोसामाजिक नि:शक्तता युक्त लोगों को खाते खोलने के लिए मना कर सकता है। राजीव का मामला कोई अकेला नहीं है, शारीरिक, बौद्धिक और मनोसामाजिक नि:शक्ताओं वाले लोगों के लिए बैंकों में खाते खोलने का मामला बहुत अस्पष्ट है।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस पर, नि:शक्तता अधिकार गुट ने इस गंभीर समस्या को फिर से सामने लाने का निर्णय लिया। मानदंड ये हैं कि इस प्रकार के व्यक्ति केवल संयुक्त खाते खोल सकते हैं, एक संरक्षक के साथ, जो चेकों पर हस्ताक्षर करने के साथ-साथ खाते को चलाएगा, राजीव स्पष्ट करता है "यही समस्या अनुबंध अधिनियम के साथ है, जो भेदभाव पूर्ण है। यही नियम डाकघरों में भी लागू है और डाकघरों में कुछ श्रेणियों के नि:शक्त लोगों को सेवाएँ देने से मना करने के मामले हुए हैंए"उसने आगे कहा।

अभी हाल में वेदिवेलन, विद्या सागर का एक विद्यार्थी जो 18 वर्ष से ऊपर था, उसने पोस्टल एफ०डी० के लिए आवेदन किया था। परन्तु अधिकारियों ने उसे इस कार्ड को जारी करने के लिए मना कर दिया। स्मिता ने स्पष्टीकरण दिया कि "वे (अधिकारी) इसको सुनिश्चित नहीं करते कि प्रार्थी स्वयं बैंक खाते का संचालन कर सकता है या नहीं"। हमें प्राय: यह कारण दिया जाता है कि कहीं खाते का दुरूपयोग न हो जाए। परन्तु हम अपने खाते के संचालन की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार हैं, जैसे कि अन्य लोग।

"डी०एल०यू० की मीनाक्षी बी० बताती है कि सरकार की नकदी के लाभकारी तरीकों में जमा कराने की कल्याणकारी योजनाओं से अब यह और महत्वपूर्ण हो गया है कि व्यक्ति का एक बैंक खाता हो और उसे वह स्वयं चलाए। सरकार द्वारा वितरित किया जाने वाला मासिक निर्वाह भत्ता भी बैंकों में जमा होता है। विद्यासागर के विद्यार्थी, जिनमें से बहुतों ने अपना अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू किया है, अभी भी उन्हें बैंक ऋण प्राप्त करने और अपने नामों से व्यवसाय पंजीकृत कराने में कठिनाई होती है।" स्मिथा स्पष्ट करती है कि "सब कुछ अभिभावक के माध्यम से करवाना पड़ता है, जबकि वे ऐसा करने में समान रूप से सक्षम हैं।"

यह भी ज्ञात हुआ है कि राष्ट्रीय न्यास अधिनियम (ऑटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी, मानसिक मंदता और बहु नि:शक्ताओं के लिए) इकाई द्वारा एक पत्र व्यवहार की पालना में आर०बी०आई० ने बैंकों को इस परामर्श के साथ एक परिपत्र भेजा कि बैंक खाते खोलने/संचालन करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम का ऊपर दिए गए अधिनियम के अंतर्गत जारी संरक्षण प्रमाणपत्रों पर भरोसा करें। साथ ही, यह नि:शक्त लोगों की विभिन्न श्रेणियों के लिए बैंकों में ग्राहक सेवाओं को सुधारने की अनुशंसाएँ करता है।

फेडेरेशन ऑफ तमिलनाडु फिज़िकली हैंडीकैप्ड ऐसोसिएशन के उपाध्यक्ष, टी०एम०एन० दीपक कहते है कि यह कभी-कभी शारीरिक रूप से नि:शक्त लोगों के लिए भी लागू किया जाता है। "अभी हाल ही में, एक शारीरिक रूप से नि:शक्त व्यक्ति को खाता खेलने से रोक दिया गया। अक्सर ए०टी०एम० और बैंक भी पहिएदार कुर्सी का उपयोग करने वाले के पहुँच से बाहर होते है, वे इन सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पाते।फिर ये कैसा समावेश है।"

मिनाक्षी इसी दिशा में कहती हैं, "मुझे भी ए०टी०एम० कार्ड नहीं देते क्योंकि मैं बैसाखियों का उपयोग करती हूँ। तर्क यह है कि मैं ए०टी०एम० तक पहुँच नहीं सकता, परन्तु पहुँचना संभव कराने पर कोई बहस नहीं होती।" परन्तु नि:शक्तता अधिकार लॉबी अब इस पर चुप बैठने वाली नहीं है। नि:शक्तता दिवस पर, पिछले सप्ताह के प्रारम्भ में चेन्नई के भारतीय स्टेट बैंक की कुछ शाखाओं में परस्पर-निर्भरता बूथ स्थापित किए गए थे।

आगे इंक्लुसिव प्लैनेट के राहुल जैकब चेरियन कहते हैं कि टीम आर०बी०आई० के वर्तमान नियमों का

अध्ययन, और उनका अंतर्राष्ट्री मानकों से तुलना कर रही है और पता लगाया जा रहा है कि सुधार लाने के लिए क्या किया जा सकता है।

संभवत: जब ये सुधार हो जाएँगे, तो वास्तव में राजीव स्वयं चेक जारी कर सकता है। आज उसे अपने साथी पर निर्भर रहना पड़ता है जो उसके लिए संयुक्त खाते का संचालन करता है।

विचारणीय बिन्दु:

- भिन्न रूप से सक्षम (नि:शक्तता युक्त) लोगों के लिए बैंकिंग सुविधाओं का न होना आपको कैसा लगता है?
- इन्हें मदद देने के लिए आपके विचार से क्या उपाय संभव हो सकते हैं?
- बैंक क्या उपाय कर सकता है?

G. ऋण

ऋण का अर्थ उस धनराशि से है जो कोई बैंक या दाता उधार दे सकता है। केन्द्रीय बैंक यह सुनिश्चित करता है कि मुद्रा और ऋण की वृद्धि न तो बहुत धीमी हो और न बहुत तेजी से हो। जब ऋण की आपूर्ति बहुत धीमी होगी, तो निवेशक और ऋण लेने वाले निवेश करने या खरीदारी करने वालों को पर्याप्त धन प्राप्त करने में कठिनाई होगी। इससे मंदी आएगी, एक ऐसी अवधि जिसमें आर्थिक गतिविधियों में कमी आती है और बेरोजगारी बढ़ जाती है। उच्च मुद्रा और ऋण आपूर्ति का परिणाम मुद्रास्फीति हो सकता है, जहाँ कीमतों के स्तर में एक स्थाई और तीव्र बढ़त होती है। मंदी और मुद्रास्फीति अवधियों दोनों का अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अत: अस्थायीत्व की इन परिस्थितियों को रोकने के लिए, देश का केन्द्रीय बैंक मुक्त बाजार कार्रवाइयों और ऋण नियंत्रणों द्वारा मुद्रा और ऋण की माँग और आपूर्ति की परिस्थिति को स्थाई बनाने का प्रयास करता है।

गतिविधि- समूह कार्य

विद्यार्थियों से समूह बनाने को कहें जो बैंक के रूप में हो और दूसरे विद्यार्थी बैंक मैंनेजर को विभिन्न कार्यों के लिए ऋण के लिए आवेदन कर सकते हैं। प्रत्येक को अपनी संपत्तियों के विस्तृत विवरण देने होंगे। अब बैंक प्रबंधन (विद्यार्थियों का समूह) को निर्णय लेना होगा कि क्या वे ऋण दें, ग्राहकों से किस प्रकार की प्रतिभूतियाँ स्वीकार की जा सकती है।

ऋण के औपचारिक और अनौपचारिक स्त्रोत

ऋण के औपचारिक स्त्रोतों में व्यापारिक बैंक, सहकारी समितियाँ, इत्यादि आते है, जो सरकार द्वारा पंजीकृत किए जाते हैं और सरकार के नियमों की पालना करते हैं। ये देश के केन्द्रीय बैंक द्वारा निरिक्षित और नियंत्रित किए जाते हैं। ब्याज की दरें तुलनात्मक रूप से कम होती है और ये समाज कल्याण के उद्देश्य से कार्य करते हैं, ऋण देने वाले मित्रों, रिस्तेदारों आदि जैसे अनौपचारिक ऋण स्त्रोतों के मामले में, यह मौद्रिक प्राधिकारियों द्वारा नियंत्रित नहीं होते और अधिकतर सरकार के नियंत्रण से बाहर होते हैं। लाभ का लक्ष्य रखने वाले और अनियंत्रित ये ब्याज की ऊँची दरें वसूल करते हैं।

गतिविधि- बैंक सेवाओं पर परियोजना कार्य

विद्यार्थी अपने क्षेत्र के बैंक का सर्वे कर ज्ञात करें कि कौन-सा बैंक ब्याज दर, ऋण सुविधा और सेवाएँ प्रदान करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। लोगों के जीवन पर बैंक के प्रभाव का पता लगाएँ। विद्यार्थियों को एल०आई०सी०, राष्ट्रीय बचत योजनाओं और निजी बैंकों, इत्यादि के पैम्फ्लेट्स/लीफलेट्स पड़ने दें और विस्तृत जानकारी पर परिचर्चा करें।

ऋण का फन्दा और अनौपचारिक ऋण संबंधी मुद्दे

बड़ी संख्या में किसान और छोटे निवेशक ऋण के अनौपचारिक स्त्रोतों पर निर्भर करते हैं, क्योंकि यह आसानी से उपलब्ध हो जाता है और उन्हें अन्य जानकारियों का अभाव रहता है। औपचारिक स्त्रोतों का कड़ी प्रक्रियाओं और व्यवस्थाओं के कारण के अकसर ऋण के अनौपचारिक स्त्रोतों की शरण लेते हैं, जहाँ उधार देने के आसान अधिक लचकीले तरीके होते है। इससे छोटे और सीमांतक किसानों और निवेशकों पर ब्याज का बहुत अधिक भार पड़ जाता है। कृषि के व्यावसायीकरण और आधुनिकीकरण के कारण ऋण की आवश्यकताएँ बढ़ गई है। जब उन्हें कई बार कहीं और से ऋण नहीं मिलता तो उन्हें अनौपचारिक स्त्रोतों की मदद लेनी पड़ती है। पैसा उधार देने वाले कच्चा माल/उर्वरक बेचने वाले, उत्पाद खरीदने वाले या उस भूमि के मालिक हो सकते है जिस पर किसान निर्भर है। यह स्थिति को और दुरूह बना देता है क्योंकि किसान बिना किसी शिकायत के उन पर निर्भर होने के लिए मजबूर हो जाते हैं। छोटे और सीमांतक किसान और निवेशक अनौपचारिक ग्रामीण ऋण बाजार की शरण में जाना जारी रखते है, क्योंकि वर्तमान वित्तीय संस्थाएँ अपनी ऋण देने की गतिविधियों को कृषि क्षेत्र को उधार देने के अधिक जोखिमपूर्ण क्षेत्रों की ओर जाने से रोक देती है। यद्यपि ब्याज दरें बहुत अधिक होती हैं, फिर भी अनौपचारिक स्त्रोत वापस भुगतान के लिए समय की पाबंदी पर जोर नहीं देते, जैसा कि बैंक और सहकारी समितियाँ करती हैं। शादी और मुकदमें जैसे उद्देश्यों के लिए, बिना किसी जमानत/ऋणाधार के वे अनौपचारिक स्त्रोतों से उधार ले लेते है। ऋण के अनौपचारिक स्त्रोतों में ऋण की राशि भी अधिक उपलब्ध रहती है। वित्तीय साक्षरता की व्यापकता के कारण, वे वित्तीय निर्णयों से जुड़े लाभों और खतरों को कम समझते हैं। लोगों को बैंकों और छोटी वित्तीय संस्थाओं की सेवाओं के बारे में जानकारी कम होती है।

सुक्ष्मवित्त

छोटे किसानों और उद्यमियों को सुक्ष्मवित्त में रूप में वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती है, जिनकी पहुँच बैंकिंग और संबंधित सेवाओं तक नहीं हो पाती। भारत में सुक्ष्मवित्त क्षेत्र ने 1990 के दशक से बहुत अधिक प्रगति की है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेश का प्रसार हुआ है। देश में मुख्य सुक्ष्मवित्त कार्यक्रम के रूप में व्यापारिक बैंकों द्वारा लागू नावार्ड (2012), स्वयं सहायता समूह (एस०एच०जी०), क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और सहकारी बैंकों का उदय हुआ। परन्तु 2010 में आन्ध्रा सुक्ष्मवित्त के संकट के परिणाम स्वरूप सुक्ष्मवित्त संस्थाओं (एम०एफ०आई०) को नियंत्रित करने का निर्णय लिया गया। इसमें व्यक्तिगत ऋणों पर ब्याज शुल्कों में पारदर्शिता, सीमांत आवरण और ब्याज आवरण, शिकायत सुधार तरीकों को लागू करना, इत्यादि शामिल थे। मैलेगम समिति रिपोर्ट (आर०बी०आई० 2011), माइक्रो फाइनेंस इंस्टीट्यूशन (विकास और नियमन) बिल, 2012 स्पष्ट करता है कि रिजर्व बैंक, बिना किसी कानूनी ढ़ाँचें के, एम०एफ०आई० क्षेत्र का सम्पूर्ण नियंत्रक होगा।

सोनाली द्वारा दिए गए ऋण ने सिराज़गंज शीतल पटी निर्माताओं को बचाया

मो. मज़दुल हक सिराज़गंज से वापस लौटै हैं। सिराज़गंज में चाडपुर गाँव के सैकड़ों शीतल पटी निर्माता गरीबी से बाहर निकल आए हैं। इसके लिए राज्य द्वारा संचालित सोनाली बैंक को जमानत मुक्त ऋण देने के लिए धन्यवाद। बुनकर कहते हैं कि ऋण के शिंकजे और अत्याधिक गरीबी जैसी विषमताओं के होते हुए भी वे सदियों पुराने व्यवसाय से चिपके हुए है। पटी पल्ली के एक बुनकर नारायण चन्द्र ने इस संवादाता को बताया कि वह अपनी जीविका को बनाए रखने के लिए ऊँची ब्याज दर पर छोटे ऋण गैर सरकारी संगठनों से लेता था। "सोनाली से प्राप्त ऋण ने हमें बचा लिया।" श्री चन्द्र ने कहा जिन्हें 30,000 रूपये का ऋण बैंक से प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि छोटे ऋणदाताओं की ऊँची ब्याज दरों ने इस क्षेत्र के अस्तित्व को संकट में डाल रखा था, परन्तु सोनाली के हस्तक्षेप ने इसे पुनर्जीवित करने में बहुत मदद की है। एक 65 वर्षीय बुनकर, मोनोरोंजन दत्तो ने फाइनेन्सल एक्सप्रेस (एफ०ई०) को बताया कि इस गाँव में बहुत से परिवार पटी बनाने के व्यवसाय में शामिल हैं और देश के विभिन्न भागों से व्यापारी यहाँ फुटकर कीमत पर पटी खरीदने आते हैं। बैंक से 20,000 रूपये का ऋण लेकर, वह बहुत प्रसन्न हैं क्योंकि इसकी ब्याज दर बहुत कम है, ऐसा मिस्टर दत्तो ने कहा। एन०जी०ओ० 10,000 रूपए के ऋण पर 250 रूपए ब्याज को लेता है और 46 सप्ताहों में इसका भुगतान हो जाना चाहिए, अधिकारी ने कहा, परन्तु बैंक ऋण 29 माह में लौटाया जा सकता है, जो बुनकरों के लिए बहुत लचीला है, उसने आगे कहा। पटी पल्ली के एक अन्य बुनकर, दुलाल चन्द्र मौमिक ने एफ०ई० को बताया कि वे धन की कमी के कारण गर्मियों के मौसम में घरेलू माँग को पूरा करने में असफल रहे। जिनके पास थोड़ा धन होता है, वे कम कीमत पर माल बेचते हैं, इससे उनके लिए छोटे ऋण दाताओं को साप्ताहिक किस्तें देनी कठिन हो जाती है। अत: हमें बैंक से मदद चाहिए, उसने कहा। पटी की गुणवत्ता पर निर्भर करते हुए एक पटी 300 रूपये से 1500 रूपए के बीच बिकती है और प्रत्येक पटी से बुनकर को 150 रूपए का लाभ होता है, उसने कहा। क्योंकि बुनकरों की घरेलू बाजार से उचित कीमत नहीं मिल सकती, उन्होंने सरकार से निर्यात को बढ़ावा देने की सहायता माँगी। सोनाली बैंक की एक निदेशक जन्नत आरा हेनरी ने एफ०ई० को बताया कि यद्यपि बैंक ने इस पहल को एक प्रयोग की तरह लिया था लेकिन अब वे इस कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर ले जाएँगें। "हमें इन बुनकरों का साथ देंगे और ऋण देने का कार्यक्रम जारी रखेंगे," मैडम हेनरी ने कहा। "हम लोग कई देशों में शीतल पटी के निर्यात को बढ़ावा देने का पूरा प्रयास कर रहे हैं, अत: गुणवत्ता पूर्ण पटी बुनने के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाएगी," उन्होंने कहा। सोनाली ने सिराज़गंज जिले के कमरखांडा उपजिला में चाडपुर में शीतल पटी बुनने के लिए 60 परिवारों के बीच 500,000 रूपयों के ऋण जमानत मुक्त ऋण बाँटे।

स्त्रोत- फाइनेन्सियल एक्सप्रेस (एफ०ई०) 29 नवंबर, 2011

विचारणीय बिन्दुन

- चाडपुर में बुनकरों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था?
- राज्य संचालित सोनाली बैंक ने उनकी समस्याओं का समाधान किस प्रकार किया?
- अपने क्षेत्र के किसी ऐसे स्वयं सहायता समूहों, छोटी अर्थव्यवस्थाओं पर चर्चा करें और पता लगाएँ कि वे कैसे लोगों की सहायता करते हैं।

क्या आकलन करना है?

शिक्षार्थियों को संस्थाओं द्वारा दिए गए निर्देशों और मार्गदर्शन को पढ़ने और ऋण की शर्तों, ब्याज दरों, इत्यादि को तुलना करने योग्य होना चाहिए। उनको समझना चाहिए कि ऋण के विभिन्न स्त्रोत क्या हैं और ये कैसे एक दूसरे से भिन्न है। गतिविधियाँ शिक्षार्थियों को बैंकों और अन्य संस्थाओं की वे भूमिकाएँ समझने में मदद करेंगी जिनमें वे लोगों को ऋण उपलब्ध करा कर बचतर्त्ताओं से ऋण लेने वालों और निवेशकों में धनराशियों को पहुँचाती हैं। ऋण के प्रभावों को तर्क सहित बताएँ- कैसे ये अधिक उत्पादकता की ओर ले जा सकते है अथवा बढ़ती गरीबी की ओर ले जाने वाले ऋण के शिकंजे में परिणित हो सकते हैं। ऋण के साथ जुड़ी विभिन्न समस्याओं और उन को पूरा करने के तरीके निकालने की उनकी योग्यता का आकलन किया जा सकता है।

प्रश्न

1. वे कौन-सी समस्याएँ खड़ी होती, यदि विनिमय के माध्यम के रूप में निम्नलिखित उपभोग की वस्तुओं को उपयोग में लाया गया होता?

   (a) गेहूँ (b) बकरी (c) कपड़ा

2. क्या आपके विचार से 5 रूपए के धातु के सिक्के में धातु का मूल्य 5 रूपए के बराबर होता है? यदि नहीं तो आप उसे क्यों स्वीकार करते हैं?
3. लोग बैंकों में पैसा क्यों जमा करते हैं?
4. 'इलेक्ट्रॉनिक काल' का मुद्रा, विशेष रूप से करेंसी पर क्या प्रभाव होगा?

   (i) क्रेडिट कार्ड (ii) डेबिट कार्ड (iii) टेलीफोन बैंकिंग (iv) ई-बैंकिंग

सुझाई गयी पठन सामग्री

- Frederic S. Mishkin and Person Addison Wesley, The Economics of Money, Banking and Financial Markets, 2007
- Stephen G. Cecchetti; Money, Banking and Financial Markets, Mc Graw- Hill Education, 2006.Res dis quate exerum rehenduntis eati quate nia eumque dolore num quias antum estemquo il inus animuscia sant endictescid quis aut quuntur? Ficia inullest volorat faccupta quunto blam ne eicimusam eum nonsequ atibus ut alis anditiis doles perum eossum fugit, occume pre et ad quiatiur?
- Sum aut as qui auda volorem voluptatqui ut pellaut atas nus as et mint volum expe illes sit reritibusae voloreiunto cum dolupti comnis non eaquaes eos cus.
- Ari volute vera necus doluptatin conecto qui que maior re vollabores samus conetusae si offictusdae et endae nusaestiis nosam dolutempor suntissit landandande rem et doloris eos inihiti commoluptat exerum que nonseque prorepudita destemped eatusantius estorepudae quia veribus dendandicil etur, sum dempore sciaectotat.
- Obis que sam del mi, que verchil luptatecabo. Ipsaero riaeper eprepel laccatem quo berumet, quia vollor aut voluptae sit omniminci volorerro molorpo rrovidem ea noste perites simus.

भाग V
अंतरविषयक परियोजना

खाद्य सुरक्षा पर अंतरविषयक परियोजना

खाद्य सुरक्षा लोगों को सम्मानपूर्वक जीने और इससे संबंधित अथवा सहवर्ती मामलों में पहुँच के भीतर कीमतों पर पर्याप्त मात्रा में गुणवत्तापूर्ण भोजन पाने को सुनिश्चित करने के लिए मानव जीवन चक्र तंत्र में खाद्य और पोषण सुरक्षा उपलब्ध कराती है।

— राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 संख्या 20, भारत के गज़ट द्वारा प्रकाशित, दिनांक 10 सितम्बर, 2013

परिचय

खाद्य सुरक्षा तब उपलब्ध होती है जब सभी लोगों को स्वस्थ और सक्रिय जीवन बनाए रखने के लिए पर्याप्त, सुरक्षित, पोषक आहार हर समय प्राप्त रहता है (विश्व खाद्य सम्मेलन, 1996)। खाद्य सुरक्षा के स्तरों के विविध संयोजनों के अनुसार देशों को विभिन्न श्रेणियों में रखा जा सकता है। एक देश खराब स्थिति में हो सकता है। यदि खाद्य आपूर्ति को 'उचित' तरीके से वितरित किया जाए तब भी नागरिकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वह अपर्याप्त रहती है। ऐसे मामलों में खाद्य सुरक्षा को अंतरराष्ट्रीय दानकर्ताओं द्वारा बड़े पैमाने पर संकटकालीन राहत द्वारा नियंत्रित किया जाता है। खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने के लिए उपयुक्त कार्यनीति के विकास के लिए खाद्य असुरक्षा समस्याओं की प्रकृति और स्तर को समझने की आवश्यकता होती है।

खाद्य सुरक्षा निम्नलिखित पर निर्भर करती है-

- खाद्य उपलब्धता– खाद्य उत्पादन, खाद्य के भंडार और खाद्य के आयात पर निर्भर करती है।
- खाद्य तक पहुँच– प्रत्येक व्यक्ति की खाद्य पर पहुँच पर निर्भर करती है।
- खाद्य उपयोगिता– उचित उपयोग जो आधारभूत पोषण और देख-रेख के साथ-साथ पर्याप्त जल और स्वच्छता के ज्ञान पर आधारित है।
- खाद्य पदार्थ खरीदने की क्षमता– व्यक्ति के पास पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक खाद्य पदार्थ खरीदने के लिए धन पर निर्भर करती है।

केंद्र बिंदु

खाद्य सुरक्षा पर परिचर्चा करने के लिए निम्नलिखित पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है–

- खाद्य पदार्थों की उपलब्धता और गुणवत्ता किस प्रकार विकास को प्रभावित करती है और किस प्रकार विकास खाद्य पदार्थों की उपलब्धता को प्रभावित करता है?
- अकाल पड़ना और समाज पर इसका प्रभाव
- खाद्य सुरक्षा की आवश्यकता और इसके विविध उपाय
- खाद्य सुरक्षा देने में सरकार की भूमिका, खाद्य नीतियाँ– खाद्य सुरक्षा बिल
- जलवायु परिवर्तन और उसका खाद्य उत्पादन पर प्रभाव
- संवेदनशील सामाजिक समूहों और संवेदनशील राज्यों की पहचान करना ।

समस्या

विज्ञान, प्रौद्योगिकी और औद्योगिक विकास के क्षेत्रों में भारत की महत्वपूर्ण प्रगति प्रशंसनीय है। हरित क्रांति, जो साठ के दशक में प्रारम्भ हुई, जिसने तीन दशकों से अधिक समय तक अपना प्रभाव बनाए रखा, के सफल होने के बाद भी, गरीबों के लिए खाद्य सुरक्षा एक गम्भीर सरोकार का कारण बनी हुई है। इसने नब्बे के दशक के मध्य से कृषि उत्पादन की मंदी के कारण और विकराल रूप ले लिया। खाद्य उत्पादन की समस्याएँ मुख्य रूप से जनसंख्या के बढ़ने और कृषि पर उसकी निर्भरता, छोटे और खंडित भू-भागों, मृदा की उत्पादकता के कम होने, जल स्त्रोतों के अकुशल उपयोग, पुरानी कृषि उत्पादक प्रौद्योगिकियों, कृषि साख, विपणन और भंडारण की सुविधाओं की कमी के कारण हुई।

हम सब जानते हैं कि भारत एक ऐसा देश है जिसमें विविध संस्कृतियों और विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूह के लोग बसते हैं। जहाँ तक खाद्य सुरक्षा का मुद्दा है अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़े वर्ग तथा शारीरिक रूप से निशक्त इत्यादि समूह सबसे अधिक असुरक्षित हैं। इन समूहों में महिलाएँ और बच्चे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं क्योंकि उन्हें अक्सर परिवार के पुरुष सदस्यों के लिए अपने भोजन का हिस्सा छोड़ना पड़ता है।

भोजन एक मूलभूत आवश्यकता होने के कारण, कोई भी सरकार भोजन उत्पादन, इसकी कीमत और वितरण से संबंधित नीतियों को लागू करने से अपना हाथ नहीं खींच सकती। सम्पूर्ण विश्व से प्राप्त साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि सरकारी नीतियों का क्रियान्वयन ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धता ला सकता है और इसके द्वारा भूख पर काबू पाया जा सकता है। जापान में किए गए भूमि सुधार उपायों, चीन का औद्योगीकरण के बजाए कृषि पर जोर देने के कारण कृषि उत्पादन में विशेष वृद्धि हुई, जिससे अधिक संख्या में लोगों का पेट भरने की क्षमता बढ़ी। भावी खाद्य आपूर्ति जलवायु के प्रभाव, कृषि योग्य भूमि की मात्रा, ऊर्जा लागतों, कृषि की दक्षता में वृद्धि के उपायों, नई प्रौद्योगिकी इत्यादि पर निर्भर करती है।

चरण 1: प्रश्नावली का निर्माण और क्षेत्र भ्रमण करना

विद्यार्थियों से कहें कि वे एक उदाहरणार्थ प्रश्नावली तैयार करें जो वे क्षेत्र सर्वेक्षण के समय भरेंगे। कक्षा को 5-6 विद्यार्थियों के समूहों में बाँटें। उन्हें निकटवर्ती झुग्गी-बस्ती (स्लम क्षेत्र) में क्षेत्र सर्वेक्षण के लिए जाने दें। अथवा ऐसे क्षेत्र का चयन करें जो अभावों से ग्रस्त है और समाचार पत्रों/पत्रिकाओं में दर्शाया गया है (जैसे कालाहाण्डी)।

उदाहरणार्थ

क: सामान्य जानकारी

1. नाम:
2. गाँव:
3. जिला:
4. परिवार में कुल सदस्य: पुरुष – , महिलाएँ –
5. बच्चों की संख्या: लड़के – , लड़कियाँ –

ख: आर्थिक जानकारी

1. परिवार के कितने सदस्य काम पर जाते हैं? पुरुष – महिलाएँ –
2. कार्य का प्रकार, जिसे वे कर रहे हैं–
3. आपकी दैनिक/साप्ताहिक/मासिक पारिवारिक आय कितनी है?

4. बताएँ यदि आय का कोई अन्य स्त्रोत है (फसल उगाने से/श्रम की मजदूरी से, गाय/भैंस पालने से)
5. आपका प्रतिदिन का साप्ताहिक/मासिक खर्च क्या है?

ग: खर्च का तरीका– भोजन पर

1. आप प्रतिमाह भोजन पर कितना खर्च करते हैं ?
2. आप प्रतिदिन कितनी बार भोजन करते हैं ?

   एक दिन में चार या अधिक बार दिन में तीन बार दिन में दो बार दिन में एक बार
3. क्या परिवार में सभी सदस्यों को पर्याप्त भोजन प्राप्त होता है ?
4. यदि नहीं, तो बताएँ किन सदस्यों को सभी दिन पर्याप्त भोजन प्राप्त नहीं होता।
5. कौन से खाद्य पदार्थ हैं, जो आप नियमित रूप से खाते हैं ?

   (सूची दें) चावल, गेहूँ, मक्का, बाजरा, दाल, प्याज, आलू, टमाटर, अन्य सब्जियाँ, चाय, चीनी, छाछ, दूध, मक्खन, अण्डे, चिकन, माँस, इत्यादि।
6. वे कौनसे खाद्य पदार्थ हैं, जो आप कभी-कभी खाते हैं ?
7. उन उपभोग की वस्तुओं के नाम बताएँ जिनकी कीमतें पिछले छह महीनों में बढ़ी हैं?
8. कौन सी वस्तुएँ हैं जिनकी कीमतें बढ़ने के कारण उनका उपभोग बंद कर दिया है अथवा उनके स्थान पर अन्य चीजों का उपभोग किया जा रहा है?
9. वह कौन सा विकल्प है जिसे आप को उपभोग का स्तर बनाए रखने के लिए छोड़ना पड़ा ?
10. क्या आपकी सार्वजनिक वितरण प्रणाली तक पहुँच है?
11. क्या आप पी०डी०एस० सुविधा का उपयोग करते हैं?
12. आपके पास किस प्रकार का राशन कार्ड है?

    अंत्योदय कार्ड बी०पी०एल० कार्ड ए०पी०एल० कार्ड
13. इन कार्डों के आपके पास होने से आपको क्या लाभ मिलते हैं?
14. क्या आपको ये कार्ड प्राप्त करने में कोई कठिनाई हुई? यदि हाँ, तो उल्लेख करें।
15. क्या आप मनरेगा (MNREGA) के अंतर्गत रोज़गार के लाभ प्राप्त करते हैं?

प्रश्नावली के आधार पर शिक्षार्थियों से निम्नलिखित बिंदुओं पर एक लेख लिखने के लिए कहा जा सकता है–

1. क्या क्षेत्र के लोगों के लिए भोजन उपलब्ध है, वे उसे खरीद सकते हैं और उस तक उनकी पहुँच है?
2. वहाँ रहने वाले लोगों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?
3. क्या ये समस्याएँ पहले भी थीं?
4. खाद्य समस्या किस प्रकार महिलाओं और बच्चों को प्रभावित कर रही है?
5. खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकार की भूमिका क्या है?
6. क्या यह लोगों तक पहुँच रहा है? यदि हाँ, तो कैसे? यदि नहीं, तो क्यों?
7. उन्हें उपाय सुझाने दें, जो सभी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए किये जा सकें।

चरण 2: समुदाय के साथ संवाद

विद्यार्थी बड़ों से उनके घरों, समुदाय इत्यादि में जाकर बातचीत करें, और अतीत में पड़े अकालों के बारे में जानकारी इकट्ठा करें। अकाल पड़ने के क्या कारण रहे? क्या ये कारण वही थे, जो आज भी विद्यमान हैं? अकाल से उत्पन्न समस्याओं से लोगों ने कैसे पार पाया? क्या सरकार/शासकों द्वारा किए गए उपायों ने खाद्य सुरक्षा उपलब्ध कराने में कोई मदद की? (उन्हें सार्वजनिक वितरण प्रणाली, गरीबी-राहत कार्यक्रमों का कार्यान्वयन– मिड डे मील, काम के बदले भोजन, इत्यादि सहकारी समितियों और एन०जी०ओ० जैसे अमूल का संदर्भ दें)। विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे महिलाओं से पी०डी०एस०, मिड डे मील, काम के बदले भोजन इत्यादि की पहुँच पर बात करें। ऐसे कार्यक्रमों तक पहुँच ने उनके जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया है?

चरण 3: जानकारी इकट्ठा करना

विद्यार्थियों को समाचार पत्रों, इंटरनेट, रेडियो और सरकार की टेलीविज़न नीतियों द्वारा खाद्य सुरक्षा के मुद्दों पर समाचार इकट्ठा करने दें और निम्नलिखित पर परिचर्चा आयोजित करें–

- क्या ये खाद्य सुरक्षा उपाय सभी के लिए भोजन सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त है?
- आपके विचार से खाद्य सुरक्षा बिल लागू करने पर क्या समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं?

चरण 4: जलवायु परिवर्तन पर परिचर्चा

शिक्षक जलवायु परिवर्तन के बारे में परिचर्चा करके शिक्षार्थियों को यह जानने में मदद कर सकते हैं–

- अभी हाल ही के वर्षों में आपकी बस्ती में आपने मौसम में क्या परिवर्तन पाए हैं?
- किन तरीकों से मानव जलवायु में परिवर्तन कर रहा है?
- खाद्य आपूर्ति पर जलवायु परिवर्तन का क्या प्रभाव पड़ रहा है?

परियोजना निर्माण

इकट्ठी की गई जानकारी और परिचर्चाओं के आधार पर शिक्षार्थियों को एक अंतरविषयक परियोजना बनाने के लिए कहा जा सकता है, जिसमें खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के संदर्भ में ऐतिहासिक आयाम, भौगोलिक आयाम, आर्थिक कारण और राजनीतिक भूमिका शामिल होंगे।

Important Road Traffic Signs

Give way sign

Stop sign

Overtaking Prohibited

No entry

U-turn Prohibited

Horn Prohibited

Speed Limit

No Parking

Left hand curve

Roundabout

School

Slippery road

Eating place

No through
Side road

Petrol pump

Hospital

Taxi stand

Compulsory
sound horn

Compulsory
Turn Right